एकेश्वरवाद एवं श्रेष्ठ मानवता

के

प्रेरणा स्रोत

सूफ़ी सन्त मत

का

नक़्शबन्दिया सिलसिला

कुद्स अल्लाह अरवाह हुम

(ईश्वर इन महान् आत्माओं को पवित्र बनाए)

प्रथम भाग

•

बाल कुमार खरे

एकेश्वरवाद एवं श्रेष्ठ मानवता

के

प्रेरणा स्रोत

सूफ़ी सन्त मत

का

नक़्शबन्दिया सिलसिला

कुद्स अल्लाह अरवाह हुम

(ईश्वर इन महान् आत्माओं को पवित्र बनाए)

प्रथम भाग

(हजरत मुहम्मद सल्ल० से हजरत ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शबन्द कु०सि० तक)

अकिंचन तुच्छ लेखक

बाल कुमार खरे

लेखक
बाल कुमार खरे
प्राचार्य,
राजकीय बेसिक ट्रेनिंग कालेज
अर्दली बाजार, वाराणसी

© **बाल कुमार खरे**

प्रथम संस्करण : १००० प्रतियाँ
जनवरी १९८३
मूल्य : ग्यारह रुपये

सतसंगी भाई के लिए
मूल्य :

प्रकाशक
सर्वोदय साहित्य प्रकाशन,
बुलानाला, वाराणसी

मुद्रक :
चन्द्रमा सिंह
सिंह प्रिंटिंग प्रेस
नाटोइमली, वाराणसी

समर्पण

पूर्ण समर्थ सतगुरु महात्मा रघुबरदयाल जी महाराज
(परम पूज्य चच्चा जी महाराज) के पावन कर-
कमलों में सविनय समर्पित, जिनकी प्रेरणा
एवं आशीर्वाद से ही इस पवित्र
ग्रन्थ की रचना हुई है ।

दासानुदास

बाल कुमार खरे

विषय-सूची

क्रमांक	विवरण	पृष्ठ
१.	हालात हज़रत मुहम्मद मुस्तफा (सल्ल०)	१५
२.	" हजरत अबू बक्र सिद्धीक (रजि०)	७५
३.	" हजरत सलमान फारसी (रहम०)	९१
४.	" हज़रत इमाम कासिम बिन मुहम्मद बिन अबू बक्र (रजि०)	९४
५.	" हजरत इमाम जाफर सादिक (रजि०)	९५
६.	" हजरत बायजीद बस्तामी (रहम०)	१०३
७.	" हजरत ख्वाजा अबुल हसन खिरकानी (रहम०)	११६
८.	" हजरत ख्वाजा अबुल कासिम गुरगानी (रहम०)	१३३
९.	" हजरत शैख अबू अली फारमदी तूसी (कु० सि०)	१३४
१०.	" हजरत ख्वाजा यूसुफ हम्दानी (कु० सि०)	१३७
११.	" हजरत ख्वाजा अब्दुल खालिक गुज्दवानी (कु०सि०)	१४१
१२.	" हजरत ख्वाजा मुहम्मद आरिफ रेवगरी (रहम०)	१६८
१३.	" हजरत ख्वाजा महमूद अन्जीर फगनवी (कु०सि०)	१६९
१४.	" हजरत ख्वाजा अली रामतैनी (रहम०)	१७२
१५.	" हजरत ख्वाजा मुहम्मद बाबा समासी (रहम०)	१८०
१६.	" हजरत सैयद अमीर कुलाल (रहम०)	१८२
१७.	" हजरत ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शबन्द (रहम०)	१८४

विनम्र निवेदन

सर्वप्रथम उस परमपिता परमात्मा को अनन्त धन्यवाद है, जिसकी अहेतुकी दया कृपा से पूर्ण समर्थ सत्गुरु महात्मा रघुबर दयाल जी महाराज (परमपूज्य चच्चाजी महराज) के द्वारा इस अकिंचन तुच्छ लेखक के हृदय में इस महान पवित्र ग्रन्थ को लिखने और प्रकाशित कराने की पावन प्रेरणा उत्पन्न हुई। यह अधम सेवक परमपूज्य चच्चाजी महराज के पावन चरण कमलों में नतमस्तक हो उनको बारम्बार दण्डवत् प्रणाम करता है। यह पावन कृति उन्हीं की अहेतुकी कृपा, प्रेरणा एवं आशीर्वाद का प्रतिफल है।

इस शुभ अवसर पर इस अकिंचन सेवक का हृदय महान सूफीसन्त हजरत मौलाना शाहफज्ल अहमद खाँ रायपुरी (रहमतुल्लाहु अलैहि) के प्रति कृतज्ञता की भावना से ओत-प्रोत हो रहा है। उन्होंने अपनी असीम एवं अति उदार आध्यात्मिक चेतना के द्वारा सूफी सन्तमत के 'नक्शबन्दिया सिलसिले' की अति गुह्य एवं अनमोल आध्यात्मिक विद्या से मुसलमानों के अतिरिक्त अन्य धर्मावलम्बियों को (बिना धर्म परिवर्तन के) फैजयाब (लभान्वित) करने का जो अत्यन्त साहसिक कदम उठाया, वह विश्व के विभिन्न धर्मों से सम्बन्धित इतिहास की ऐसी क्रान्तिकारी एवं महत्वपूर्ण घटना है, जिसका उचित मूल्यांकन कदाचित यह वर्तमान पीढ़ी न कर पाये, परन्तु आगे आनेवाली पीढ़ियाँ ईश्वर की असीम दया-कृपा से अत्यन्त कौतूहल एवं श्रद्धा की भावना से यह अनुभव करेंगी कि इस पृथ्वी पर उन्नइवीं शताब्दी के मध्य में ऐसे महापुरुष का जन्म हुआ, जिन्होंने इस आधुनिक वैज्ञानिक प्रगति से उत्पन्न होने वाली व्यापक अशांति एवं अनैतिकता तथा विभिन्न धर्मों के पारस्परिक मतभेदों के

दुष्परिणामों की गम्भीरता को आज से लगभग सौ वर्ष पूर्व ही इस तीव्रता एवं सवेदनशीलता के साथ अनुभव किया कि उन्होंने सम्पूर्ण मानव समाज को इसी अशान्ति एवं धार्मिक तथा साम्प्रदायिक संकीर्णताओं से मुक्त कराने के लिए परमपिता परमात्मा के अति मगलमयी विधान के अन्तर्गत ऐसे कल्याणकारी आध्यात्मिक मार्ग का सूत्रपात किया जो 'सर्वधर्म समन्वय' के सार्वभौमिक सिद्धान्त पर आधारित होने के साथ ही साथ अत्यन्त व्यावहारिक, प्रभावकारी तथा दृढ़ आध्यात्मिक साधना के सिद्धान्तों को बुनियाद पर निर्मित हुआ था। उन्होंने न अपना कोई सम्प्रदाय अथवा पंथ चलाया और न अपने को किसी नये धर्म, सम्प्रदाय अथवा पंथ का प्रवर्तक घोषित किया। वह मुसलमान होने के नाते इस्लाम धर्म शास्त्र के नियमों की पावन्दी, जिसे 'शरीयत' कहते हैं, पूरी निष्ठा के साथ करते रहे और मुसलमान सूफी सन्तों के "नक्शबन्दिया सिलसिले" की साधना पद्धति की मुताबअत (पैरवी, अनुकरण) इस्तकामत (दृढ़ता) के साथ करते रहे। परन्तु इसके बावजूद वह दूसरे धर्म के मानने वालों को बिना धर्म परिवर्तन एवं बिना किसी धार्मिक भेदभाव के सूफी सन्तों की इस गुह्य अध्यात्म विद्या की साधना पद्धति से पूरी उदारता के साथ फैजयाब करते रहे।

सभी इतिहासकार इस बात को स्वीकार करते हैं कि भारतवर्ष में मुसलमान बादशाहों और शासकों की बदौलत इस्लाम धर्म नहीं फैला, वरन् इसका मुख्य श्रेय मुसलमान सूफी सन्तों को है, जिनके सम्पर्क में आते ही उनकी आध्यात्मिक चेतना के प्रभाव से हजारों हिन्दुओं तथा अन्य धर्मावलम्बियों ने उनके मुरीद (शिष्य) बनकर इस्लाम धर्म को सहर्ष स्वीकार किया। परन्तु धर्म परिवर्तन की इस प्रक्रिया से सम्पूर्ण मानव समाज का कितना बड़ा अहित हुआ है और अब भी हो रहा है, इसका इतिहास प्रत्यक्ष साक्षी है। इन ऐतिहासिक घटनाओं तथा तथ्यों की तुलना में जब हम अपने महान सूफी सन्त हजरत मौलाना शाह फज्ल

अहमद खाँ (रहम०) के व्यक्तित्व एवं कृत्यों (कार्यों) का मूल्यांकन करते हैं तब हमें यह एहसास होता है कि इस महान पाक हस्ती ने विश्व के सम्पूर्ण मानव समाज के साथ कितना महान उपकार किया है।

इस स्थान पर निष्पक्ष भाव रखने वाले प्रत्येक आध्यात्मिक एवं धार्मिक जिज्ञासु के मन में यह प्रश्न उठता है कि इन महान सूफी सन्त हजरत मौलाना शाहफज्ल अहमद खाँ (रहम०) ने कौन-सा ऐसा नया मार्ग अपनाया, जिस पर चलकर आज हजारों की संख्या में गैर मुस्लिम अनुयायी बिना धर्म परिवर्तन के अपने मंजिले मकसूद की ओर तेजी से अग्रसर होते हुए एक नवीन आध्यात्मिक क्रान्ति का सूत्रपात कर रहे हैं। इस जिज्ञासा का उत्तर इस महत्वपूर्ण तथ्य पर आधारित है कि कदाचित् विश्व के इतिहास में प्रथम बार हजरत मौलाना शाहफज्ल अहमद खाँ (रहम०) ने धर्म की ऐसी नूतन एवं सर्वग्राही परिभाषा एवं संकल्पना प्रस्तुत की कि जिसके आधार पर धर्म परिवर्तन की आवश्यकता ही समाप्त हो गयी। उन्होंने 'धर्म' की परिभाषा समझाते हुए यह स्पष्ट रूप से बतलाया कि हर धर्म के दो पक्ष होते हैं। उसका बाहरी पक्ष 'शरीयत' (धर्मशास्त्र द्वारा निर्धारित कर्मकाण्ड) और आन्तरिक पक्ष रूहानियत (अध्यात्म) कहलाता है। 'शरीयत' (कर्मकाण्ड) का स्वरूप मनुष्य की सामाजिक, भौगोलिक तथा स्थानीय परम्पराओं द्वारा निर्धारित होता है अतः वह भिन्न-भिन्न देश और समाज के लिए भिन्न-भिन्न हो सकता है। परन्तु धर्म का आन्तरिक पक्ष जिसे हम रूहानियत कहते हैं, हृदय और आत्मा को उन अनुभूतियों पर आधारित है जो सभी देश काल और विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों में एक समान होती हैं। अतः किसी भी धर्म का अनुयायी बिना अपने धर्म को त्यागे हुए दूसरे धर्मावलम्बी सन्त महात्मा से रूहानियत की तालीम हासिल कर सकता है।

'धर्म की उक्त सारगर्भित एवं सार्वभौमिक परिभाषा को समझाते हुए हजरत मौलाना शाहफज्ल अहमद खाँ (रहम०) ने यह भी फरमाया

था कि यह सूफी सन्तों की अध्यात्म विद्या प्राचीन हिन्दू आर्य ऋषियों मुनियों की ही विद्या है जो पुनः अब उन्हीं को वापस हो रही है। इस स्थान पर सभी के मन में एक स्वाभाविक जिज्ञासा उत्पन्न होती है कि 'हमारे प्राचीन आर्य ऋषि मुनियों की अध्यात्म विद्या का स्वरूप क्या था तथा वह फिर सूफी सन्तों द्वारा किन विशेषताओं के साथ ग्रहण की गई ?' इस जिज्ञासा के निराकरण के लिए हमें अपने देश के प्राचीन इतिहास पर अत्यन्त संक्षेप रूप में विहंगम दृष्टि डालनी होगी। हम सभी जानते हैं कि एक ईश्वर की सत्ता पर विश्वास रखने वाले विभिन्न धर्मों की साधना पद्धति का चरम लक्ष्य है 'परमात्मा का सान्निध्य प्राप्त करना, उसका साक्षात्कार करना और उसी की सत्ता में अपनी सत्ता को लय कर देना।' मानव जीवन के इस चरम लक्ष्य की प्राप्ति के साधन को हमारे प्राचीन आर्य ऋषियों-मुनियों ने "योग" कहा है। योग का शाब्दिक अर्थ होता है 'मिलना, एकाकार होना।' जीवात्मा का परमात्मा से मिलन, अपने अस्तित्व को उस परमात्मा के अस्तित्व में लय कर देना तथा उसी में रम जाना यही 'योग' साधना का लक्ष्य है। हमारे देश में इस योग साधना के सबसे बड़े, प्रवर्तक महर्षि पतंजलि हुए हैं जिन्होंने 'अष्टांग योग' की साधना पद्धति से मानव जीवन के चरम लक्ष्य की प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त किया। इस अष्टांग योग के आठ अंग बतलाये गये हैं :— यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि। हमारे देश के अधिकांश ऋषियों-मुनियों ने इसी अष्टांगी योग साधना का अनुसरण करते हुए मानव जीवन के परम लक्ष्य को प्राप्त किया।

आज इस आधुनिक वैज्ञानिक युग की सबसे बड़ी उपलब्धि एवं अनुपम खोज है 'परमाणु शक्ति' जो विज्ञान की दृष्टि में इस स्थूल जगत की अन्तिम एवं सूक्ष्मतम परिणति है। परन्तु आज के अधिकांश वैज्ञानिकों को यह ज्ञात नहीं है कि आज से हजारों वर्ष पूर्व हमारे ऋषियों मुनियों

ने इस 'परमाणु शक्ति' से असंख्यगुना अधिक शक्तिशाली एवं सूक्ष्मतम शक्ति का आविष्कार किया था जो प्रत्येक चेतन प्राणी के शरीर में विद्यमान है, वह है 'कुंडलिनी शक्ति'। हमारे इस शरीर के भीतर छः ऐसे सूक्ष्म केन्द्र हैं जिनमें यह 'कुंडलिनी शक्ति' योगियों के सतत् योग साधना एवं तपस्या द्वारा जागृत होकर एक विशिष्ट प्रकार की उग्रता, स्पन्दन तथा आत्मानुभूति उत्पन्न करने के साथ ही साथ उनमें ऐसी चमत्कारिक शक्तियाँ उत्पन्न करती है जिसे अध्यात्म की भाषा में 'ऋद्धियाँ-सिद्धियाँ' कहा जाता है। यह छः केन्द्र 'षटचक्र' कहे जाते हैं जो शरीर के भीतर भिन्न-भिन्न विशिष्ट अंगों में इस प्रकार स्थित हैं—१:-मूलाधार चक्र-(सुषुम्ना नाड़ी में गुदा और लिंग के बीच स्थित है, इसी चक्र में कुंडलिनी शक्ति सुषुप्त अवस्था में केन्द्रित रहती है। यह चक्र कुंडलिनी शक्ति का आधार होने के कारण 'मूलाधार चक्र' कहा जाता है।) २:-स्वाधिष्ठान चक्र-(लिंग के मूल में स्थित है) ३:-मणिपुर चक्र-(सुषुम्ना में कुछ ऊपर नाभि स्थान में स्थित है, इसे 'नाभि चक्र भी कहते हैं।)' ४:-अनाहत चक्र या हृदय चक्र-(यह हृदय स्थान में स्थित है। इसी को सूफी मत में 'कल्ब' कहते हैं-योग साधना तथा सूफी मत साधना दोनों में इसका विशेष महत्व है।) ५:-विशुद्ध चक्र-(यह सुषुम्ना नाड़ी में हृदय के ऊपर टेंटुए में (कण्ठ भाग में) स्थित है।) ६:-आज्ञा चक्र (यह भ्रू मध्य अर्थात् दोनों भौहों के बीच स्थित है) । योग साधना के सतत अभ्यास से 'कुंडलिनी शक्ति' जागृत होकर नीचे मूलाधार चक्र से ऊपर के चक्रों से गुजरती हुई सभी छः चक्रों को पार करने के पश्चात् अन्त में सहस्रार चक्र (शून्य चक्र) में विलीन होती है। यह सहस्रार चक्र मस्तक में ठीक ब्रह्मरन्ध्र के उपर स्थित है। यहाँ कुंडलिनी शक्ति सहस्रार चक्र में सदैव परमात्मा के साथ रहने वाली परा कुंडलिनी से मिलती है। यह वह स्थिति है जहाँ साधक को अपने चरम लक्ष्य की प्राप्ति होती है। यहाँ पर जीवात्मा का परमात्मा से मिलन होता है। यहीं पर साधक का अस्तित्व उस परमात्मा के अस्तित्व में लय होकर उसी स्थिति में रम जाता है। इसी स्थिति को सूफी मत की साधना में 'फना' से आगे 'बका' का हालत

कहते हैं और योग साधना की भाषा में इसे असम्प्रज्ञात समाधि कहते हैं। यहाँ पहुँचकर मनुष्य 'जीवनमुक्त' की स्थिति में पहुँच जाता है। जिन चक्रों का ऊपर वर्णन किया गया है उनमें कुंडलिनी शक्ति जागृत होने पर विशिष्ट प्रकार की आध्यात्मिक अनुभूतियाँ होती हैं तथा प्रत्येक चक्र के जागृत होने पर जो ऋद्धियाँ सिद्धियाँ प्राप्त होती है उन्हें उच्चकोटि के योगीजन (सन्त पुरुष) अहंकार से बचने के लिये अपने नियन्त्रण में तथा गुप्त रखते हैं और इनको प्रकट नहीं करते। हाँ, अपने परम शिष्यों तथा मानव कल्याण के लिये कभी-कभी इनका सदुपयोग परोक्ष तथा गुप्त रूप से अवश्य करते हैं।

ऊपर वर्णित कुंडलिनी शक्ति जब सहस्रार चक्र में पहुँचकर वहाँ रम जाती हैं तो साधक के शरीर के समस्त कोषाणु तथा रोम-रोम में इस असीम चेतना शक्ति का संचार विद्युत तरंगों की तरह होने लगता है। इस स्थिति में पहुँचकर साधक को ऐसी असीम सामर्थ्य एवं आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त होती है कि वह केवल अपनी इच्छा शक्ति से उसके सम्पर्क में आने से किसी भी व्यक्ति की कुंडलिनी शक्ति को बिना उसके किसी योग साधना एवं तपस्या के जागृत कर देता है। इसी प्रक्रिया को योगदर्शन में 'शक्तिपात' तथा सूफी मत की साधना में 'तवज्जोह' कहते हैं। ऐसे पूर्ण सिद्ध तथा समर्थ सन्त का पूरा शरीर तथा व्यक्तित्व एक शक्तिशाली चुम्बक के समान हो जाता है। जिस प्रकार एक शक्तिशाली चुम्बक के प्रभाव क्षेत्र में यदि लोहे के कण अथवा लोहे का कोई पदार्थ लाया जाता है, तो उसमें बिना चुम्बक के स्पर्श के ही चुम्बकत्व के गुण उत्पन्न हो जाते हैं और वह लोहा स्वयं उस मूल चुम्बक की तरह दूसरे लोहे के कणों को अपनी ओर आकर्षित करने तथा उनमें चुम्बकत्व के गुण उत्पन्न करने की क्षमता प्राप्त कर लेता है, इसी प्रकार एक पूर्ण सिद्ध सन्त के सतसंग मात्र से ही बिना 'शक्तिपात' की प्रक्रिया के ही उसके अनुयायियों की कुंडलिनी शक्ति जागृत हो जाती है।

अपने देश के प्राचीन इतिहास के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि हमारे आर्य ऋषियों-मुनियों ने अपनी योग साधना एवं तपस्या से परमात्मा का सान्निध्य प्राप्त करने तथा उससे एकाकार होने के लिए जो अनुपम आध्यात्मिक मार्ग प्रशस्त किया, वह धीरे-धीरे कुछ चुने हुए ऋषि-आश्रमों, गुरुकुलों तथा कन्दराओं और गुफाओं में तपस्या करने वाले सन्यासियों तक ही सीमित रह गया। लोग यह समझने लगे कि सांसारिक गृहस्थ जीवन व्यतीत करने वाले व्यक्तियों के लिए इतनी कठिन योग साधना का अनुसरण करना सम्भव नहीं है। हमारे देश में देवी-देवताओं की मूर्ति पूजा साकार ब्रह्म की उपासना और साधना के पूर्व से ही चली आ रही थी अतः धीरे-धीरे अधिकांश गृहस्थ जीवन व्यतीत करने वाले लोग इसी मूर्ति पूजा की ओर आकृष्ट हुए। परन्तु यह मूर्ति पूजा भी मात्र औपचारिकता ही रह गयी। यद्यपि हमारे हिन्दू धर्म के अनुयायी मूर्तिपूजक उस निराकार ब्रह्म के अस्तित्व को मानते हैं और यह भी जानते हैं कि सभी देवी-देवता उस परमात्मा के ही अधीन हैं, फिर भी इस निराकार ब्रह्म की उपासना और साधना की दुरूहता के कारण अधिकांश लोग मूर्ति पूजा को ही अपने आध्यात्मिक जीवन का चरम लक्ष्य मानकर जीवन पर्यन्त इसी में फँसे रहते हैं। आज तो यह भी देखने में आता है कि चाहे निराकार ब्रह्म की उपासना हो या साकार, मूर्ति पूजा, दोनों मार्गों के निष्ठावान अनुयायी भी केवल ऊपरी भजन पूजन तथा किसी साधु सन्यासी द्वारा बतलाई हुई 'ध्यान' की आरम्भिक क्रिया के अभ्यास एवं धार्मिक ग्रन्थों के औपचारिक पठन-पाठन को ही अपने आध्यात्मिक जीवन का चरम लक्ष्य मानते हैं।

हमारे देश के आध्यात्मिक क्षेत्र में व्याप्त इसी अज्ञानता को दूर करने के लिए उस परमात्मा की असीम दया-कृपा से सूफी सन्तों का शुभागमन हमारे देश में हुआ, जिन्होंने हमारे प्रचीन मुनियों की उस गुह्य अध्यात्म विद्या को ऐसे सरल एवं सहज रूप में लोगों के बीच

प्रस्तुत किया कि हजारों की संख्या में लोग इन सूफी सन्तों की ओर आकृष्ट होने लगे। यहाँ यह स्वाभाविक जिज्ञासा उत्पन्न होती है कि सूफी सन्तों द्वारा प्रतिपादित इस अध्यात्म विद्या की क्या विशेषताएँ हैं, जिनके कारण यह गुह्य एवं दुरूह विद्या इतनी लोकप्रिय हो गई। सर्व-प्रथम अधिकांश मुसलमान सूफी सन्तों ने सांसारिक गृहस्थ जीवन व्यतीत करते हुए अपनी साधना को इस बुलन्दी तक पहुँचाया कि हमारे प्राचीन आर्य ऋषियों-मुनियों ने अति कठिन योग साधना द्वारा जिस "शक्तिपात" (तवज्जोह) की प्रक्रिया से 'कुंडलिनी शक्ति' जागृत करने की साधना पद्धति का आविष्कार किया था उसे इन सूफी सन्तों ने इतना सहज और सर्वग्राही बना दिया कि कोई भी सांसारिक गृहस्थ जीवन व्यतीत करने वाला व्यक्ति भी इन सूफी सन्तों के सतसंग मात्र से ही उनकी 'तवज्जोह' (शक्तिपात की प्रक्रिया) से अपने अन्दर छिपी हुई उस असीम चेतना शक्ति जिसे 'कुंडलिनी शक्ति' कहते हैं, जागृत होने पर अपने जीवन के चरम लक्ष्य को बड़े ही सहज रूप में प्राप्त कर लेता है। दूसरी विशेषता सूफी मत की साधना पद्धति में यह थी कि यद्यपि प्राचीन योग साधना पद्धति में शक्तिपात (तवज्जोह) द्वारा कुंडलिनी शक्ति जागृत कर सालिक (साधना) को ऊँची से ऊँची आध्यात्मिक स्थितियों तक पहुँचा दिया जाता था, परन्तु इन सभी अनुपम अनुभूतियों में अहंकार उत्पन्न होने तथा उससे साधक के अधोपतन का भय रहता था। अतः इस सूक्ष्म अहंकार से बचने के लिए सूफी सन्तों ने अपनी साधना पद्धति में 'इश्क हकीकी' (ईश्वर से प्रेम) का जिस प्रकार समावेश किया वह अपने में इतना अनुपम एवं अद्वितीय था कि आज अपनी इसी विशेषता के कारण सूफी सन्त मत ने संसार के अध्यात्म व काव्य-साहित्य के क्षेत्र में अपना एक विशिष्ट स्थान प्राप्त कर लिया है।

तीसरी विशेषता सूफी सन्त मत की साधना पद्धति की यह है कि इसमें नफ्स कुशी (इन्द्रिय संयम) के साथ ही साथ अत्यधिक महत्व

'खुदी' (अहंकार) को मिटाने पर दिया गया है। इस सात्विक अहंकार की माया इतना भीनी और सूक्ष्म होती है कि इससे बड़े-बड़े ऋषि-मुनि, सन्त, महात्मा हर क्षण अपने को प्रभु की अहेतुकी कृपा पर पूर्ण रूप से समर्पित किये बिना इस खुदी के शैतान से मुक्त नहीं हो पाते। इसीलिए एक सूफी सन्त ने यह फरमाया है कि मुतकब्बिर इबादती अहंकारी उपासक) से नादिम गुनहगार (जो अपने गुनाहों के लिए लज्जित और शर्मिन्दा होता है) बेहतर है। चौथी विशेषता यह कि सूफी मत की साधना का विशाल भवन 'सतगुरु' की मुहबत (सतसंग), मुताबअत (अनुकरण तथा आज्ञा पालन) और उसकी तवज्जोह की दृढ़ बुनियाद पर निर्मित है। यद्यपि इस मार्ग में सालिक (साधक) को साधना के रूप में 'जिक्र (नाम जप) तथा मराकबा (ध्यान) आदि कुछ क्रियायें करने के लिए 'सतगुरु' द्वारा उचित निर्देशन दिया जाता है, परन्तु प्रायः यह भी देखा गया है कि मात्र सतगुरुदेव के सतसंग एवं तवज्जोह से ही उक्त क्रियायें अपने आप होती रहती है और साधक को अपनी ओर से कुछ भी नहीं करना पड़ता। जब पूर्ण समर्थ सतगुरु अपनी तवज्जोह से अपने शिष्य का कल्ब (हृदय चक्र) जाकिर (जागृत) कर देता है तो उस समय दिल में यह तौफीक (सामर्थ्य) पैदा हो जाती है कि अन्दर ही अन्दर हृदय से हर क्षण ईश्वर का नामजप होता रहता है और साधक बाहर से बिना किसी व्यवधान के अपने सांसारिक कार्यों एवं व्यवहारों में लगा रहता है। इसी प्रकार मात्र सतगुरुदेव के ध्यान से जिसे 'तसव्वुरे शैख' कहते हैं, सालिक 'मराकबा' की स्थिति में पहुँच जाता है। सूफी सन्तों का यह 'मराकबा' (ध्यान) योग साधना के ध्यान से इस रूप में भिन्न है कि मराकबा में अष्टांग योग की 'धारणा, ध्यान और समाधि' यह तीनों ही स्थितियाँ सालिक को अपने सतगुरुदेव की कृपा से अति सहज रूप में सुलभ होती रहती हैं और प्रायः यह भी होता है कि मात्र सतगुरुदेव के सतसंग में ही तमाम रूहानी मुकामात (आध्यात्मिक स्थितियाँ) अपने आप तय होते रहते है और सालिक 'फना' से आगे

'बका' के आला मुकाम तक पहुँच जाता है। अपने वुजूद (अस्तित्व) का परमात्मा तथा सतगुरुदेव के वुजूद में लय होने को फना कहते हैं। फना की दो किस्में होती हैं–फनाफिश्शेख (सतगुरुदेव के अस्तित्व में अपना अस्तित्व लय होना) और फनाफिल्लाह (ईश्वर के अस्तित्व में अपना अस्तित्व लय होना), और जब इस फना की हालत में इस्तकामत (दृढ़ता), निरन्तरता तथा हमेशगी आ जाती है तो ईश्वर तथा सतगुरुदेव की अहेतुकी दया-कृपा से सालिक को 'फना' से आगे 'बका' की हालत हासिल हो जाती है। इसी 'बका' की अनुपम आध्यात्मिक स्थिति में जीवात्मा परमात्मा में लय होकर उसी में रम जाती है। इसी को सन्त कबीर ने 'सहज समाधि' कहा है। इस मार्ग में पूर्ण समर्थ सतगुरु मानव जीवन के इस चरम लक्ष्य को प्राप्त कराने के लिये अपने शिष्यों के जन्म-जन्मान्तर के संचित संस्कारों के कलुष को किस प्रकार धोता है, उनके घोर कष्टों की तीव्रता को स्वयं भोगकर उन कष्टों से किस प्रकार रक्षा करता है तथा शिष्यों के पूर्व संचित संस्कारों के भोग-क्रम को किस प्रकार तरतीब देकर उनको हल्का बनाता है ये सभी ऐसी अनुपम एवं वर्णनातीत घटनाएँ हैं जो हर सालिक (साधक) के जीवन में घटित होती रहती हैं। इस मार्ग में पूर्ण समर्थ सतगुरु अपना पार्थिव शरीर त्यागने के बाद भी और अधिक व्यापक प्रभाव एवं सरगर्मी से अपने शिष्यों को अपनी असीम आध्यात्मिक शक्ति से फैजयाब करता हुआ उनकी मंजिले मकसूद तक पहुँचता है। पूर्ण समर्थ सतगुरु महात्मा रघुबर दयाल जी महाराज (परमपूज्य चच्चा जी महाराज) ने सतगुरु की इस महान सामर्थ्य का वर्णन करते हुए अपने एक परम शिष्य को एक पत्र लिखा था जिसकी निम्नांकित पंक्तियाँ उल्लेखनीय हैं :—

… … अतः जो कम से कम मृत्यु लोक में गुरु धारण कर लेता है, उपर्युक्त तीनों लोकों (मृत्युलोक, काम लोक, स्वर्ग लोक) के बन्धनों से छूट जाता है। परन्तु शर्त यह रहती है कि जब वह (शिष्य) गुरु

स्वीकार कर लेता है तो उससे यदि कुछ न बन सके तो जो हालतें या आदतें या विचार जैसे बन गए हैं उनमें कमी न कर सके और अपनी मानसिक स्थिति का सुधार वह अपनी इच्छा या अनिच्छा के कारण न कर सके, परन्तु यदि इतना श्रद्धा और विश्वास उसमें टिका रहे कि कुछ हर्ज नहीं, भले ही मुझसे यदि कुछ नहीं बन पड़ा तो भी मेरे गुरु महाराज वास्तविक रूप से परिपूर्ण, सिद्ध और समर्थ सतगुरु हैं, वह मुझे अवश्य ही पार कर सकेंगे, तो मेरे विचार से अटल प्राकृतिक नियमों के अनुसार जो प्राचीन महर्षियों के द्वारा प्रकट होते रहे हैं कम से कम इन ऊपर के लिखे तीन लोकों से छुड़ाकर श्री गुरुदेव महाराज जी के अनुग्रह से चौथे लोक (सूर्य लोक) में परमात्मा पहुँचा देगा और वहाँ भी उनका वही गुरु होगा जो मृत्यु लोक में था। वही गुरु शेष चारों लोकों आदि (सूर्य लोक, जन लोक, तप लोक, सत लोक) से पार करता हुआ अनन्त काल के लिए उसमें मिला देगा जहाँ से आवागमन नहीं होता।

परम पूज्य चच्चा जी महाराज के उपरोक्त गूढ़ वचन 'सतगुरु' की अपार महिमा पर प्रकाश डालने के लिए पूर्ण रूप से पर्याप्त है। तभी तो सन्त कबीर ने 'सतगुरु' को महिमा इस प्रकार प्रकट की है—

'गुरु गोविन्द दोऊ खड़े काके लागूँ पाय,
बलिहारी गुरु आपकी जो गोविन्द दियो बताय।'

उक्त विवरण से यह तथ्य स्पष्ट रूप से समझ में आ जाता है कि सूफी सन्त मत की यह गुह्य एवं अद्वितीय रूहानी विद्या कितनी सार-गर्भित, प्रभाकारी तथा लोक कल्याणकारी भावना से ओत प्रोत है तथा हम सांसारिक प्राणियों को जो अपना सहज गुहस्थ जीवन व्यतीत कर रहे हैं, बिना किसी तपस्या एवं कठिन योग साधना के हमारे जीवन के चरम लक्ष्य की प्राप्ति में किस प्रकार सहायक सिद्ध हो रही है। इस स्थल पर यह तुच्छ लेखक बड़े ही संकोच एवं विनीत भावना से निवेदन करना चाहता है कि इस विद्या

के प्रसार में यह भी देखने में आ रहा है कि हमारे बहुत से सतसंगी भाइयों को यह भी ज्ञात नहीं है कि यह गुह्य आध्यात्मिक विद्या हमको कहाँ से मिल रही है तथा हम सभी को इस रूहानी निस्वत से फैज़याब करने वाली वह कौन सी गुरु परम्परा है ? कदाचित हम यह भूल रहे हैं कि आज यह अनमोल आध्यात्म विद्या का जो विशाल हरा-भरा वृक्ष दिखलाई पड़ रहा है, जो हजारों सुगंधित एवं रंगबिरंगे फूलों तथा अमृत तुल्य मोठे फलों से आच्छादित है, उसकी जड़ों को यदि बराबर खाद पानी से सींचा न गया तो उसका क्या परिणाम होगा, इसे वह परमपिता परमात्मा ही बेहतर जानता है। इस विशाल वृक्ष की जड़ों का खाद-पानी क्या है ? वह है सूफी मत के 'नक्शबन्दिया सिलसिले' की महान पाक हस्तियों की प्रेम, श्रद्धा, कृतज्ञता एवं पूर्ण निष्ठा के साथ मुताबअत (पैरवी, अनुकरण)। यदि हमने इन महापुरुषों के ज़िक्र को और हमारे साथ किए जा रहे इनके एहसान को पोशीदा रखा, तो यकीन रक्खें, उस अटल दैवी विधान के अन्तर्गत इस रूहानी दरख्त को सूखने में भी देर नहीं लगेगी। एक सूफी सन्त का यह कथन कितना सत्य है कि "अल्लाह तआला बड़ा क़ुदरत वाला है (महान सामर्थ्यवान है)। वह एक क्षण में मुन्तही (अतिम मुकाम को पहुँचे हुए सालिक) को मुब्तदी (आरम्भिक स्थिति वाला सालिक) और मुब्तदी को मुन्तही बना सकता है।" सूफी सन्तों की इस साधना पद्धति में निज पुरुषार्थ का कोई विशेष महत्व नहीं है। यहाँ तो ऊँची से ऊँची आध्यात्मिक स्थिति ईश्वरकृपा और गुरु कृपा से ही सुलभ हो पाती है। अतः हम सभी भाइयों का यह पुनीत कर्तव्य है कि हम अपनी गुरु परम्परा (नक्शबन्दिया सिलसिले) के परमपूज्य सतगुरुजनों का पावन जीवन चरित्र एव उनके उपदेशों को अपने सतगुरुदेव तथा सतसंगी भाइयों से अति प्रेम एवं श्रद्धा के साथ सुनें और इस गुरु परम्परा की पुस्तकों का भी अपने पूज्य गुरुदेव की आज्ञानुसार अध्ययन करें और सतसंग में समय-समय पर इनका जिक्र करें। ऐसा करते हुए हम सभी को परमपिता परमात्मा से यह आर्द्र अराधना भी करते रहना चाहिए कि

वह अपनी असीम दया कृपा से हम सभी को ऐसा सामर्थ्य प्रदान करें कि हम अपनी गुरु परम्परा की इन महान पाक हस्तियों के जीवन चरित्र एवं उपदेशों से प्रेरणा प्राप्त कर इनके पद चिह्नों पर चलते हुए इन्हीं महापुरुषों के आशीर्वाद से अपने जीवन के चरम लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल हो सकें।

इस पवित्र ग्रन्थ की रचना में जिन-जिन पुस्तकों का अध्ययन किया गया है उन सभी की सन्दर्भ-तालिका इस ग्रन्थ के अन्त में परिशिष्ट के रूप में दे दी गई है। इस ग्रन्थ का प्रकाशन दो भागों में किया जा रहा है। प्रस्तुत प्रथम भाग में हजरत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से लेकर हजरत ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शबन्द (रहमतुल्लाहु अलैहि) तक के सतगुरुजनों के हालात दिये जा रहे हैं। दूसरे भाग में शेष महापुरुषों के हालात शिज्रः के अनुसार (ईश्वर इच्छा से) प्रकाशित किये जायेंगे। इस ग्रन्थ की रचना में इस तुच्छ लेखक की अज्ञानता के कारण त्रुटियाँ होना स्वाभाविक है। अतः पूज्य पाठकगण इन त्रुटियों के लिए इस अकिंचन लेखक को क्षमा प्रदान करते हुए उन्हें अपने स्तर पर सुधारने तथा इस लेखक को सूचित करने की कृपा करेंगे। इस ग्रन्थ की पाण्डुलिपि के तैयार करने में तथा इसके टंकण, मुद्रण एवं प्रकाशन में जिन जिन प्रेमी सतसंगी भाइयों तथा महानुभावों ने सहयोग प्रदान किया है उन सभी के प्रति यह तुच्छ लेखक अपना हार्दिक आभार प्रकट करते हुए परमपिता परमात्मा से यही प्रार्थना करता है कि वह इन सभी पूज्यनीय सतसंगी भाइयों तथा आदरणीय महानुभावों को मेरे साथ किए गए उनके इस महान उपकार का नेक बदला अता फरमाते हुए उन सभी को तथा उनके परिवार वालों को हर प्रकार से सुखी एवं प्रसन्न रखें और उन्हें अपनी दया कृपा और भक्ति प्रदान करें। आमीन।

विनीत,

बाल कुमार खरे

परमपूज्य सतगुरुजनों का चरणरज सेवक

बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

(शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो कृपाशील और दयावान है)

हालात हजरत मुहम्मद मुस्तफा सल्ल०

जन्म और पालन पोषण—

जो हदीसें[1] खुद हजरत मुहम्मद (सल्ल०) से सुनी गई हैं उनसे यह साबित है कि आपका नूर (प्रकाश) अल्लाहतआला ने सबसे पहले पैदा किया। लेकिन इसका जहूर (प्रकटोकरण) इस दुनिया में बारह रबीउल अव्वल, सोमवार को, तदानुसार ११ नवम्बर ५६९ ई० को मक्के में हुआ। अर्थात् इस पुण्य तिथि को हजरत मुहम्मद (सल्ल०) का शुभ जन्म हुआ। जब आप गर्भ में थे आपकी पूज्य माता जी ने स्वप्न में देखा कि एक शख्स कहता है कि तेरे गर्भ में एक ऐसा शख्स है जो दुनिया का सरदार है, जब पैदा हो नाम उसका मुहम्मद (सल्ल०) रखना। फिर आपके जन्म के समय आपकी पूज्य माताजी ने देखा कि एक नूर उनसे निकला जिसके प्रकाश में उनको शाम मुल्क के मकान दिखलाई पड़े। हजरत उस्मान बिन[2] अबिल आस की माता जी फातमा बिन्त (पुत्री) अब्दुल्लाह ने बतलाया कि हजरत मुहम्मद (सल्ल०) का जन्म रात्रि में जिस महान शुभ घड़ी में हुआ उस समय में आपकी पूज्य

---

१. हदीस— हजरत मुहम्द (सल्ल०) की फरमाई हुई बात को हदीस कहते हैं।

२—'बिन' का अर्थ होता है 'पुत्र'। अरब में यह रिवाज था कि किसी शख्स के नाम के साथ 'बिन' लगाकर उनके पिता का नाम भी लिखा जाता था।

माताजी हजरत आमिना के पास थीं। मैने देखा कि आसमान से सितारे लटक आये और हरम (मक्के आस-पास) की जमीन से इतने नजदीक हो गये कि मालूम होता था कि जमीन में गिर पड़ेंगे।

सात रोज तक आपने अपनी पूज्य माता जी का दूध पिया। इसके बाद शोबिया अबूलहब की लौंडी (नौकरानी) ने पिलाया। हजरत (सल्ल०) के वंश का नाम कुरैश था। कुरैश अरब का एक प्रमुख वंश था जो तमाम वंशों में इज्जत वाला था। इस वंश के लोगों का दस्तूर था कि अपने लड़कों को शहर के नजदीक वाले गाँवों की दूध पिलाने वाली औरतों को दे दिया करते थे और लड़कों को अपने घर ले जाया करती थीं। बच्चे के माता-पिता उनको नकद, अनाज व अन्य चीजें देकर खुश कर देते थे। लेकिन चूँकि आपकी उम्र दो ही माह की थी कि आपके पूज्य पिताजी हजरत अब्दुल्लाह बिन अब्दुल मुत्तलिब का शरीरान्त हो गया, इस वजह से आपको अनाथ समझकर कोई दूध पिलाने वाली आपको ले जाने के लिए तैयार न हुई, परन्तु यह महान पवित्र सेवा हजरत हलीमा सादिया की किस्मत में थी और वह आपको अपने वतन तायफ में दूध पिलाने को ले गई। आपके तशरीफ ले जाने के बाद हजरत हलीमा (रजि०) के घर में निहायत फराखी (बढ़ोत्तरी) हुई। आप दाहिने स्तन का दूध पिया करते थे और बायें स्तन का दूध अपने बिरादर रजाई (दूध भाई) के वास्ते छोड़ देते थे और यह मानो आपका कुदरती इन्साफ था। आपने कभी पेशाब व पखाना कपड़े पर नहीं किया। बल्कि उसके वक्त मुकर्रर थे। उस वक्त उठाकर आपको पेशाब व पाखाना करा लिया जाता था। आपका बदन कभी नंगा नहीं होता था और अगर इत्तफाकन कभी होता तो उसको फरिश्ते छिपा देते थे।

जब आप पाँव चलने लगे और दो बरस के हुए, आप हजरत हलीमा (रजि०) के लड़कों के साथ जंगल को जहाँ उनके मवेशी चरते थे तशरीफ ले जाते थे। एक दिन आप वहीं तशरीफ रखते थे कि दो फरिश्ते आये

और उन्होंने आपको चट उठाकर आपके सीने मुबारक को नाभि तक चीर दिया और दिल मुबारक को निकालर धोया और उसको सीने से एक चीज आलिमे कुद्स की बसूरत पिसी हुई दवा के थी भर दिया और फिर उसी जगह रखकर कटे हुए सीने को सी दिया और ज़रा भी तकलीफ आपको मालूम न हुई। यह हाल हजरत हलीमा (रजि०) के बेटे ने देखा और घर जाकर अपनी माँ से कहा कि 'हमारे मक्का वाले भाई का दो आदमियों ने आकर पेट चीर दिया।' इस बात को सुनकर हलीमा (रजि०) जल्दी वहाँ पहुंची। देखा कि आप बैठे हैं और आपका रंग मुबारक बदला हुआ था। आपसे हाल पूछा। आपने तमाम माज़रा (पूरी घटना) बयान किया। हलीमा सादिया (रजि०) यह हाल आपके दिल मुबारक फटने का सुनकर डरीं और आपको मक्के में आपके घर पहुँचा दिया।

छः वर्ष की उम्र में आपकी पूज्य माताजी का शरीरान्त हो गया। आपके पूज्य दादा (पूज्य पिता जी के पिताजी) हजरत अब्दुल मुत्तलिब ने आपकी परवरिश की। दो वर्ष के बाद आपका भी इन्तकाल हो गया। फिर आपके चाचा हजरत अबू तालिब ने आपका पालन पोषण किया। उन्होंने निहायत मुहब्बत और इज्जत से आपकी परवरिश की। जब आपकी उम्र १०–११ वर्ष की हुई तो आपने अपनी उम्र के लड़कों के साथ बकरियाँ भी चराईं। अरब में अच्छे भले घरानों के लड़के बकरियाँ चराया करते थे। हजरत अबू तालिब व्यापार करते थे। एक बार सीरिया देश की यात्रा पर जाते हुए हजरत मुहम्मद (सल्ल०) भी अपने चचा के साथ एक तिज़ारती सफर पर गए। उस समय आप कोई १२ वर्ष के थे।

सामूहिक कार्यों से लगाव

उस जमाने में अरब के अनेक कबीलों में नित्य लड़ाइयाँ होती रहती थीं, जिसके कारण लोग बहुत व्याकुल थे। आखिर तंग आकर कुछ भले

लोगों ने अनेक कबीलों में इस बात का एक समझौता कराया कि देश से अशांति दूर की जाय, यात्रियों की रक्षा की जाय, निर्धनों और उत्पीड़ितों की सहायता की जाय और अन्यायियों को मक्के में न रहने दिया जाय। इस समझौते में हजरत मुहम्मद (सल्ल०) भी शरीक थे।

एक बार मक्के में वर्षा कुछ ज्यादा हुई जिससे 'काबे' के पवित्र घर को हानि पहुँची और यह तय किया गया कि फिर से एक मजबूत इमारत बनाई जाय। तमाम वंशों ने मिलकर इमारत का थोड़ा हिस्सा बनाया परन्तु जब उस मान्य काले पत्थर को जिसे 'हजरे असवद' कहते हैं, उसके स्थान पर रखने का प्रश्न आया तो यह झगड़ा उठ खड़ा हुआ कि कौन उस पत्थर को उसके स्थान पर रखे। हर वंश यही चाहता था कि यह पवित्र कार्य हम करें। झगड़ा इतना बढ़ा कि खून खराबे का डर पैदा हो गया और जब कई दिन तक इस बात का निर्णय नहीं हुआ, तो सबने यह बात स्वीकार कर ली कि अच्छा कल सबेरे जो व्यक्ति सबसे पहले आये उसी से निर्णय करा लिया जाय। ईश्वर की कुछ ऐसी कृपा हुई कि दूसरे दिन सबसे पहले हजरत मुहम्मद (सल्ल०) ही दिखाई पड़े। आपने इस झगड़े को निपटाने के लिए यह उपाय किया कि एक चादर बिछाकर 'हजरे असवद' को उस पर रखा और हर कबीले के सरदारों को बुलाकर कहा कि सब मिलकर चादर के कोने पकड़ लें और चादर को उपर उठायें। जब पत्थर उस स्थान तक ऊँचा हो गया, जहाँ उसे रखना था, तो हजरत ने उसे अपने हाथ से उठाकर रख दिया।

व्यापार

उस जमाने में अरबों का मुख्य काम व्यापार था, विशेष रूप से कुरैश व्यापार का ही काम करते थे। जब आप जवान हुए तो आपने भी यही काम शुरू किया। कारोबारी मामलों में आप इतने खरे, सच्चे

और ईमानदार थे कि थोड़े ही दिनों में सब लोग आप पर भरोसा करने लगे। हर व्यक्ति चाहता था कि व्यापार में अपनी पूँजी शिरकत (हिस्सेदारी) के लिए आपको दे दें। मामले के साफ, बड़े सच्चे और बहुत ईमानदार थे। इसके कारण लोग आपका बड़ा आदर किया करते थे और साधारणतः लोग आपको 'सादिक' (सच्चा) और 'अमीन' (अमानतदार) के नाम से याद करते थे।

विवाह

अभी आपकी उम्र २५ वर्ष की हुई थी कि तमाम लोगों में आप अपनी नेकी, सच्चाई और अमानतदारी के कारण प्रसिद्ध हो गए। इसी जमाने में आपकी शुहरत सुनकर कुरेश की एक मान्या और धनी महिला हजरत खदीजतुल कुबरा (हजरत खदीजा) ने भी आपको अपनी व्यापारिक सामग्री देकर यात्रा पर भेजा। जब आप वापस आये तो हजरत खदीजतुल कुबरा ने आपके मामले में अपने गुमान (धारणा) से अधिक सिद्क (सच्चाई) व सफाई पायी। इसके अलावा हजरत खदीजतुल कुबरा के गुलाम ने जो आपके साथ गया था उनके बहुत से मोजिजे (चत्मकार) जो सफर में देखे थे खदीजतुल कुबरा से बयान किये। हजरत खदीजा पहले विवाह के बाद विधवा हो गई थी। इसके बाद उन्होंने दूसरा विवाह किया था, परन्तु कुछ समय के बाद दूसरे पति भी सिधार गए और अब वह फिर विधवा थीं। इस समय हजरत खदीजा की उम्र ४० वर्ष की थी। हजरत खदीजा हजरत मुहम्मद (सल्ल०) के काम, उनकी सच्चाई और ईमानदारी से बहुत प्रभावित हुईं और आपको शादी का पैगाम दिया, आपने स्वीकार कर लिया। शादी के समय हजरत खदीजा के पहले दो पतियों से दो लड़के और एक लड़की मौजूद थे। विवाह के बाद हजरत खदीजा २६ वर्ष तक जिन्दा रहीं और इस जमाने में हजरत (सल्ल०) ने किसी दूसरी स्त्री से विवाह नहीं किया।

मक्के में

पहली वह्य[1] (वही)—

अपने इस व्यापारिक और पारिवारिक जीवन में भी हजरत मुहम्मद (सल्ल०) दूसरे लोगों की तरह केवल व्यापारी बनकर न रह गये थे बल्कि आप अपने मन में सदा दूसरी समस्याओं पर भी विचार करते रहते थे। आप अपने देश वालों के दंगे फसाद वाले जीवन से बड़े खिन्न थे और यह देखकर उन्हें बहुत दुःख होता था कि लोगों का आचरण और व्यवहार बहुत खराब है। विशेषकर शिर्क[2] और मूर्ति पूजा से आपको बड़ी घृणा थी और बराबर सोचा करते थे कि लोगों की इन बुराइयों को कैसे दूर किया जाय। जब भी आपको मौका मिलता आप एकान्त में बैठकर एक अल्लाह का ध्यान करते और उसी की याद में समय बिताते। विशेषकर 'रमजान' के महीने में आप आबादी से दूर निकल जाते और वहाँ एकान्त में बैठकर अल्लाह का ध्यान करते। इस काम के लिए मक्के से कोई तीन मील दूर पहाड़ी की एक गुफा में जिसका नाम 'हिरा' है जा बैठते और कई-कई दिन अल्लाह की याद में लगे रहते। एक बार रमजान का महीना था, वहाँ आठ रबीउल अव्वल दो शंबः (इतवार) के रोज हजरत जिब्रील अलेहिस्सलाम आपके पास आये और 'वह्य' लाये और आपसे कहा पढ़ो। आपने कहा मैं ख्वांदा (पढ़ा हुआ) नहीं हूँ। फिर उन्होंने आपसे मुआनकः करके (गले मिलकर)

१—वह्य—आकाशवाणी, ईश्वरीय संकेत। ईश्वर की ओर से आया हुआ पैगम्बर के लिए आदेश।

२—शिर्क—अनेकेश्वरवाद। किसी को अल्लाह का शरीक ठहराना। अल्लाह की सत्ता, उसके गुणों, उसके अधिकारों और स्वत्व में किसी को शरीक समझना।

आपको खूब दबोचा और छोड़कर फरमाया कि अब पढ़ो। आपने फिर कहा मैं ख्वांदा नहीं हूँ। फिर जिब्रील अलैहिस्सलाम ने खूब जोर से दबोचा। चुनान्चे यह मामला तीन मरतबा हुआ। फिर 'इकरा अबिस्म रब्बे कल्लजो खलक मालम यालम' (ऐ मुहम्मद, अपने उस अल्लाह के नाम से पढ़ो जिसने पैदा किया और इन्सान को वह बातें सिखाई जो वह नहीं जानता था) तक पढ़ाई। वह्य के नुजूल (उतरने) के कारण आपके बदन को तकलीफ हुई। आप इस घटना के तुरन्त बाद घर आ गए। उस समय आपका दिल काँप रहा था। हजरत खदीजा से कहा 'मुझे कम्बल उढ़ा दो।' आपको कम्बल उढ़ा दिया गया। जब आपको कुछ शान्ति हुई तो आपने हजरत खदीजा को सारा हाल सुनाया और कहा, 'मुझे अपनी जान का खतरा है।, हजरत खदीजा ने कहा, 'नहीं, कभी नहीं, अल्लाह आपको रुसवा नहीं करेगा, आप संबंधियों का हक अदा करते हैं, लोगों के बोझ आप स्वयं उठाते हैं। फकीरों और अनाथों को आप सहायता करते हैं, मुसाफिरों की मेहमान की तरह आवभगत करते हैं। न्याय के लिए आप लोगों की कठिनाइयों में काम आते हैं।' इसके बाद हजरत खदीजा आपको एक बूढ़े ईसाई वरका बिन नौफल के पास ले गई, जिसने सारा हाल सुनकर कहा यह वही फरिश्ता है जो हजरत मूसा के पास आया और मुझे विश्वास है कि आपको अल्लाह ने अपना रसूल बनाया है।

'वह्य' का सिलसिला शुरू हुआ—

इसके बाद आप लगातार हिरा नामक गुफा में जाते रहे, परन्तु लगभग ६ महीने तक कोई 'वह्य' नहीं आई। उसके बाद 'वह्य' का सिलसिला शुरू हुआ। दूसरी वह्य यह थी :—

'हे कमली ओढ़ने वाले ! उठ (और लोगों को गुमराही के नतीजे से) डरा और अपने रब की महानता बखान और अपने वस्त्र को पाक कर

और नापाकी से दूर रह और अधिक प्राप्त करने के इरादे से किसी के साथ उपकार मत कर और अपने 'रब' के मामले में सब्र से काम ले।' (सूरा ७४, आयत १—७)।

इस प्रकार आप 'नबूवत' (पैगम्बर, अवतार) के कार्य पर लगा दिये गए और भटकी हुई मानव जाति को कल्याण का सीधा मार्ग दिखाने का काम आपके जिम्मे कर दिया गया। अब यहाँ से हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के जीवन का धर्म प्रचार काल आरम्भ होता है। इसका एक भाग तो वह है जो तेरह वर्ष तक मक्के में बीता और दूसरा वह जो १० वर्ष तक मदीने में रहा।

मक्के का धर्म प्रचार काल

प्रचार का वह समय जो मक्के में बीता अपने परिणामों की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है। इसी जमाने में मानवता के ऐसे-ऐसे ऊँचे नमूने तैयार हुए जिन्होंने इस्लामी आन्दोलन का सारे विश्व में परिचय कराया। कुरआन शरीफ का बड़ा हिस्सा इसी जमाने में उतरा। इसके आरम्भ के तीन सालों में आप अपने सगे संबंधियों, परिवार वालों और मित्रों को इस्लाम की शिक्षा गुप्त रूप से देते रहे। सबसे पहले आपकी पत्नी हजरत खदीजा (रजि०) 'ईमान' लाईं, इसके बाद नवजवानों में हजरत अली (रजि०), ज्यादा उम्र वालों में हजरत अबूवक्र सिद्दीक (रजि०) और सेवकों में हजरत जैद बिन हारिसा 'ईमान'[1] लाये। इसके बाद हजरत अबूबक्र सिद्दीक (रजि०) की प्रेरणा से हजरत उस्मान बिन अफ्फान व अब्दुल रहमान बिन आफ व साद बिन वकास व जुबैर व तलहा रजिअल्लाह तआला अनहुम ने इस्लाम स्वीकार किया। जब आयते 'फासदः बेमातूमर' नाजिल हुई "फस्द बेमातूमर" (यानी जो तुम्हें हुक्म है उसको साफ-साफ

१—'ईमान' उन बातों को मानना और स्वीकार करना जिन्हें मानने की शिक्षा इस्लाम ने दी है।

खुल्लमखुल्ला बयान करो), तब आपने खुलकर लोगों को एक अल्लाह को दासता स्वीकार करने और बुतों (मूर्तियों) तथा दूसरे पूज्यों के इन्कार करने का आमन्त्रण देना आरम्भ किया, लगभग दो साल तक यह काम होता रहा। इस मुद्दत में कुफ्फार[२] आपके दुश्मन हो गए और तरह तरह से आपको कष्ट पहुँचाने लगे। मक्के के सरदारों ने अपने निर्णय के अनुसार इस्लामी आन्दोलन को नष्ट करने के लिए कमर बाँध ली और उस समय तक जो लोग मुसलमान हो चुके थे उनको हर तरह से सताने का निर्णय कर लिया। इस जमाने में मक्के वालों ने नव-मुस्लिमों को जिस-जिस तरह सताया उसकी जो घटनाएँ इतिहास में सुरक्षित रह गई हैं उनको पढ़िये तो रोंगटे खड़े हो जाते हैं। अरब जैसे गरम देश की तेज धूप में दोपहर के समय जलती हुई रेत पर मुसलमानों को लिटाना, उनके सीनों पर भारी पत्थर रखकर दबाना, लोहा गर्म करके दाग देना, पानी में डुबकियाँ देना, बहुत बेदर्दी से मारना पीटना, तात्पर्य यह कि इस प्रकार के बहुत से अत्याचारों का विवरण इतिहास में मौजूद है। परन्तु विशेष बात यह है कि इन तमाम अत्याचारों और कष्टों के बावजूद किसी ऐसे उदाहरण का उल्लेख नहीं मिलता कि किसी नव मुस्लिम ने इन कष्टों से परेशान होकर इस्लाम छोड़ दिया हो, हर एक की दृष्टि 'आखिरत' (परलोक) के जीवन पर जमी हुई थी और हर एक यह समझता था कि इस जीवन की जो मुसीबत भी है अस्थाई है और अगर इसे सह लिया गया तो उस शाश्वत (सदा रहने वाले) जीवन में हमारा स्वामी हमसे प्रसन्न हो जायगा और फिर हर प्रकार की नेमतें हमारे लिए होंगी।

२—'कुफ्फार' काफिर का बहु-वचन, जिसका अर्थ होता है वह व्यक्ति जो उन सच्चाइयों को मानने और स्वीकार करने से इन्कार करता है जिनकी शिक्षा इस्लाम में दी गई है।

हबशा की पहली हिजरत[1]

इसी जमाने में जब हजरत मुहम्मद (सल्ल०) ने यह अन्दाज लगाया कि अब यह कुरैश के अत्याचार कम होने वाले नहीं हैं तो आपने कुछ मुसलमानों के विषय में यह निर्णय कर लिया कि वह हबशा चले जायें। हबशा में एक सदाचारी और न्यायशील बादशाह की हुकूमत थी और आपको यह आशा थी कि वहाँ पर मुसलमानों पर अत्याचार नहीं होगा और हो सकता है कि उनके द्वारा हबशा के लोग भी इस्लामी सन्देश से परिचित हो जायें, इसी कारण 'नबूवत' के पाँचवें वर्ष रजब के महीने में पहली बार ग्यारह मर्द और चार औरतें हबशे की ओर चल पड़े।

मक्के के लोगों ने मुसलमानों का पीछा हबशा तक किया। वहाँ पहुँचकर हबशा के बादशाह निजाशी को इन 'मुहाजिरों' (हिजरत करने वालों) के विरुद्ध भड़काया, जिसका असर यह हुआ कि बादशाह ने भरे दरबार में उन्हें बुलाकर बात की और हजरत ईसा के विषय में प्रश्न किये। इस पर मुसलमानों के प्रतिनिधि हजरत जाफर ने कुरआन शरीफ की सूरा मरयम[2] (सूरा १९) पढ़कर सुनाई जो उस समय उतर चुकी थी। साथ ही इस्लाम की शिक्षा संक्षिप्त शब्दों में रखते हुए निजाशी को बताया कि

१—'हिजरत' इस्लामी परिभाषा में केवल अल्लाह के 'दीन' (धर्म) के लिए स्वदेश को छोड़कर किसी ऐसी जगह चले जाना, जहाँ 'दीन' के तकाजे पूरे हो सकें, हिजरत कहलाता है।

२—सूरा मरयम—इस सूरा में एक जगह हजरत ईसामसीह अलैहिस्सलाम और उनकी माता हजरत मरयम का हाल बयान किया गया है। हजरत ईसा मसीह (अलै०) के विषय में ईसाइयों की धारणाओं का खण्डन किया गया है। बताया गया है कि हजरत ईसामसीह अल्लाह के बेटे नहीं बल्कि उसके बन्दे और 'नबी' थे। अल्लाह ने उन्हें अपने चमत्कार से बिना बाप ही के पैदा किया था। अल्लाह सर्वशक्तिमान है, वह जो चाहे

जो लोग इस सन्देश को स्वीकार करते जा रहे हैं उनके जीवन किस प्रकार सुधर रहे हैं। हजरत जाफर की बातें और कुरआन की आयतें सुनकर निजाशी पर बहुत प्रभाव पड़ा। उसकी आँखों से आँसू जारी हो गए और वह बोला अल्लाह की कसम ! यह कलाम और इन्जील (ईसाइयों की मुख्य धार्मिक पुस्तक 'बाइबिल') दोनों एक ही दीप के प्रतिबिम्ब हैं। निजाशी ने हजरत मुहम्मद (सल्ल०) की 'नबूवत' की पुष्टि की और इस्लाम स्वीकार कर लिया। धीरे-धीरे लगभग ८३ मुसलमान हबशा को हिजरत कर गए।

हजरत उमर का इस्लाम लाना

संघर्ष के इस जमाने में विरोधियों को एक धक्का हजरत उमर के ईमान लाने से भी पहुँचा। हजरत उमर इस्लाम के कट्टर विरोधियों में से थे। 'नबूवत' का छठा साल था कि एक दिन हजरत मुहम्मद (सल्ल०) को कत्ल करने के विचार से घर से निकले। रास्ते में उनके एक मित्र मिले। पूछा, 'किधर जा रहे हो ?' बोले, 'आज मुहम्मद (सल्ल०) का काम तमाम करने का इरादा है।' उन्होंने कहा, 'पहले अपने घर की तो खबर लो, तुम्हारी बहन और बहनोई इस्लाम ला चुके हैं। पहले उन्हें तो सीधा करो।' ऐसा सुनते ही हजरत उमर पलटे और बहन के घर पहुँचे। वह कुरआन पढ़ रही थीं। हजरत उमर को आता देखकर कुरआन छिपा लिया। परन्तु हजरत उमर सुन चुके थे कि कुछ पढ़ रही थीं। आते ही पूछा, 'बताओ

कर सकता है। हजरत ईसामसीह लोगों को अल्लाह की इबादत और बन्दगी की ओर बुलाने आये थे, न कि लोग उन्हीं को अपना पूज्य और प्रभु बना लें। वह स्वयम् इस बात के पाबन्द थे कि अल्लाह की बन्दगी में लगे रहें, नमाज और जकात की पाबन्दी करें। परन्तु लोगों ने उनके दिखाये हुए मार्ग को छोड़कर परस्पर विभेद किया और कुफ्र के मार्ग पर चल पड़े।

तुम क्या पढ़ रही थी ? मैंने सुना है कि तुमने मुहम्मद (सल्ल०) का दीन अपना लिया है ?' और यह कहते हुए अपने बहनोई सईद को मारना आरम्भ कर दिया। बहन फातिमा ने देखा तो वह बचाने के लिए दौड़ीं। हजरत उमर ने उन्हें भी घायल कर दिया। जब दोनों घायल हो गए तो उन्होंने कहा, 'देखो उमर ! हम अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान ला चुके हैं और अब काई चीज हमें इस रास्ते से हटा नहीं सकती। तुम्हारा जो जो चाहे कर लो।' इन लोगों के इस दृढ़ संकल्प को देखकर हजरत उमर बहुत प्रभावित हुए। बोले, 'लाओ मुझे भी सुनाओ तुम क्या पढ़ रही थी ?' हजरत फातिमा ने कहा कि यह कलाम अपवित्रता की दशा में नहीं सुनाया जा सकता। पहले स्नान करके आओ। हजरत उमर स्नान करके आये। हजरत फातिमा ने कुरआन का वह हिस्सा सामने लाकर रख दिया। यह सूरा ताहा[२] (सूरा २०) थी। हजरत उमर ने पढ़ना आरम्भ किया। जैसे-जैसे पढ़ते जाते थे यह कलाम दिल में उतरता जाता था। बार-बार कहते, 'कैसा अनोखा कलाम है !' थोड़ी देर बाद कहने लगे 'बिलकुल सच है। अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं।' अब सीधे उठकर हजरत मुहम्मद (सल्ल०) के पास गए और 'ईमान' ले आये।

सामाजिक बहिष्कार

हजरत उमर के ईमान लाने के बाद मुसलमानों की शक्ति में अधिक वृद्धि हो गई। मुसलमान अब तक काबे में जाकर नमाज नहीं पढ़ सकते

२—सूरा 'ताहा'—इस सूरा में 'नमाज' की ताकीद की गई है और उसपर कायम रहने पर बल दिया गया है। यही इस सूरा का केन्द्रीय विषय है। 'नमाज' में वे समस्त विशेषतायें पाई जाती हैं जिनके महत्व पर इस सूरा में प्रकाश डाला गया है और जिनके लिए वास्तव में कुरआन अवतरित हुआ है। अर्थात् अल्लाह का स्मरण, उनकी नेमतों को याद करना और उसकी आयतों पर चिन्तन मनन करना आदि'।

थे। परन्तु अब स्थिति बदल गई थी। हजरत उमर ने साफ एलान कर दिया कि अब मुसलमानों को काबे में नमाज पढ़ने से कोई नहीं रोक सकता। कुरैश के लिए यह घटना बड़ी जटिल थी और वे बराबर विकल हो रहे थे कि अब इस नए आन्दोलन को दबाने के लिए क्या उपाय किया जाये। अतः उन्होंने अब एक और चाल चली। तमाम कबीलों से मिलकर यह समझौता किया कि हजरत मुहम्मद (सल्ल०) और उनके पूरे वंश का सामाजिक बहिष्कार किया जाये। न कोई इनसे मिले और न कोई इनके हाथ कुछ बेचे या खरीदे। यहाँ तक कि इन्हें खाने-पीने का सामान भी न दिया जाये और यह बहिष्कार उस समय तक जारी रहे जब तक मुहम्मद (सल्ल०) के वंश वाले खुद उन्हें कत्ल करने के लिए हवाले न करें। यह अहदनामा (समझौता) लिखकर काबे के दरवाजे पर लटका दिया गया। अब हजरत मुहम्मद (सल्ल०) के वंश (बनी हाशिम) के लिए दो ही रास्ते थे या तो वे हजरत मुहम्मद (सल्ल०) को कुरैश के हवाले करके उन्हें कत्ल हो जाने दें या फिर इस बहिष्कार के कारण जो भी विपत्ति आये उसे सहें। अतः हजरत मुहम्मद (सल्ल०) के चाचा अबू तालिब अपने तमाम परिवार वालों को लेकर पहाड़ के एक दर्रे में जा ठहरे और तीन साल तक बड़ी विपत्तियों का सामना किया। इन लोगों को प्रायः पेड़ों के पत्ते खा-खाकर समय बिताना पड़ता था। यहाँ तक कि सूखा हुआ चमड़ा तक उबाल कर खाने की नौबत आ गई। जब बच्चे भूख से बिलखते तब कुरैश सुन-सुनकर खुश होते। हाँ, किसी दयालु को दया आ जाती तो छिपाकर कुछ खाने को भेज देता। तीन वर्ष तक बनी हाशिम विपत्तियों को सहते और झेलते रहे। आखिरकार आँ हजरत (सल्ल०) को बवही (ईश्वरीय संकेत द्वारा) मालूम हुआ कि इस अहदनामे को कीड़ों ने खा लिया और सिवाय नाम अल्लाह के कुछ बाकी न रहा। आपने इसका जिक्र अपने चाचा अबू तालिब से किया। अबू तालिब ने बाज कुरैश से कहा कि अगर यह सच है तो इतना तो हो कि तुम इस अहदेबद (बुरे इकरार)

से बाज आओ। अतः देखा गया तो वास्तव में इस अहदनामे को कीड़ों ने खा लिया था। अब कुरैश इस जुल्म से बाज आये और वह अहदनामा नष्ट कर डाला।

मक्के के बाहर प्रचार

सामाजिक बहिष्कार समाप्त होने के कुछ दिनों बाद ही नबूवत के दसवें साल आपके चाचा जी हजरत अबू तालिब (रजि०) का देहान्त हो गया और कुछ ही दिनों पीछे हजरत खदीजा (रजि०) भी गुजर गईं। हजरत मुहम्मद (सल्ल०) को इन दोनों के इन्तकाल का बहुत रंज हुआ। हजरत अबू तालिब (रजि०) के देहान्त के बाद मक्के वालों ने अति निर्दयता के साथ बिलकुल निडर होकर हजरत मुहम्मद (सल्ल०) और आपके साथियों को सताना शुरू कर दिया। इस जमाने में हजरत मुहम्मद (सल्ल०) ने मक्के से बाहर जाकर लोगों को अल्लाह का सन्देश पहुँचाना शुरू किया। आप ताइफ भी गये और आपने वहाँ के बड़े और प्रभावकारी लोगों के सामने 'इस्लाम' का सन्देश रखा। इन लोगों ने आपका उपहास किया और बस्ती के गुण्डों और बदमाशों को उभार दिया जिन्होंने हजरत मुहम्मद (सल्ल०) को पत्थर मार-मारकर घायल कर दिया। इस मौके पर भी आपके दिल में अपने विरोधियों के विरुद्ध कोई घृणा और क्रोध पैदा नहीं हुआ, बल्कि आप ऐसे कठिन समय में भी अल्लाह से यही कहते रहे, 'अल्लाह ! तू मेरी जाति को सीधा रास्ता दिखा, ये लोग जानते नहीं हैं, अभी बात समझते नहीं।' इसी जमाने में आप आस-पास की बस्तियों में भी जाते रहे जहाँ मेले लगते थे। वहाँ आपने लोगों को इस्लाम का सन्देश सुनाया। ऐसे मौकों पर जब आप कुरआन के कुछ हिस्से सुनाते तो इनका बहुत प्रभाव पड़ता। कुछ लोग तो कुरआन को सुनकर ही 'ईमान' ले आये। इस प्रकार सारे अरब में इस्लाम की चर्चा होने लगी और दूर-दूर तक आपकी बातें पहुँचने लगीं।

इस्लाम मदीने में

हज्ज के दिनों में हजरत मुहम्मद (सल्ल०) को बहुत से लोगों से मिलने का मौका मिलता। हज्ज के जमाने में आप कबीलों के सरदारों के पास जाते और उन्हें इस्लाम की बातें बताते। 'नबूवत' (पैगम्बर होने) का दसवाँ साल था कि आपने अकबा स्थान के करीब मदीने के कुछ लोगों के सामने इस्लाम का सन्देश रखा और कुरआन की कुछ आयतें सुनाईं। मदीनें में आपकी चर्चा पहले से हो रही थी। मदीने में कुछ यहूदी भी बसते थे। उनके धार्मिक ग्रन्थों में यह लिखा हुआ था कि अल्लाह के एक ओर 'नबी' पधारने वाले हैं। मदीने वालों ने ये बातें सुन रखी थीं। जब उन्होंने मुहम्मद (सल्ल०) की बातें सुनीं तो उन्होंने सोचा कि हो न हो वह 'नबी' यही हैं। उन्होंने यह भी विचार किया कि जब हमारे यहाँ के यहूदी उनकी बातें सुन लेंगे तो वे जरूर मुसलमान हो जायेंगे। हमें उनसे पहल करना चाहिए। कहीं ऐसा न हो कि वे लोग पहले 'ईमान' ले आयें अतः इस मौके पर छः आदमियों ने इस्लाम कुबूल कर लिया।

इधर धीरे-धीरे लोग इस्लाम कुबूल करते जा रहे थे। उधर विरोध तेजी के साथ बढ़ता जा रहा था और बहुत कठिन समय था। किसी प्रकार समझ में न आता था कि आखिरकार इन मुठ्ठी भर मुसलमानों का क्या होगा? और इतने विरोध के होते हुए लोग अल्लाह के दीन को कैसे अपना सकेंगे। यद्यपि मक्के में हालात दिन पर दिन खराब होते जा रहे थे, परन्तु मक्के के बाहर बहुत सी बस्तियों में इस्लाम धीरे-धीरे फैल रहा था और मुसलमानों की संख्या बढ़ रही थी। अकबा के स्थान पर जिन छः आदमियों ने इस्लाम अपनाया था, जब वे लौटकर मदीना गये और सब हाल लोगों को सुनाया तो मदीना को गली-गली व घर-घर हजरत मुहम्मद (सल्ल०) के जिक्र से मुअत्तर हो गया। फलस्वरूप बारह आदमियों की एक मण्डली हजरत मुहम्मद सल्ल० की सेवा में आई। उन लोगों ने आपको बातें सुनीं और इस्लाम कुबूल किया। आपने

उन लोगों के अनुरोध पर मसअब बिन अमीर (रजि०) को इन लोगों के साथ भेज दिया ताकि वह मदीने वालों को घर-घर पहुँचकर कुरआन सुनाएँ और इस्लाम की बातें बतायें। इस प्रकार मदीने में इस्लाम तेजी के साथ फैलता रहा और फल यह निकला कि अगले साल अर्थात् नबूवत के बारहवें साल हज्ज के जमाने में अकबा के स्थान पर ७२ आदमी हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) से मिले और इस्लाम स्वीकार किया और उन्होंने हज़रत को यह वचन दिया कि हम हर हाल में आपका साथ देंगे और जो आपसे लड़ने आयेगा उससे लड़ने में किसी तरह की कोताही न करेंगे।

एक चमत्कारिक घटना (मेराज)[1]

नबूवत की बारहवीं साल आप बतारीख २७ रजब हजरत अमहानी बिन्त अबी तालिब के घर तशरीफ रखते थे कि यकायक छत मकान की फट गई और हजरत जिब्रील अलैहिस्सलाम तशरीफ लाये और आपको उठाकर मस्जिदे हराम (काबा की मस्जिद) में ले गये और वहाँ आपके सीने और पेट को चीरा और आबे जमजम[2] से दिल मुबारक को और सीना और पेट को अन्दर से धोया और सोने का तश्त (थाल) ईमान और हिकमत से भर कर लाये थे उससे आपके दिल को पुर किया (भर दिया) और इसके बाद बुराक (घोड़ा) जो जन्नत (स्वर्ग) से लाये थे आपकी सवारी के वास्ते पेश किया। आप उस पर

१—मेराज—परमब्रह्म लोक का आरोहण। यह अत्यन्त उच्चकोटि की आध्यात्मिक स्थिति है जो अवतारों और पूर्ण सिद्ध सन्तों को ही कभी-कभी सुलभ होती है।

२—आबे जमजम—मक्के का एक कुआं जिसका पानी बहुत ही पवित्र माना जाता है उस कुएँ का पानी आबे जमजम कहलाता है।

सवार होकर मस्जिद अक्सह तशरीफ ले गए। हजरत जिब्रील (अलैहिस्-सलाम) आपके साथ थे। वहाँ अरवाह अम्बिया (अलैहिमुल रिज्वानु-स्सलाम) हाजिर थीं (पैगम्बरों की महान आत्माएँ वहाँ उपस्थित थीं)। आपने इमाम होकर बमूजिब हुक्म अल्लाह तआला दो रकअत नमाज पढ़ाई। इसके बाद आसमान पर तशरीफ ले गये। पहला, दूसरा, तोसरा, चौथा, पाँचवाँ व छठाँ आसमान तय करके सातवें आसमान पर पहुँचे। वहाँ आपने बुराक छोड़ा और रफरफ तेज (अत्यन्त तीव्र गति से से चलने वाले घोड़े) पर जो निहायत रौशन था, सवार होकर आठवें आसमान वगैरह तमाम तय करके ऐसे मुकाम पर पहुँचे जहाँ आपको ऐसा कुर्ब (ईश्वर-सान्निध्य) हासिल हुआ जो न किसी पैगम्बर को और न किसी मलक मुकर्रिब (समीपवर्ती देवता अथवा फरिश्ता) को हुआ था। आपसे अल्लाह तआला ने कलाम किया (बात की) और अपना दीदार दिखाया (दर्शन दिये) और ऐसे उलूम (विद्यायें) व फयूज (उपहार) अता फरमाये कि इसकी किसी को खबर नहीं। अतः कुरआन शरीफ में आया है 'फऔहा इला अब्देही मा औहा' (यानी वही (वह्य) भेजी अल्लाह तआला ने अपने बन्दे पर जो कुछ वही (वह्य) भेजी)। परमात्मा का पूर्ण सान्निध्य, दर्शन, उनसे वार्ता-लाप तथा अनमोल उपहार प्राप्त करने के बाद जब आप वापस तशरीफ लाये, मशहूर है कि आपका बिस्तर मुबारक अभी तक गरम था और कमरे की जंजीरें हिल रही थीं। सुबह जब आपने यह हाल फरमाया कुफ्फार और मजाक उड़ाने लगे। कुछ लोगों ने हजरत अबू बक्र सिद्दीक (रजि०) से कहा कि अब भी तुम मुहम्मद (सल्ल०) को सच्चा कहोगे। वह कहते हैं कि मैं रात मस्जिद अक्सा और तमाम आसमानों को सैर कर आया। अबू बक्र सिद्दीक (रजि०) ने कहा, 'अगर वह यह बात कहते हैं तो बेशक ऐसा ही हुआ होगा और उसी वक्त हजरत मुहम्मद (सल्ल०) की खिदमत में हाजिर हुए। मेराज

का हाल सुनकर उसकी तसदीक की। इसी सबब से हजरत अबू बक्र का नाम 'सिद्दीक' (रजि०) हुआ।

महत्वपूर्ण हिजरत

मक्के में स्थिति कुछ ऐसी पैदा हो गई थी कि इस बात की आशा नहीं की जा सकती थी कि कुछ और लोग 'ईमान' लायेंगे। हालात का दबाव ही कुछ ऐसा था कि अब आम लोगों का इस्लाम की ओर बढ़ना बहुत कठिन था। फिर इधर मुसलमानों को जिन कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा था उनमें रहते हुए वे दीन के तकाजे भी पूरे नहीं कर सकते थे। इसलिए अब हजरत (सल्ल०) ने असहाब को इजाजत दी कि वे मदीना को हिजरत कर जायें। अतः असहाब ने गुप्त रूप से रवाना होना शुरू किया। परन्तु हजरत उमर (रजि०) गले में तलवार लटका कर खाने काबा में आये और तवाफ किया (परिक्रमा की) और उसके बाद कुफ्फार को मुखातिब करके फरमाया 'खराब हों वह जो पत्थरों को पूजा करते हैं और जिनको अपनी बीबी का बेवा (विधवा) करना और अपनी औलाद का यतीम (अनाथ) करना मंजूर हो वह सामना करे।' यह कहकर मदीना रवाना हुए। कुरैश में से किसी का साहस न हुआ कि उनको रोकता। इस प्रकार हजरत अबू बक्र सिद्दीक रजि० व हजरत अली (रजि०) को छोड़कर तमाम सहाबा हिजरत कर गये। हजरत अबू बक्र सिद्दीक (रजि०) से आपने फरमाया कि तुम मेरे साथ चलोगे, चुनान्चे इस खुश खबरी से वह निहायत खुश हुये।

इस बात को मक्के वालों ने बड़ी चिन्ता के साथ देखा और अंतिम उपाय के रूप में हर कबीले के बड़े-बड़े सरदारों ने मिलकर यह तय किया कि हजरत मुहम्मद (सल्ल०) का काम तमाम कर दिया जाय और इस काम के लिये हर कबीले से एक-एक जवान चुना जाय और सब मिलकर एक साथ हजरत मुहम्मद (सल्ल०) पर हमला करें और उन्हें

कत ऽ कर दें। इस दशा में हाशिम वंश वालों के लिए यह सम्भव न रहेगा कि अपने वंश के एक आदमी के खून के बदले में तमाम कबीलों से अकेले लड़ सकें। दुश्मन की इन चालों का पता हजरत मुहम्मद (सल्ल०) को भी चल गया और अल्लाह की ओर से यह हुक्म भी मिल गया कि अब आप मक्का छोड़कर मदीने चले जायँ। एक रात को हजरत (सल्ल०) अपने दौलतखाने में तशरीफ रखते थे कि कुफ्फार ने आकर दरवाजा घेर लिया। आपने हजरत अली (रजि०) को अपनी जगह लिटा दिया और फरमाया कि कुफ्फार तुम्हें ईजा (कष्ट) न पहुँचा सकेंगे। आपके पास जो लोगों की अमानतें थीं वह भी हजरत अली (रजि०) के सुपुर्द कर दीं और उनसे फरमाया कि इन्हें इनके मालिकों के सुपुर्द करके मदीना में आ जाना। यह एक आश्चर्य की बात थी कि इतने विरोध के होते हुए भी विरोधी और दुश्मन यही जानते थे कि हजरत मुहम्मद (सल्ल०) से ज्यादा सच्चा और अमानतदार कोई नहीं और इसलिए वे अपनी अमानतें आपके पास ही रखते थे। हजरत मुहम्मद (सल्ल०) उन अमानतों को हजरत अली (रजि०) को सौंपकर दरवाजे से बाहर निकले और अव्वल सूरा 'फअग शैनाहुम फहुम लायुब सिरून' (हमने उन्हें ढप दिया, अब वह नहीं देख सकते हैं) तक पढ़कर एक मुट्ठी खाक कुफ्फार पर फेंक दीं और आप साफ निकल आये। किसी को खबर न हुई और हजरत अबू बक्र सिद्दीक (रजि०) को उनके घर से उनको साथ लेकर पैदल रवाना हुए। आपने जूता पाँव से निकाल डाला था और अंगुलियों से चलते थे कि निशान मालूम न हों। आपके पैर जख्मी हो गये। तब हजरत अबू बक्र सिद्दीक (रजि०) ने आपको कन्धे पर सवार करके गारे सौर (सौर की गुफा) तक पहुँचा दिया।

इधर दुश्मनों की ओर से अल्लाह के रसूल हजरत मुहम्मद (सल्ल०) की खोज शुरू हुई। आपको खोज में घोड़े दौड़ाये गये। ऊँट सवार भी रवाना हुये। कुछ दुश्मन पैदल ही चल पड़े। दुश्मनों ने सोचा कि अल्लाह

के रसूल मुहम्मद (सल्ल०) मक्का से दूर न पहुँचे होंगे, अगर तेजी के साथ खोज की जाये तो पता लगना कठिन नहीं है। मक्का के करीब की तमाम झाड़ियाँ, आसपास के बगीचे और रास्ते छान मारे, पर पता न चला, यहाँ तक कि दुश्मन सौर की गुफा के ठीक द्वार पर जा पहुँचे। सबसे पहले उनकी चहल पहल सुनाई दी, फिर उनकी बातें करने की आवाज आने लगी। हजरत अबू बक्र सिद्दीक (रजि०) को अत्यन्त चिन्ता हुई कि कहीं ये जालिम गुफा में न चले आयें। बाहर आने-जाने का यही एक मार्ग है, हम कहीं जा भी नहीं सकेंगे। दुश्मन बिलकुल सिर पर थे। हजरत अबू बक्र (रजि०) को अपने से कहीं अधिक चिन्ता हजरत मुहम्मद (सल्ल०) की थी कि दुश्मन कहीं हुजूर को नुकसान न पहुँचायें। उसी समय अल्लाह ने वह्य (वही) भेजी और 'वह्य' के ये शब्द थे— 'ला तहजन इन्नल्लाह मअना' (अर्थात् गम न करो, अल्लाह हम दोनों के साथ है)। अल्लाह के इस कथन को स्वयं नबी (सल्ल०) के मुख से सुनकर अबू बक्र (रजि०) के दिल को ढाढ़स बँधी, चिन्ता धैर्य में बदली, गम जाता रहा और उन्हें यह विश्वास हो गया कि शत्रु हमारा कुछ बिगाड़ नहीं सकते। खुदा की सहायता और समर्थन हमारे भाग्य में लिखा जा चुका है। अतः कुरैश दुश्मन उल्टे पाँव वापस चले गए। उनके मन में यह ख्याल भी न आया कि इस गुफा में जिसका मुहाना छोटी घासों से ढँका है, कोई गया भी है।

तीन दिन तक हजरत मुहम्मद (सल्ल०) और हजरत अबू बक्र (रजि०) सौर की गुफा में छिपे रहे। जब रात का अन्धकार अच्छी तरह फैल जाता तो अबू बक्र सिद्दीक (रजि०) की बेटी अपने घर से रवाना होती और अति सावधानी और गोपनीयता के साथ सौर की गुफा में खाना पहुँचाती। यदि शत्रुओं को सूचना मिल जाती तो उनके जान की खैर न थी। पर अल्लाह के रसूल के लिए उन्होंने किसी खतरे की परवाह न की। सौर की गुफा से रवाना होने की समस्या बड़ी नाजुक थी। यहाँ

से रवाना होने के लिए उपयुक्त मौके की तलाश के लिए कुरैश दुश्मनों की गतिविधियों की सूचना पानी भी जरूरी थी। हजरत अबू बक्र (रजि०) के बेटे अब्दुल्लाह शहर वालों की निगाहों से छिप छिपाकर सौर की गुफा में आते और दुश्मनों के हालात सुनाकर चले जाते। आमिर बिन फुहैरा, जो हजरत आइशा (रजि०) के भाई का गुलाम था, बकरियाँ चराया करता था। वह वहाँ गुफा के पास अपनी बकरियाँ ले आता और हजरत मुहम्मद (सल्ल०) और अबू बक्र सिद्दीक (रजि०) आवश्यकतानुसार दूध ले लेते थे। फिर वह बकरियों के पैरों के निशान मिटा देता कि कहीं इन निशानों के आधार पर खोजते-खोजते कुरैश दुश्मन सौर की गुफा तक न आ जायें। ऐसे नाजुक समय में अति गोपनीयता और बहुत सावधानी की जरूरत थी।

पूरे दो दिन और तीन रातें इसी दशा में बीतीं। कुरैशी दुश्मन गाफिल न थे, उनके लोग बराबर पता लगा रहे थे। आखिर चौथी रात को हजरत अबू बक्र (रजि०) के घर से दो तन्दुरुस्त और तेज रफ्तार वाली ऊँटनियाँ आ गयीं। एक ऊँटनी पर हुजूर नबी (सल्ल०) और हजरत अबू बक्र सिद्दीक (रजि०) सवार हुए और दूसरी पर आमिर बिना फुहेरा और अब्दुल्लाह बिन अरीकत सवार हुए। अब्दुल्लाह बिन अरीकत को रास्ता बताने के लिए नौकर रख लिया गया था। हजरत अबू बक्र (रजि०) के परिवार ने नबी (सल्ल०) के हिजरत के सिलसिले में जो सेवायें की हैं उन पर इतिहास को गर्व है। बाप-बेटा-बेटी और गुलाम सभी ने अपने-अपने सामर्थ्य के अनुसार अपनी जान को जोखिम में डालकर रसूल (सल्ल०) की जो खिदमतें की हैं उनके इस उपकार को कभी भुलाया नहीं जा सकता।

मदीना में

सौर की गुफा से ऊपर वर्णित यह छोटा परन्तु महान पवित्रतम कारवाँ

मदीने के लिए रवाना हुआ। हजरत मुहम्मद (सल्ल०) बतारीख १२ रबीउल अव्वल मदीना मुनव्वरा पहुँचे। शहर के किनारे मुहल्ला कवाँ में रुके और यहाँ पंज शम्बा (बृहस्पतिवार) तक निवास किया। इसके बाद शहर के अन्दर ठहरने का इरादा किया। हर शख्स की यह हार्दिक इच्छा थी कि हजरत मुहम्मद (सल्ल०) हमारे मुहल्ले में रहें। जिस वक्त आप ऊँटनी पर सवार हुए हर कबीले के लोग आपके साथ हुए। आपने फरमाया कि यह ऊँटनी खुद अपनी तरफ से जहाँ बैठ जायेगी वहाँ रुकूँगा। यहाँ तक कि ऊँटनी जिस जगह इस वक्त मस्जिद नबवी (पैगम्बर की) है, बैठ गई। आप उसी जगह उतरे, अबू अयूब अन्सारी (रजि०) आपका असबाब अपने घर ले गये और आप उनके घर ठहरे। यहाँ तक कि आपकी मस्जिद नबवी और आपका मकान तैयार हुआ। यह जमीन जिस जगह ऊँटनी बैठी थी दो यतीमों की थी, हजरत अबू बक्र सिद्दीक (रजि०) की सम्पत्ति से दस दीनार में खरीदी गई। हदीस की किताबों में लिखा है कि मस्जिद शरीफ के तामीर (निर्माण) में आपने एक पत्थर अपने दस्त मुबारक से रखकर हजरत अबू बक्र सिद्दीक (रजि०) से फरमाया कि 'इसके पास एक पत्थर तुम रखो' और हजरत अबू बक्र सिद्दीक (रजि०) के पत्थर के पास एक पत्थर हजरत उमर (रजि०) और हजरत उमर (रजि०) के पत्थर के पास एक पत्थर हजरत उस्मान से रखवाया और फरमाया 'हाउलाइल खुलफाए मिन बादी' (यानी यह लोग खलीफा होंगे मेरे बाद)। अतः ऐसा ही हुआ। हजरत मुहम्मद (सल्ल०) ने जिस वर्ष ऊपर वर्णित हिजरत की थी और हजरत अबू बक्र सिद्दीक (रजि०) के साथ मदीने में प्रवेश किया था वह सन् ६२२ ई० था। ऐतिहासिक दृष्टि से यह वर्ष इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि १७ वर्षों के पश्चात् हजरत मुहम्मद (सल्ल०) के दूसरे खलीफा हजरत उमर (रजि०) ने इसी वर्ष (सन् ६२२ ई०) को प्रथम वर्ष मानकर हिजरी सन् चलाया और उन्होंने इस हिजरी सन् का शुभारम्भ उस वर्ष के प्रथम चन्द्रमास के प्रथम दिन

को माना। उस वर्ष यह दिन १७ जुलाई को पड़ा था। इस प्रकार हिजरी सन् का शुभारम्भ १७ जुलाई सन् ६२२ ई० से हुआ।

भाईचारा

मक्के से जो लोग घर-बार छोड़कर मदीना आये थे वे लगभग सभी बिना किसी सामान आदि के थे। खाते-पीते लोग भी सब कुछ छोड़-छाड़कर ऐसे ही आ गए थे। और अब यहाँ उनके लिए स्थाई स्थान की आवश्यकता थी। हजरत मुहम्मद (सल्ल०) ने इस समस्या को इस प्रकार सुलझाया कि एक दिन मदीने के सब मुसलमानों को बुलाकर कहा कि, 'ये सब मुसलमान जो मक्के से आये हैं तुम्हारे भाई हैं' और फिर आपने मदीने के एक व्यक्ति को बुलाया और एक मक्के वाले को बुलाया और फरमाया 'आज से तुम एक-दूसरे के भाई हो, तुम अपने भाई को अपने घर ले जाओ और अपने साथ रखो।' आपने मदीने वालों को 'अनसार' (सहायता करने वाले) का नाम दिया। और मक्के वाले को 'मुहाजिर' (अल्लाह के लिए घरबार छोड़ने वाले) का नाम दिया और इस प्रकार सब मुहाजिरों को अन्सार का भाई बना दिया और अल्लाह के ये बन्दे भाई ही क्या भाई से भी कहीं ज्यादा साथी बन गये। अन्सार खुशी-खुशी मुहाजिरों को अपने घर ले गए और अपनी जायदाद, सामान और व्यापार में उन्हें शरीक करके भाइयों की भाँति हिस्सा बाँट दिया। बगीचों की आय, खेती की उपज, घर का सामान, मकान, जायदाद, सारांश यह है कि हर चीज इन भाइयों ने परस्पर बाँट ली और ये बे-घर के लोग बड़ी ही प्रसन्नता और सन्तोष का जीवन व्यतीत करने लगे।

किबले में परिवर्तन

अब तक इस्लाम का किबला 'बैतुल मक़दिस' था (जो यरूसलम में है), अर्थात्, मुसलमान उसी की ओर मुँह करके नमाज पढ़ते थे। यही

यहूदियों का भी किबला था। शाबान सन् २ हिजरी की घटना है कि ठीक नमाज की हालत में हजरत मुहम्मद (सल्ल०) पर किबले को बदलने का आदेश उतरा और बैतुल मकदिस के बदले काबा को मुसलमानों का किबला बनाया गया। अतः हजरत मुहम्मद (सल्ल०) ने नमाज पढ़ने की दशा ही में अपना मुँह उत्तर में बैतुल मकदिस की ओर से फेरकर दक्षिण में काबे की ओर कर लिया। इस्लामी इतिहास की यह घटना अत्यन्त महत्वपूर्ण थी। यह मानो अल्लाह की ओर से एक ऐलान था कि अब तक यहूदियों को यह पद प्राप्त था कि वे दुनियाँ के सामने अल्लाह का दीन (धर्म) पेश करें, अब उन्हें इस पद से हटाया जा रहा है और अब मुसलमानों को यह जिम्मेदारी सौंप दी जा रही है कि वे अल्लाह के बन्दों तक अल्लाह के दीन का सन्देश पहुँचाने का काम करेंगे।

जिहाद का सिलसिला

जिस साल उक्त घटना घटित हुई उसी साल माह रमजान के रोजे फर्ज हुये (इसी वर्ष मुसलमानों के लिए रोजे रखना अनिवार्य ठहराया गया)। इसी वर्ष खुदा की ओर से आपको कुफ्फार (काफिर लोगों अर्थात् नास्तिक लोगों) के विरुद्ध जिहाद छेड़ने (युद्ध करने) का आदेश हुआ। अतः जंग बद्र, जंग उहद, जंग खंदक, जंग खैबर, जंग हुनैन व जंग तबूक वगैरह बड़ी सख्त-सख्त लड़ाइयाँ हुईं जिनका विस्तृत विवरण सम्बन्धित पुस्तकों में दिया गया है। अपने जीवन के अंतिम दस वर्षों में जिन लड़ाइयों में नबी (सल्ल०) स्वयं शरीक हुये, उनकी संख्या २७ है, जिनमें से ९ में सख्त लड़ाई हुई। इनके अलावा छोटी बड़ी ३८ लड़ाइयाँ ऐसी हैं जो आपकी हिदायतों के अन्तर्गत दूसरे सरदारों की अध्यक्षता में लड़ी गयीं। इस पूरी मुद्दत में आपने ही स्वयं हर घटना की निगरानी व हर मामले का फैसला किया और इस अवधि में आपने पूरे अरब से मूर्ति पूजा का नाम व निशान मिटा दिया। स्त्री के मान को बढ़ाया और उसे समाज

में ऊँचा स्थान दिया। मद्यपान व दुराचार का अन्त कर दिया। लोगों में ईमान, शुद्ध हृदयता, सच्चाई और अमानतदारी और ऐसी ही अनेकों नैतिक विशेषताएँ पैदा कर दीं जिनसे अरब के लोग शताब्दियों से वंचित थे। जिन अरबों को संस्कृति, नैतिकता और ज्ञान के क्षेत्र में कोई स्थान प्राप्त न था उन्हें अत्यन्त सभ्य और ज्ञान का अनुरागी बना दिया।

हिजरत का नवाँ साल

हिजरत के नवें साल मुसलमानों के लिए हज फर्ज हुआ (हज करना अनिवार्य ठहराया गया) लेकिन खुद आँहजरत (सल्ल०) लड़ाइयों के जरूरी कामों तथा इस्लाम की तालीम व हिदायत के कामों में अत्यधिक मशगूल (व्यस्त) रहने की वजह से तशरीफन न ले जा सके। आपने अपनी जगह हजरत अबू बक्र सिद्दीक (रजि०) को अमीरुल हज (हज करने वालों का नेता) बनाकर मक्का रवाना किया, जहाँ जाकर उन्होंने लोगों से हज कराया और खुत्बहाए मौसमे हज पढ़े (हज के अवसर पर पढ़े जाने वाले धर्मोपदेश पढ़े)।

अन्तिम हज्ज और वफात (स्वर्गवास)

हिजरत के दसवें साल हजरत (सल्ल०) खुद हज तशरीफ ले गये और उस हज में आपने ऐसी-ऐसी बातें फरमायीं जैसे कोई लोगों को रुख्सत (विदा) करता है लिहाजा इस हज्ज को 'हज्जतुल विदा' कहते हैं। इस मौके पर आपने लोगों को ठीक तरीके से हज्ज अदा करने की क्रियात्मक रूप से शिक्षा दी और इसी मौके पर बतारीख ९ जिल हिज्जा को अरफात के मैदान में वह ऐतिहासिक भाषण दिया जिसमें अत्यन्त महत्वपूर्ण आदेश दिये। इस भाषण में कही हुई बातें अभी तक 'हदीस' की किताबों में मौजूद हैं, जिनमें से कुछ महत्वपूर्ण बातें ये हैं जो आपने कहा :

अरब को गैरअरब पर और गैरअरब को अरब पर कोई बड़ाई नहीं,

तुम सब आदम (प्रथम मूल पुरुष) की औलाद हो और आदम, मिट्टी से पैदा हुए थे।

मुसलमान परस्पर भाई-भाई हैं।

तुम्हारे गुलाम ! तुम्हारे गुलाम ! जो खुद खाओ इनको भी खिलाओ, जो खुद पहनो, इनको भी पहनाओ।

अज्ञान काल के तमाम खून अनृत ठहरा दिये गये (अर्थात् अब किसी को किसी से पुराने खून का बदला लेने का हक नहीं) और सबसे पहले मैं अपने वंश का खून अनृत ठहराता हूँ।

औरतों के मामले में अल्लाह से डरो यानी उनको बेजा तकलीफ व रंज मत दो और मर्दों के लिए औरतों पर ताकीद की वे अपने मर्दों की इताअत (आज्ञापालन) करें।

मैं तुममें एक चीज छोड़े जाता हूँ, अगर तुमने इसे मजबूत पकड़ लिया तो तुम गुमराह न होगे और वह है—अल्लाह की किताब (कुरआन शरीफ)।

आखिर में आपने जनसमूह को सम्बोधित करके कहा कि तुमसे अल्लाह के यहाँ मेरे बारे में पूछा जाएगा तो तुम क्या कहोगे ? लोगों ने उत्तर दिया : "हम यही कहेंगे कि आपने अल्लाह का सन्देश हम तक पहुँचा दिया और अपना कर्तव्य पूरा कर दिया।" आपने आकाश की ओर उँगली उठाई और फरमाया "हे अल्लाह ! तू गवाह रहना।" इसी साल अरफः[1] के रोज आयत "अलियौ अकमल तोलकुम दीनकुम व अतममतो अलेकुम नेमती बरजी तोलकमुल इस्लामा दीनह" नाजिल हुई (यानी आज कामिल किया मैंने तुम्हारे लिए दीन तुम्हारा और पूरी की

१—अरफः—अरबी जिलहिज्जः महीने का नवाँ दिन, जिस रोज हज्ज होता है।

तुम पर नेमत अपनी और पसन्द किया तुम्हारे लिए दीन इस्लाम का)। नुक्तः शनास (मर्म अथवा रहस्य को समझने वाले) सहाबह इस आयत के नजूल से कुर्ब कयामत् (महाप्रलय की निकटता) अर्थात् वफात (देहान्त) हजरत मुहम्मद (सल्ल०) समझ गये और इससे करीब 'सूरा अन-नस्र'[1] नाजिल हुई। इससे भी सहाबह (हजरत मुहम्मद सल्ल० के साथी) यह समझ गए कि आँ हजरत (सल्ल०) की बफात नजदीक है। एक बार आँ हजरत (सल्ल०) खुतबः (धार्मिक उपदेश) में इर्शाद फरमाया कि एक बन्दा को इख्तियार दिया गया है चाहे वह दुनियाँ की धनदौलत और यश को ग्रहण करे या उस चीज को ग्रहण करे जो अल्लाह तआला के पास है। इर्शाद फरमाया कि उसने दुनिया को इख्तियार नहीं किया बल्कि 'आखिरत' (परलोक) को इख्तियार किया। हजरत अबूबक्र सिद्दीक (रजि०) इस रहस्य को समझ गये और जारजार रोने लगे। लोग इनके रोने पर हैरान थे कि हजरत सल्ल० तो एक गैर शख्स का हाल फरमाते हैं। इनके रोने की क्या वजह है। बाद को मालूम हुआ कि इस बन्दे से मुराद (आशय) आँ हजरत (सल्ल०) खुद थे।

सफर सन् ११ हिजरी की १८ या १९ तारीख थी कि आपकी तबियत कुछ खराब हुई और निरन्तर खराब होती चली गई। एक दिन आपने हजरत आयशा (रजि०) से फरमाया कि खैबर में मैंने जो लुक्मा खाया था उसकी तकलीफ हमेशा रहती है। (यहाँ लुक्मा से आशय उस भोजन से है जो एक यहूदी औरत ने बकरी के गोश्त में जहर मिलाकर दिया था)।

१—'सूरा अन-नस्र' में तीन आयतें हैं—(१) जब अल्लाह की मदद आ जाये और विजय हो, (२) और तुम देखो कि लोग अल्लाह के 'दीन' में दल के दल दाखिल हो रहे हैं, (३) तो 'तसबीह' अपने 'रब' की हम्द (प्रशंसा) के साथ और उससे क्षमा की प्रार्थना करो।

आपको सर का सख्त दर्द और तेज बुखार रहने लगा और यहाँ तक बढ़ा कि आप नमाज के लिए मस्जिद में न जा सके और हजरत अबूबक्र सिद्दीक (रजि०) को इर्शाद फरमाया (आदेश दिया) कि इमामत करें। उनके आदेशानुसार हजरत अबूबक्र सिद्दीक (रजि०) ने इमामत शुरू की। दो बार आँहजरत (सल्ल०) बीमारी की हालत में नमाज पढ़ाने के लिये मस्जिद में तशरीफ ले गये। एक बार हजरत सिद्दीक (रजि०) के पीछे पढ़ी और एक मर्तबा इनके बराबर खड़े हुए थे। आखिरकार १२ रबीउल अव्वल दो शम्बः (इतवार) को दोपहर ढले आपने हजरत आयशः सिद्दीक (रजि०) के सीना पर तकिया लगाये हुये बफात पाई (नश्वर शरीर त्याग दिया)।

'इन्नालिल्लाहे व इन्ना इलैहे राजेऊन' (हम अल्लाए के लिये हैं और उसी तरफ पलट जायेंगे)।

आपकी बफात से गोया कयामत बरपा हो गई (महाप्रलय का सा दृश्य उपस्थित हो गया)। असहाब और अहले बैत (आपके परिवार वालों) का ऐसा सदमा हुआ कि जिसका बयान नहीं। हजरत उमर (रजि०) के होश जाते रहे। उनकी बदहोशी यहाँ तक बढ़ी कि वह नंगी तलवार लेकर यह कहने लगे कि जो आँहजरत (सल्ल०) के विषय में यह कहेगा कि उनकी वफात (मृत्यु) हुई तो मैं उसे कत्ल कर दूँगा। एक अजब परेशानी पैदा हो गई। इस पर हजरत अबूबक्र सिद्दीक (रजि०) आँहजरत (सल्ल०) के हुजरे (कमरे) में गए। पवित्र माथे को श्रद्धा के हाठों से चूमा और मस्जिद नबवी में आकर यह महत्वपूर्ण खुतबा पढ़ा-

'जो मुहम्मद (सल्ल०) की पूजा करता हो तो मुहम्मद (सल्ल० का देहान्त हो गया और जो अल्लाह की पूजा करता हो तो वह ऐसा जिन्दा है कि कभी नहीं मरेगा और मुहम्मद (सल्ल०) तो पैगम्बर हैं। उनके पहले भी बहुत से पैगम्बर गुजर चुके हैं। क्या अगर पैगम्बर का देहान्त हो जाये या

कत्ल कर दिये जायें तो क्या तुम उलटे पाँव लौट जाओगे और कोई व्यक्ति लौट जाए तो यह अल्लाह को किसी तरह जरर (नुकसान) नहीं पहुँचा सकता और वह (अल्लाह) शुक्रगुजार (कृतज्ञ) बन्दों को नेक बदला देगा।'

इस खुतबा के सुनते ही सब लोगों को विश्वास हो गया कि हजरत मुहम्मद (सल्ल०) का स्वर्गवास हो गया और सबके होश ठिकाने हो गये। हजरत अली (रजि०) व अब्बास व फजल व कशम व असाम विनजैद ने आँहजरत (सल्ल०) को गुस्ल दिया (नहलाया) और तीन जामः (कपड़ों) से कफन दिया। नमाज के वास्ते यह निश्चय किया गया कि बारी-बारी से जो लोग आते जायें नमाज पढ़ते जायें। आपको हजरत आयशा (रजि०) के हुजरा में जहाँ आपका इन्तकाल हुआ था दफन किया गया। उस समय आपकी जुदाई में आपके सहाबह व अहले बैत (घरवालों) को जो अपार दुःख व सदमा हुआ वह बयान से बाहर है। आँहजरत (सल्ल०) की सुपुत्री हजरत फातमा (रजि०) को इस कदर सदमा हुआ कि जब तक वह जिन्दा रही कभी न हँसी और दफन के बाद कब्र शरीफ पर आई और थोड़ी सी खाक उठाकर आँखों से लगाई और सूँघी और कुछ अशआर पढ़े जिनका मतलब यह है कि 'क्या चाहिये उसको जो सूँघे खाक कब्र हजरत मुहम्मद (सल्ल०) की, यह चाहिये कि न सूँघे सारी उम्र कोई खुशबू। मुझ पर ऐसी मुसीबतें आकर पड़ीं कि अगर दिन पर पड़तीं तो रात बन जाता।

(अल्लाहतआला अपने सभी भक्तों को और उन सबके तुफैल में इस अधम पापी अकिंचन तुच्छ लेखक को हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शफाअत[1] नसीब करें। आमीन या रब्बुल आलमीन।

१—शफाअत—ईश्वर से अपने अनुयायिओं के मोक्ष के लिए सुफारिश।

आपका हुलियः शरीफ (शरीर की बनावट)

आँहजरत सल्ल० मझोले कद के थे और आपकी भुजाएँ लम्बी थीं लेकिन मजमा (भीड़) में जब आप खड़े होते थे उसमें चाहे कितना ही लम्बा कद का आदमी होता आप सबसे अधिक बुलन्द (तेजस्वी) मालूम होते। रंग मुबारक सुर्ख (लाल) व सफेद मिला हुआ था (लगभग गेहुँआ-रंग)। सर मुबारक बड़ा था। सर के बाल बिलकुल काले और घुँघराले थे। बाल कभी आपके कंधों तक होते, कभी कानों की लौ तक। आप माँग निकाला करते थे। आप का माथा चौड़ा ओर चमकदार था। आपकी भौहें बारीक थीं। कमान की तरह मिली हुई मालूम होती थीं। लेकिन वास्तव में मिली हुई न थीं। दोनों के बीच कुछ फर्क था। दोनों भौहों के बीच एक रग (नस) थी जो गुस्सा के वक्त फूल जाती थी। आँख बड़ी थीं और सफेदी-ललाई लिए हुए थी। पुतलियाँ निहायत काली कि बिना सुरमा के भी ऐसी मालूम होती थीं कि मानो सुरमा लगा हुआ है। पलकें बड़ी-बड़ी थीं। आपके गाल पुरगोश्त व नरम, न फूले हुए, न दबे हुए। नाक बुलन्द और नूरानी, कान न छोटे न बड़े बल्कि बीच के आकार के थे और सुन्दर थे। दाँत मुबारक सफेद चमकदार और मुस्कराहट के समय बिजली की तरह चमक मालूम होती थी। आगे के दाँतों में खिड़की मालूम होती। चेहरा मुबारक न लम्बा, न गोल बल्कि किसी कदर गोल था। चेहरा चौदहवीं रात के चाँद की तरह चमकता था। डाढ़ी मुबारक भरी हुई थी। गरदन मुबारक साफ चमकदार और बहुत सुन्दर थी मानो साँचा में ढली हुई थी। पेट सफेद, साफ और चमकदार था। सीना और पेट बराबर था यानी पेट सीना से निकला हुआ न था। हाथ लम्बे-लम्बे थे, हथेलियाँ कुशादह (चौड़ी) पुरगोश्त और नरम थीं। बगलें सफेद, खुशबूदार और इनमें बाल न थे। हाथ की अँगुलियाँ लम्बी और खुशनुमा थीं।

आपके शरीर में यह विशेषता थी कि आपको पीठ पीछे भी वैसा ही दिखाई देता था जैसा कि सामने से। इसकी वजह यह थी कि आपका बदन मुबारक नूर (प्रकाश) का था और इसी कारण से आपकी परछाहीं

न थी। हजरत अबू हरेरः (रजि०) फरमाते हैं कि "मैंने हजरत मुहम्मद (सल्ल०) से ज्यादा तेज चलने वाला इन्सान नहीं देखा। आप बिला तकल्लुफ चला करते थे और हम निहायत मेहनत से आपके साथ निभते थे। आपके बदन से ऐसी खुशबू आती थी कि जो कोई आप से मिलते वक्त हाथ मिलाता, तमाम दिन हाथ में खुशबू आती थी। जिस गली से आप निकल जाते थे वह खुशबू से महक जाती थी और लोग पहिचान लेते थे कि आप इधर से तशरीफ ले गये हैं। पसीने में ऐसी खुशबू थी कि वह दुलहिनों के लगाया जाता था। आप जहाँ पाखाने के लिये बैठते वहाँ से खुशबू आती थी और जमीन आपके पाखाने को छिपा लेती थी। आपके मुँह के पानी से खारे कुएँ मोठे हो जाते थे। मक्खी आपके बदन पर नहीं बैठती थी। आपको पाकीजगी (सफाई) बहुत पसन्द थी और मैला-कुचैला परेशान सूरत रहने को बहुत नापसन्द फरमाते। बालों को धोने और तेल लगाने का आप ने हुक्म दिया है। लेकिन इस कदर नहीं कि अक्सर उसी में मशगूल (व्यस्त) रहें।

आपका अख्लाक करीमा (सदाचरण, शिष्टाचार)

आपके अख्लाक का अन्दाजा इसी से करना चाहिए कि अल्लाह तआला इसको कुरआन शरीफ में अजीम (महान) फरमाता है : "इन्नकाल अला खुलोकिन अजीम" (तुम बहुत बड़े अख्लाक वाले हो) आप ऐसे सम्मानित और प्रतिष्ठित महान व्यक्ति थे कि जो अचानक आपको देखता उसे पहिले आपसे मिलने में डर लगता लेकिन जब आपकी खिदमत में हाजिर होता और आपसे मिलकर बातचीत करता तो आपकी मुहब्बत उसके दिल में आ जाती। आपकी आदत यह थी कि जिससे मिलते, आप पहले सलाम करते और जो शख्स आपका हाथ पकड़ लेता तो उससे हाथ न छुड़ाते यहाँ तक कि वह खुद आपको न छोड़ देता। खड़े होते और बैठते तो जिक्र अल्लाह किया करते और अगर आपके पास नमाज पढ़ते वक्त कोई आ

बैठता तो अपनी नमाज मुख्तसर (संक्षेप) कर देते और उससे पूछते कि तुमको कोई काम है और जब उसके काम से फारिग होते तो फिर नमाज पढ़ने लगते।

आपको जहाँ बैठने की जगह मिलती वहीं बैठ जाते। विनम्रता का यह हाल कि आप अगर किसी के यहाँ तशरीफ ले जाते तो किसी ऊँची जगह और विशिष्ट स्थान पर न बैठते बल्कि साधारण लोगों की तरह उन्हीं के बराबर में बैठ जाया करते। जो आपके पास आता था उसका बड़ा आदर सत्कार करते, यहाँ तक कि उसके लिए अपनी चादर बिछाकर उसको बिठा लेते और तकिया जो आपके पास नीचे रहता था आने वाले के लिए उसको निकाल कर देते और अगर वह लेने से इन्कार करता तो आप कसम देते कि इसी पर तकिया लगाकर बैठिए। जिस किसी ने आपसे मुहब्बत की, उसको यही ख्याल होता कि आप सबसे ज्यादा मुझ पर करम फरमाते (कृपा करते हैं) और मुझसे ज्यादा महब्बत करते हैं।

जलसों में हर एक की तरफ व्यक्तिगत रूप से तवज्जोह फरमाते (ध्यान देते) और अपने असहाब को उनकी हौसला अफ्जाई (उत्साह-वर्द्धन) के लिये उनकी कुन्नियतों (घर के नामों) से पुकारते और जिसकी कुन्नियत न होती उसकी कुन्नियत आप खुद मुकर्रर फरमाते (निर्धारित करते)। सब लोगों से ज्यादा देर में आपको गुस्सा आता और सबसे जल्दी राजी (प्रसन्न) हो जाते। लोगों पर निहायत दरजे की मेहरबानी फरमाते और उनकी भलाई के लिये हमेशा प्रयत्नशील रहते। आपकी मजलिस में आवाजें बुलन्द न होती थीं। आप अत्यन्त सुन्दर और सरल भाषा बोलने वाले थे। आप कम बोलते और जब बोलते तो बड़ी नर्मी से बात करते और ज्यादा कलाम न फरमाते। आपका कलाम (कथन) मानो मोतियों के दानों की लड़ी की तरह एक

दूसरे के पीछे चला आया करता था। कलाम फरमाते समय बीच-बीच में थोड़ा रुक जाते थे जिससे कि सुनने वाले उसको याद कर लें। आपकी आवाज बुलन्द और बोलने का लहजा सबसे अच्छा था। खामोश अधिक रहते थे। अनुचित शब्द जुबान पर न लाते। यदि कोई बुरा शब्द बोलता, उसकी तरफ से मुँह फेर लेते और जो शब्द आपको बुरा मालूम होता और बमजबूरी कहना पड़ता तो उसको इशारतन (संकेत रूप में) इर्शाद फरमाते (कह देते)। जब आप खामोश हो जाते तब उनके पास उपस्थित लोग अपनी बात कहते। आपके पास कोई एक दूसरे की बात न काटता। अपने असहाब के सामने सबसे अधिक मुस्कराते और हँसते। आप हमेशा प्रसन्नचित्त रहते, बशर्ते कि आप पर कुरआन मजीद नाजिल न होता (न उतरता) या कयामत का जिक्र या खुत्बा (धार्मिक उपदेश) और वाज (धार्मिक शिक्षाएँ) न फरमाते। अगर आप गुस्सा होते (और गुस्सा बजुज खुदा के वास्ते न हुआ करते थे) तो किसी चीज को आपके गुस्से के सामने ठहरने की ताब न थी।

आप भोजन में जो कुछ बना होता, खा लेते और जिस भोजन को कई लोग एक साथ बैठकर खाते उसे अधिक पसन्द करते और जब दस्तरख्वान बिछाया जाता तो "बिस्मिल्लाह" फरमाते। आप पानी तीन दफे पीते और इनमें 'बिस्मिल्लाह' और तीन बार 'अल्हम्दोलिल्लाह' कहते। पानी को चूस-चूस कर पीते, बड़े घूँट से न पीते और कभी एक ही साँस में पानी पीने से फरागत पाते। पानी पीते वक्त पानी के बरतन में साँस न लेते बल्कि इससे अलग होकर साँस लेते। आप खाना घर वालों से न माँगते और इनसे किसी विशेष प्रकार के भोजन की इच्छा न प्रकट करते। उन्होंने जो खिला दिया तो खा लिया और जो सामने रखा कुबूल फरमाया। कभी-कभी अपने खाने व पीने को चीजें खुद खड़े होकर लेते।

कपड़े में जो आपको मिलता तहमद या चादर या कुर्त्ता या जुब्बः (लम्बा अँगरखा) या और कुछ पहिन लेते। आपको हरे कपड़े अच्छे

मालूम होते थे और आपकी अक्सर पोशाक सफेद होती और फरमाते कि इसको अपने जिन्दा लोगों को पहिनाओ और मरे हुए लोगों को उसी में कफनाओ। लड़ाई के वक्त रुई भरा हुआ चोंगा पहिनते और कभी बिला रुई भरा हुआ भी पहिनते। आपके सब कपड़े टखनों के ऊपर चढ़े रहते और तहमद उनसे भी ऊपर पिंडलियों की आधी दूरी तक होता। आपके कमीज के बन्द बँधे रहते। कभी आप सिर्फ चादर पहिनते और कोई कपड़ा बदन पर न होता। आपके पास एक चादर पैबन्द लगी हुई थी, उसको पहिनते और फरमाते कि मैं बन्दा हूँ, पहिनता हूँ जैसे बन्दा पहिनता है। जुमा (शुक्रवार) का जोड़ा खास था, सिवाए और दिनों के कपड़ों के। आप टोपी पगड़ी के नीचे या बिना पगड़ी के पहिनते। आप अँगूठी पहिनते और जब बाहर तशरीफ लाते तो आपकी अँगूठी में किसी चीज की याददाश्त के लिये धागा बँधा होता। जब आप कपड़े पहिनते तो दाहिनी तरफ से शुरू करते और जब उतारते तो बाँयें तरफ से इब्तदा (आरम्भ) करते। जब नया कपड़ा पहिनते तो पुराना कपड़ा किसी मिस्कीन (गरीब) को इनायत फरमाते। आपके पास एक चमड़े का गद्दा था जिसमें खुरमा (सूखा खजूर) की छाल भरी हुई थी और एक कम्बल था कि उसको हर जगह उठाकर अपने नीचे दो तह करके बिछाते। आप बोरिया पर सोते थे, इसके सिवा और बिस्तर न होता।

आप सबसे अधिक सहनशील थे और पूर्ण रूप से क्षमतावान होते हुए भी मुजरिमों (अपराधियों) का कसूर मुआफ फरमा दिया करते थे। एक यहूदी ने आप पर जादू किया था। हजरत जिब्रील (अलैहिस्सलाम) ने आपको इस हाल की इत्तला दी थी। यहाँ तक कि आप ने उस जादू को निकलवाकर गिरह (गाँठ) खोली थी, तो इससे इफाकः (आरोग्य लाभ) हो गया था। लेकिन उस यहूदी से कभी इसका जिक्र न किया और न उससे इस बात को जाहिर किया। आप इर्शाद फरमाते (उपदेश के रूप में यह कहते) कि तुममें से कोई मेरे असहाब (साथियों) की तरफ

से कोई बात (बुराई) मुझसे न कहा करो ताकि मैं चाहता हूँ कि तुम्हारे पास सीना साफ होकर आऊँ। किसी के सामने वह बात न फरमाते जो उसको बुरी मालूम हो। एक शख्स आपकी खिदमत में हाजिर हुआ और तेज खुशबू लगाये हुये था। आपको बुरी मालूम हुई, मगर उससे कुछ न फरमाया। जब वह चला गया तो लोगों से इर्शाद फरमाया कि अगर तुम उससे कह दो कि इस्तेमाल न करे तो अच्छा हो।

आँ हजरत सल्ल० सबसे ज्यादा फैयाज और दानशील थे और माह रमजान मुबारक में आँधी की तरह होते थे कि कोई चीज बिना दिये न छोड़ते और कभी किसी चीज का सवाल आपसे न हुआ कि (कोई चीज आपसे माँगी गई और) आपने उसको नहीं दिया। एक जरूरतमन्द ने आपकी सेवा में उपस्थित होकर कुछ माँगा। हुजूर ने फरमाया कि इस समय मेरे पास देने के लिये कुछ भी नहीं हैं, तुम मेरे नाम पर किसी से उधार ले लो, मैं तुम्हारा ऋण चुका दूँगा। हजरत उमर (रजि०) वहाँ बैठे हुए थे। बोले—"या रसूल सल्ल० ! अल्लाह ने आपको अपनी सामर्थ्य और शक्ति से बढ़कर काम करने का कष्ट नहीं दिया।" इस पर हुजूर चुप हो गये और उन्हें यह बात बुरी मालूम हुई। एक श्रद्धालु अन्सारी वहाँ बैठा था। बोला, "ऐ अल्लाह के रसूल ! खूब दीजिये। अल्लाह मालिक है तो फिर तंगी का क्या डर ?" अंसारी के उत्तर पर हुजूर मुस्कुरा दिये और उनके पवित्र चेहरे पर प्रसन्नता बिखर गई। फरमाया, 'हाँ मुझे यही हुक्म मिला है।'

हजरत उमर (रजि०) फरमाते थे कि "एक बार मैं हजरत मुहम्मद (सल्ल०) की खिदमत में हाजिर हुआ। हुजूर तहमद बाँधे चटाई पर विश्राम कर रहे थे। चटाई के निशान आपके पवित्र शरीर पर उभरे हुए स्पष्ट दिखाई दे रहे थे। घर में एक कोने में सेर दो सेर जौ का अनाज पड़ा था और दीवार पर चमड़ा लटका था। आपकी इस गरीबी को देख कर मेरी आँखों में सहज ही आँसू भर आये।" हुजूर ने मेरी आँखों में

आँसुओं को देखकर फरमाया, "ऐ खत्ताब के बेटे ! तुझे किस चीज ने रुलाया ? मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल ! मैं रोऊँ नहीं तो क्या करूँ ? कैसर और किसरा तो सोने के तख्त और सुन्दर रेशमी नर्म फर्श पर मजे उड़ायें और आप खुदा के पैगम्बर इस हाल पर जीवन बिताएँ।' हजरत सल्ल० ने फरमाया, "खत्ताब के बेटे ! क्या तू इस पर तैयार नहीं है कि उनके लिये दुनियाँ हो और मेरे लिये आखिरत (परलोक)।"

शूर वीरता की यह दशा कि घमासान खूनी लड़ाइयों में जब अच्छे अच्छों के पैर उखड़ जाते तो आप इस प्रकार अडिग खड़े रहते मानो कुछ हुआ ही नहीं। हजरत अली (रजि०) का कथन है कि जब घमासान युद्ध छिड़ता तो हम हुजूर की शरण खोजते थे और जब दुश्मन बिलकुल हमारे नजदीक होते, हम हजरत (सल्ल०) की आड़ में हो जाते थे। उस वक्त आपके अलावा दुश्मन से अधिक नजदीक कोई न होता था। लड़ाई के वक्त टोलो से जब कोई आगे बढ़ता तो सबसे पहले आप ही आगे होते थे।

आँ हजरत (सल्ल०) स्वयं प्रभावशाली सम्मानित एवं रुत्बे वाले होते हुए भी सबके साथ बड़ी विनम्रता व इन्किसारी से पेश आते थे। आपके असहाब एक शख्स को आँ हजरत सल्ल० का खिदमत में लाये तो वह आपकी हैबत (रोब) से काँपने लगा। आपने फरमाया कि "खौफ मत करें, मैं बादशाह नहीं हूँ, मैं कुरैश की एक औरत का फरजन्द (लड़का) हूँ।" आप अपने असहाब में ऐसे मिलजुल कर बैठते थे कि गोया उन्हीं में से आप भी हैं। अजनबी शख्स आता तो बिना बतलाये न मालूम कर सकता कि आप कौन से हैं। एक दफा हजरत आयशा (रजि०) ने आपकी खिदमत में अर्ज किया कि आप तकिया लगाकर भोजन किया कीजिये। हजरत सल्ल० ने अपना सर मुबारक इतना झुकाया कि करीब था कि आपका माथा जमीन पर लग जाये और फरमाया कि ऐसे खाऊँगा जैसे बन्दा खाता है और ऐसे बैठूँगा जैसे बन्दा बैठता है। आप जब लोगों के पास बैठते तो अगर वह आखिरत (परलोक) के

विषय में बात करते तो वही तकरीरें फरमाते और अगर वह खाने पीने की बात करते तो वैसा ही जिक्र फरमाते और अगर वह लोग दुनियाँ के विषय में कलाम करते तो आप भी वही करते।

आपके लेटने और सोने का यह हाल था कि अगर किसी ने बिछौना बिछा दिया तो लेट रहे और अगर बिस्तर न हुआ तो जमीन पर लेट रहे। आप खुद अपना जूता गाँठते और कपड़े में पैबन्द लगाते और अपने घर का काम करते। उदारता की यह शान कि अपने परिवार वालों पर सदका (दान पुण्य) हराम कर दिया। आपने सार्वजनिक घोषणा कर दी कि जो कोई मुसलमान मर जाये उसका ऋण मैं चुकाऊँगा और उसके धन-सम्पत्ति के वारिस उसके नातेदार होंगे। आपकी लाड़ली बेटी फातमा के सिर पर सावित ओढ़नी भी न थी और उधर सर्वसाधारण में आप माल और दौलत जरूरतमन्दों में बाँटते रहते थे। बहुत बार ऐसा हुआ कि माँगने वालों ने माँगा और हुजूर ने बकरी का दूध या आटा माँगने वाले को दे दिया और आपके घर में वह दिन उपवास का दिन बन गया। आपके पास लौंडियाँ (नौकरानियाँ) व गुलाम थे। खाने और पहिनने में आप उनसे न तो बेहतर खाना खाते और न बेहतर कपड़ा पहिनते। आप किसी गरीब को उसकी गरीबी की वजह से छोटा न जानते और न किसी बादशाह से उसकी बादशाहत की वजह से डरते, बल्कि दोनों को बराबर अल्लाह तआला की तरफ बुलाते। एक बार आपसे लड़ाई के अवसर पर अर्ज किया गया कि आप दुश्मनों पर लानत करें (धिक्कारें) तो मुनासिब है। आपने फरमाया कि मैं रहमत के लिये उतारा गया हूँ, न लानत के लिये। जब आपसे अनुरोध किया जाता कि आप किसी काफिर (नास्तिक, मूर्तिपूजक) आम या खास के लिये बद्दुआ फरमायें (शाप दें), तो आप बद्दुआ से एराज करके (मुँह फेरकर) उनके हक में दुआए खैर (कल्याण के लिये प्रार्थना) फरमाते। कोई वक्त आप पर ऐसा न गुजरता जिसमें आप अल्लाह तआला के लिये काम या अपने नफ्स की बेहतरी के लिये अमर जरूरी (आवश्यक कर्म) न करते होते।

इबादत आँ हजरत [सल्ल०]

इस सृष्टि रचना का उद्देश्य उस अल्लाह तआला की इबादत करना ही है "जैसा कि हक तआला फरमाता है" "वमा खलकतुल जिन्न वल इन्सो इल्ला ले याबदून" (मैंने जिन्नों और इन्सानों को सिर्फ इसलिये पैदा किया है कि वह मेरी इबादत करें)। अतः किसी इन्सान को इबादत के सिवा उसकी नजात (मुक्ति) का कोई दूसरा उपाय नहीं है। इस जिन्दगी का सीधा रास्ता और कुर्ब इलाही (ईश्वर की समीपता) हासिल करने का साधन इबादत ही है और जिस शख्स को जिस कदर कुर्ब इलाही ज्यादा होता है उसी कदर उस पर अल्लाह तआला की माबूदियत और अपनी अबदियत को ज्यादा हकीकत खुलती है (अर्थात् ईश्वर ही हमारा एकमात्र आराध्य है और हम उसी की आराधना के लिये पैदा किये गये है, यह हकीकत अनुभव में आती है)। जाहिर है कि आँ हज़रत (सल्ल०) से ज्यादा किसी को कुर्ब इलाही न था। इस वजह से आपसे ज्यादा कोई अपने लिये इबादत करने का हक नहीं समझता था। अल्लाह की इबादत और उसके ज़िक्र के महत्व के विषय में नीचे अनुच्छेद में हज़रत सल्ल० के इर्शादात (उपदेशों) में सर्वप्रथम इसी विषय का वर्णन किया गया है।

आपके इर्शादात [अमृत वाणी]

आप लोगों से उपदेश के रूप में जो बात फरमाते थे उसको 'हदीस' कहते हैं। इस प्रकार की हदीसों को बड़े ही प्रामाणिक रूप से विभिन्न ग्रंथों में संकलित किया गया है। यहाँ पर कुछ महत्वपूर्ण हदीसें अंकित की जा रही हैं :—

जिक्र अल्लाह :—(ईश्वर का नाम जप)

इर्शाद फरमाया कि जिस किसी को यह पसन्द हो कि जन्नत (स्वर्ग) के गुलजारों (बगीचों) में चरे उसको चाहिए कि खुदा तआला का जिक्र बहुत करे। किसी ने आप से पूछा कि आमाल में कौन सा अफजल (श्रेष्ठ) है, इर्शाद फरमाया कि अफजल यह है कि ऐसे हाल में रहे कि जिक्र अल्लाह से तर जबान हो ताकि सुबह और शाम को ऐसे हो जाओ कि तुम्हारे ऊपर कोई खता (त्रुटि) न हो। इर्शाद फरमाया कि सुबह शाम को खुदा तआला का जिक्र करना राहे खुदा में धर्म-युद्ध करना और पानी बहाने की तरह माल (दान) देने से बेहतर है। इर्शाद फरमाया कि अल्लाह तआला फरमाता है कि जब बन्दा मुझे अपने जी (दिल) में याद करता है तो मैं उसको अपने जी में याद करता हूँ यानी मेरे सिवा किसी को इसकी खबर नहीं होती। फरमाया जो लोग किसी मजलिस में बैठकर जिक्र इलाही करते हैं तो उनको फरिश्ते घेर लेते हैं। उनको रहमत ढाँप लेती है और अल्लाह तआला इनका जिक्र अपने पास के लोगों यानी अपने फरिश्तों के गिरोह में करता है। इर्शाद फरमाया जो लोग इकठ्ठा होकर अल्लाह तआला का जिक्र करते हैं और इस जिक्र से बजुज उसकी रिजा और कुछ मकसूद (उद्देश्य) नहीं होता तो उनको एक मुनादी (पुकारने वाला) आसमान से पुकारता है कि "उठो तुम्हारी मगफरत (मुक्ति) हो गयी और तुम्हारी बुराइयाँ नेकी से बदल गयीं। इर्शाद फरमाया कि जो लोग किसी जगह पर बैठकर खुदातआला का जिक्र न करेंगे और नबी (सल्ल०) पर दरूद न भेजेंगे तो कयामत को उनके लिये हसरत होगी (पश्चाताप होगा)।

हलाल (ईमानदारी से अर्जित) कमाई :—

इर्शाद फरमाया जो शख्स अपने परिवार के लोगों को हलाल माल कमाकर खिलावे वह शख्स ऐसा है गोया कि अल्लाह तआला की राह

में जिहाद करता है। इर्शाद फरमाया कि अपनी गिजा पाक और हलाल कर, तेरी दुआ कुबूल होगी। इर्शाद फरमाया कि जो शख्स एक कपड़ा दस दिरम को मोल ले और उसकी कीमत में एक दिरम हराम हो तो जब तक कपड़ा उसके बदन पर रहेगा, अल्लाह तआला उसकी नमाज कुबूल न करेगा। इर्शाद फरमाया जो शख्स इस बात की परवाह नहीं करता कि कहाँ से माल कमाता है, अल्लाह तआला इसकी परवाह नहीं करेगा कि कहाँ से उसको दोजख (नर्क) में दाखिल करेगा। इर्शाद फरमाया कि इबादत दस जुज (खण्ड, भाग) हैं, नौ इनमें से तलब हलाल (ईमानदारी से रोजी कमाना) हैं। जो शख्स गुनाह से माल पैदा करे उससे परिवार वालों की परवरिश करे या दान दे या अल्लाह की राह में खर्च करे तो अल्लाह तआला इन सब चीजों को इकठ्ठा करेगा, फिर इनको दोजख में डाल देगा।

अमीरों से परहेज

इर्शाद फरमाया कि अल्लाह तआला ने अपनी बाज किताबों में इर्शाद फरमाया है कि जो लोग परहेजगार हैं उनका हिसाब लेते हुए मुझको शर्म आती है। इर्शाद फरमाया है कि एक दिरम का सूद (ब्याज) अल्लाह तआला के नजदीक मुसलमानी की हालत में तीस जिना (स्त्री सम्भोग) की निस्बत (अपेक्षा) सख्त है। इर्शाद फरमाया कि अल्लाह तआला के नजदीक कारियों (कुरआन शरीफ पढ़ने वालों) में से ज्यादा बुरे वह हैं जो अमीरों से जाकर मिलते हैं। फरमाया कि आलिम (विद्वान, ज्ञानी) अल्लाह तआला के बन्दों पर रसूलों के अमीन (अमानतदार) हैं जब तक सुल्तान (बादशाह) से इख्तिलात न करें (मिले-जुले नहीं) और जब ऐसा करें तो उन्होंने रसूलों की खयानत की (रसूलों की दी हुई नेमतों का अपहरण किया)। इनसे परहेज चाहिए। इर्शाद फरमाया कि आलिम जब अपने इल्म से अल्लाह तआला की रिजा (प्रसन्नता) चाहता है तो हर चीज से खुद डरता है। इर्शाद फरमाया कि यह उम्मत

(रसूल सल्ल० को माननेवाला समुदाय) अल्लाह तआला की हिदायत (सहायता) और पनाह (संरक्षण) में रहेगी जब तक कि इसके कारी (कुरआन शरीफ पढ़ने वाले) अमीरों की अयानत (सहायता) और मुआफकत (मित्रता) न करेंगे।

जबान का परहेज (वाणी का संयम)

इर्शाद फरमाया कि जो शख्स जामिन (जमानत करने वाला) हो मुझसे अपने दो जबड़ों के बीच की का यानी जबान का और दो टाँगों के दरमियान की चीज का (मैथुन या सम्भोग के संयम का), मैं जामिन होता हूँ उसके जन्नत (स्वर्ग) का। एक शख्स ने आपसे अर्ज किया कि जिसका आपको मुझ पर ज्यादा खौफ हो, वह क्या है? आपने अपनी जबान मुबारक पकड़ कर फरमाया कि यह है। इर्शाद फरमाया, 'जिसको सलामत रहना अच्छा लगे वह सुकूत (खामोशी) लाजिम करे (आवश्यक समझे)। इर्शाद फरमाया अक्सर खताएँ (गलतियाँ) बनी आदम (आदमी) की उसकी जबान है। इ० फ० जो शख्स अपनी जबान को रोकता है अल्लाह तआला उसके ऐब छिपाता है। फरमाया कि रोक अपनी जबान को मगर बेहतर बात को (यानी अच्छी बात कहने के लिये ही वाणी का प्रयोग करो)। तू इसके बाइस (कारण) गालिब आवेगा (प्रभाव रखेगा) शैतान पर। इर्शाद फरमाया आदमी तीन किस्म के होते हैं। एक गनीमत लूटने वाला जो अल्लाह का जिक्र करता है और एक जो आफतों से महफूज (सुरक्षित) जो खामोश है और एक हलाक होने वाला जो बातिल में (झूठी बातें करने में) खोज करता रहता है (मन लगाये रहता है)। इर्शाद फरमाया कि मोमिन (मुसलमान) की जबान दिल के पीछे रहती है। जब बोलना चाहता है तो पहले सोच लेता है, तब जबान से निकालता है और मुनाफिक यानी वह इन्सान जिसकी जबान में कुछ और हो दिल में कुछ और, उसकी जबान दिल के आगे होती है। इर्शाद फरमाया जो शख्स बात काटनी छोड़ दे और वह हक पर हो उसके

लिये जन्नत में मकान बनाया जाता है। इर्शाद फरमाया नहीं पूरी करता है कोई बन्दा ईमान की हकीकत यहाँ तक कि बात काटनी छोड़ दे अगर हक (सत्यता) पर भी हो। इर्शाद फरमाया कलमए पाक सिदका है यानी उम्दा लफ्ज (शब्द) बोलना भी दाखिल खैरात (दान) है। इ० फ० बचाओ तुम अपने को फुहश से (बेहूदा बात कहने से)। खुदा नहीं दोस्त रखता फुहश और तफहहुश को यानी हद से गुजरने और बेहूदा कहने को।

खुश खुल्की (अच्छा अख्लाक)

इर्शाद फरमाया जो चीज लोगों को जन्नत में दाखिल करेगी वह अल्लाह तआला से डरना और खुश खुल्की है। इर्शाद फरमाया ईमान करने वाला उल्फत करने वाला (लोगों से प्रेम करने वाला) और उल्फत किया गया होता है (उससे लोग प्रेम करते हैं)। उस शख्स में खैर नहीं जो उल्फत न करे और न कोई उससे उल्फत करे। इ० फ० कि दूर रहो बद-गुमानी से (किसी के प्रति दिल में बुरे विचार लाने से) कि बदगुमानी बहुत बुरी बात है। फरमाया एक दूसरे का भेद मत टटोलो। आपस में मनमुटाव न पैदा करो। इ० फ० जो शख्स अपने भाई के ऐब छिपाये अल्लाह तआला दुनियाँ और आखिरत में उसकी परदा पोशी करेगा। इ० फ० अल्लाहतआला के बुरे बंदे वह हैं जो चुगली करते फिरें और दोस्तों में जुदाई डालें। फरमाया आदमी को इतनी ही बुराई काफी है कि अपने भाई मुसलमान को हकीर (तुच्छ) समझे। इर्शाद फरमाया कि क्या मैं तुमको बता दूँ जो नमाज और रोजा और खैरात के दर्जे से अफजल (श्रेष्ठ) हो। सहाबा (रजि०) ने अर्ज किया, "जरूर इर्शाद फरमायें।" आपने फरमाया कि आपस में सुलह करा देनी है और बाहम (आपस में) फूट डालने वाला दीन को मिटाने वाला है। इ० फ० कि जो शख्स अपने भाई की हाजत (आवश्यकता) पूरी कर दे तो गोया तमाम उम्र अल्लाहतआला की खिदमत की। इ० फ० तुममें से कोई मोमिन न होगा

जब तक कि अपने भाई के लिये वह चीज न चाहे जो अपने लिये चाहता है। इ० फ० कि जो शख्स किसी ईमानदार को राहत पहुँचा दे अल्लाह तआला कयामत (प्रलय) के दिन उसको आराम देगा। इ० फ० जो शख्स गमजदाँ (दुःखी) ईमानदार की मुश्किल आसान करे या किसी मजलूम (जिस पर जुल्म हुआ हो) की मदद करे, अल्लाह तआला उसके तिहत्तर गुनाह बख्श देता है। इ० फ० मरीज़ की इयादत कामिल (रोगी का हाल पूछने और उसको ढाढ़स देने के लिये उसके पास जाना) यह है कि उसकी पेशानी (माथे) या हाथ पर अपना हाथ रखकर पूछो कि कैसे हो ? फरमाया कि जब कोई बीमार की इयादत करता है तो रहमत में दाखिल होता है और जब बीमार के पास बैठता है तो रहमत उसके अंदर मुस्तहकम (दृढ़, चिरस्थायी) हो जाती है। इर्शाद फरमाया अल्लाह तआला ने इस्लाम को मकारिम अख्लाक (सम्मानित श्रेष्ठ आचरण) और महासिन आमाल (सतकर्मों) से मुहति (आच्छादित) कर दिया है। एक आदमी ने नबी (सल्ल०) से अर्ज किया या रसूलुल्लाह ! मेरे करावदार (नातेदार) हैं। मैं उनसे सिलारहमी (प्रेम व सद्व्यवहार) करता हूँ। वह कतअरहमी (दुर्व्यवहार) करते हैं। मैं उनके साथ भलाई करता हूँ, वह मेरे साथ बुराई करते हैं। मैं बुर्दबारी (सहनशीलता) करता हूँ, वह मुझसे सख्ती बरतते हैं। आपने फरमाया "जैसे तुम कह रहे हो अगर यह सच है तो तुम उनके मुँह में खाक डालते हो और अल्लाह की मदद तुम्हारे साथ बराबर रहेगी, जब तक तुम इस पर कायम रहोगे।"

पड़ोसी का हक (अधिकार)

इर्शाद फरमाया कि जो शख्स ईमान रखता है अल्लाहतआला और रोजे आखिरत (परलोक के समय) पर उसको चाहिये कि अपने पड़ोसी की इज्जत करे। इर्शाद फरमाया कि क्या तुमको मालूम है कि पड़ोसी का क्या हक है ? उसका हक यह है कि अगर तुमसे मदद चाहे तो उसकी मदद करो और अगर कर्ज माँगे तो कर्ज दो। अगर तुमसे कोई काम पड़े

तो पूरा करो और अगर बीमार हो तो इयादत करो और अगर मर जाये तो जनाजे के साथ जाओ ओर अगर उसको कुछ बेहतरी हासिल हो तो मुबारकबाद दो और मुसीबत पड़े तो ताजियत करो (शोक प्रकट करो) और बिना उसकी इजाज़त के अपनी इमारत ऊँची मत करो कि उसकी हवा रुके। कोई मेवा खरीदो तो उसको हदिय: (भेंट) दो, वरना छुपाकर अपने घर में ले जाओ और अपने बच्चे को मेवा लेकर बाहर न जाने दो ताकि उसके बच्चे को रंज न हो। अपनी हाँड़ी के खुशबूदार बघार से उसको ईज़ा (कष्ट) मत दो, मगर इस सूरत में कि एक चमचा उसके यहाँ भेजो। तुमको मालूम है कि पड़ोसी के हुकूक (अधिकार) क्या हैं ? कसम है उस जात की जिसके हाथ में मेरी जान है कि पड़ोसी का हक उसी से अदा होगा जिस पर खुदा तआला रहम करे।

वालदैन (माता पिता) की खिदमत :—

इर्शाद फरमाया वालदैन के साथ सुलूक करना नमाज और रोजा और अमरह (काबा शरीफ की परिक्रमा) और अल्लाह के लिये जिहाद (धर्मयुद्ध) करने से अफजल (श्रेष्ठ) है। इर्शाद फरमाया कि जन्नत की खुशबू पाँच सौ बरस की राह से मालूम होती है, मगर फरजंद (पुत्र) नाफरमाँ (अवज्ञाकारी) और करावत (नातेदारी) को तोड़ने वाला इसको न सूँघेगा और इर्शाद फरमाया कि माँ के साथ सुलूक करना बाप की निस्बत दूना है। इर्शाद फरमाया कि तुम्हारे रब ने फैसला किया है कि सिवाये खुदा के किसी की इबादत न करो और वालदैन के साथ भलाई करो। उनमें एक या दोनों बूढ़े हो जायें तो उनको उफ न कहो और उनको मत झिड़को और उनसे अच्छी बात कहो और अपने नर्मी के बाजू (भुजाएँ) उनके लिए रहम के साथ झुकाओ और कहो "ऐ परवर-दिगार ! इन पर रहम कर, जैसा इन्होंने बचपन में हमें पाला है।" एक आदमी हजरत मुहम्मद (सल्ल०) के पास आया और अर्ज किया 'या रसूल अल्लाह ! मेरे अच्छे बरताव का सबसे ज्यादा हकदार कौन है ?

आपने फरमाया, 'तुम्हारी माँ।' उसने अर्ज किया, 'फिर ?' फरमाया, 'तुम्हारे बाप'।

गुस्सा पर काबू पाना :—

किसी ने आपसे पूछा या रसूलुल्लाह ! दीन क्या है ? आपने फरमाया कि नेक खुल्क (सदाचार)। वह दाहिने बायें से आकर यही पूछता था कि आप हर बार यही जबाब देते। आखिर को आपने फरमाया कि 'तू नहीं जानता कि दीन (धर्म) यही है कि तू गुस्सा में न आया कर।' किसी ने आप से अर्ज किया 'रसूलुल्लाह ! मुझसे मुख्तसर (छोटा) सा काम जिसमें हमीदहसन (श्रेष्ठ) अंजाम हो फरमाइये। इ० फ० कसदन (जानबूझकर) खश्मगी (क्रोधातुर) न हुआ कर। हरचन्द उसने पूछा, आपने बार बार यही जवाब दिया। इ० फ० कि गुस्सा ईमान को ऐसा खराब करता है जैसे एलवा शहद को। जो शख्स गुस्से को पी जाता है अल्लाहतआला अपना अजाब (प्रकोप) उस पर से उठा लेता है। जो शख्स गुस्सा निकाल सकता है और उसे पी जाये, कयामत के दिन हकतआला उसके दिल को रिजामंदी (अपनी स्वीकृति) से भर देगा। इ० फ० कि जो घूँट आदमी पीता है उसमें कोई घूँट गुस्सा के घूँट से ज्यादा हकतआला के नजदीक दोस्त नहीं है और जो बन्दा गुस्से का घूँट पीता है हकतआला उसके दिल को ईमान से पुर कर (भर) देता है। इ० फ० हसद (ईर्ष्या) नेकियों को ऐसा खाता है जैसे आग लकड़ियों को। इ० फ० आपस में हसद न करो, न एक दूसरे से मिलना छोड़ो, न बुग्ज (द्वेष) करो, न नाता तोड़ो और हो जाओ अल्लाह के बंदा भाई।

वादा पूरा करना और सच बोलना :—

इर्शाद फरमाया वादा मिस्ल कर्ज के है। इ० फ० जिस शख्स में तीन बातें हों वह पक्का मनाफिक है (वास्तव में मुसलमान नहीं है), गो नमाज, रोजा करे और जबान से कहे जाय कि मैं मुसलमान हूँ। वह तीन

बातें यह हैं :—बात करे तो झूठी, वादा करे तो पूरा न करे, कोई कुछ अमानत उसके पास रख जाये तो पूरी न करे। इ० फ० कि जब आदमी दूसरे से वादा करे और नियत पूरा करने की हो, मगर किसी वजह से पूरा न कर सके तो इस पर कुछ गुनाह नहीं। एक बार आँहजरत (सल्लह) दो आदमियों के नजदीक से गुजरे। वे दोनों एक बकरी के खरीद फरोख्त की बात कर रहे थे। एक बकसम कह रहा था कि मैं इतने से कम न लूँगा और दूसरा बकसम कहता था कि मैं इतने से ज्यादा न दूँगा। फिर आपने जो मुलाहजा फरमाया तो बकरी खरीददार ने मोल ले ली। आपने फरमाया कि इनमें से एक पर गुनाह और कफ्फारा (प्रायश्चित) दोनों लाजिम हुये। इ० फ० झूठ कम करता है रोजी को। इ० फ० ताजिर (तिजारत अथवा व्यापार करने वाले) फाजिर (दुराचारी) होते हैं। लोगों ने अर्ज किया कि या हजरत (सल्ल०) ! बैअ (बेंचने) को हलाल किया है और सूद को हराम, पस इनके (तिजारत करने वालों के) फाजिर होने का क्या सबब है ? आपने फरमाया कि यह वजह है कि कसम खा-खा कर गुनहगार होते हैं और कुछ कहते हैं तो झूठ बोलते हैं। इ० फ० तीन आदमियों से खुदा दुश्मनी रखता है। एक सौदागर या बेचने वाला, जो बहुत कसम खावे, दूसरा फकीर मुतकब्बिर (अहंकारी), तोसरा बखील (कंजूस) जो देकर एहसान जतावे। इ० फ० अगर छै बातें मेरी मान लो तो मैं तुम्हारे लिये जन्नत का कफील (जिम्मेदार) होता हूँ। लोगों ने अर्ज किया वह क्या हैं ? आपने फरमाया 'एक यह कि जब कहो झूठ न कहो, दूसरे यह कि वादा करो तो खिलाफ न करो, तोसरे कि अमानत में खयानत न करो, चौथे यह कि बदनिगाह न करो (बुरी दृष्टि न डालो), पाँचवें यह कि किसी को ईजा (कष्ट) न दो, छठे यह है कि शर्मगाह (गुप्तअंग) की हिफाजत करो (कामवृत्ति पर संयम रखो)। फरमाया चार चीजें हैं कि जब तुझमें हों, दुनियाँ की कोई चीज तेरे पास न हो, तुझको कुछ जरर (नुक्सान) नहीं। रास्तगुफ्तारी (सच बोलना) हिफ्ज अमानत (किसी की अमानत की सुरक्षा), खुश खुल्की, गिजाए हलाल (हलाल की कमाई)।

गीबत (चुगली) से बचना :—

इर्शाद फरमाया 'बचो तुम गीबत से कि गीबत सख्ततर है जिना (सम्भोग) से। मुसलमानों की गीबत मत करो और न उनकी गीबत की दरपै हो (उनकी चुगली करने की घात में न रहो)। जो कोई अपने भाई की गीबत के दर पै होता है, अल्लाहतआला उसकी गीबत के दर पै होता है और जिस शख्स की गीबत की अल्लाहतआला दर पै होता है उसको उसके घर के अन्दर रुस्वा (निंदित) करता है।' हजरत अनस (रजि०) फरमाते हैं कि आँहजरत (सल्ल०) ने एक रोज रोजा रखने को इर्शाद फरमाया और यह भी फरमाया कि जब तक मैं इजाजत न दूँ तब तक कोई रोजा इफ्तार (रोजा खोलने के लिये कुछ खाना पीना) न करें। लोगों ने रोजा रखा। जब शाम हुई तो आपकी खिदमत में एक एक आदमी ने आना शुरू किया और अर्ज करते गये कि मैंने रोजा रखा था, मुझको इजाजत इफ्तार की हो। आप इजाजत देते गये। एक शख्स ने अर्ज किया 'या रसूलुल्लाह ! दो औरतें हैं, उन्होंने भी रोजा रखा है, आप इजाजत दें तो इफ्तार करें।' आपने मुँह फेर लिया। उसने फिर अर्ज किया, आपने फरमाया 'उन्होंने रोजा नहीं रखा। जो आदमी दिन भर आदमी का गोश्त खाये (चुगली करे) उसका रोजा कैसे होगा ? तू जाकर उनसे कह दे कि तुम्हारा रोजा है तो कै करो।' उसने औरतों को आँहजरत (सल्ल०) का हुक्म सुनाया। उन्होंने कै की तो मुँह से जमा हुआ खून निकला। उसने आकर आपकी खिदमत में माजरा (घटना) बयान किया। आपने फरमाया 'कसम है उस जात की जिसकी कब्ज ए कुदरत में (जिसके अधिकार में) मेरा दम है, अगर यह खून के लोथड़े उनके पेटों में रह जाते तो उनको दोजख मिलता। इ० फ० आग खुश्की में इतनी जल्दी नहीं लगती जितनी गीबत (चुगली) बन्दा के हस्नाब (अच्छे गुणों) को खुश्क करती है। इ० फ० तुममे से अल्लाह के नजदीक महबूब वह होगें जो खल्क में अच्छे होंगे, जिनके पहलू नरम हैं (व्यवहार मृदुल हैं) ऐसे

कि वे औरों से मुहब्बत करते हैं और लोग उनसे मुहब्बत करते हैं और तुममें से खुदा के नजदीक बुरे वह हैं जो गीबत करते फिरते हैं और भाइयों में जुदाई डालते हैं और साफ आदमियों के ऐब ढूँढ़ते हैं।

दुनिया से रगबत (लगाव) न रखना :—

इर्शाद फरमाया दुनियाँ मोमिन का कैद खाना है और काफिर की जन्नत। इ० फ० दुनियाँ मलऊन (तिरस्कृत) है और जो इसमें चीजें हैं वह भी मलऊन हैं बजुज (सिवा) उन चीजों के जो खुदा के वास्ते हैं। इ० फ० जो दुनियाँ से मुहब्बत रखता है वह अपनी आखरत को जरर (नुकसान) पहुँचाता है और जो अपनी आखरत से मुहब्बत करता है वह दुनियाँ का जरर करता है। पस इख्तियार करो बाकी चीज को फानी पर (यानी दुनियाँ की नश्वर चीजों से लगाव न रखो बल्कि उन बातों को ग्रहण करो जो शाश्वत हैं)। आँहजरत (सल्ल०) एक रोज एक घोड़े पर खड़े हो गये और लोगों को इर्शाद फरमाया कि आओ दुनियाँ देखो। उस घोड़े से एक सड़ा हुआ कपड़ा और गली हुई हड्डियाँ लेकर फरमाया कि यह दुनियाँ है (इसमें यह इशारा है कि जीनत (सजावट) दुनियाँ भी इन कपड़ो की तरह कोहना (जीर्ण-शीर्ण) हो जायेगी। जो जिस्म (शरीर) दुनियाँ में परवरिश पाते हैं सड़ गल कर इन हड्डियों की हालत में आ जायेंगे)। इ० फ० 'कयामत के रोज कुछ लोग ऐसे आवेंगे जिनके अमल वादीए थामा के पहाड़ों जैसे होंगे। इनके लिए हुक्म होगा कि दोजख में ले जाओ।' लोगों ने अर्ज किया 'या रसूलुल्लाह ! वह लोग नमाजी होंगे। आपने फरमाया कि वह नमाज भी पढ़ते होंगे, रोजा भी रखते होंगे और कुछ रात (इबादत में) जागते भी होंगे इल्ला (सिवा) इनमे यह बात होगी कि जब दुनियाँ की अदना चीजों के सामने होते तो उस पर कूद पड़ते थे। इ० फ० जो शख्स तलब करे दुनियाँ को बतरीक हलाल और ज्यादा हाजत है वास्ते इजहार फख्र के उसमें (अर्थात् जो व्यक्ति हलाल तरीके से धन दौलत पैदा करता है

अधिकतर इस अभिलाषा से कि लोग उसे बड़ा कहें), मुलाकात करेगा अल्लाहतआला कयामत के दिन जिस हालत में गुस्सा और नराज होगा उस पर और जो शख्स तलब करे दुनिया को बगरज बचने मोहताजी (निर्धनता) और वास्ते हिफाजत अपने नफ्स के हलाको से तो वह कयामत के दिन इस तरह उठेगा कि मुँह उसका मिस्ल चाँद दो हफ्ते के (पूर्णिमा के चन्द्रमा की तरह) चमकता होगा। इ० फ० कि बकरियों के झुण्ड में दो भूखे भेड़िये छोड़ दिये जायें तो उसमें उतना नुकसान नहीं करते जितना माल (सम्पत्ति) और शरफ (सम्मान) की मुहब्बत मुसलमान आदमी के दीन में नुकसान करती है। इ० फ० अगर हों आदमी के पास दो जंगल सोने के तो चाहेगा उनके सिवा तीसरे को और नही भरता है आदमी का शिकम (पेट) मगर खाक और जो कोई तौबा करे अल्लाहतआला उसकी तौबा कुबूल करता है। इ० फ० बूढ़ा होता है आदमी और जवान होता है उसके साथ उम्मीद और माल मुहब्बत। इर्शाद फरमाया खुशी है उसको कि इस्लाम की हिदायत को जावे और मईशत (रोजी, जीविका) बसर औकात हो और उस पर काने (सतुष्ट) हो। इ० फ० तवंगरो नाम 'नफ्स' के तवंगर होने का है (मन में अमीर बनने की तृष्णा को तवंगरी कहते हैं)। इ० फ० मुझको दुनिया से क्या काम है ? और दुनिया की ऐसी मिसाल है जैसे कोई सवार गर्मी के दिन में चले और उसको पेड़ मिले और उसके साये के नीचे एक सायत (घड़ी) सो रहे और फिर चल दे और उसे छोड़ आये। इ० फ० दुनियादार की मिसाल ऐसी है कि जैसे पानी में चलने वाला कहीं मुमकिन है कि पानी में चले और पाँव तर न हों। इ० फ० कि दुनिया की मिक़्दार (मात्रा या तौल) आखरत में ऐसी है जैसी कोई समुद्र में अँगुली पर किस कदर (कितना) पानी आया है ! इर्शाद फरमाया कि जिब्रील अलैहिस्सलाम ने मेरे दिल में यह फूँक दिया है कि कोई नफ्स नहीं मरने का, जब तक अपना रिज्क पूरा न कर ले। पस अल्लाहतआला से डरो और मियानारवी करो (बीच की चाल इख्तियार करो) इ० फ० 'ऐ अबूहरीरः (रजि०)

तुझको सख्त भूख लगे तो एक प्याला पानी पर किफायत (संतोष) कर और दुनिया पर लात मार। नमाज ऐसी पढ़ जैसे कोई रुखसत (विदा) होने वाला पढ़ता है यानी फिर शायद इत्तफाक (संयोग) पढ़ने का न होगा। यही नमाज आखरी है और ऐसी बात कर जिसका कल को उज्र (आपत्ति) न करना पड़े और जो कुछ लोगों के पास मौजूद है उससे नाउम्मीद हो यानी किसी के माल की तमाँ (अभिलाषा) मत रख। इ० फ० जो मियानारवी करता है वह मुफलिस (निर्धन) नहीं होता। इ० फ० तीन चीजें नजात देने वाली हैं। एक खौफ खुदा जाहिर व बातिन में, दूसरे मियाना रवी (बीचवाली चाल) तवंगरी और फकीरी में, तीसरे एतदाल हालत रिजा और गजब में (सुख और दुःख दोनों ही में संतुलित दशा में रहना)। इ० फ० मियानारवी और हुस्न सुलूक और नेक हिदायत एक हिस्सा है कुछ ऊपर बीस नबूवत के हिस्सों में से (पैगम्बर होने की विशेषताओं में से)। इर्शाद फरमाया जो शख्स मियानाखी करे उसको खुदा तवंगर (धनवान) करता है और जो बेजा खर्च करता है उसको खुदा मोहताज करता है और जो जिक्र खुदा करे, खुदा उससे मुहब्बत करता है। इ० फ० लोगों से बेपरवाह होना ईमान की इज्जत है। इ० फ० कि दुनिया में अपने आपसे कम को देखो, ज्यादा पर नजर न करो।

सब्र (धैर्य) और सखावत (दानशीलता) :—

आँ हजरत सल्ल० से किसी ने पूछा 'आमाल से अफजल कौन-सा अमल है ?' फरमाया सब्र और सखावत। इ० फ० कि खुदाताला ने अपने सब औलिया (संत महात्माओं) में सखावत (दानशीलता) और हुस्न खुल्क (अच्छा अख्लाक) पैदा किया है। इ० फ० दो आदतें अल्लाहताला को अच्छी मालूम होती हैं और दो बुरी। दो आदतें कि उसको महबूब हैं (पसन्द हैं) वह हुस्न खुल्क और सखावत हैं और जो उसे नापसन्द हैं वह खुल्क बद (बुरा आचरण) और बुख्ल (कंजूसी) और

अल्लाहतआला किसी बन्दे की बेहतरी चाहता है तो उससे लोगों की हाजतें (जरूरतें) पूरी कराता है। इ० फ० कि सखी (दानशील) गुनहगार खुदा के नजदीक बखील (कंजूस) आबिद (इबादत करने वाले) से अच्छा है। इ० फ० सब्र आधा ईमान है। इ० फ० कि जो चीज तुमको बुरी मालूम होती है उस पर सब्र करने में बहुत खैर (कल्याण) है। इ० फ० खुदातआला कि ताजीम (आदर सत्कार) और उसके हक की सनाख्त (पहचान) में यह बात है कि तू अपने दर्द का शिकवा न कर और अपनी मुसीबत का जिक्र न करे। इ० फ० अहमक वह है जो अपनी नफ्स (मन) को उसकी ख्वाहिशों (इच्छाओं) के ताबे (अधीन) करे और अल्लाहतआला पर तमन्ना करे (ईश्वर से मिलने की इच्छा करे)। इ० फ० कोई शख्स जन्नत में बदूँ (सिवा) अल्लाह तआला के रहमत के दाखिल न होगा। इ० फ० जो शख्स दुनिया में अपने से कमतर को देखे और दोन की बात में अपने से बेहतर को, तो अल्लाह तआला उसको साबिर (सब्र करने वाला) और शाकिर (खुदा का शुक्रिया अदा करने वाला) लिखता है। इ० फ० कि जब किसी बन्दे पर खुदातआला की नेमत ज्यादा होती है तो उसकी तरफ लोगों की हाजतें (जरूरतें) भी अधिक होती हैं। पस अगर वह उससे सुस्ती बरतता है तो उस नेमत को खो देता है और अल्लाह तआला फरमाता है जो चीजें (नेमतें) किसी कौम (जाति) के साथ होती हैं अल्लाह उनमें कोई तगईयुर (तब्दीली) नहीं करता जब तक कि वह खुद अपने नफ्सों में तब्दाली न करें।

मुसीबत खुदा की नेमत (उपहार) है —

इ० फ० जिसकी अल्लाह तआला बेहतरी चाहता है उसको मुसीबत देता है। इ० फ० कि अल्लाह तआला फरमाता है कि जब मैं बन्दा पर मुसीबत बदन की या माल की या औलाद को भेजता हूँ और वह उसको सब्र जमील के साथ सहता है तो कयामत के रोज मुझे शर्म आती है कि ऐसे शख्स के लिए अमल की तराजू खड़ी करूँ या दफ्तर आमाल (कर्मों

का लेखा जोखा) खोलूँ। इ० फ० जब खुदातआला को किसी बन्दे की बेहतरी मंजूर होती है, उससे दोस्ती किया चाहता है तो उस पर मुसीबतों को डाल देता है और हवादिस (दुर्घटनाओं) की बौछार उस पर गिराता है। जब वह बन्दा खुदातआला को पुकारता है तो फरिश्ते कहते हैं कि यह आवाज जानी बूझी है और अगर दोबारा पुकारता है और "य रब्ब" कहता है तो अल्लाह तआला इर्शाद फरमाता है कि ऐ बन्दा ! क्या कहता है, मैं हाजिर हूँ, जो कुछ तू मुझसे माँगेगा मैं दूँगा, अगर यहाँ तुझसे बेहतर चीज हटा दूँगा तो तेरे लिए उससे बेहतर अपने पास रख छोड़ूँगा। इ० फ० जब कयामत का दिन होगा तो अमल वाले हाजिर होंगे और उनके आमाल, नमाज, रोजा, सदका और हज सब तराजू में तौले जायेंगे और पूरा-पूरा सवाब इनायत होगा। पर जब मुसीबत वाले आवेंगे तो उनके लिए न तराजू खड़ी होगी न नामए आमाल (कर्म का लेखा जोखा) खोला जावेगा और सवाब उन पर ऐसे ही डाला जावेगा जैसे बला डाली गई हो। इ० फ० एक दिन का बुखार साल भर का कफ्फारा (प्रायश्चित) होता है। इ० फ० तुममें से कोई मोमिन न होगा जब तक कि अल्लाह और उसका रसूल सल्ल० उनके मासिवा से (उनके अलावा और सभी से) महबूब तर न हों। इ० फ० जो शख्स अपने जालिम पर बद्दुआ करता है वह अपना बदला लेता है। हिदायत यह है कि अपने जालिम के लिए बद्दुआ की बजाय दुआए खैर करना चाहिए यह समझते हुए कि उसका जुल्म भी खुदा की मर्जी से हो रहा है। इ० फ० दवा करो अल्लाहतआला के बन्दों की, जिसने मर्ज उतारा है, उसी ने दवा उतारी है। इ० फ० हम अम्बिया के गिरोह पर और लोगों की निस्बत ज्यादा सख्त मुसीबत होती है, फिर इसी तरह दरजा बदरजा कम होती जाती है। इ० फ० मुसीबत बन्दे पर बकद्र ईमान हुआ करती है। पस अगर ईमान उसका सख्त और पक्का होगा तो मुसीबत भी सख्त होगी। अगर उसके ईमान में कमजोरी होगी तो मुसीबत भी कमजोर होगी। इ० फ० अल्लाहतआला जब किसी बन्दा को दोस्त रखता है तो उस पर बला भेजता

है। वह अगर उस पर सब्र करता है तो उसको मुज्तबा (प्रतिष्ठित) करता है और अगर उस पर राजी होता है तो मुस्तफा (निर्मल, पवित्र) करता है।

तौबा की फजीलत (अच्छाई)

इ० फ० तौबा करने वाला अल्लाहतआला का प्यारा होता है। इ० फ० गुनाह से तौबा करने वाला मिस्ल उस शख्स के है जिस पर गुनाह न हो। इ० फ० कोई शख्स सफर में किसी ऐसी जगह पहुँचे जो अत्यन्त कष्ट-दायक हो और थोड़ी देर के लिए वहाँ ठहर जाय, और उसके साथ उसकी सवारी हो जिस पर कि उसका खाना पीना लदा हो, वह शख्स अपना सर रखकर सो रहे और फिर जागे तो सवारी न पावे और उसको ढूँढ़ने लगे और जब उस पर धूप और प्यास और जो खुदा को मंजूर हो उसकी शिद्दत और गलबा हो तो कहे मैं जहाँ था (जहाँ रुका था) वहीं लौट कर चलूँ और सो रहूँ ताकि मर जाऊँ और पहुँच कर मरने के लिए अपने हाथ को तले रखकर सो रहे और फिर जो आँख खुले तो देखे कि जिस सवारी पर तोशा (सामान) वगैरह था वह पास खड़ी है तो जितनी खुशी उस शख्स को अपनी सवारी मिलने की है उससे ज्यादा खुदातआला बन्दा मोमिन की तौबा से खुश होता है। इ० फ० कि अगर तुम इतनी खतायें करो कि आसमान तक पहुँच जायँ फिर नादिम हो (शरमिन्दा हो या पछ-ताये) तो अल्लाहतआला तुम्हारा तौबा कबूल कर लेगा। इ० फ० गुनाह का कफ्फारा (प्रायश्चित) नदामत है। इ० फ० कि बाजे गुनाह ऐसे हैं कि जिनका कफ्फारह सिर्फ रंज ही होगा। इ० फ० कि ऐ लोगों! अल्लाह से तौबा करो और बख्शिश चाहो, बेशक मैं दिन में सौ मरतबा तौबा करता हूँ। इ० फ० अल्लाहतआला अपना हाथ रात को फैलाता है ताकि दिन का गुनहगार तौबा कर ले यहाँ तक कि सूरज अपने डूबने की जगह से निकले (यानी तौबा का दरवाजा कयामत तक के लिए खुला रहेगा)। इ० फ० अल्लाहतआला मोमिन बन्दे की तौबा उस वक्त तक कुबूल करता है जब तक (मरते समय की) खरखराहट शुरू न हो।

खौफे खुदा, तवक्कुल और जुहद :—

इ० फ० हिक्मत (बुद्धिमत्ता, दानाई) की अस्ल (सार तत्त्व) खौफ इलाही है। जो शख्स अल्लाह से डरता है, उससे हर एक चीज डरती है और जो शख्स गैर अल्लाह से डरता है उसको अल्लाह हर चीज से डराता है। इ० फ० तुममें अक्ल का पूरा वह है जो सबसे ज्यादा खौफ करे अल्लाह का और जिन बातों का अल्लाहतआला ने हुक्म दिया है और जिनको मना फरमाया है उनको सबसे अच्छीतरह गौर करे। इ० फ० अपनी जबान बंद रख और घर से मत निकल और अपनी खता पर रोया कर। इ० फ० मेरे पास हजरत जिब्रील (अलै०) कभी नहीं आये मगर इस सूरत से कि खौफे खुदा से काँपते थे। इ० फ० खुदातआला से मिल फकीर होकर, और न मिल गनी (अमीर) होकर। इ० फ० 'ऐ आयशा (रज़ि०) अगर तू मुझसे मिलना चाहती है तो फुकरा (फकीरों) की सी जिन्दगी इख्तियार करना और तवंगरों (धनवानों) के पास मत बैठना और अपना दुपट्टा मत उतारना जब तक कि उसमें पैवंद न लगाए। इ० फ० ऐ फकीरों के गिरोह ! अल्लाहतआला की रजामंदी अपने दिलों से करो कि तुमको सवाब (पुण्य) तुम्हारे फक्र (फकीरी) का मिले, वरना नहीं मिलेगा। इ० फ० हर एक शै (चीज) की एक कुञ्जी है और जन्नत की कुंजी मसाकीन की (दीन, असहाय लोगों की) मुहब्बत है। इ० फ० कि बंदों में से महबूबतर (अधिक प्यारा) खुदातआला के नजदीक वह है जो उसके रिज्क (उसकी दी हुई रोजी) पर काने करता है (संतुष्ट है) और खुदातआला से खुश है। इ० फ० कोई फकीर को निस्बत (की अपेक्षा) अफजल (श्रेष्ठ) नहीं है जबकि वह राजी हो (ईश्वर की प्रसन्नता में प्रसन्न हो)। इ० फ० अल्लाहतआला दोस्त रखता है फकीर न सवाल करने वाले अयालदार को (जो फकीर बाल बच्चों वाला हो और किसी से माँगता न हो उसको खुदा दोस्त रखता है)। इ० फ० अल्लाहतआला किसी बंदा की बेहतरी चाहता है तो उसको दुनियाँ में जाहिद करता है (संयमी, परहेजगार बनाता है) और अपने

ऐबों का बीना (देखने वाला) बना देता है। इ० फ० जो शख्स चाहे कि अल्लाह उसको इल्म बेसीखे दे और हिदायत बेरहनुमाई के (बिना पथ-प्रदर्शन के) देवे तो उसको चाहिये कि दुनियाँ में जुहद करे (संयमित एवं परहेजगारी का जीवन व्यतीत करे)। इ० फ० कि अगर तुम लोग अल्लाहतआला पर जैसा चाहिये वैसा तवक्कुल (भरोसा) करो, तो तुमको खुदातआला इसी तरह रोजी दे जैसे परिदों (पक्षियों) को देता है कि सुबह भूखे उठते हैं और शाम को सेरशिकम हो जाते है (उनका पेट भर जाता है)।

हजरत ईसा मसीह अलै० के नजूल (अवतरण) का बयान[1]

हजरत अबू हरीरह रजि० फरमाते हैं कि रसूले खुदा (सल्ल०) ने फरमाया, 'कसम उसकी जिसके हाथ मेरी जान है, अनकरीब तुममे इब्न मरियम (मरियम के बेटे हजरत ईसा मसीह अलैहिस्सलाम) नाजिल होंगे (अवतरित होंगे)। वह बाइन्साफ हुक्म करने वाले होंगे, सलीब (सूली) को तोड़ डालेंगे, खर्रीर (खर्राटा लेने वालों), खतरीर (खतरा पैदा करने वालों) को कत्ल कर देंगे और जंग को मौकूफ (स्थगित) कर देंगे और माल बहा-बहा फिरेगा यहाँ तक कि कोई उसे कुबूल न करेगा, यहाँ तक कि एक सिज्दा (ईश्वर के लिये सिर झुकाना) तमाम दुनिया व माफीहा (संसार तथा संसार के भीतर जो कुछ है सब) से बेहतर होगा।"

आपके मोजिजात (चमत्कार)

आँ हजरत (सल्ल०) पढ़े-लिखे नहीं थे। आपने कोई इल्म नहीं हासिल किया और निरक्षर होने के कारण किसी किताब का मुताला (अध्ययन) नहीं किया और न इल्म की तलब में कभी सफर किया और हमेशा जाहिल (असभ्य) अरब वालों के बीच रहे। फिर भी जो शख्स आपके

१—'पुस्तक' सहीह बुखारी जिल्द दो, पेज १७९, पारा १३, किताब पैदाइश अम्बिया में यह महत्वपूर्ण हदीस वर्णित है।

अख्लाक (श्रेष्ठ कर्म व व्यवहार) हालतें तथा अनोखी बातें व जवाबात जो आपने दकीक मसायल (गूढ़ विषयों) में इर्शाद फरामाये हैं उनका मुशाहिदा करे (देखे), उसको किसी तरह का संदेह नहीं रह सकता कि ऐसी बातें मनुष्य के सामर्थ्य के परे हैं और बिना दैवी प्रेरणा और दैवी शक्ति के संभव नहीं हैं और ऐसी सूरत में न किसी चमत्कार के वर्णन की जरूरत है और न किसी निशानी की। फिर भी अल्लाह तआला ने आपके हाथों से इतने अधिक चमत्कार प्रकट कराये हैं जो बेशुमार और असीम है। यहाँ संक्षेप में कुछ चमत्कार तबर्रुकन (प्रसाद रूप में) अंकित किये जा रहे हैं।

एक बार जब मक्का में आपसे कुरैश ने कोई चमत्कार दिखलाने के लिये अनुरोध किया, उसी वक्त लोगों ने देखा कि चाँद फट गया। एक बार हजरत अनस (रजि०) जौ की कुछ रोटियाँ अपने हाथ में ले गये। आँहजरत (सल्ल०) ने उनको अस्सी आदमियों से ज्यादा लोगों को खिलाया और एक बार थोड़े से खजूर बश्र के बेटे से अपने हाथों में लाये, उनसे आपने सब लश्कर वालों (फौजवालों) का पेट भर दिया और फिर भी बच रहे। एक छोटा सा प्याला था कि जिसमें आँ हजरत सल्ल० का हाथ फैल न सकता था, उसमें आपने हाथ डाला तो आपकी अँगुलियों से पानी फूट निकला जिससे तमाम फौज ने वुजू किया और पानी पिया' क्योंकि सभी प्यासे थे। आपने एक बार बुजू का पानी तबूक (एक जगह) के चश्मों (झरनों) में डाल दिया। यद्यपि उनमें पानी न था तो इतना पानी उनमें चढ़ आया कि फौजवालों ने जो हजारों थे पानी पिया, और छक गये। एक बार आपने एक मुट्ठी मिट्टी की कफ्फार के फौज की तरफ फेंकी और वह सबकी आँखों में पड़ी और बेकार बेचैन कर दिया। जब आपके लिये मिंबर[1] तैयार हुआ तो जिस सुतून (खम्भा) के सहारे आप खुत्बा (धर्मोपदेश) पढ़ा करते थे उसने नाला किया (आर्तनाद किया), यहाँ तक कि उसकी आवाज ऊँट

१–मिंबर -मस्जिद में वह ऊँचा स्थान जहाँ इमाम खड़े होकर खुत्बा (धर्मोपदेश) पढ़ते हैं।

की आवाज की तरह असहाब ने सुनी। आपने उसको सीना से लगाया। वह खामोश हो गया। किसी सहाबह रजि०की आँख निकल कर गिर पड़ी थी। आपने उसको अपने दस्त मुबारक से उसी जगह रख दिया और वह ज्यादा खूबसूरत हो गई और खैबर में हजरत अली (रजि०)की आँखें दुखती थीं, आपने अपना लबमुबारक (होठ) लगा दिया, उसी वक्त अच्छी हो गईं, आपने उनको झंडा देकर युद्ध के लिये रवाना किया। एक सहाबी (रजि०) की टाँग में चोट आ गई थी, आपने उस पर दस्त मुबारक फेर दिया, वह फौरन अच्छी हो गई। एक बार हकम बिन अलआस खबीस ने आपके रफ्तार (चाल) की नकल मजाक के तौर पर की। आपने फरमाया कि तू ऐसा ही रहे, बस वह हमेशा लड़खड़ाता चलता, यहाँ तक कि वह मर गया। हजरत उस्मान रजि० को आपने खबर दी कि तुमको बलवा पहुँचेगा, जिसके बाद जन्नत है, अतः आप बलवा ही में शहीद हुये। हजरत इमाम हसन (अलै०)के विषय में इर्शाद फरमाया कि अल्लाहतआला उनके सबब से मुसलमानों की दो भारी जमातों में सुलह करेगा, चुनाँचे आपने हजरत मुआविया (रजि०) से सुलह की और एक शख्स को जिसने अल्लाहतआला की राह में जिहाद किया था, आपने फरमाया कि यह दोजखी होगा तो ऐसा ही हुआ यानी उस शख्स ने खुद अपने आपको हलाक (नष्ट किया)। आपने खबर दी थी कि सफेद महल के सराय में जो खजाना है मुसलमानों पर तकसीम होगा, आपके कथनानुसार हजरत उमर (रजि०) के शासन काल में यहघटना घटित हुई। आपने खबर दी थी कि हमारी धर्म पत्नियों में आपसे पहले उनका इंतकाल (शरीरांत) होगा जो सबसे ज्यादा सखी (दानशील) हैं, अतः हजरत जैनब (रजि०) का सबसे पहले इंतकाल हुआ और वह आपकी सभी धर्मपत्नियों में सबसे ज्यादा सखी थीं (दानशील थीं)।

"हजरत मुहम्मद सल्ल० समस्त मानव जाति के संदेशवाहक व अंतिम रसूल हैं"

पवित्र कुरआन में निम्नांकित आयतें उल्लिखित हैं :—

"(ऐ मुहम्मद !) हमने तुमको हक (सत्य) के साथ शुभ सूचना देने वाला और सचेत करने वाला बनाकर भेजा है और कोई गिरोह (जाति) ऐसी नहीं जिसमें कोई सचेत करने वाला न गुजरा हो।" (सूरा ३५, आयत २४)।

"ऐ मुहम्मद ! तुम तो केवल एक सचेत करने वाले हो और हर जाति के लिये एक मार्ग बताने वाला (पथ प्रदर्शक) हुआ है" (सूरा १३, आयत ७)।

"ऐ मुहम्मद ! तुम कहो कि ऐ मनुष्यो ! मैं तुम सबकी ओर उस ईश्वर का संदेशवाहक हूँ, जो आकाशों और पृथ्वी के राज्य का मालिक है। उसके सिवा कोई इलाह (पूज्य) नहीं है। वही जिलाता और मारता है, अतः ईमान लाओ ईश्वर पर और उसके संदेशवाहक अपढ़ नबी पर, जो ईश्वर की सभी वाणियों (अर्थात् ईश्वरीय ग्रन्थों) को मानता है तथा उसके अनुयायी बनो ताकि तुम पर कल्याण का मार्ग खुल जाये" (सूरा ७, आयत १५८)।

"अत्यन्त महिमाशाली है वह ईश्वर जिसने अपने बंदे हजरत मुहम्मद (सल्ल०) पर फुरकान (सत्य और असत्य में भेद करने वाला कुरआन) उतारा ताकि वह सारे संसार को (कुकर्म के दुष्परिणाम से) सचेत करने वाला हो।" (सूरा २५, आयत १)।

"और ऐ मुहम्मद ! हमने तुम्हें तो सारे ही मनुष्यों के लिये शुभ सूचना देने वाला और सचेत करने वाला भेजा है, परन्तु अधिकतर लोग जानते नहीं हैं। (सूरा ३४, आयत २८)।

"(मुसलमानो !) मुहम्मद तुममें से किसी व्यक्ति के पिता नहीं हैं परन्तु वह ईश्वर के संदेशवाहक और अंतिम रसूल हैं।" (सूरा ३३-आयत ४०)।

कुरआन शरीफ की उक्त आयतों से तीन बातें स्पष्ट रूप से सिद्ध होती हैं :-(१) हर जाति में रसूल (अवतार) हुये हैं। (२) पैगम्बर हजरत मुहम्मद (सल्ल०) समस्त मानव जाति के लिये संदेश वाहक हैं। (३) हजरत मुहम्मद सल्ल० ईश्वर के अंतिम रसूल हैं। एक विद्वान खोजी पुरुष (शोधकर्त्ता) डाक्टर वेद प्रकाश उपाध्याय प्रोफेसर पंजाब विश्व-

विद्यालय ने अपने शोध ग्रंथ 'नराशंस और अंतिम ऋषि'[1] में इस बात को सिद्ध किया है कि वेदों में जिन अंतिम ऋषि 'नराशंस' का वर्णन किया है, और जिनके अवतरण की भविष्यवाणी वेदों में की गई है वह हजरत मुहम्मद सल्ल० ही हैं। यही नहीं डाक्टर उपाध्याय ने यह भी सिद्ध किया, है कि महात्मा बुद्ध ने भी हजरत मुहम्मद सल्ल० को अंतिम बुद्ध के रूप में इस पृथ्वी पर अवतरित होने की भविष्य वाणी की थी । अं तम बुद्ध के विषय में जो भविष्यवाणी गौतमबुद्ध ने अपने मृत्युकाल के समय अपने प्रिय शिष्य नन्दा से की थी वह इस प्रकार है–'नन्दा ! इस संसार में मैं न तो प्रथम बुद्ध हूँ और न अंतिम बुद्ध हूँ। इस जगत में सत्य तथा परोपकारकी शिक्षा देने के लिये अपने समय पर एक और बुद्ध आयेगा। वह पवित्र अंतःकरण वाला होगा। उसका हृदय शुद्ध होगा। ज्ञान तथा बुद्धि से सम्पन्न तथा सब लोगों का नायक होगा। जिस प्रकार मैंने जगत को अनश्वर सत्य की शिक्षा प्रदान की है उसी प्रकार वह भी जगत को सत्य की शिक्षा देगा। नन्दा ! उसका नाम मैत्रेय होगा। "इसी प्रकार हजरत ईसा मसीह (अलै०) ने भी हजरत मुहम्मद सल्ल० के अवतरण की भविष्य वाणी अपने शिष्यों से की थी, जो निम्नवत् है :—

"यदि तुम मुझ से प्रेम करते हो तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे और मैं पिता से विनती करूँगा और वह तुम्हें एक और सहायक देगा कि वह सर्वदा तुम्हारे साथ रहे (बाइबिल का अध्याय John-14 (15-16))और जो कुछ मैंने तुमसे कहा है वह तुम्हें स्मरण करायेगा। मैं अबसे तुम्हारे साथ बहुत बातें न करूँगा, क्योंकि इस संसार का सरदार आता है (अध्याय John-14 (30)) परन्तु जब वह सहायक आयेगा जिसे मैं पिता की ओर से तुम्हारे पास भेजूँगा अर्थात् सत्य की आत्मा जो पिता की ओर से निकलती है तो वह मेरी गवाही देगा।" (बाइबिल का अध्याय John

---

१–इस ग्रंथ की व्याख्या हजरत मुहम्मद इमामुद्दीन रामनगरी ने अपने ग्रंथ 'वेद के ऋषि नराशंस (कुरआन के अंतिम ईसदूत मुहम्मद)' में प्रकाशित की है। प्रकाशक हैं:– इस्लामी साहित्य सदन रामनगर-वाराणसी।

15 (26)) तो मैं तुमसे सच कहता हूँ कि मेरा जाना तुम्हारे लिये अच्छा है क्योंकि यदि मैं न जाऊँगा तो वह सहायक तुम्हारे पास न आयेगा। परन्तु यदि मैं जाऊँगा तो उसे तुम्हारे पास भेज दूंगा (John 16 (7)) जब वह अर्थात् सत्य की आत्मा आयेगा, तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग दिखाएगा क्योंकि वह अपनी ओर से कुछ न कहेगा और वह आने वाली बातें तुम्हें बतायेगा (अध्याय John 16 (13))।

प्रत्यक्ष के लिये प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती :—

उक्त अनुच्छेद में डाक्टर वेद प्रकाश जी ने हजरत मुहम्मद सल्ल० के इस समस्त मानव जाति के अंतिम पैगम्बर होने के विषय में जो प्रमाण प्रस्तुत किये हैं वह अत्यन्त सराहनीय हैं। ईश्वर से यही विनम्र प्रार्थना है कि वह अपनी दया कृपा से डाक्टर वेद प्रकाश जी को उनके इस महान पवित्र प्रयास का नेक बदला अता फरमाये। इस संदर्भ में इस नाचीज तुच्छ लेखक को यह अर्ज करना है कि हजरत मुहम्मद सल्ल० समस्त मानव जाति के लिये ईश्वर के सन्देहवाहक और रसूल हैं, इस तथ्य के ज्वलन्त प्रमाण तो महान पवित्र नक्शबन्दिया सिलसिले के वे हजारों अनुयायी हैं जो हर जाति और मजहब के हैं जो मुसलमान जाति तथा इस्लाम धर्म के अनुयायी नहीं हैं और उनको जो लौकिक और पारलौकिक फैज इस सिलसिले की निस्बत से हासिल हो रहा है वह कपोल कल्पित या ख्याली पुलाव नहीं है, वरन उनके दिलों पर जो कैफियत गुजरती है वह आफताब की रोशनी (सूर्य के प्रकाश) की तरह इस हकीकत का अयाँ (प्रकट) करती है कि हजरत मुहम्मद (सल्ल०) केवल मुसलमानों तथा इस्लाम धर्म के मानने वालों के ही नहीं वरन समस्त मानव जाति के रहनुमा और रसूल हैं।

ऐ परवरदिगार ! हम सभी तेरे खाकसार बन्दे तुझसे यही आजजी और इन्कसारी के साथ दुआ करते हैं कि तू अपने फज्लो करम से हमारे गुनाहों को मुआफ करते हुए सभी को ऐसी तौफीक अता फरमा कि हम तेरे अन्तिम रसूल और समस्त मानव जाति के रहनुमा हजरत मुहम्मद मुस्तफा सल्ल० के बतलाये हुये हक के (सच्चाई के) मार्ग पर चलकर तेरा कुर्बत और मुहब्बत हासिल कर सकें। आमीन।

हालात अमीरुल मोमनीन हजरत अबू बक्र सिद्दीक (रजि०)

हजरत अबू बक्र सिद्दीक (रजि०) का शुभ जन्म सालफील से दो साल और कुछ कम चार महीने के बाद हुआ। ऊपर से सातवीं पीढ़ी में आपका नसब (खानदान) हजरत मुहम्मद (सल्ल०) के नसब से मिलता है। आपकी अठारह साल की उम्र थी कि जनाब पैगम्बरे खुदा सल्ल० की सुहबत का सौभाग्य प्राप्त हुआ। हजरत अब्बास (रजि०) फरमाते हैं कि कुरआन शरीफ का यह आयत (१५) सूरा अल-अहकाफ की "हत्ताएज़ा बलग़ा असुद्दहू व बलग़ना अरबईना" (यहाँ तक कि जब इन्सान अपनी कुब्वत की यानी युवावस्था की उम्र तक पहुँचा और चालीस साल का हुआ), हजरत अबू बक्र सिद्दीक (रजि०) की शान में नाज़िल हुई और किस्सा इसका यह है कि जब हजरत अबू बक्र सिद्दीक रजि० की उम्र बीस साल की हुई तो आप हजरत मुहम्मद सल्ल० के साथ व्यापार के लिए शाम मुल्क की तरफ गये और रास्ते में एक स्थान पर बेरी के पेड़ के नीचे हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने नजूल फरमाया (रुके)। उस पेड़ के नजदीक एक दर्वेश खिताबी रहता था। हजरत अबू बक्र (रजि०) उसके पास गये। उसने पूछा कि बेरी के पेड़ के नीचे कौन है ? अबू बक्र (रजि०) ने कहा मुहम्मद बिन अब्दुल्ला बिन मुत्तलब। उस राहिब (ईसाई सन्यासी) ने कहा 'वल्लाह ! यह नबी हैं। हजरत ईसा मसीह अलै० के बाद इस पेड़ की छाया में कोई नहीं बैठा, सिवा मुहम्मद नबी अल्लाह (सल्ल०) के। सो राहिब की यह बात हजरत सिद्दीक (रजि०) के दिल में जम गई और पत्थर की लकीर की तरह नक्श हो गई और उसी दिन से अबू बक्र (रजि०) ने हजरत (सल्ल०) को सुहबत बमुहब्बत इख्तियार की, यहाँ तक कि चालीस बरस के हुए

और अबू बक्र (रजि०) इस्लाम लाने के वक्त अड़तीस साल के थे। आपने फरमाया कि हजरत (सल्ल०) के पैगम्बर होने के पूर्व एक दिन मैंने ख्वाब में देखा कि एक नूर अजीम आसमान में काबा की छत पर उतरा है, और फिर तमाम मक्का के घरों में फैला है। इसके बाद वह नूर एक जगह जमा हो गया और मेरे घर में आ गया। चन्द साल बाद एक यात्रा पर जाने का संयोग हुआ और एक जगह ईसाई सन्यासी से इस ख्वाब की ताबीर (स्वप्न फल) पूछी। उसने कहा कि तुम कौन हो ? मैंने कहा कि मैं एक कुरैश हूँ। उसने कहा कि अल्लाह तआला तुममें से एक पैगम्बर पैदा करेगा। उसके जीवन काल में तुम उसके वजीर होगे और उसके बाद उसके एक खलीफा। जब हजरत मुहम्मद (सल्ल०) पैगम्बर हुये और आपने हजरत अबू बक्र सिद्दीक (रजि०) पर इस्लाम पेश किया तो आपने बिना तर्क-वितर्क के तथा बिना एक क्षण के रुके हुए इस्लाम कुबूल फरमाया (स्वीकार कर लिया)।

जनाब पैगम्बर खुदा (सल्ल०) आपकी प्रशंसा में औरों से फरमाया करते थे कि तुम में और अबू बक्र (रजि०) में फर्क यह है कि अबू बक्र ने इस्लाम बिना हुज्जत कुबूल किया। तुमने बहुज्जत (बहस व दलील के साथ)। जिस वक्त से आपने इस्लाम कुबूल फरमाया सफर या हजर (घर में रहने पर) सिवा हजरत मुहम्मद (सल्ल०) की आज्ञा के उनसे अलहदा नहीं हुए। आपकी जात से इस्लाम और मुसलमानों को बहुत फायदा पहुँचा। इस्लाम के शुरू में जब कफ्फार अपने काबू में गुलाम बनाये हुए मुसलमानों को बहुत कष्ट पहुँचाया करते थे तो आप रुपया देकर उनको जालिमों के पञ्जे से छुड़ा लिया करते थे। इस प्रकार आपने। हजरत बिलाल (रजि०) और हजरत आमिर बिन फहीरह (रजि०) को खरीद कर आजाद कर दिया। जनाब रसूलुल्लाह (सल्ल०) आपके माल (धन सम्पत्ति) में उसी तरह

तसर्रुफ (प्रयोग, खर्च) करते जैसे कोई अपने माल में करता है। जिस रोज हजरत अबू बक्र सिद्दीक (रजि०) ईमान लाये उस रोज उनके पास चालीस हजार दीनार (सोने के सिक्के, अशरफी) और चालीह हजार दिर्हम (चाँदी के सिक्के) थे। वह सब रसूल अल्लाह सल्ल० पर खर्च कर दिये। जब मदीने की तरफ हिजरत की तो आपके पास पाँच हजार दीनार थे वह इस्लाम और मुसमानों में खर्च कर दिये।

एक बार हजरत अबू बक्र सिद्दीक (रजि०) हजरत मुहम्मद (सल्ल०) के पास सिर्फ एक अबा (चोंगा) पहिने हुए जिसमें बजाए तक्मा—(बटन की जगह लगायी जाने वाली घुण्डी) के एक काँटा लगा हुआ था हाजिर हुए। आँ हजरत सल्ल० ने दरियाफ्त किया कि "ऐ अबू बक्र यह क्या वजह है ?" उन्होंने अभी कुछ जवाब न दिया था कि इतने में हजरत जिब्रील भी उसी हैअत (आकृति) में तशरीफ लाये। इससे आपको और भी ज्यादा ताज्जुब हुआ। उनसे इसकी वजह दरियाफ्त की। हजरत जिब्रील ने फरमाया कि आज अल्लाह तआला ने हमको हुक्म दिया है कि जिस तरह अबू बक्र (रजि०) ने जमीन पर अपनी वजअ (वेश भूषा) बनाई है तुम आसमान पर बनाओ और मुझको अल्लाह तआला ने आपके पास भेजा है कि अबू बक्र (रजि०) से मेरा सलाम कहो और दरियाफ्त करो कि इस हाल में तुम मुझसे राजी हो ? यह सुनकर अबू बक्र सिद्दीक (रजि०) ने तीन मरतबा जोर से नारा मारा कि "मैं अपने रब से राजी हूँ, मैं अपने रब से राजी हूँ, मैं अपने रब से राजी हूँ।"

जनाब रसूलुल्लाह सल्ल० ने दरियाफ्त फरमाया कि "ऐ अबू बक्र रजि० आज तुमसे क्या काम ऐसा हुआ है कि जिससे खुदा तआला ने अपना सलाम और पैग़ामे रिजा (अपनी प्रसन्नता का सन्देश) भेजा ह। हजरत अबू बक्र सिद्दीक (रजि०) ने कुछ जवाब न दिया। इस

पर हजरत जिब्रील ने फरमाया कि आपको खबर नहीं है ? उन्होंने अपना तमाम माल व असहाब अल्लाह तआला की राह में खर्च कर दिया। जनाब रसूलुल्लाह सल्ल० ने इर्शाद फरमाया कि मुझको किसी के माल से इतना नफा नहीं हुआ जितना कि अबू बक्र रजि० के माल से।

जाबिर बिन अब्दुल्ला (रजि०) से सुना गया है कि उन्होंने फरमाया कि मैं एक दिन हजरत रसूलुल्लाह (सल्ल०) के दौलत खाना पर अन्सार और मुहाजिरीन की जमाअत (टोली) के साथ हाजिर था और वे लोग आपस में कुछ लोगों की बुजुर्गी व फजीलत (श्रेष्ठता) का जिक्र कर रहे थे कि इसी बीच आँ हजरत (सल्ल०) तशरीफ लाये और फरमाया कि क्या कर रहे हो ? मैंने शर्ज किया कि लोगों के फजायल (विशेषताएँ) बयान करते हैं। फरमाया कि अगर यह जिक्र चल रहा है तो खबरदार अबू बक्र पर किसी को फजीलत मत दीजियो (उनसे श्रेष्ठतर किसी को मत कहना), क्योंकि वह तुम सबसे अफजल (श्रेष्ठतम) हैं दुनियाँ और आखिरत में (लोक परलोक में)।

जाबिर (रजि०) से यह सुना गया है कि वे फरमाते थे कि एक रोज मैं अबू बक्र रजि० के आगे आगे चला जा रहा था, यकायक हजरत (सल्ल०) मिल गये उन्होंने फरमाया "तुम इस शख्स के आगे चलते हो जो तुमसे दुनियाँ व आखिरत (परलोक) में बेहतर है। अल्लाह अभी तक मुरसलीन (पैगम्बरों) के बाद कोई भी ऐसा नहीं हुआ जो अबू बक्र रजि० से बेहतर हो। और आँ हजरत सल्ल० ने यह भी फरमाया कि तुम पर अबू बक्र रजि० को कसरत (अधिकता) नमाज रोजा से फजीलत नहीं देता बल्कि उस चीज के सबब से फजीलत देता हूँ जो उसके सीने में है (अर्थात् प्रेम)। जनाब रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फरमाया "ऐ अबू बक्र रजि० यकीनन तू मेरी उम्मत

(मेरे मानने वाले समुदाय) में से पहले जन्नत (स्वर्ग) में जायेगा। हजरत (सल्ल०) ने फरमाया "बेशक सब आदमियों से ज्यादा मुझ पर अहसान करने वाला अबू बक्र (रजि०) है, और अगर किसी को मैंने सिवाए खुदा के खलील (दोस्त) बनाता तो अबू बक्र (रजि०) को बनाता लेकिन भाईचारा इस्लाम का मौजूद है।

आँ हजरत सल्ल० ने फरमाया मेरी उम्मत (मेरे अनुयायियों के समुदाय) का सबसे मेहरबान मेरी उम्मत पर अबू बक्र (रजि०) है और फरमाया जब मुझको आस्मान पर मेराज वाके हुई, जिस आसमान पर गुजरता था उस पर अपना नाम लिखा पाता था कि "मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्ल०) और उसके बाद अबू बक्र (रजि०) का।" आँ हजरत (सल्ल०) ने फरमाया कि जिस शख्स ने मेरे साथ कुछ सलूक (अच्छा व्यवहार) किया उसका बदला मैंने उससे ज्यादा कर दिया, मगर अबू बक्र रजि० का मेरे ऊपर एहसान है, खुदा तआला उसका बदला दे। जब जनाब रसूल अल्लाह ने हिजरत के लिए इरादा किया तो आपने हजरत जिब्रील (अलै०) से फरमाया कि मेरे साथ कौन हिजरत करेगा ? हजरत जिब्रील ने फरमाया अबू बक्र सिद्दीक (रजि०)।

आँ हजरत सल्ल० ने फरमाया कि खैर (भलाई-नेकी) के तीन सौ खसाइल (अच्छे स्वभाव के गुण) हैं। जब खुदाबन्द तआला किसी बन्दे के साथ नेकी का इरादा करता है तो कोई खसलत (विशेषता) ही के सबब से जन्नत में दाखिल करेगा। हजरत अबूबक्र सिद्दीक रजि० ने अर्ज की "या रसूल अल्लाह सल्ल० ! उनमें से कोई खसलत मुझमें भी है या नहीं ?" आप ने फरमाया तुममें सब हैं। और हजरत सल्ल० ने फरमाया कि दोस्ती अबूबक्र की और शुक्र उसका तमाम मेरी उम्मत पर वाजिब (उचित) है। जाबिर (राज०) से सुना गया है कि मैं एक दिन आँ हजरत सल्ल० की खिदमत में हाजिर था कि आपने इ०

फ० कि इस वक्त एक शख्स आता है कि हकतआला ने मेरे बाद उससे बेहतर किसी को पैदा नहीं किया और उसकी शफ़ाअत (सिफारिश) कयामत के दिन पैगम्बरों की तरह होगी। जाबिर (रजि०) कहते हैं कि देर न गुजरी थी कि हजरत अबूबक्र (रजि०) तशरीफ लाये कि आँ हजरत सल्ल० उठे और उनसे बगलगीर हुये (बगल में बैठाया) और उनकी पेशानी (माथे पर बोशा दिया (चूमा)। इसके अलावा कुरआनशरीफ में जगह-जगह पर हजरत अबूबक्र सिद्दीक (रजि०) के फ़जायल में (गुणों की प्रशंसा में) आयतें नाजिल हुई हैं। इसलिए जब आप ने हजरत बलाल (रजि०) को उमईया बिन खल्फ से खरीद कर आजाद किया, अल्लाहतआला ने आपकी शान में कुरआनशरीफ में "सूराबल्लैल" की आयतें नाजिल की हैं (इस सूरा का मूल विषय है अल्लाह के मार्ग में खर्च करना और उसके द्वारा शुद्धता और पवित्रता प्राप्त करना)।

तबूक की लड़ाई में बवजह सख्त गर्मी और लम्बा सफर होने के लोगों ने जाने में सुस्ती की तो अल्लाहतआला ने तमाम मुसलमानों पर इताब (प्रकोप) फरमाया और हजरत सिद्दीक (रजि०) को मुस्तसना कर दिया (लड़ाई में शरीक होने की पाबन्दी से मुक्त कर दिया) क्यों कि आखिरकार इस लड़ाई में सत्तर हजार आदमी सम्मिलित हुये थे, लेकिन लड़ाई का सामान कुछ न था। आँ हजरत सल्ल० ने फरमाया जो इस फौज का प्रबन्ध करेगा उसको बहिश्त (स्वर्ग) है। बड़े-बड़े असहाब (साथियों) ने बहुत कुछ सामान दिया, मगर हजरत अबूबक्र सिद्दीक (रजि०) ने अपना सभी माल आप की सेवा में उपस्थित कर दिया। इसलिए हजरत रसूल अल्लाह सल्ल० ने हजरत अबूबक्र सिद्दीक (रजि०) का नाम "जैशुल उस्र" दुर्लभ फौज) रखा। जिस तरह हजरत अबूबक्र (रजि०) ने जनाब रसूल अल्लाह के सामने अपने माल की कोई हकीकत नहीं समझी, उसी तरह उनकी सेवा में अपनी जान को भी कोई महत्व नहीं दिया। चुनाँचे जनाब रसूल अल्लाह

सल्ल० मय हजरत अबूबक्र सिद्दीक (रजि०) के हिजरत को रवाना हुए और गार (गुफा) में आकर रुके, तो गार में सुराख थे जो हजरत सिद्दीक (रजि०) ने अपनी चादर फाड़ कर बन्द कर दिये थे लेकिन एक सुराख को बन्द करने लिए कुछ न मौजूद था। आप ने उसमें अपने पाँव की एड़ी लगा दी। उस सूराख में साँप था। उसने आप के पाँव में काट लिया, मगर चूँकि जनाब रसूल अल्लाह सल्ल० आपके घुटने पर सर मुबारक रखे हुए सो रहे थे, अतः आप जरा भी हिले-डुले नहीं।

हदीस में आया है कि आँ हजरत सल्ल० ने कई दिन वफात से पहले खुत्बा (धर्मोपदेश) पढ़ा और उसमें हजरत अबूबक्र सिद्दीक (रजि०) की बहुत तारीफ फरमायी : यह भी फरमाया कि "किसी के माल का एहसान और सुलूक, बदन व जान की हक्कुल खिदमत (सेवा का पारिश्रमिक) मुझ पर इस कदर नहीं है जिस कदर अबूबक्र रजि० का है। अपनी बेटी हजरत फातमा रजि० निकाह में दी और मुझसे महर (वह रकम जो निकाह (विवाह) में दुलहिन के लिए लड़के वाले की ओर से दी जाती है) न लिया और बिलाल रजि० को अपने खालिस माल से मोल लेकर आजाद किया और मक्का से मदीना की हिजरत के सफर में सब सफर का सामान व सफर के लिए ऊँट की सवारी साथ करके मुझको पहुँचाया और अपनी जान माल से हमेशा मेरी गमख्वारी (हमदर्दी) को, इसलिए अब सबके दरवाजे मस्जिद की तरफ से बन्द कर दो सिवा अबूबक्र (रजि०) के कि उसको खुला रहने दो।" इसके बाद जब आँ हजरत सल्ल० मर्ज मौत में मुब्तला हुये और मर्ज की ज्यादती हुई तो आपने हुक्म फरमाया कि अबूबक्र रजि० से कहो कि लोगों को नमाज पढ़ायें। इधर आपकी धर्म पत्नी आयशा रजि० ने आपत्ति की कि मेरे पिता जी अबूबक्र सिद्दीक (रजि०) बड़े कोमल हृदय के हैं, आपकी जगह खड़े होने का साहस न करेंगे परन्तु आपने बमुबालगा (बहुत बढ़ा-चढ़ा कर कहते हुए) हजरत अबू-

बक्र सिद्दीक (रजि०) को इमामत के वास्ते फरमाया। अत: आप के आदेशानुसार हजरत अबूबक्र (रजि०) ने पाँच दिन लोगों को नमाज पढ़ाई। यद्यपि उस समय हजरत अली (रजि०) व दूसरे कुरैश मौजूद थे, परन्तु उस समय हजरत अबूबक्र (रजि०) को इमामत के लिए मुकर्रर करना मानो हजरत रसूल अल्लाह सल्ल० द्वारा अपने जीवन काल में उन्हें खलीफा (उत्तराधिकारी) बनाने की तरफ संकेत है।

जब जनाब रसूल अल्लाह सल्ल० का शरीरान्त हुआ, उस समय यह सूचना मिली कि अन्सार लोगों ने शकीफा बनी साअदा (एक स्थान) में जमा होकर यह तय किया है कि साद बिन आबदा को अमीर बना लें। यह सूचना पाकर हजरत अबू बक्र रजि० और हजरत अबू अबीदा बिन अल्जर्राह (रजि०) उस जगह (शकीफा बनी साअदा) को गये। वहाँ पहुँचकर हजरत अबू बक्र (रजि०) ने एक निहायत समयानुकूल भाषण दिया कि जिसमें अन्सार लोगों की अच्छाइयाँ और उनके सद्गुणों का जिक्र किया और उनके हकूक (अधिकार) को तस्लीम (स्वीकार) किया मगर खिलाफत (उत्तराधिकारी होने के विषय में) जनाब रसूल अल्लाह सल्ल० की हदीस पढ़ी कि 'अल्इम्मत् मिनल कुरैश' (यानी सरदार और बादशाह कुरैश में से हो) और फरमाया कि दो आदमियों हजरत उमर रजि० व हजरत अबू उबैदा (रजि०) में से किसी एक के हाथ पर बैअत कर लो (उनके मुरीद हो जाओ)। हजरत उमर रजि० कहते हैं कि पूरे भाषण में मुझको हजरत अबू बक्र रजि० की यही बात नागवार गुजरी और मुझको अपनी गरदन मारी जानी मंजूर थी बनिस्पत इसके कि उनका इमाम हूँ जिनमें अबूबक्र सिद्दीक (रजि०) मौजूद हों। हजरत उमर रजि० ने फरमाया कि आप के रहते हुए कौन इमाम हो सकता है, हाथ बढ़ायें। उन्होंने हाथ बढ़ाया और हजरत उमर (रजि०) ने बैअत की (दीक्षा ली) और उनके साथ हजरत अबू अबीदा रजि० और सभी

उपस्थित लोग बैअत हुए। उसके दूसरे दिन हजरत अबू बक्र मिम्बर (मंच) पर चढ़े मगर उन्होंने अभी कुछ फरमाया नहीं था कि हजरत उमर रजि० ने अल्लाह तआला की हमदोसना (स्तुति) के बाद फरमाया कि अल्लाह तआला ने हमारे कामों का मर्जअ (पनाहगाह, रक्षा का स्थान) ऐसे शख्स को बनाया जो हम सब में बेहतर है, साहबे (साथी) रसूल अल्लाह सल्ल० है, और उनका सानी अस्नैन फिलगार है (गुफा का दूसरा साथी है)। उठो! और उसको बैअत करो। चुनाँचे सब उठे और सार्वजनिक रूप से सभी लोगों ने बैअत की। फिर हजरत अबू बक्र सिद्दीक (रजि०) ने बाद हम्दोसना फरमाया कि "ऐ लोगो! मैं तुम्हारा वाली (हाकिम) हुआ हूँ और हालाँकि मैं तुमसे बेहतर नहीं हूँ, अगर मैं तुम्हारे साथ भलाई करूँ तो तुम मेरी मदद करना और अगर बुराई करूँ तो मेरी इस्लाह (सुधार) करो। सिद्दीक (सच्चाई) अमानत है और किब्ज (झूठ) खयानत (अपहरण)।

ऊपर उल्लिखित बैअत में हजरत अली रजि० व हजरत जुबैर रजि० सम्मिलित नहीं थे। एक रोज हजरत अबू बक्र रजि० मिम्बर (मंच) पर चढ़े और हजरत जुबैर रजि० और अली रजि० को न पाकर बुलवाया और फरमाया क्या चाहते हो कि गिरोह मुसलमान टूट जायें। उन्होंने फरमाया कि 'ऐ खलीफा रसूल अल्लाह सल्ल०! हमारे न आने पर कुछ ख्याल न फरमाइये और बैअत की। हजरत अबू बक्र रजि० अल्लाह ने फरमाया कि मैं कभी भी अमीर (खलीफा) बनने का इच्छुक नहीं था और न मेरे मन में कभी इसकी लालसा ही रही और न मैंने कभी गुप्त रूप से अथवा प्रकट रूप में अल्लाह तआला से इसकी इच्छा प्रकट की। परन्तु मैं फितना (लड़ाई-झगड़ा) से डरा और मुझको खलीफा बनने में आराम ही क्या है? मैंने अपनी गर्दन पर एक बोझ डाल लिया कि जिसके उठाने की मुझमें ताकत नहीं सिवा ईश्वरीय प्रेरणा के। हजरत अली रजि० व हजरत जुबैर रजि० ने फरमाया कि हमको आपका खलीफा होना नागवार नहीं बल्कि इस

बात की शिकायत है कि आपने हमको मशविरे (परामर्श) में शरीक क्यों नहीं किया और हमको मालूम है कि आप सब में अहक (सबसे अधिक हकदार) हैं, कि आप साहबेगार (हजरत मुहम्मद सल्ल० के गार अथवा गुफा के साथी) हैं और आपकी शराफत और अजमत को हम पहचानते हैं और आपको रसूल अल्लाह सल्ल० ने अपने जीवन-काल में ही इमाम नमाज बना दिया था। इस प्रकार आपकी खिलाफत (खलीफा) होने पर सबका इत्फाक रहा (सहमति रही)।

जनाब रसूल अल्लाह सल्ल० के शरीरान्त के पश्चात् अरब के लोगों ने कहा कि हम नमाज पढ़ेगें और ज़कात न देगें (जकात उस निश्चित धन को कहते हैं जिसका अपनी कमाई और अपने माल में से निकालना और उसे अल्लाह के बताये हुए शुभ कार्यों में खर्च करना आवश्यक होता है)। हजरत अबू बक्र रजि० ने इनको कत्ल करने का इरादा किया लेकिन हजरत उमर रजि० ने कहा कि 'ऐ खलीफा रसूल अल्लाह सल्ल० ! आप उलफत (प्रेम) और नरमी अख्तियार कीजिये। यह लोग बहशी (जंगली) जानवरों की तरह हैं। आपने जवाब दिया, 'ऐ उमर रजि० ! मुझे उम्मीद न थी कि मेरे खलीफा बनने के मामले में तुम मेरी मदद करोगे, वहाँ तुमने मेरी मदद की। मगर अब तुम अपने इस मशविरे (परामर्श) से मुझको रुसवा (निन्दित) करना चाहते हो। तुम तो अज्ञानता के उस जमाने में जब तुमने इस्लाम कबूल नहीं किया था बड़े जब्बार (सख्ती करने वाले) थे और अब इस्लाम में क्यों सुस्त हो गये और फरमाया कि मैं जरूर उस शख्स को कत्ल करूँगा जिसने ज़कात और नमाज में तफ्रीक (पृथकता) की। हजरत उमर रजि० ने फरमाया कि मुझे यकीन हो गया कि अल्लाह ताला ने आपको इस मामले में दृढ़प्रतिज्ञ कर दिया (यानी ऐसा करके ही चैन लेंगे)। इधर अरब के लोग इस सरकशी पर थे कि ज़कात न देंगे और हजरत अबू बक्र रजि० का इरादा था कि जो जकात

न दे उसे कत्ल करें। उधर हजरत अबूबक्र रजि० ने उसामा बिन जैद रजि० को फौज के साथ रवाना किया कि वे अपने पिताजी और दूसरे शहीदों का बदला लें जो कुफ्फार से लड़ते समय शहीद हुए थे। ये फौज हजरत मुहम्मद सल्ल० के जीवन-काल के अन्तिम समय में रवाना हुई थी और आपने अपने हाथ से उसका झण्डा बाँधा था। मगर चूँकि हजरत मुहम्मद सल्ल० उसी समय सख्त बीमार पड़ गये, अतः उस फौज का जाना स्थगित हो गया। मगर उनके शरीरान्त के बहुत जल्द बाद हजरत सिद्दीक रजि० ने खलीफा होते ही उस फौज को रवाना किया। यद्यपि उस समय हजरत अबूबक्र रजि० से निवेदन किया गया कि अरब के लोग विधर्मी हो गये हैं, पहले इन्हीं से मुकाबला किया जाय। इस फौज में जवान मर्द और अच्छे मर्द हैं। इस समय इनकी रवानगी स्थगित की जाय। हजरत सिद्दीक रजि० ने फरमाया कि मुझको अपना मरना बनिस्बत इसके ज्यादा पसन्द है कि जनाब रसूल अल्लाह सल्ल० के शुरू किये हुए काम को खत्म न करूँ और यह कह कर फौज रवाना किया। अलबत्ता हजरत उमर रजि० को हजरत उसामा रजि० से माँग लिया कि इन्हें छोड़ते जायँ क्योंकि इनके परामर्श की मुझको जरूरत है।

इसी साल में मसीलमा कज्जाब नामक व्यक्ति ने यमामा (एक स्थान) की तरफ दावा नबूवत किया (अपने को ईश्वर का अवतार घोषित किया)। उसको कत्ल करने के लिए हजरत खालिद रजि० को फौज के साथ रवाना किया। उन्होंने वहाँ पहुँचकर मसीलमा को फौज के घेरे में ले लिया और कई रोज के घेरे के बाद उसको बहशी नामक व्यक्ति ने कत्ल किया। मसीलमा की उम्र उस वक्त डेढ़ सौ बरस की थी। हजरत रसूल अल्लाह सल्ल० के पूज्य पिताजी से पहले पैदा हुआ था। इस लड़ाई में कुरआन शरीफ पढ़ने वाले बहुत बड़ी संख्या में शहीद हुए। हजरत उमर रजि० ने हजरत सिद्दीक रजि० से कहा कि

जितनी बड़ी संख्या में इस लड़ाई में कुरआन शरीफ पढ़ने वाले शहीद हुए अगर और किसी लड़ाई में शहीद हों तो कुरआन शरीफ के जाया (नष्ट) होने का अंदेशा है। इस लिए कुरआन शरीफ का एक जगह जमा होना बहुत जरूरी है। हजरत सिद्दीक रजि० ने जैद बिन साबित रजि० से कहा कि तुम जवान आकिल (बुद्धिमान, मेधावी) हो और रसूल अल्लाह सल्ल० के कातिबे वह्य (वही) तुम्हीं थे (वह्य को लिखने वाले तुम्हीं थे), इसलिए तुम कुरआन शरीफ को जमा करो। उन्होंने कुछ माजिरत (उज्र, विवशता) के बाद वह अजीमुश्शान (महान्, बड़े मर्तबे वाला) काम शुरू किया और चमड़ों और खजूर के पुट्ठों और बकरी के शानों से जो उपलब्ध हुआ वह लौहों (तख्तियों, पट्टियों) में जमा किया। वह कुरआन शरीफ हजरत सिद्दीक रजि० के जीवन काल में उनके पास रहा और उनके शरीरान्त के बाद हजरत फारुक रजि० के पास आ गया। हजरत अली रजि० फरमाया करते थे कि हजरत अबूबक्र रजि० को कुरआन शरीफ को एक जगह एकत्रित कराने की वजह से ज्यादा सवाब (पुन्य) मिलेगा।

एक बार का जिक्र है कि हजरत उमर रजि० हजरत अबूबक्र रजि० की सेवा में उपस्थित हुए तो देखते हैं कि हजरत अबूबक्र रजि० अपनी जबान को पकड़कर खींच रहे हैं। यह देखकर हजरत उमर रजि० ने कहा, 'हैं–हैं, अल्लाह आपको मुआफ करे यह क्या ?' आपने फरमाया कि जिस खराबी से मैं अपनी जिन्दगी में जब कभी नादिम हुआ (लज्जित हुआ) इसी की वजह से हुआ हूँ। एक बार हजरत अबूबक्र रजि० ने फरमाया कि यह जानने के बावजूद कि हमारा दुनियाँ का यह घर आरजी (अस्थायी) है और यहाँ के तमाम अहवाल (परिस्थितियाँ) व असबाब (सामान) हमारे पास आरयतन (अस्थायी रूप से थोड़े समय के लिये) हैं, यहाँ तक कि हमारी साँसें भी गिनती की हैं, फिर भी हम गफलत में पड़े हैं। आप अपनी ईश प्रार्थना में अल्लाह तआला से दुआ किया करते थे कि "खुदा या ! दुनिया को मेरे

लिए फराख (विस्तृत) फरमा, लेकिन इसके चक्कर में फँसने और इसमें तल्लीन होने से मुझे बचा (यानी दुनियाँ की धन दौलत तो मुझे दे कि खूब दिल खोलकर तेरे काम और तेरी राह पर खर्च करूँ और तेरे शुक्रगुजार (कृतज्ञ) बन्दों में शामिल हूँ लेकिन उसकी उस तमा (लोभ) व हिर्स (लालच) और उसकी ऐसी मुहब्बत से बचा कि इसके चक्कर में फँसकर तुझसे दूर न हो जाऊँ। यह भी कि तेरी शुक्र-गुजारी के साथ अहले फक्र में (फकीरों में) भी शामिल रहूँ और मेरा यह फक्र (फकीरी) बेइख्तियारी (इच्छा के विरुद्ध) और मजबूरी का फक्र न हो बल्कि इख्तियारी (स्वेच्छा से) और खालिस तेरी रिजा (प्रसन्नता) के लिए हो।

कहा जाता है कि हजरत सिद्दीक रजि० को किसी ने गाली दी। आपने फरमाया कि जो हाल मेरा तुझ पर पोशिदा (गुप्त) है वह इससे बहुत ज्यादा है। एक बार आपने अपने एक गुलाम की कमाई का दूध पिया, फिर जो उससे दरियाफ्त किया तो उसने कहा "मैंने एक कौम की कहानत की थी (शकुन विचारा था), उन लोगों ने मुझको यह दूध दिया था। आपने अपने मुँह में उँगली डालकर कै कर डाली। हजरत उमर रजि० फरमाते हैं कि मैं मदीने में बुढ़ियों और अन्धों के पास पानी वगैरह लाने के ख्याल से जाता था, तो सब काम उनके तैयार पाता था। मुझको जिज्ञासा हुई देखूँ तो कौन है जो इनका काम कर जाता है। तलाश की तो मालूम हुआ कि हजरत अबूबक्र रजि० कर जाया करते थे। एक बार हजरत अबूबक्र रजि० ने एक पक्षी को पेड़ की छाया में बैठा देखकर ठण्डी साँस ली और फरमाया, "ऐ परिन्दा ! तेरी जिन्दगी और ऐश बहुत अच्छा है, तू दरख्त के फल खाता है और इसके नीचे साये में बैठता है और इसका हिसाब नहीं देगा। काश, मैं भी तेरी तरह होता। जिस वक्त आपकी कोई तारीफ करता आप फरमाते "या खुदा, मेरी निस्वत (अपेक्षा) मेरे नफ्स का तू ज्यादा आलिम है" (जानने वाला है) और मैं इन लोगों की

निस्बत अपने नफ्स का खुद ज्यादा आलिम हूँ। खुदाबन्द इनके गुमान (धारणा) से ज्यादा मुझको बेहतर कर और बख्शिश कर उसका (उस गुनाह को क्षमा कर) जिसका इनको इल्म नहीं और मुझसे मुआखजा (गल्ती की पकड़) न कर जो कुछ ये कहते हैं। फरमाया कि काश, मैं मोमिन के बदन का बाल होता। फरमाया काश मैं दरख्त होता खाया जाता और काटा जाता। फरमाया काश मैं घास होता कि जानवर खाते। हजरत अबूबक्र रजि० का दिल इस मायाबी दुनियाँ से मुक्त था और उन्होंने अपनी सारी सम्पत्ति दान कर दी थी और जब सब कुछ देकर और ऊनी चोंगा पहनकर पैगम्बर सल्ल० के पास गये तो उन्होंने पूछा कि तुमने अपने परिवार के लिए क्या छोड़ा है? अबूबक्र रजि० ने जवाब दिया "सिर्फ परमात्मा और उसके पैगम्बर को।" एक बार आपने फरमाया कि जो शख्स खालिस मुहब्बत इलाही से मजा चखता है वह जायका तलब दुनिया (दुनिया की चाह) से रोक देता है और तमाम आदमियों से उसको वहशत दिलाता है (यानी ऐसा शख्स सबसे अलग रहना पसन्द करता है)।

आपने दो साल और सात महीने खिलाफत की (खलीफा के पद पर आसीन रहे)। जब से रसूल अल्लाह सल्ल० का शरीरान्त हुआ था, उस सदमे से आप दिन पर दिन कमजोर होते जाते थे। सात जमादिउल आखिर सन् तेरह हिजरी को आप ठंडक में नहाये और उसकी वजह से आपको बुखार आ गया और गम्भीर रूप से बीमार पड़ गये। जब आपका शरीरान्त का समय निकट आया तो आप ने अपनी बेटी (हजरत मुहम्मद सल्ल० की धर्मपत्नी) हजरत आयशा रजि० से वसीयत की कि मुझको जो कपड़े पहने हूँ उनको धोकर उन्हीं में कफनाना। लोगों ने आप के पास आकर कहा हम किसी हकीम को बुलायें जो आप का हाल देखे। आपने फरमाया कि मेरे हकीम ने मुझको देखकर यह कह दिया है कि "इन्नीफ़आलो लिमा युरीद" (यानी मैं जो चाहूँगा सो करूँगा।) जब आप बीमारी की गम्भीरता के कारण बाहर

न निकल सके तो आप से लोगों ने अर्ज किया कि आप अपना कोई नायब (प्रतिनिधि) मुकर्रर करें। आप ने फरमाया मैंने हजरत उमर रजि० को अपना नायब मुकर्रर किया है। लोगों ने अर्ज किया कि आप ऐसे तेज मिजाज और सख्त दिल को नायब मुकर्रर करते हैं, आप अल्लाहतआला को क्या जवाब देंगे ? आप ने फरमाया कि यह जवाब दूँगा 'या अल्लाह ! जो तेरी मख्लूक (सृष्टि) में सबसे बेहतर था उसको नायब किया।' फिर हजरत उमर रजि० को बुलवाया और फरमाया कि मैं तुमको एक वसोयत करता हूँ कि अल्लाहतआला के कुछ दिन के हुकूक (यथोचित कर्तव्य) हैं उनको रात में कुबूल (स्वीकार) नहीं करता और कुछ रात के हैं कि उन को दिन में कुबूल नहीं करता और नफ्ल को (वह नमाज जो अनिवार्य न हो परन्तु सवाब के लिए पढ़ी जाय) कुबूल नहीं करता जब तक फर्ज (वह नमाज जिसका पढ़ना अनिवार्य है) अदा न करो। और कयामत के दिन भारी पल्ले वालों के (अच्छे कर्म करने वालों के) पल्ले भारी होंगे तो यही वजह होगी कि उन्होंने दुनिया में हक (सच्चाई) का अनुकरण किया होगा और अपने ऊपर उसी को भारी (महत्वपूर्ण) समझा होगा और इस तराजू के लिए सिवा हक के कुछ न रखा जायेगा। अतः मुनासिब यही है कि वजन ज्यादा हो और हल्के पल्ले वालों के (पापियों के) जो कयामत में हल्के पल्ले होंगे तो उसकी वजह यह होगी कि दुनिया में उन्होंने बातिल (झूठ) की पैरवी की होगी और उसको अपने ऊपर हल्का मालूम किया होगा और जिस तराजू में कि बातिल के सिवा और कुछ न रखा जाय उसको हल्का होना ही जेबा है (शोभा देता है) और खुदातआला ने अहलेजन्नत (स्वर्ग में प्रवेश पाने वालों) का जिक्र उनके आमाल (कर्मों) में से बेहतर आमाल के साथ कहा है और उनकी बुराई से दर गुजर फरमाया (उनकी बुराई की ओर कोई ध्यान नहीं दिया), तो कहने वाला यों कहता है (कदाचित अपनी ओर इशारा है) कि मैं उन लोगों से कम

हूँ और उनके दर्जे को नहीं पहुँचता और दोजख वालों का जिक्र बदतरीन (बुरे) आमाल से किया है और अमल नेक उन्होंने जो किया है उसको उन पर वापस कर दिया, तो कहने वाला यों कहता है कि मैं उन लोगों से अफजल (श्रेष्ठ) हूँ। और अल्लाहतआला ने अपनी रहमत और अजाब (प्रकोप) का जिक्र फरमाया है (कुरआन शरीफ में) इसलिए कि मोमिन (मुसलमान, ईश्वर भक्त) को रगबत और खौफ दोनों रहें और अपना हाथ हलाकत (बर्बादी) में न डाले और अल्लाहतआला से सिवा हक के और किसी की तमन्ना न करे। पस ऐ उमर रजि० ! तुम मेरी नसीहत याद रखोगे तो मौत से ज्यादा गायब चीज तुम्हारे नजदीक महबूब (प्यारी) न होगी और उसका आना तुम पर जरूरी है और अगर मेरी वसीयत तलफ (नष्ट) कर दोगे तो मौत से ज्यादा कोई गायब चीज तुमको बुरी मालूम न होगी और उससे तुम भाग न सकोगे और न उसको थका सकोगे।

२२ जमादिउल आखिर तेरह हिजरी को तिरसठ बरस की उम्र में आपने इन्तकाल फरमाया (आप का शरीरान्त हुआ)। आप की वसीयत के अनुसार आप की धर्मपत्नी असमा बिन्त अमीस रजि० ने आप को नहलाया और अब्दुल रहमान बिन अबूबक्र रजि० ने पानी डाला और आपकी वसीयत के अनुसार जो कपड़े आप पहने हुए थे आपको कफनाया और हजरत उमर रजि० ने नमाज जनाजा पढ़ी। हजरत आयसा रजि० को आप ने वसीयत को थी कि रसूल अल्लाह सल्ल० के पास दफन कर दें, अतः वहीं आप की कब्र खोदी गयी और रसूल अल्लाह सल्ल० के कन्धा मुबारक के पास आप का सर मुबारक रखा गया। हजरत उमर रजि०, हजरत उस्मान रजि० और हजरत अब्दुल रहमान बिन अबूबक्र रजि० ने आपको कब्र में उतारा। "इन्नालिल्लाहे व इन्ना इलैहे राजेऊन" (सब कुछ अल्लाह के लिए है और सब उसी की तरफ लौट जायेंगे।)

हालात हजरत सलमान फारसी (रजि०)

आप हजरत मुहम्मद सल्ल० के जलीलुलकद्र (बड़े सम्माननीय) सहाबी (साथी) हैं। युवावस्था में आप अपने वतन मुल्क फारस से अपना मजूसी दीन (अग्निपूजकों का धर्म) छोड़कर हक एक ईश्वर को मानने वाले धर्म) की तलाश में रवाना हुये और ईसाइयों की सुहबत में रहकर नसरानी (ईसाई) मजहब के अनुयायी बने। एक बार डाकुओं ने आपको गिरफ्तार कर लिया और गुलाम बनाकर बेच दिया। आपने बड़ी ही मुसीबतों और कठिनाइयों का धैर्य व दृढ़ता-पूर्वक सामना किया। दस बार इसी प्रकार आपको गुलाम बनाकर बेचा गया। आखिर में हजरत मुहम्मद सल्ल० ने कुछ सोना दिलवाकर आपको एक यहूदी से आजाद कराया और जब आपने इस्लाम कुबूल किया, आप पर हजरत मुहम्मद सल्ल० ने इतनी असीम कृपा बरसाई कि आपको अपने अहले बैत (घर वालों) में शामिल कर लिया और तब से आप बराबर हजरत मुहम्मद (सल्ल०) की पवित्र सेवा में रहने लगे। आपके बाद हजरत सलमान फारसी (रजि०) ने फैज बातिनी हजरत अबूबक्र सिद्दीक रजि० से भी हासिल किया और उनकी खास तवज्जोह से तकमील (पूर्णता) को पहुँचे।

हजरत उमर फारुक (रजि०) ने आपको अपने अईयामे खिलाफत में (जब आप खलीफा थे उस जमाने में) मदायन शहर का हाकिम नियुक्त किया था और आपके लिए बेतुलमाल से (वह कोष जो सार्वजनिक कार्यों में खर्च किया जाये उससे) पाँच हजार दिरम निर्धारित कर दिये थे। परन्तु आप यह तमाम रुपये फकीरों में वितरित कर देते थे और खुद थैले बुनकर अपनी जीविका अर्जित करते और उसी से अपनी-गुजर बसर करते। आपके पास एक कमली ऊँट के बालों की

थी। दिन को उसे अपने ऊपर लपेट लिया करते और रात को ओढ़ लिया करते थे। बकरी के बालों की आप रस्सियाँ और झोला बनाया करते थे और लड़ाई के लिए झोला और किसी को रस्सी दे देते थे।

कहा जाता है कि एक मरतबा अपने हुकूमत के जमाने में आप शहर मदायन के बाजार में जा रहे थे और किसी शख्स को असबाब ले जाने के वास्ते एक मजदूर की तलाश थी। आपको कम्बल पहिने हुये देखा और आप पर असबाब उठवा कर चल दिया। आपने यह न फरमाया कि मैं कौन हूँ? रास्ते में एक शख्स मिला और कहा 'ऐ अमीर आपने यह बोझ क्यों उठाया? उस शख्स ने तब मालूम किया कि आप अमीर शहर हैं। उसने अपना सर उनके कदमों पर रक्खा और बहुत ही गिड़गिड़ाया और मुआफी माँगने लगा। आपने फरमाया कि तूने अपने मकान तक ले जाने का इरादा कर लिया था, अब वहाँ पहुँचाकर ही वापस हूँगा।

आप बहुत आबिद (इबादत करने वाले), जाहिद (तपस्या करने वाले) और साहबे करामात (चमत्कारों वाले) महापुरुष हैं। एक मरतबा आपने जंगल में दौड़ते हुए हिरन को बुलाया तो वह फौरन आपके पास हाजिर हो गया। इसी तरह एक मरतबा उड़ती हुई चिड़िया को आपने आवाज दी तो वह आवाज सुनकर आपके पास उतर पड़ी।

एक बार खंदक की लड़ाई में आँ हजरत सल्ल० ने एक खाईं को खोदने के वास्ते उसे महाजिरीन और अनसार में बाँट दिया, तो हजरत सलमान रजि० को लेकर इन दोनों गिरोहों में विवाद उत्पन्न हो गया। महाजिरीन कहते थे कि सलमान रजि० हमारे साथ हैं और अनसार कहते थे कि हमारे साथ हैं। हजरत सल्ल० ने यह हाल देखकर फरमाया कि सलमान रजि० असहाब सफः से हैं (सदा प्रथम पंक्ति में नमाज पढ़ने वाले सहाबी) और उनमें से हैं कि बहिश्त (स्वर्ग, उनका मुश्ताक

(इच्छुक) है। कहा जाता है कि हजरत सलमान रजि० को एक शख्स ने गालियाँ दीं। उन्होने कहा कि कयामत के दिन मेरे गुनाहों का पल्ला भारी होगा तो जो कुछ तू कहता है उससे भी मैं बदतर हूँ और अगर गुनाहों का पल्ला हल्का होगा तो तेरी बात से मुझे डर है। हजरत सलमान फारसी (रजि०) ने हजरत अबूदाऊद (रजि०) को एक खत लिखा कि 'ऐ बिरादर! इतनी दुनिया मत जमा करना जिसका शुक्र तुमसे अदा न हो सके। उस खत में यह भी लिखा कि 'मैंने आँ हजरत (सल्ल०) से सुना है कि फरमाते थे कि मालदार ने अपने माल को खुदातआला के फरमाने के अनुसार खर्च किया होगा, वह कयामत को हाजिर किया जावेगा और उसका माल सामने होगा। जब पुल सिरात पर इधर उधर झुकने लगेगा तो उसका माल कहेगा कि चला क्यों नहीं जाता, तू मुझसे अल्लाहतआला का हक दे चुका है (ईश्वर के इच्छानुसार माल खर्च किया है)। फिर ऐसा मालदार आयेगा जिसने अपने माल को हुक्म खुदा के मुआफिक खर्च न किया होगा। उसका माल उसके कंधों पर रखा जायेगा। जब पुल सिरात में झुकने लगेगा तो उसका माल कहेगा कि खराब हो तुझको, तूने मुझमें खुदा का हुक्म क्यों न दिया। इसी तौर पर उसका हाल रहेगा यहाँ तक कि दुहाई-दुहाई मचायेगा, फकत।

आपकी उम्र डेढ़ सौ बरस की थी। सन तीन सौ तैंतीस हिजरी में आपका इन्तकाल हुआ। उस समय हजरत अली (रजि०) रात में बकरामात (चमत्कार द्वारा) मदीना से मदायन तशरीफ ले जाकर हजरत सलमान फारसी (रजि०) को गुश्ल दिया और उसी रात मदीना वापस आ गये। आपका मजार मुबारक शहर मदायन में है।

हालात हजरत इमाम कासिम बिन मुहम्मद बिन अबूबक्र रजि०

इल्म बातिन (अध्यात्म विद्या) में आपको हजरत सलमान फारसी (रजि०) से निस्बत हासिल है और अपने बाप दादा की नेमत उनके जरिये से हासिल थी। आपके पिता जी मुहम्मद बिन अबूबक्र रजि० शहीद कर दिये गये तो आपकी फूफी हजरत आयशा (रजि०) ने आप की परवरिश की और हजरत इमाम कासिम (रजि०) ने उनसे फैज बातिनी हासिल किया। आपने इमाम जैनुल आबदीन (रजि०) की सुहबत से हजरत अली (रजि०) की निस्बत भी हासिल की थी। आप उन महापुरुषों में थे, जिन्होंने हजरत मुहम्मद (सल्ल०) के कुछ असहाब (साथियों) से मुलाकात की थी। आप मुस्लिम धर्मशास्त्र के प्रकाण्ड विद्वानों में से थे और उस जमाने के इमामों में आप बेनजीर (अद्वितीय) थे।

यहिया बिन सआद (रजि०) फरमाते हैं कि मैंने कोई आदमी ऐसा नहीं देखा कि जिसको कासिम बिन मुहम्मद (रजि०) पर फजीलत दूँ (श्रेष्ठ समझूँ)। हजरत उमर बिन अब्दुल अजीज रहम० फरमाया करते थे कि अगर मामला खिलाफत मेरे अधिकार में होता तो मैं इमाम कासिम (रजि०) के सुपुर्द करता। आप हजरत जैनुल आबदीन (रजि०) के मौसेरे भाई थे। आप की उम्र सत्तर साल की हुई और सन एक सौ छै हिजरी या एक सौ सात हिजरी में आपने इन्तकाल फरमाया।

हालात हजरत इमाम जाफर सादिक रजि०

हजरत इमाम जाफर सादिक रजि० को इल्मबातिन (अध्यात्म विद्या) में अपने नाना इमाम कासिम बिन मुहम्मद बिन अबूबक्र (रजि०) से तथा साथ ही अपने वालिद हजरत इमाम मुहम्मद बाकर बिन जैनुल आबदीन से निस्बत हासिल हुई है। आपका कहना है कि हजरत अबूबक्र सिद्दीक (रजि०) से मैं दो मरतबे पैदा हुआ। मेरा एक जन्म तो उनसे दुनियावी हुआ कि मेरी माता जी के पिता हजरत इमाम कासिम बिन मुहम्मद बिन अबूबक्र रजि० थे और दूसरा जन्म बातिनी (आत्मिक) कि इल्म बातिन भी उन्हीं से मैंने पाया। हजरत इमाम जाफर (रजि०) को लोग आपके सिद्क मुकाल (सच्ची बातचीत) की वजह से 'सादिक' (सत्यवादी) कहा करते थे। आप हजरत मुहम्मद (सल्ल०) के परिवार के सादात (श्रेष्ठ लोगों में) से थे। आप हजरत इमाम हुसेन (रजि०) के परपोते थे अर्थात् उन तक आपकी वंशावली इस प्रकार है—"इमाम जाफर सादिक बिन इमाम मुहम्मद बाकर बिन जैनुल आबदीन बिन सईयदुल शुहदा इमाम हुसेन बिन अली मुर्तजा (रजि०)"। इमाम अबूहनीफा (रहम०), अहिया बिन सईद अनसारी (रहम०) व इब्न जर्राह (रहम०) व इमाम मालिक (रहम०) व मुहम्मद बिन इशहाक व बमूशा बिन जाफर रहम० व सुफियान यमीनिया (रहम०) आपके शिष्य थे। सब ने आपकी इमामत व सआदत (प्रताप, तेज) को स्वीकार किया है। उमर बिनुल मकदूम का कहना है कि जिस वक्त इमाम जाफर सादिक (रजि०) को देखता हूँ, मालूम हो जाता है कि आप खानदान नबूवत से हैं (हजरत मुहम्मद रसूल अल्लाह सल्ल० के खानदान से हैं)। आप अत्यंत श्रेष्ठ आचरण वाले तथा कुरआन मजीद के विद्वान व्याख्याकार तथा दुनिया की विद्याओं में पूर्णरूप से पारंगत तथा उनके प्रकांड विद्वान हैं। आप साहबे जुहद व वरअ (उच्च कोटि के तपस्वी तथा संयमी)। शहवात व लज्जात (सांसारिक वासनाओं और सुखों)

से अत्यंत विरक्त रहने वाले थे। आपके असीम ज्ञान एवं फैज बातिनी से लोगों को बहुत ही फायदा पहुँचता था। कुछ समय बाद आप ईराक तशरीफ ले गये। उस जगह काफी समय तक कयाम फरमाया (रुके) मगर कभी उनके दिल में यह ख्वाहिश न पैदा हुई कि वह इमाम बनकर लोगों को नमाज पढ़ायें और धर्मोपदेश दें।

एक बार हजरत दाऊदताई रहम० आपकी सेवा में उपस्थित हुये और निवेदन किया कि "आप रसूलअल्लाह (सल्ल०) की संतान हैं, मुझे कुछ उपदेश दीजिये, मेरा दिल स्याह हो गया है।" आपने फरमाया कि तुम्हें मेरे उपदेश की क्या जरूरत है, तुम तो स्वयं पवित्र आत्मा और तपस्वी हो। हजरत दाऊद रहम० ने कहा कि आप रसूल अल्लाह (सल्ल०) की औलाद में से हैं, अल्लाह ने रसूल की औलाद को फजीलत (श्रेष्ठता) बख्शी है, इसलिये आपको यह उचित है कि आप सबको उपदेश दें। उन्होंने फरमाया "ऐ दाऊद रहम० ! मुझे खुद अंदेशा है कि कयामत के दिन कहीं मेरे बुजुर्ग मेरा हाथ पकड़ कर यह सवाल न कर बैठें कि तूने हमारा अनुकरण क्यों नहीं किया, क्यों हमारे उपदेशों के अनुसार अपना आचरण नहीं बनाया ? निश्चय ही वहाँ यह न पूछा जायेगा कि तुम किसकी संतान हो, बल्कि यह कि तुम्हारे कर्म कैसे हैं। नस्ब नहीं कस्ब, जन्म नहीं कर्म, पूछा जायेगा।" दाऊद रहम० बोले, "या अल्लाह ! जब ऐसे बुजुर्ग को इतनी दहशत है तब भला मेरा क्या हाल होगा ?

एक रोज आप अपने शिष्यों के बीच बैठे थे। आपने उन लोगों से फरमाया कि आओ आपस में इकरार (वादा) करें कि हममें से जिसको नजात (मुक्ति) हो, वह सबको शफाअत करे (मोक्ष के लिये ईश्वर से सुफारिश करे)। सबने अर्ज किया कि ऐ रसूल अल्लाह (सल्ल०) की संतान ! आपको हमारी शफाअत की क्या जरूरत है क्योंकि आपके बापदादा शफीअ खलायक (दुनिया के लोगों की मोक्ष की सुफारिश करने वाले) हैं। आपने फरमाया कि मुझे अपने अफआल (कर्मों) से शर्म आती है कि उनको लेकर उनके रूबरू हूँ (उनके सामने

उपस्थित हूँ) एक मरतबे सफीयान सूरी (रहम०) ने कहा कि कुछ वसीयत फरमाइये (उपदेश दीजिये)। आपने फरमाया, ऐ सफीयान ! दरोगगो (झूठ बोलने वाले) को मुरव्वत (शील संकोच) नहीं होती और हासिद (ईर्ष्यालु) को राहत नहीं होती, बदखुल्क (दुराचारी) को सरदारी (बड़प्पन) नहीं हातो और मुलूक (बादशाह) को उखुव्वत (भाई चारा) नहीं होती। अर्ज किया कुछ और फरमाइये। आपने फरमाया 'सफीयान, अपने को अल्लाहतआला के महारिम (जो अल्लाह के नजदीक हराम हों) से बचना ताकि आबिद (ईश्वर की आराधना करने वाला) हो और जो कुछ किस्मत में हो गया, उस पर राजी होना ताकि मुसलिम (ईश्वरभक्त) हो। गुनाह करने वालों से मुहब्बत मत रख कि तुझ पर गुनाह गालिब हो जायेगा। अपने मामले में ऐसे आदमी से मश्विरत (परामर्श) कर जो खुदा को ताअत (उपासना, बंदगी) खूब करते हों। अर्ज किया कुछ और फरमाइये। आपने फरमाया 'ऐ साफियान ! जो शख्स चाहे कि उसकी इज्जत बिला जात व किब्ला (रूतबा) के हो और हैबत (भय) बिला हुकूमत के हो उससे कहो कि गुनाह छोड़ दे और ताअत (ईश्वर की उपासना) इख्तियार करे। अर्ज किया कुछ और फरमाइये। आपने फरमाया, 'ऐ साफियान (रजि०), जो शख्स हर आदमी के साथ सुहबत्त रखता है वह सलामत नहीं रहता और जो कोई बुरे रास्ते जाता है उसको इत्तहाम (लांछन) लगता है और जो शख्स अपनी जबान को काबू में नहीं रखता वह पशेमाँ (पश्चातापी, शर्मिन्दा) होता है। जो कोई अल्लाहतआला से उन्स (प्रेम) रखता है उसे खल्क (दुनियाँ) के लोगों से वहशत हो जाती है (उनसे दूर रहता है)।" फरमाया बहुत से गुनाह ऐसे हैं जिनकी वजह से बंदा अल्लाह तआला के नजदीक हो जाता है और बहुत सी ऐसी इबादत (उपासना) है जिसकी वजह से बंदा अल्लाह तआला से दूर हो जाता है, क्योंकि मुतीअ मगरूर (अहंकारी उपासक(गुनहगार हाता है और नादिम गुनहगार (जो अपने गुनाह पर शरमिंदा हो) मुतीअ (ईश्वर का उपासक) होता है।

कहा जाता है कि एक दिन हजरत इमाम जाफर सादिक रजि० ने इमाम हनीफा (रजि०) से दरियाफ्त किया कि अक्लमंद किसे कहते हैं ? हजरत इमाम अबू हनोफा रजि० ने कहा कि जो खेर (नेकी) और शर (बदी, बुराई) में तमीज करे। उन्होंने फरमाया कि यह तमीज तो जानवरों म भी होती है कि मारने वालों और चारा देने वालों में तमीज रखते हैं। अबू हनोफा रजि० ने अर्ज किया कि आपके नजदीक अक्लमन्द कौन है ? फरमाया अक्लमंद वह है जो दो खैर व दो शर में तमीज करे यानी दो खैर (अच्छी बातां) में से ज्यादा अच्छी बात को जान सके और उसे ग्रहण करे और दो शर (बुरी बातों) में से ज्यादा बुरी बात कौन सी है, उसे पहचाने और यदि बवजह मजबूरी उन दो बुरी बातों में से एक के ग्रहण किये बिना कोई चारा ही न हो, तो जो बुरी बात कम नुकसान पहुँचाने वाली है उसका सहारा लेकर बड़ी बुराई से बचे।

किसी ने आपसे कहा कि फजलो कमाल जाहिरी और बातिनी (आत्मिक) आप में मौजूद है, मगर आप में तकब्बुर (अहंकार) है। आपने जवाब दिया "मैं मुतकब्बिर (अहंकारी) नहीं हूँ, लेकिन मेरा खालिक (अल्लाहतआला) ऐसा किब्रिया (ऐसा महान) और दयालु है है कि जब मैंने गरूर और किब्र को छोड़ा तो उसकी किब्रियाई मेरे किब्र की जगह दाखिल हुई। अपने किब्र पर तकब्बुर करना अच्छा नहीं है, मगर उसकी किब्रियाई पर किब्र करना दुरुस्त है।" आपका फरमाना है कि 'अल्लाह अपने बंदे में अँधेरी रात में स्याह पत्थर पर चींटी चलने से ज्यादा पोशीदा है।" आपने फरमाया जिस गुनाह से पहले इन्सान को खौफ हो और बाद में तौबा करे वह कुर्बे इलाही (ईश्वर का सान्निध्य) हासिल करता है और जिस इबादत के शुरू में 'मैं' और आखिर में खुद बीनी (अहंकार) हो वह खुदा से दूर करती है। लोगों ने आपसे पूछा कि दर्वेश साबिर (संतोषी, साधु) और तवंगर शाकिर (कृतज्ञ धनी) में किसको ज्यादा फजीलत (श्रेष्ठता) प्राप्त है। इस पर आपने फरमाया कि इन दोनों में दरवेश साबिर अफजल है (श्रेष्ठ) है क्योंकि तवंगर शाकिर

(कृतज्ञ धनी) ईश्वर को कृपा के लिये कृतज्ञ भले ही हो, पर उसे हमेशा अपने धन का ख्याल बना रहता है और सब्र करने वाले दरवेश का दिल अल्लाह के ख्याल में तल्लीन रहता है। वह फरमाते कि 'मोमिन (मुसलमान) वह है जो नफ्श अम्मारा (वासनाएँ जो बुराई की ओर प्रेरित करती हैं) से मुकाबला करे। आरिफ (ब्रह्म ज्ञानी) वह है जो अपने मालिका की इताअत (उपासना) में सरगर्म रहे। साहबे करामत (अपनी तपस्या से प्राप्त चमत्कार अथवा ऋद्धियाँ-सिद्धियाँ दिखलाने वाला इंसान) वह है जो अपनी जात (स्वयं) के लिये नफ्स अम्मारा से जंग करे और जो खुदा के लिये नफ्स अम्मारा से जंग करता है वह खुदा को पाता है।

आपने फरमाया कि 'मकबूलों (ईश्वर के प्यारों) के औसाफ़ (विशेषताओं) में से इलहाम (दैवी प्रेरणा) है और इलहाम का बेअसल होना दलीलों से साबित करना अलामत बेदीनों (अधर्मियों) की है। (इसका भाव यह है कि जो ईश्वर के कृपा पात्र होते हैं उनकी एक विशेषता यह होती है कि उनपर ईश्वरीय प्रेरणा उतरती है और जो लोग तर्क और बुद्धि के आधार पर इस दैवी प्ररणा को निराधार सिद्ध करने का प्रयास करते हैं वे वस्तुतः अपने को अधर्मी होने की धोषणा करते हैं)। आपका फरमाना था 'अल्लाह ने तुम्हारे लिये जन्नत और दोजख मुहैया (उपलब्ध) कर दिया है। जन्नत उसके लिये है जो अपना काम अल्लाह के सुपुर्द कर दे। दोजख उसके लिये है जो अपना काम नफ्स अम्मारा (निम्न वासनाओं) को सौंपे। आपको किसी सन्त ने अच्छी सी पोशाक पहने देखा, तो आपकी आलोचना करते हुये कहा "फकीरों को ऐसी पोशाक नहीं पहननी चाहिये"। आपने उस सन्त का हाथ अपनी आस्तीन के अन्दर खींचा। अन्दर इतना सख्त टाट का वस्त्र था कि उसका हाथ छिल सा गया। तब आपने प्रेमयुक्त शान्त स्वर में कहा 'ऊपर का लिबास दुनियाँ के लिये और अन्दर का फकीरी लिबास खुदा के लिये है।

एक बार एक शख्स आपकी सेवा में उपस्थित हुआ और आप से अज किया कि मुझे ईश्वर के दर्शन करा दीजिये। आपने उससे फरमाया,

"क्या तुम्हें नहीं मालूम कि मूसा को कहा गया था : 'लनतरानी', तू मुझे नहीं देख सकता। वह शख्स बोला जानता हूं मगर यह मिल्लते (मजहबँ) मुहम्मदी है. जहाँ एक शख्स कहता है कि मेरे दिल ने मेरे परवरदिगार को देखा और दूसरा कहता है कि मैं तो ऐसे रब (ईश्वर) की इबादत करूँगा जिसको न देखूँ। उसकी यह बात सुनकर हजरत जाफर सादिक (रजि०) ने लोगों से कहा कि इसके हाथ बाँध कर दजला नदी में डाल दो। जब वह डाला गया तो पानी ने उसको ऊपर उछाल दिया। वह फरियाद करने लगा। उन्होंने कुछ ध्यान न दिया बल्कि पानी से कहा कि इसको अन्दर छिपा लो। कई बार वह उछला और डूबा। जब जीवन से निराश हो गया तो कहने लगा "या अल्लाह फरियाद है।" आखिर आपने लोगों से कहकर उसे बाहर निकलवाया। जब उसके होश दुरुस्त हुये तब उससे पूछा कि क्या तूने अल्लाह को देखा ? वह बोला कि जब तक मैं दूसरों को पुकारता रहा तब तक मैं परदे में रहा, पर जब सब ओर से निराश होकर मैंने अल्लाह से फरियाद की तो मेरे दिल में एक सूराख सा खुला। हजरत जाफर सादिक रजि० ने कहा, "जबतक तूने दूसरों को पुकारा तू झूठा था, अब उस सूराख की हिफाजत कर जिससे कि तुझे प्रभु दर्शन हो।" लिखा है कि एक शख्स की थैली गुम हो गयी उसने हजरत जाफर सादिक (रजि०) को पकड़कर कहा कि तूने मेरी थैली ली है। आपने पूछा कि उसमें कितने दीनार थे ? उसने कहा "एक हजार"। सन्त ने उसे एक हजार दीनार दे दिये। फिर जब उसे अपनी खोई हुई थैली मिल गई तो वह दीनार वापस देने आया और क्षमा याचना करने लगा। आपने फरमाया कि हम दी हुई चीज वापस नहीं लेते। जब उसने उनका नाम सुना तो बहुत लज्जित हुआ और बड़ी विनम्रता से उनसे क्षमा याचना की। वह फरमाते थे कि तौबा करने वाले ही इबादत करने वाले हैं और कहते थे कि अल्लाह तआला ने तौबा को मुकद्दम (बेहतर) किया है इबादते इलाही पर (तौबा को इबादत से श्रेष्ठ बतलाया है)।

आपके कथनानुसार यादे इलाही इसका नाम है कि अल्लाह के जिक्र में दुनियाँ की सब चीजें विस्मृत हो जायँ, क्योंकि दुनियाँ की सब चीजों के एवज में बन्दे को खुद अल्लाह ही मिल जाता है। जब हजरत जाफर सादिक रजि० ने गोशानशीनी (एकान्तवास) इख्तियार की तो सन्त सफियान सूरी ने उनकी सेवा में उपस्थित होकर कहा कि आपके एकान्तवास से लोग आपके सुहबत से वंचित हो गये है। आप ने फरमाया कि मुझे यही मुनासिब मालूम हुआ और दो शेर कहे जिनका तात्पर्य यह है कि आजकल लोगों में वफादारी की तो बू भी नहीं हैं और अपने ही विचारों में डूबे हुये है। जाहिरा तो लोग एक दूसरे के साथ मुहब्बत का इजहार करते हैं मगर उनके दिलों में बिच्छू भरे हुये हैं।

कहा जाता है कि एक बार खलीफा मंसूर ने अपने वजीर को हुक्म दिया कि हजरत जाफर सादिक रजि० को लाओ, उन्हें मैं कत्ल करूँगा। वजीर ने कहा कि उन्होंने तो गोशा नशीनी इख्तियार कर ली है, अब उनके कत्ल से क्या फायदा। खलीफा ने कहा कि नहीं, उनको जरूर लाओ। वजीर ने हरचन्द टाला मगर खलीफा न माना। आखिरकार वजीर उनको बुलाने गया। उसके जाने के बाद खलीफा ने गुलामों से कह दिया कि जिस वक्त हजरत इमाम जाफर सादिक रजि० आवें और मैं सर से अपना ताज उतारूँ तो तुम उनका कत्ल कर देना। इसी अवसर पर हजरत जाफर सादिक रजि० भी तशरीफ लाये। उनको देखते ही मंजूर आपके सम्मान के लिये उठ खड़ा हुआ और मसनद पर उनको बैठा दिया। स्वयं उनके सामने अदब के साथ बैठा और अर्ज किया कि आपकी क्या खिदमत करूँ। आपने फरमाया कि मुझे किसी चीज की जरूरत नहीं है, मैं सिर्फ यह चाहता हूँ कि तू कभी मुझे अपने पास न बुलाये। यह कहकर आप तशरीफ ले गये। फौरन ही खलीफा बेहोश होकर गिर पड़ा और बड़ी देर तक बेहोश पड़ा रहा। जब उसे होश आया तो वजीर ने दरियाफ्त किया कि यह क्या मामला है? खलीफा ने बतलाया कि जिस वक्त हजरत इमाम जाफर सादिक रजि० अन्दर तसरीफ लाये, एक

अजदहा (साँप) उनके साथ मुँह फैलाये हुये था और यह मालूम होता था कि अगर मैंने उन्हें कुछ भी तकलीफ दी तो वह मुझको खा जायेगा इस खौफ से मैं उनसे बड़े अदब से पेश आया और बेहोश होकर गिर पड़ा।

कहा जाता है कि एक बार हजरत इमाम जाफर सादिक (रजि०) कहीं जा रहे थे। क्या देखा कि एक बुढ़िया के आगे एक गाय मरी पड़ी हुई है और वह औरत मय अपने बच्चों के रो रही है। हजरत ने रोने का कारण दरियाफ्त किया। उसने कहा कि इस गाय के दूध से हमारी गुजर बसर होती थी। यह मर गयी है, अब हम हैरान हैं कि हमारी गुजर किस तरह होगी। आपने फरमाया कि क्या तुझको मंजूर है कि अल्लाहतआला इसको जिन्दा कर दे। इस पर वह औरत बोली कि हम पर तो यह मुसीबत पड़ी है ओर तुम हँसी करते हो। आप ने फरमाया कि मैं हँसी नहीं करता। फिर आपने गाय को ठोकर मारी और वह उठ खड़ी हुई और आप सामान्य लोगों में जा मिले कि कोई आपको पहचान न ले।

आप मदीना मुनव्वरा में अस्सी हिजरी में पैदा हुये और एक सौ अड़तालिस हिजरी में वफात पायी। 'इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहे राजेऊन' (सब कुछ अल्लाह के लिये है और सब उसी के तरफ लौट जायेंगे)।

हालात हजरत बायजीद बस्तामी रहमतुल्लाहु अलैहि

हजरत बायजीद बस्तामी (रहम०) एक सौ छत्तीस हिजरी को पैदा हुये। आप को हजरत इमाम जाफर सादिक (रजि०) से रूहानी निस्बत हासिल हुई थी। आपकी आध्यात्मिक शिक्षा हजरत इमाम जाफर सादिक (रजि०) की वफात के बाद उनसे प्राप्त हुई। आपके पितामह मुल्क विस्ताम के रईसों में से थे, जो पहले अग्नि पूजक थे, बाद को इस्लाम स्वीकार कर लिया था। आपके पूज्य माता जी का कथन है कि जब आप गर्भ में थे तब मैं जब कभी शुबहा का लुकमा (भोजन जो हलाल की कमाई का न हो) खा लेती तो अन्दर बेचैनी शुरू हो जाती और जब तक कै न कर देती, आराम न मिलता। जब आपने मकतब में पढ़ना शुरू किया और कुरआन मजोद की सूरा लुकमान की इस आयत पर पहुँचे। 'अनिस्कुरली वले वालेदैक' (मेरा शुक्र अदा करो और अपने माँ-बाप का)। आप अपने वालदैन (माता-पिता) के पास गये और उनसे कहा कि अल्लाह तआला फरमाता है कि मेरा शुक्र कर और अपने वालदैन का शुक्र अदा करो। मुझसे दो का शुक्र अदा नहीं हो सकता। या तो अल्लाह तआला से शुक्र मुआफ करा दो या अपना शुक्र बख्श दो। इनकी माता जी ने फरमाया कि हमने अपना हक बख्शा और तूझको बिल्कुल अल्लाह तआला का कर दिया। हजरत बायजीद (रहम०) विस्ताम से रवाना हुये और तीस साल तक वे शाम के जंगलों में जप, तप और ईश आराधना में तल्लीन रहे। जिस वक्त आप नमाज पढ़ते आपके सीने की हड्डियों से ईश्वर के खौफ तथा ताजीम शरीयत (धर्म शास्त्र के सम्मान) में ऐसे जोर से आवाज निकलती कि लोगों को सुनाई देती। उस साधना काल में

वहाँ बहुत से सन्तों के दर्शन हुये और आपने दिन रात तपस्या में तल्लीन रहकर तीन साल में ही बहुत कुछ पा लिया। जानकार लोगों का कथन है कि तौहीद (अद्वैत) में आपकी बहुत गहरी पैठ थी। जुन्नैद बगदादी रहम० जो उस समय के उच्चकोटि के सन्तों में से थे आपके तौहीद के कायल थे। वायजीद रहम० खुद फरमाते थे कि दो सौ साल तक रूहानी इल्म हासिल करने में लगायें तब कहीं शायद उन्हें कोई ऐसा फूल मिले जैसे कि मुझे साधना के आरम्भ काल में ही बहुत से मिले।

कहा जाता है कि एक मरतबा उनसे किसी ने कहा कि फलाँ जगह एक बड़े बुजुर्ग हैं। आप उनकी मुलाकात को गये। जब उनके पास पहुँचे, उन्होंने किबला (काबा शरीफ) की तरफ थूका। हजरत वायजीद रहम० यह देखकर वापस आ गये और फरमाया कि अगर उस शख्स को तरीकत (आध्यात्म) में कुछ दखल होता तो खिलाफ अदब उससे सादिर न होता। कहा जाता है कि आपके घर और मस्जिद में चालीस कदम का फासला था, मगर बवजह ताजीम मस्जिद कभी राह में नहीं थूका। एक बार आप हज करने चले और हर कदम पर दो रकअत नमाज पढ़ते, इस तरह रुक-रुक कर नमाज पढ़ते हुये बारह साल में मक्का पहुँचे। इस विषय में आप फरमाते कि खुदा का दरबार कुछ दुनियाँ के बादशाहों का दरबार तो है नहीं कि उठे और दरबार में पहुँच गये। उस तक पहुँचने की राह तो विनम्रता और प्रेम भरी प्रार्थना के साथ तै करनी चाहिये। लोग जब मक्का जाते हैं तो मदीना के दर्शनों को भी जरूर जाते हैं क्योंकि वहाँ हजरत मुहम्मद सल्ल० की कब्र है। परन्तु हजरत वायजीद बस्तामी रहम० ने कहा कि मैं मक्का के तुफैल (हेतु) में मदीना न जाऊँगा। मैं खुद मदीना के दर्शनों के लिये कभी चलकर आऊँगा। दूसरे साल जब मदीना की यात्रा के लिये निकले तो बहुत से लोग साथ हो लिये। उन्होंने प्रार्थना की कि या खुदा ! मुझे इन दुनिया वालों के साथ से दूर रख। फिर एक दिन सबेरे की नमाज के बाद लोगों की ओर देखकर कुरआन शरीफ

को यह आयत पढ़ी' इन्ननी अनल्लाहो ला इलाहा इल्ला अना फाबुदनी' (निःसंदेह मैं अल्लाह हूँ, मेरे सिवा कोई इलाह (पूज्य) नहीं, अतः तू मेरी इबादत कर)। लोगों ने कहा कि यह शख्स दीवाना है और उनको छोड़कर चले गये।

आपके पास एक ऊँट था कि उस पर अपना व अपने मुरीदों का सामान लादकर चला करते थे। किसी ने कहा कि इस बेचारे पर किस कदर बोझ लाद दिया है। आपने फरमाया कि गौर से देखो, इस पर कुछ बोझ है ? देखा कि सामान उसकी पीठ से एक हाथ ऊँचा था। फरमाया सुबहान अल्लाह ! अजब मामला है कि अगर अपना अहवाल तुमसे पोशीदा (गुप्त) रखूँ तो मलामत (निन्दा) करो और जाहिर करूँ तो उसकी तुममें ताकत नहीं। फरमाया कि तुममें से कुछ लोगों को मेरी जियारत (दर्शनों) से लानत (धिक्कार) होती है और कुछ पर रहमत होती है। फरमाया लानत इस वजह से कि वह आया उस वक्त कि मुझ पर हालत गालिब हुई। मुझको आप में न पाया (अपने होश में न पाया, यानी दीवानगी की हालत में पाया)। नाचार (मजबूरन) मेरी गीबत (आलोचना) करेगा। दूसरा आया, हक (ईश्वर) को मुझ पर गालिब पाया, और मुझको माजूर (असमर्थ) रखा, उस पर रहमत हुई। फरमाया कि दिल चाहता है कि कयामत के दिन दोजख की तरफ अपना खेमा लगा लूँ कि वह देखकर मुझको पुश्त हो जाय (मेरी ओर पीठ फेर ले, वापस चला जाय) और खल्क खुदा को राहत मिले।

फरमाया कि एक बार अल्लाह तआला को ख्वाब में देखा, मैंने कहा, "या अल्लाह तेरा रास्ता किस तरह है ?" फरमाया 'दनफ्स कतआल' (यानी अपने नफ्स को छोड़ और आ)। फरमाया नमाज के सिवाय खड़े होने के और रोजा के सिवा भूख के कुछ न पाया। मुझको तो जो कुछ मिला है अल्लाह तआला के फज्ल (कृपा) से मिला है, न अमल से क्योंकि जुहद (तपस्या) व कोशिश से कुछ हासिल नहीं हो सकता। नकल है कि एक

बार आपको कब्ज हो गया (रुहानियत में 'कब्ज' उस हालत को कहते हैं कि जब इबादत में मन नहीं लगता और दिल उचाट सा रहता है)। अतः इबादत से नाउम्मीद होकर इरादा किया कि बाजार से जनेऊ खरीद कर कमर में बाँधें (यानी ऐसा करके इस्लाम धर्म को छोड़ दें)। बाजार पहुँचे। एक जुन्नार (जनेऊ) की कीमत दरियाफ्त की और दिल में ख्याल किया कि एक दिरहम (एक चाँदी का छोटा सिक्का) होगी, मगर दुकानदार ने कहा 'हजार दिरहम।' यह कीमत सुनकर आप खामोश हो गए। हातिफ गैबी (परोक्ष लोक के फरिश्ते ने आवाज दी कि 'जो जुन्नार तू बाँधे उसकी कीमत हजार दिरहम ही होनी चाहिये।' फरमाया 'मेरा दिल खुश हो गया कि अल्लाहतआला की मेरे हाल पर इनायत है।' फरमाया कि एक बार मुझको इलहाम हुआ कि "ऐ बायजीद जो तू इबादत करता है उससे देहतर ला और ऐसी चीज ला जो कि मेरी दरगाह में न हो। मैंने अर्ज किया "या अल्लाह ! तेरे पास क्या नहीं है ?" इलहाम हुआ "बेचारगी, इज्ज (नम्रता), व नियाज (प्रार्थना, आरजू) व शिकस्तगी (जीर्ण शीर्ण अवस्था) नहीं है, वह ला।"

एक मरतबा खिल्वत (एकान्त) में उनकी जबान से यह कलमा निकला "सुभानी मा आजम शानी" (यानी मैं पाक हूं, मेरी शान कितनी बुजुर्ग है) जब खुदी (होश) में आये मुरीदों ने बयान किया कि आप की जबान से यह कलमा निकला। फरमाया कि तुम पर खुदा की मार, अगर फिर मुझसे ऐसा सुनो तो मुझको टुकड़ा-टुकड़ा कर दो और एक-एक छुरी सबको दे दी। फिर उनसे कलमा सरजद हुआ। मुरीदों ने इरादा इनके कत्ल का किया। लेकिन तमाम घर उनकी शक्ल से भरा हुआ पाया। मुरीद छुरी मारते थे और मालूम होता कि गोया पानी में मारते हैं। आखिरकार आप एक पक्षी की तरह मेहराब में बैठे नजर आये। मुरीदों ने फिर तमाम किस्सा बयान किया। आपने फरमाया "ऐ लोगो ! बायजीद तो यह है जिसको तुम देखते हो, वह बायजीद न था। एक मरतबा शफीक

वलखी रहम० अबूतराव रहम० मौर हजरत बायजीद बस्तामी रहम० के साथ खाना खा रहे थे कि एक मुरीद वहाँ बैठा हुआ था। वह खाने में शरीक न था। अबू तराव रहम० ने फरमाया कि आओ खाना खाओ। उसने कहा मेरा रोजा है। फरमाया कि खाना खाओ, एक महीने के रोजे का पुण्य लो। उसने मन्जूर न किया। फिर शफीक वलखी रहम० ने कहा कि खाओ, एक वर्ष के रोजे का सवाब लो। उसके मन्जूर न किया। वायजीद वस्तामी रहम० ने फरमाया जाने दो, रान्दह दरगाह (दरबार से बहिष्कृत) हो गया। थोड़े दिन नहीं गुजरे थे कि वह चोरो में पकड़ा गया। उसके दोनों हाथ काट लिये गये।

आपसे किसी ने दरियाफ्त किया कि तुम्हारा पीर कौन है ? फरमाया कि एक बूढ़ी औरत। पूछा 'कैसे ? आपने फरमाया कि 'मैं एक मरतबा गलबए शौक में (प्रभु के सान्निध्य की उत्कट अभिलाषा की हालत में) जंगल की ओर चला गया था। वहाँ एक बुढ़िया को देखा कि लकड़ियों का बोझ ला रही है। मुझसे कहा कि बोझ उठा ले, मुझसे नहीं उठता। फरमाया कि उस वक्त मेरी हालत ऐसी थी कि मुझको अपने वुजूद (बदन) का बोझ नहीं उठ सकता था, बुढ़िया का क्या उठाता। एक शेर की तरफ इशारा किया। वह आया, मैंने उसकी पीठ पर वह बोझ रख दिया और वृढ़िया से कहा कि जब तू शहर में जायेगी तो क्या बयान करेगी कि मैंने किसको देखा है। उसने कहा कि यह कहूँगी कि आज मैंने एक खुद नुमा (अहंकारी) और जालिम (निर्दयी) को देखा है। मैंने पूछा 'यह कैसे ?' उसने फरमाया कि जिसको खुदा तकलीफ न दे उसको तू तकलीफ देता है, इसलिये तू जालिम है और इसपर तू चाहता है कि शहरके लोग ये जानें कि शेर तेरे ताबे (वश) में है और तू साहबे करामत (चमत्कार) दिखाने वाला है, इसलिये तू खुदनुमा है और खुदनुमायी (अहंकार) सबसे बड़ा ऐब है। बुढ़िया की यह बात हजरत बायजीद बस्तामी (रहम०) के मन को लगी और उन्होंने अपने मन में उसे अपना गुरु मान लिया।

उसके बाद अब कोई चमत्कारी घटना उनके जीवन में घटित होती तो उसकी सात्विकता का प्रमाण (अर्थात् उस चमत्कार में उनका अहंकार तो नहीं शामिल है, इसका प्रमाण) वह ईश्वर से चाहते। ऐसे समय पोला प्रकाश प्रकट होता और उस रंग में पाँच पैगम्बरों के नाम हरे रंग में लिखे नजर आते। तब वह समझते कि वह चमत्कार उचित है क्योंकि अक्सर शैतान सन्तों को गुमराह करने के लिये तमाशा दिखाकर उनके दिल में अहंकार पैदा करता है। कहा जाता है कि एक बार आप कब्रिस्तान से आ रहे थे। बस्ताम के रईसों में से एक जवान बाजा लिये हुये गाता बजाता चला आ रहा था। हजरत बायजीद बस्तामी रहम० ने उसे देख कर फरमाया "लाहौल बिला कूबत इल्ला बिल्ला इल अलीइल अजीम" (नहीं बचना गुनाह से और न कूबत नेक काम की मगर साथ मदद अल्लाह के जो बरतर बुजुर्ग है)। जवान ने अपना बाजा आप के सर पर जोर से मारा कि बाजा भी टूट गया और शैख का सर भी फूट गया। दूसरे दिन सुबह के वक्त हजरत वायजीद वस्तामी रहम० ने बाजा को कीमत और कुछ हलुआ अपने मुरीद के हाथ उस जवान के पास भेजा और कहा कि उससे कहना कि बायजीद बस्तामी रहम० ने मुआफी माँगी है। यह बाजा की कीमत भेजी है। इससे और बाजा खरींद लो और यह हलुआ भेजा है कि उसको खाओ ताकि रात का गम व गुस्सा दूर हो। उस जवान ने यह व्यवहार देखा। आकर हजरत बायजोद बस्तामी रहम० के कदमों पर गिरा, तौबा की व बहुत रोया और आपका मुरीद हुआ। उसके साथी भी उसकी मुआफकत (दोस्ती) में आपके मुरीद हुये और यह सब आपकी खुशखुल्की (सद्व्यवहार) का नतीजा था।

एक रोज हजरत बायजीद बस्तामी रहम० ने अपने में जौक (आनन्द) इबादत न पाया। ख्याल जो किया तो घर में एक खोश (गुच्छा) अंगूर का रखा था। फरमाया कि उसे किसी को दे दो। मेरा घर मेवा फरोश

(बेचने वाले) की दुकान नहीं है। अतः वह अंगूर का गुच्छा किसी को दे दिया गया और फौरन हजरत बायजीद रहम० की इबादत में लज्जत पैदा हो गयी। कहा जाता है कि हजरत के पड़ोस में एक आतिश परस्त (अग्निपूजक) रहा करता था। एक बार वह सफर को गया। उसका बच्चा अन्धेरी रात की वजह से रोता था। हजरत बायजीद रहम० अपना चिराग उसके घर ले जाते तब वह खुश होता। जब वह आतिश परस्त सफर से वापस आया उसकी बीबी से उससे हाल बयान किया। उसने कहा कि जब हजरत की रोशनी हमारे घर में आ गयी तो क्या अब हम अन्धेरे में रहें। उसी वक्त मुसलमान हो गया।

हजरत ने एक मरतबा किसी इमाम के पीछे नमाज पढ़ी। बाद नमाज इमाम ने आपसे पूछा कि आपका खाना-पीना कहाँ से चलता है। आपने जवाब दिया कि 'जारा सब्र करो, पहले मैं नमाज का एआदा कर लूँ (दुबारा नमाज पढ़ लूँ) तब तुम्हारी बात का जवाब दूँ क्योंकि जो शख्स रोजी देने वाले को न जाने उसके पीछे नमाज पढ़ना रवा (उचित) नहीं।" एक बार आपने फरमाया कि अगर किसी रोज बला (मुसीबत) नहीं आती तो कहता हूँ 'या इलाही रोटी भेजो और सालन न भेजो। किसी शख्स ने आपसे अर्ज किया कि मुझसे कुछ अपने मुजाहिदे (तप, इन्द्रिय निग्रह) का हाल बयान फरमाइये। फरमाया कि और बड़ी बात बयान करूँ तो उसको तुमको ताकत नहीं, लेकिन एक छोटी सी बात सुनाता हूँ। एक मरतबा मैंने अपने नफ्स से कुछ काम लेना चाहा। उसने कहना न माना। एक साल उसको पानी न दिया, कहा—"ऐ नफ्स ! या इबादत कर या प्यासा मर।"

आपके पास एक मुरीद तीस बरस से था। हर रोज उससे पूछा करते कि तेरा नाम क्या है। वह रोज बता देता। आखिर एक रोज उससे कहा कि 'ऐ शैख ! मैं तीस साल से आपके पास रहता हूं। आप हर रोज मेरा नाम दरियाफ्त करते हैं और रोज भूल जाते हैं।' आपने फरमाया कि 'मैं तुझसे हँसी नहीं करता। जब से उसका (खुदा का) नाम दिल में

आ गया कुछ याद नहीं रहता। हर रोज तेरा नाम पूछ लेता हूँ और हर रोज भूल जाता हूँ।' एक शख्स आपके पास आया कि मुझे कोई ऐसी तालीम कीजिये कि जिससे नजात (मुक्ति) हो। फरमाया 'दो बातें याद कर ले, काफी हैं। अव्वल यह है कि अल्लाह तआला तेरे हर हाल से आगाह है और जो तू करता है वह देखता है और तेरे अमल से बेनियाज (बेपरवाह, निस्पृह) है। एक रोज किसी ने आपसे अर्ज किया आप अपने पोस्तीन (किसी जानवर के चमड़े से बना हुआ कोट) का एक टुकड़ा मुझको दीजिये कि आप की बरकत हासिल हो। आपने फरमाया कि अगर मेरा पोस्त (मेरे बदन का चमड़ा) भी पहन ले तो क्या होता है, जब तक कि मेरे अमल न करे। फरमाया कि सच्चा आबिद (आराधक) और सच्चा आमिल (कर्मयोगी) वह है कि तेगे जुहद (तप रूपी तलवार) से तमाम मुरादात (इच्छाओं) का सर काट ले। उसकी तमाम शहवात व तमन्ना (वासनायें और अभिलाषा) मुहब्बते हक (ईश्वर के प्रेम) में फनाँ हो जायँ और जो अल्लाह तआला को दोस्त (प्रिय) हो, वही उसको भी हो और जो अल्लाह तआला की आरजू हो वही उसकी भी हो। फरमाया कि अल्लाह तआला के पहचानने की यही निशानी है कि खल्क (दुनियाँ) से भागे। अदना (छोटी सी) बात जो आरफ ब्रह्म ज्ञानी) को जरूरी है, वह यह है कि मुल्क (दुनियाँ) और माल (धन, दौलत) से परहेज करे।

फरमाया नेकों (सज्जन लोगों) की सुहबत कारे नेक (अच्छे कर्म) से बेहतर है और बदों (बुरे लोगों की सुहबत) कारे बद (बुरे कर्म) से बदतर है। फरमाया जिसने अपनी ख्वाहिश तर्क को (त्याग दी) अल्लाह तआला को पहुँच गया। फरमाया तू अपने तई (अपने को) ऐसा जाहिर कर जैसा कि तू हो। फरमाया जिक्र (ईश्वर का नाम जप) कसरते अदद (अधिक संख्या में करने) से नहीं है कि जिक्र हुजूर बेगफलत (बिना असावधानी के ईश्वर की ओर ध्यान लगाने) का नाम है।

फरमाया अल्लाह तआला की मुहब्बत यह है कि दुनियाँ और आखरत (लोक परलोक) को दोस्त न रखे (अर्थात् दोनों ही की इच्छा न रखे)। फरमाया कि अल्लाह तआला के नजदीक सबसे ज्यादा वह है जो बारे खल्क खींचे (प्राणी मात्र की सेवा करे, उनकी मुसीबतों में उनका साथ दे और खूए खुश रखे (प्रसन्न-चित्त रहे)। किसी ने आपसे दरिफ्यात किया कि किस तरह हक को पहिचानना चाहिये। फरमाया कि अन्धा और बहरा और लँगड़ा बनकर। किसी ने दरियाफ्त किया कि आप भूख की इस कदर क्यों तारीफ करते हैं ? आपने फरमाया कि अगर फ़िरऔन (मिस्र का एक बादशाह जो बड़ा अत्याचारी था और हजरत मूसा अलै० की शाप से मरा था) भूखा होता तो 'अनारब्ब कुमुल आला' (मैं तुम्हारा सबसे बड़ा खुदा हूं) न कहता। किसी ने दरियाफ्त किया कि मुतकब्बिर (अहंकारी) किसको कहते हैं ? अपने फरमाया कि जो शख्स तमाम आलम (दुनियाँ) में अपने से ज्यादा कोई खबोस (बुरी) चीज देखे। फरमाया मर्दी का काम यह है कि अल्लाह तआला के सिवा किसी से दिल न लगाये।

आपने बारह साल तक अपने मन को तपस्या की भक्ति में जला कर मुजाहिदा (हठयोग) की आग से तपाया और मलामत (भर्त्सना) के हथौड़े से कूटा। उसके बाद उसका नफ्स (अन्तःकरण) आयने की तरह हो गया। फिर पाँच साल तक उसमें उन्होंने अपने आप को देखा और भाँति-भाँति की आराधनाओं की कलई उस पर की। फिर एक बार उन्होंने उस पर एतबार (विश्वास) की नजर डाली तो खुद पसन्दी (आत्म प्रशसा) के जन्नार (जनेऊ) उसके गले में पड़े देखे। फिर पाँच साल बड़ी मेहनत करके उन दोषों को दूर किया और फिर से मन को ईश्वरार्पित किया। आप फरमाते थे कि इस तरह सच्चा मुसलमान बनकर जब मैंने दुनियाँ पर नजर डाली तो सबको मुर्दा पाया। उन सब पर नमाजें जनाजा (अर्थी पर पढ़ी जाने वाली नमाज) पढ़कर मैं दुनियाँ से इस तरह दूर हो गया जैसे नमाज़ के नमाजी, नमाजे जनाजा पढ़कर कयामत (प्रलय)

तक के लिये उससे दूर हो जाते हैं। तिस पर भी उन्हें एक बार गुमान हुआ कि मैं अपने जमाने का बहुत बड़ा शैख हूं। खुरासान जाते वक्त तीन दिन तक वह एक मस्जिद पर ही ठहरे रहे और इबादत की कि 'ऐ अल्लाह! जब तक तूँ मुझे मेरी असली हालत से आगाह नहीं कर देता तब तक मैं आगे न जाऊँगा। चौथे दिन आप ने देखा कि एक काना आदमी ऊँट पर सवार उधर आया। ऊँट की तरफ देखकर उन्होंने ठहरने का इशारा किया, तो ऊँट के पैर जमीन में धँस गये। वह शख्स जो ऊँट पर सवार था बोला कि 'क्या तू चाहता है कि मैं खुली आँख बन्द करके अपनी बन्द आँख खोलूँ और शहर बस्ताम को बायजीद सहित डुबा दूँ। यह सुनकर हजरत बायजीद रहम० घबड़ा कर बोले, "आप कहाँ से तशरीफ लाये हैं" वह शख्स बोला जब तूने अल्लाह से आगे न जाने का अहद (वचन) किया था तब मैं यहाँ से तीन हजार फरसंग (एक फरसंग लगभग सवा दो मील के बराबर होता है) की दूरी पर था। वहाँ से आ रहा हूं और फिर यह कहकर "तू अपने दिल को निगहवानी कर और खबरदार हो जा ?" वह शख्स गायब हो गया। इस घटना से यह उपदेश मिलता है कि कोई कितनी ही इबादत व साधना व तप क्यों न करे, हजारों वर्ष का तपस्या के पश्चात् भी मन के प्रति असावधान होना खतरे से खाली नहीं। अतः ऊँची से ऊँची आध्यात्मिक स्थिति वाले साधक को भी हमेशा आजजी और इन्कसारी के साथ ईश्वर से इस अहंकार रूपी शैतान से बचाने के लिये आर्द्र आराधना करते रहना चाहिये। एक बार आपने फरमाया, "मुझे ख्याल था कि मैं अल्लाह को दोस्त रखता हूँ मगर मालूम हुआ कि मैं नही, वह मुझे दोस्त रखता है।" लोक रियाजत (जप तप आदि के अभ्यास) पर नजर करते हैं, पर मैं अल्लाह पर नजर करता हूँ। लोगों ने मुर्दो से इल्म सीखा मैंने ऐसे जिन्दे से सीखा जिसे मौत नहीं। "तूने यह काम क्यों किया ?" कयामत में यह पूछे जाने से बेहतर होगा कि यह पूछा जाये "यह काम तूने क्यों नहीं किया ?" आपने एक दिन अल्लाह से अर्ज किया "मैं तेरी राह में कैसे आ सकता हूँ ?"

हुक्म हुआ, "खुदी छोड़कर आ सकता है"। एक बार लोगों ने आप से कहा, "आप हवा और पानी पर चलते हैं।" आपने फरमाया "यह सब कुछ नहीं, मर्द वह है जो सिवा खुदा के किसी से दिल न लगाये।"

एक बार उनके एक शिष्य ने कहा कि मुझे उस पर हैरत (आश्चर्य) होता है जो अल्लाह को जानता है और उसकी इबादत नहीं करता। आपने फरमाया "मुझे उस इन्सान पर हैरत है जो अल्लाह को पहचानने के बाद उसकी इबादत करता है यानी अल्लाह को जानकर होश में कैसे रहता है ?"

एक बार आप कहीं जा रहे थे। रास्ते में एक कुत्ता मिला। उसको देखकर आपने अपना दामन समेट लिया। कुत्ते ने कहा "आपने दामन क्यों समेटा ?" अगर मुझसे दामन छू भी जाता तो आप उसे धो सकते थे, पर यह जो नखवत (घृणा) आपने को उसे तो सात दरियाओं का पानी भी दूर नहीं कर सकता"। हजरत बायजीद रहम० ने फरमाया "तू सच कहता है, तुझमें अगर बाहरी तो मुझमें अन्दुरूनी नापाकी है, सो हम तुम साथ रहें ताकि मुझमें भी कुछ पाकीजगी (पवित्रता) आ जाये। कुत्ते ने कहा "मेरा साथ रहना नामुमकिन है क्योंकि मैं नफरत जदा (घृणायोग्य) हूँ और आप पाक समझे जाते हैं।" फिर एक चुटकी सी लेकर उसने कहा कि मैं दूसरे दिन के लिये नहीं रखता, आप अनाज लाकर जमा करते हैं। हजरत बायजीद रहम० ने फरमाया "जब मैं कुत्ते के ही लायक नहीं तब खुदा की खुदाई (ईश्वर सानिध्य) कैसे मिलेगी ?" एक बार आपने फरमाया कि अल्लाह पहले जमीन के शिकस्ता दिलों (निराश एवं हताश व्यक्तियों के दिलों) में रहता हूं। इसलिये अहले आसमान (फरिश्ते) पहले जमीन से शिकस्ता दिलों को ढूँढ़ा करते हैं। तमाम खल्क को बख्श देने की इबादत करने पर मालूम हुआ कि हर किसी के साथ एक शफीअ (ईश्वर से गुनाह माफ कराने के लिये सुफारिश करने वाला) है। और खुदा उनपर मुझसे ज्यादा मेहरबान है। शैतान पर रहमत करने को कहा तो सुना 'वह आग का बना है, आग को आग ही बेहतर है।' एक दिन आपने अल्लाह से दुआ की "ऐ अल्लाह मेरी ओर नजर (कृपा दृष्टि कर)" उत्तर मिला 'बायजीद, तेरे ऐमाल (कर्म) ?"

बोले, नजर (तेरी कृपा दृष्टि) से ऐमाल (कर्म) खुद ही अच्छे हो जावेंगे।

एक बार जब आप मदीना मुनव्वरा के दर्शन के बाद वापस हुये तो आपके दिल में ख्याल आया कि अब अपनी पूज्य माता जी के दर्शन करने चाहियें और वहाँ से वह बस्ताम की ओर रवाना हो गये। फजिर को नमाज (सुबह की नमाज) के वक्त मकान पर पहुँचे। कान लगाकर सुना तो मालूम हुआ कि माताजी वुजू कर रहीं हैं और यह दुआ माँग रहीं हैं "ऐ अल्लाह! तू मेरे मुसाफिर (यात्री यानी मेरे बेटे) को आराम में रखना और बुजुर्गों को उससे राजी रखना और नेक बदला उसे देना।" यह सुनकर आपका दिल भर आया। बहुत देर बैठे रहे और फिर दरवाजा खटखटाया। माता जी ने पूछा कौन है" बोले, तुम्हारा मुसाफिर।" माँ ने दरवाजा खोला। जैसे गाय अपने बछड़े के लिये हुमकती है वैसे ही आपकी माँ आपसे बड़े प्रेम से मिलीं और बोलीं "तुमने सफर में बहुत दिन लगा दिये। तुम्हारी मुहब्बत में रोते-रोते मेरी आँखों की रोशनी जाती रही और मेरी पीठ गम की वजह से झुक गयी।" हजरत बायजीद रहम० फरमाते कि जिस काम को मैं सबसे पीछे का जानता था वह सबसे अव्वल (प्रथम) निकला और वह थी मेरी माँ की खुशनूदी (प्रसन्नता)। वह यह भी फरमाते कि खुदा ने जो कुछ मेहर (दया) मुझपर की, इल्म और मारिफत (ब्रह्मज्ञान) मुझे हासिल हुई, वह सब माँ की मुहब्बत भरी दिली दुआ से। भगवान किसी का हक नहीं छीनते। आप की पूज्य माता जी ने अपना हक छोड़कर आपको जो बचपन में ही खुदा के हवाले कर दिया था, उसका नेक बदला उन्होंने चुकाया। सर्दी की रात को आपकी माता जी ने सोते से जागकर पाने को पानी माँगा, मगर उस वक्त घर में पानी बिलकुल न था। वह सुराही लेकर नहर पर पानी भरने गये। जब तक वह पानी लेकर लौटे तब तक माँ फिर गहरी नींद में सो गयीं। वह पानी की सुराही लिये बड़ी देर तक माँ के सिरहाने खड़े रहे और उनके हाथ ठंडक से ठिठुर गये। जब माँ की नींद खुली तो उन्होंने पानी पिलाया। माँ ने कहा "बेटा तुम इतनी देर तक खड़े क्यों रहे?" आपने कहा "मैंने सोचा आप जागें और पानी तैयार न मिले तो आपको

तकलीफ होगी।" एक बार की ऐसी ही एक घटना और है जिसका जिक्र हजरत बायजीद रहम० ने लोगों से किया। एक रात्रि को माँ ने आप को जगाकर कहा "एक किवाड़ खोल दो।" यह कहकर वह सो गयीं। दाहिना किवाड़ खोलने को कहा है कि बायाँ, इसी फिक्र में रात भर खड़े रहे। जब माँ ने सुना तो बड़ी दुआएँ दीं।

आप जब नमाज पढ़ने मस्जिद को जाते तो अक्सर दरवाजे पर खड़े होकर रोया करते। लोगों ने कारण पूछा, तो आपने कहा कि मैं अपने आप को देखता हूँ तो अजहद नापाक (अत्यन्त अपवित्र) पाता हूँ और डरता हूँ कि कहीं मेरे अन्दर जाने से मस्जिद नापाक न हो जाय।" संत अबूमूसा ने आपसे पूछा "खुदा की राह में आपको कौन सी बात सबसे मुश्किल मालूम हुई?" आपने फरमाया, "खुदा को मदद के बिना उसकी ओर दिल को ले जाना मुझे सबसे मुश्किल मालूम हुआ और उसकी रहमत हुई तो दिल बिना मेरी किसी कोशिश के उसकी ओर रुजू हुआ और मुझे उसकी ओर खींचने लगा। फिर बोले "चालीस साल तक मैंने वह चीजें न खाईं जो अक्सर लोग खाते हैं। मुझे ताकत कहीं और से मिलती रही। चालीस साल तक दिल की निगहबानी (देखभाल) की। तीस साल तक अल्लाह की तलाश की। तब देखा कि तालिब (इच्छुक) वह है और मैं मतलूब (इच्छित)।"

आपकी वफात (मृत्यु) चौबह सावान तीन सौ एकसठ हिजरी को हुई। बस्ताम में आप दफन हुये। किसी ने आपको स्वप्न में देखा और पूछा कि अल्लाह तआला ने आपके साथ क्या मुआमला किया? (कैसा व्यवहार किया)। फरमाया 'खुदा ने मुझसे दरियाफ्त किया कि तू क्या लाया है?' मैंने अर्ज किया कि कोई दर्वेश अगर दरगाहे शाही में आता है तो उससे यह नहीं कहते कि तू क्या लाया हैं, बल्कि यह कहते हैं कि क्या चाहिये। कहा जाता है कि आपको किसी ने ख्वाब में देखा। उसने आपसे पूछा कि "तसव्वुफ किसको कहते हैं?" आपने फरमाया "आराइश (सजावट, ऊपरी बनावट) तर्क करना और मेहनत इख्तियार करना।

हालात हजरत ख्वाजा अबुल हसन खिरकानी रहमतुल्लाहु अलैहि

हजरत ख्वाजा अबुल हसन खिरकानी रहम० को तसव्वुफ (अध्यात्म) में बतरीक उवैसियत हजरत बायजीद बस्तामी रहम० से निस्बत हासिल हुई है क्योंकि आपका जन्म हजरत बायजीद बस्तामी रहम० की वफात (शरीरान्त) के बाद हुआ (आध्यात्मिक क्षेत्र में उवैसी उस शख्स को कहते हैं जो किसी सन्त के शरीरान्त के पश्चात उससे रूहानी निस्बत (आध्यात्मिक संबंध) हासिल करे और उससे रूहानियत की तर्बियत (आध्यात्मिक शिक्षा) ग्रहण करे) ।

कहा जाता है कि हजरत बायजीद बस्तमी रहम० हर साल दहिस्तान कुबूर शोहदा (शहीदों की कब्रों) को जियारत (दर्शनों) को जाया करते थे । जब रास्ते में खिरकान पहुचे, उस जगह खड़े हुये और इस तरफ साँस लेने लगे जैसे कोई कुछ सूँघता है । आपके मुरीद ने आपसे अर्ज करते हुये पूछा कि 'हजरत, हमको तो कुछ खुशबू नहीं आती, आप क्या सूँघते हैं ? आपने जवाब दिया 'इन चोरों के गाँव में एक मर्द की खुशबू आती है । इसमें तीन बातें मुझसे ज्यादा होंगी । इस पर बारे अयाल हागा (बाल बच्चों की जिम्मेदारी होगी), खेती करेगा और दरख्त लगायेगा ।'

कहा जाता है कि हजरत ख्वाजा अबुल हसन खिरकानी रहम० अपने आध्यात्मिक जीवन के आरम्भ में बारह साल तक इशा की नमाज (सायंकाल की मगरिब की नमाज के लगभग डेढ़ घण्टे बाद रात में पढ़ी जाने वाली नमाज) बजमाअत (लोगों के साथ) पढ़कर हजरत बायजीद बस्तामी रहम० की मजार शराफ पर जाते और वहाँ आपकी महान आत्मा की ओर मुतवज्जह होकर (ध्यान लगाकर) उनकी दया,

कृपा, सानिध्य और नेमतों के लिये मुन्तजिर रहते (प्रतीक्षा करते) और ईश्वर से यह प्रार्थना करते "या अल्लाह, तूने हजरत बायजोद रहम० को जो खिलत (उपहार) अदा किया है उसमें से अबुल हसन को भी अता फरमा।" फिर वहाँ से वापस आते। इशा ही के वुजू से सुबह की नमाज बजमाअत पढ़ते (यानो इशा को नमाज के बाद बराबर रात भर इबादत में लगे रहते, यहाँ तक कि उसो हालत में सुबह की नमाज लोगों के साथ पढ़ते।"

कहा जाता है कि चालीस साल तक आपने सर तकिया पर नहीं रखा और सुबह की नमाज इशा की वुजू से पढ़ी। एक बार खानकाह (आश्रम) में आपको तमाम मुरीदों तथा दर्वेशों के साथ रहते हुए सात दिन व्यतीत हो गये, लेकिन कुछ भोजन को न मिला। एक दिन एक शख्स कुछ भोजन सामग्री लेकर आया और आवाज दी कि सूफियों के वास्ते लाया हूँ। आप ने फरमाया कि तुममें जो सूफी होवे इस भोजन सामग्री को ले, लेकिन मेरी हिम्मत नहीं पड़ती कि जो सूफी होने का दावा करूँ। अतः किसी ने भी उसे न लिया। वह शख्स अपनी भोजन सामग्री वापस ले गया। एक बार एक शख्स आप के पास आया और अर्ज की कि आप मुझको अपना खिर्का (शरीर से उतरा हुआ वस्त्र पहिनायें)। आपने फरमाया कि पहले एक बात का जवाब दें कि अगर औरत मर्द के कपड़े पहने तो क्या वह मर्द हो जाती है ? उसने कहा 'नहीं'। आपने फरमाया कि फिर खिर्का से क्या फायदा। अगर तू मर्द नहीं है तो खिर्का से मर्द नहीं हो सकता। कहा जाता है कि एक शख्स ने आपसे अर्ज किया कि आप इजाजत दें कि मैं खल्के खुदा (दुनियाँ के लोगों) को अल्लाह तआला की दावत करूँ (ईश्वर की ओर उनका ध्यान आकर्षित करूँ, ईश्वर भक्ति के लिये प्रेरित करूँ)। आपने फरमाया, "अल्लाह तआला की तरफ दावत करना। खबरदार, अपनी तरफ न करना।" उसने अर्ज को कि 'अपनी तरफ दावत कैसी होती है ?' फरमाया कि अपनी तरफ के यह माने हैं कि अगर कोई और शख्स लोगों को अल्लाह तआला की दावत करे और तुझको बुरा लगे तो यह अलामत इसकी है कि तू अपनी तरफ दावत करता है।

आपकी धर्मपत्नी बहुत तेज़ मिजाज की थीं। एक बार एक सन्त आप के दर्शनों के लिये आपके घर आये और आपकी बीवी से पूछा कि हजरत शैख अबुल हसन रहम० कहाँ हैं ? इस पर उन्होंने बहुत झुँझलाकर ज़वाब दिया कि तू ऐसे जिन्दीक (नास्तिक) और बुरे आदमी को शैख कहता है ? मैं शैख को नहीं जानती। हाँ, मेरा शौहर (पति) लकड़ियाँ लेने जंगल गया है। वह सन्त जंगल को गये, तो देखा कि हजरत अबुल हसन रहम० शेर पर लकड़ियों का बोझ रखे चले आ रहे हैं। वह सन्त आपसे बोले "यह क्या माजरा है ? बीवी तो आपके लिये यह कहती है और आप ऐसे हैं। आपने फरमाया कि अगर मैं अपनी बीवी की तुनुक मिजाजी का बोझ न खींचूं (उसे बरदाश्त न करूँ) तो यह खूँखार शेर मेरा बोझ क्यों ढोने लगा।" फिर आपने उन सन्त को अपने घर लाकर उनसे बड़ी देर तक सत्संग किया। इसके बाद बोले, 'अब मुझे आज्ञा दीजिये, क्योंकि दीवार बनानी है और मिट्टी भिगो चुका हूँ।" वह दीवार पर जाकर बैठे ही थे कि बसूली हाथ से छूट कर गिर गयी। उन सन्त ने चाहा कि उठाकर दें, मगर वह उठें इससे पहले ही बसूली खुद बखुद उठकर आपके हाथ में जा पहुँची।

एक बार बादशाह महमूद गजनवी खिरकान आप के दर्शनों के लिये गया। उसने दूत भेजकर आप से कहला भेजा कि बादशाह सलामत गजनी से सिर्फ आपके दर्शनों के लिये आये हैं। बड़ी कृपा होगी कि आप उनके खेमे पर चलकर उन्हें दर्शन दें। उसने अपने दूत से यह भी कहा कि अगर वह आने पर राजी न हों तो कुरआन शरीफ की यह आयत सुना देना, 'अति उल्लाह व अतीउर्रसूल व उलिल अमरे मिनकुम' यानी अल्लाह की फरमाबरदारी (आज्ञापालन) करो व रसूल की फरमाबरदारी करो और तुममें से जो हाकिम है उसकी फरमाबरदारी करो)। बादशाह महमूद गजनवी का दूत आपकी सेवा में उपस्थित हुआ और बादशाह का सन्देश आपको सुनाया। आपने फरमाया 'मुझको मुआफ करो'। उसने कुरआन शरीफ की वह आयत आपको सुनायी। आपने फरमाया कि 'मैं

अल्लाह की इताअत (सेवा) में इतना तल्लीन हूँ कि रसूल की इताअत के लिये भी कोई वक्त नहीं। फिर दुनियाँ की (सांसारिक) हाकिमों का तो जिक्र ही क्या।' उनका यह उत्तर सुनकर बादशाह प्रसन्न हुआ और कहा "मैं उनको जितना ऊँचा सूफी मानता था उससे भी वह ऊँचे हैं।' फिर भी उसने आपकी परीक्षा लेनी चाही। उसने अपनी सारी पोशाक अपने अयाज नामक एक गुलाम को पहिनाई और खुद गुलाम की पोशाक पहन ली। साथ ही उसने १० दासियों को मर्दाना लिबास पहिनाकर उनके साथ हो गया। और उन सबके साथ आपके इबादतखाना (आराधना गृह) पर पहुँचा और सलाम किया। आपने सलाम का जवाब तो दिया लेकिन ताजीम न दी (आदर न किया) और उस अयाज गुलाम की तरफ कोई ध्यान न दिया, जो बादशाह की पोशाक में था और बादशाह महमूद की तरफ देखा और फरमाया कि यह सब फरेब है और बादशाह को हाथ पकड़कर अपने पास बैठा लिया और फरमाया कि इन दासियों को बाहर भेज दो। बादशाह ने इशारा किया। वह फौरन वहाँ से चली गयीं। बादशाह ने आपसे अर्ज किया 'हजरत बायजोद रहम० की कुछ बातें सुनाइये।' आपने कहा कि हजरत बायजीद रहम० ने फरमाया है 'जिसने मुझको देखा बदबख्ती (दुर्भाग्य) से बरी हो गया।' इस पर बादशाह महमूद बोला कि "क्या इनका दर्जा रसूल सल्ल० से भी ज्यादा है कि अबूजहल और अबूलहब ने रसूल अल्लाह सल्ल० को देखा और वह शकी (अभागे) ही रहे। आपने फरमाया कि 'ऐ महमूद! अदब का लिहाज रख और अपनी सल्तनत को खतरे में न डाल। अबू जहल ने अपने भतीजे मुहम्मद को देखा था न कि हजरत मुहम्मद रसूल अल्लाह सल्ल० को और सच्ची बात तो यह है कि सिवा चार खलीफाओं और असहाब (उनके साथियों) के किसी ने उन्हें नहीं देखा और इसका सबूत यह आयत है, "ऐ मुहम्मद, तू उनको देखता है जो तेरी तरफ नजर करते हैं; हालाँकि वह तूझे नहीं देख सकते।" बादशाह महमूद इस आयत को सुकर बहुत खुश हुआ और उनसे कुछ उपदेश देने के लिये निवेदन किया।

आपने फरमाया, जो चीजें हराम हैं उनसे दूर रहो, जमाअत (समूह) के साथ नमाज अदा करो और खल्के खुदा (दुनियावालों) पर सखावत (दानशीलता) व शफकत (दया) करना और प्रेम करना। बादशाह महमूद ने अर्ज किया 'मेरे लिये दुआए खैर (कल्याण के लिये प्रार्थना) कीजिये'। आपने फरमाया कि मैं हर वक्त यह दुआ करता हूं 'अल्ला हुम्मग फिलित मोमीनीना वल मोमीनात' (ऐ खुदा पालने वाले ! मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को बख्श दे)। बादशाह ने अर्ज किया 'कोई खास दुआ मेरे लिये कीजिए।" आपने फरमाया 'ऐ महमूद, तेरी आकिबत (अन्त) महमूद (श्रेष्ठ) हो।" इस सत्संग के बाद बादशाह ने अशर्फियों की थैली आपको भेंट की। आपने एक सूखी जौ की रोटी बादशाह को दी और कहा, इसे खाओ।" बादशाह ने एक टुकड़ा तोड़ कर मुँह में रखा और देर तक चबाया। आपने फरमाया कि शायद यह निवाला (ग्रास) तेरे गले में अटकता है।" बोला 'जी हाँ'। आपने फरमाया कि तेरी अशर्फियों की थैली भी मेरे गले में इसी तरह अटकती है। तू इसे वापस ले जा। उसने अर्ज किया कि इसमें से कुछ तो कृपा करके स्वीकार कर लें।' आपने फरमाया "बिला जरूरत कोई चीज लेना ठीक नहीं है।" इस पर बादशाह बोला अच्छा तो बतौर तोहफा के कोई चीज देकर मश्कूर कीजिए (कृतार्थ कीजिए)। आपने अपने पहिनने का एक वस्त्र दे दिया। बादशाह चलने के लिये खड़ा हुआ तो हजरत अबुल हसन रहम० उसकी ताजीम (आदर) के लिये उठ खड़े हुये। बादशाह ने कहा कि जब मैं आया था तब आपने मेरा आदर नहीं किया और अब आप चलते वक्त मेरी ताजीम के लिये उठ खड़े हुये, इसके क्या मानी ? आपने फरमाया, उस समय तू शाही रौब और अहंकार में मेरी परीक्षा लेने के लिये आया था और अब फुक्र (फकीरी) के इन्कसार (विनम्रता) में जाता है।

बादशाह महमूद गजनवी ने जब सोमनाथ के मन्दिर पर चढ़ाई की और घमासान युद्ध के बीच जब दुश्मनों की जीत की संभावना बढ़ने लगी, उस समय बादशाह महमूद घोड़े पर से कूद कर हजरत ख्वाजा

अबुल हसन खिरकानी रहम० द्वारा दिये हुये उस वस्त्र को हाथ में लेकर दुआ माँगी कि या 'इलाही' इस पैरहम (वस्त्र) के तुफैल में मुझे इस युद्ध में विजय प्रदान कर। तत्काल कुछ ऐसा हुआ कि बादशाह महमूद को दुश्मनों पर विजय प्राप्त हो गई। उसी रात को बादशाह ने ख्वाब में देखा कि हजरत ख्वाजा अबुल हसन रहम० फरमाते हैं कि ऐ महमूद! तूने हमारे खिरके (वस्त्र) की कुछ इज्जत न की। अगर तू अल्लाह तआला से चहता कि तमाम काफिर (मूर्ति पूजक) मुसलमान हो जायें, तो सब मुसलमान हो जाते।

एक रोज आपने अपने मुरीदों से पूछा, "क्या चीज बेहतर होती है ?" मुरीदों ने कहा 'आपही फरमायें।' आपने फरमाया कि 'दिल में अल्लाह तआला की याद।' किसी ने आपसे दरियाफ्त किया कि 'सूफी किसे कहते हैं ?' आपने फरमाया कि सूफी मुरक्का (फकीरों की गुदड़ी) और सज्जादा (नमाज पढ़ने का बिछौना) से नहीं होता, बल्कि सूफी वह है जो न हो (अर्थात् अपनी खुदी में नहीं बल्कि फनाफिल्लाह हो)। आपने फरमाया कि सूफी वह है कि दिन में उसको सूरज की जरूरत न हो और रात को चाँद और सितारों की। किसी ने दरियाफ्त किया कि सिद्क किसको कहते हैं ? आपने फरमाया कि सिद्क यह है कि दिल बातें करे यानी वह बात कहे कि जो दिल में हो। किसी ने कहा इखलास (सच्चा और निष्कपट प्रेम) किसको कहते हैं ? फरमाया जो कुछ अल्लाह तआला के वास्ते तू करे वह इखलास है और जो खल्क (दुनिया) के वास्ते करे वह रिया (मक्कारी) है। फरमाया कि ऐसे आदमी के पास मत बैठो कि तुम अल्लाह तआला कहो और वह कुछ और कहे। फरमाया कि अंदोह (रंज) पैदा करो कि तेरी आँख से पानी निकले कि अल्लाह तआला बंदा गिरियाँ और बिरियाँ को दोस्त रखता है (ऐसे भक्त जो अपने पापों के लिये ईश्वर से क्षमा माँगते हुये आँसू बहाते रहते हैं और शिकस्ता दिल अर्थात् टूटे हुये दिल से बड़ी विनीत भावना से फरियाद करते रहते हैं, ऐसे लोगों को ईश्वर प्यार करता है)। फरमाया कि जो सरवर बजाये (संगीत या

राग रागिनी बजाये) और उसके ज़रिये से खुदा को चाहे, इससे बेहतर है कि कुरआन पढ़े और खुदा को चाहे।

फरमाया रसूल अल्लाह सल्ल० का वारिस (उत्तराधिकारी) वह शख्स है कि रसूल अल्लाह सल्ल० के फेल (आचरण) की पैरवी (अनुकरण) करे, न कि वह कागज स्याह करे। फरमाया कि हजरत शिबली रहम० ने फरमाया है कि मैं चाहता हूँ कि न चाहूं (मेरी कोई इच्छा न रहे)। फरमाया यह भी एक ख्वाहिश है। फरमाया चालीस साल गुजरे कि मेरा नफ्स ठंडा पानी और तुर्श छाछ (खट्टा दही) चाहता है, अभी तक नहीं दिया। फरमाया कि दुनियाँ में आलिम (विद्वान) और आबिद (इबादत करने) वाले) बहुत हैं, तुमको उनसे गुजरना चाहिये (मिलना चाहिये) कि रात इस तरह बसर करो कि अल्लाह तआला पसन्द करे। और दिन इस तरह बसर करना चाहिये कि अल्लाह तआल पसन्द करे। फरमाया नमाज रोजा सब कहते हैं लेकिन मर्द वह है जो साठ साल उस पर गुजर जाये और बायें जानिब का फरिश्ता (जो बुरे कर्मों का लेखा जोखा रखता है) कुछ न लिखे कि उसको अल्लाह तआला के सामने शरमिंदा होना पड़ेगा। फरमाया कि जो शख्स दुनियाँ से नेक मर्दों का नाम ले जावे वह ऐसा होना चाहिये कि दोजख के किनारे पर खड़ा हो जाये और जिसको अल्लाह तआला दोजख में भेजे उसको वह हाथ पकड़ कर बहिश्त में ले जाये। फरमाया मलायका को (फरिश्तों को) तीन जगह औलियाओं (संतों) का खौफ आता है। एक मलकुल मौत (यमराज) को उनकी जान निकालने के वक्त, दूसरे किरामिन कातबीन (अच्छे-बुरे कर्मों को लिखने वाले फरिश्तों) को लिखते वक्त (औलियाओं के अच्छे बुरे कर्मों को लिखते समय), तीसरे मुन्कर नकीर को उनसे सवाल करते वक्त (वह फरिश्ते जो मरने वालों से उसकी कब्र में उसके अच्छे-बुरे कर्मों के विषय में सवाल करते हैं उन्हें मुंकर नकीर कहते हैं)।

आपने फरमाया 'अगर तू तालिबे दुनिया होगा, दुनिया तुझ पर गालिब होगी और अगर इससे मुँह फेरेगा तो तू उस पर गालिब होगा।'

फरमाया दर्वेश वह है कि जो दुनिया और आकवत (लोक-परलोक) की रगबत न करे (लगाव न रखे)। ये चीजें ऐसी नहीं हैं कि इनका दिल से ताल्लुक हो। फरमाया मर्दों का काम तहारत (पवित्रता) से बुलन्द होता है न कि कसरत काम से (काम की अधिकता से)। फरमाया उल्मा (विद्वान लोग) कहते हैं कि हम वारिस रसूल अल्लाह सल्ल० हैं और हम कहते हैं कि बाज़ मामलात (विशेषताएँ, गुण) रसूल अल्लाह सल्ल० के हममें पाये जाते हैं, क्योंकि आँहजरत सल्ल० ने दर्वेशी इख्तियार की थी, हमने भी दर्वेशी इख्तियार की है। जिस दिल में अल्लाहतआला के सिवा कुछ और भी है वह दिल मुर्दा है, चाहे उसमें बिलकुल इताअत (आज्ञापालन) हो। दीन को शैतान से अन्देशा नहीं है बल्कि आलिम हरीस दुनिया से (उस ज्ञानी से जिसके दिल में दुनिया की तृष्णा मौजूद हो) और जाहिद बेइल्म से (उस तपस्वी से जो अज्ञानी हो)। फरमाया कि चालीस साल से मैंने रोटी वगैरह कुछ नहीं पकाई, अलबत्ता मेहमानों के वास्ते और इसमें तुफैली रहा हूँ (उन्हीं मेहमानों की बदौलत मुझे भी भोजन मिलता रहा)। फरमाया कि अगर जहान (दुनिया भर) का लुकमा (भोजन) बनाकर मेहमान के मुँह में रखा जाये, फिर भी उसका हक अदा नहीं हुआ।

फरमाया सबसे रोशन वह दिल है कि उसमें खुल्क (सुशीलता, सदाचार) हो और सबसे बेहतर वह काम है जिनमें अदेशा मख़लूक (दुनिया वालों का भय) न हो और सबसे हलाल वह लुकमा है कि जो अपनी कोशिश से हो और सबसे बेहतर वह रफीक (दोस्त) है कि उसकी जिन्दगानी अल्लाह तआला के वास्ते हो। फरमाया तीन चीजों की इन्तिहा (पराकाष्ठा) मुझे मालूम नहीं हुई। इन्तिहा दरजात (आध्यात्मिक दशाएँ) हजरत रसूल अल्लाह सल्ल० मालूम नहीं हुई। इन्तिहा कैद नफ्स (मन का छल, कपट, फरेब) मालूम नहीं हुई और इन्तिहाए मारिफत (अध्यात्म, ब्रह्मज्ञान) मालूम नहीं हुई। फरमाया आफ़ियत (सुख, चैन) तनहाई में है और सलामती खामोशी में। फरमाया जिसने मुझको पहचाना

और दोस्त रखा, हक ने उसको दोस्त रखा। फरमाया जमाँ मर्दों का खाना अल्लाह तआला की दोस्ती है। फरमाया जिस वक्त अल्लाह तआला ने खलाइक (लोगों) का रिज़्क किस्मत किया (जीविका वितरित की), अंदोह (गम, कष्ट) जमाँ मर्दों को दिया और उन्होंने उसका शुक्रिया अदा किया। नमाज़ रोज़ा अच्छी चीज है, लेकिन गुरूर (घमंड) व हसद (तृष्णा) दिल से दूर करना ज़्यादा अच्छा है।

फरमाया बहुत रोओ और मत हँसो और बहुत खामोश रहो और बात न करो और बहुत दो और मत खाओ और बहुत जागो और मत सोओ। फरमाया जिस शख्स ने अल्लाह तआला के कलाम की हलावत (मिठास) व लज्जत न चखी और दुनियाँ से चला गया, वह गोया आराम से महरूम (वंचित) गया। फरमाया खलायक (दुनियाँ वालों) के साथ सुहबत खातिरदारी (आदर सत्कार) से रखना चाहिये, हजरत रसूल अल्लाह सल्ल० के साथ मुताबेअत (उनके अनुकरण) के साथ और अल्लाह तआला के साथ पाकी (पवित्रता) से, क्योंकि वह पाक है और पाक को पसन्द रखता है। फरमाया अगर कोई एक आरजू (इच्छा) नफ्स की पूरी करे, उसको सैकड़ों खरखशा (लड़ाई झगड़े, कठिनाइयाँ) अल्लाह तआला के रास्ते में पैदा हो जाते हैं। फरमाया एक लमहा (क्षण) के वास्ते अल्लाह तआला का हो रहना खलायक जमीन व आसमान के (इस लोक और परलोक के सभी लोगों के) आमाल से बेहतर है। फरमाया अल्लाह तआला की दोस्ती उस शख्स के दिल में नहीं होती जिसको खल्क (दुनिया) पर शफकत (मेहरबानी, दया) नहीं होती। फरमाया अगर तमाम उम्र में एक मरतबा भी तूने अल्लाह तआला को आजुर्दा (अप्रसन्न) किया हो और उसने मुआफ भी कर दिया हो, फिर भी तमाम बाकी उम्र इसकी हसरत (पश्चाताप) न जाये कि ऐसे मालिक को मैंने क्यों अजुर्दा किया।

फरमाया बहुत से आदमी ऐसे हैं जो जमीन पर चलते हैं और मुर्दा हैं और बहुत से आदमी ऐसे हैं जो जमीन के अन्दर सोते हैं और जिंदा हैं।

फरमाया सत्तर साल गुजरे मैं अल्लाह तआला का हो रहा हूं, इस मुद्दत में एक मरतबा भी नफ्स की मुराद पूरी नहीं की। फरमाया मुझको एक रोज इलहाम हुआ कि जो तेरी मस्जिद में आये उसका गोश्त व पोश्त दोज़ख पर हराम हो (वह दोजख में नहीं जायेगा) और जो तेरी मस्जिद में दो रकअत[1] नमाज तेरी जिंदगी में या तेरे बाद अदा करे, कयामत (प्रलय) के रोज आबिदों (इबादत करने वालों) में उठे। फरमाया यह मुझको गवारा है कि दुनियाँ से कर्जदार जाऊँ और कयामत के रोज कर्ज ख्वाह (कर्ज देने वाले) वहाँ मेरे दामनगीर हों (अपना कर्ज माँगें), मगर यह गवारा नहीं कि कोई सायल (माँगने वाला) मुझसे सवाल करे (माँगे) और मैं उसकी हाजत रद्द कर दूं (उसकी जरूरत पूरी न करूँ)।

एक बार की घटना है कि हजरत ख्वाजा अबुल हसन खिरकानी रहम० की पूज्य माता जी बीमार पड़ीं। आप दो भाई थे। अपनी माँ की बीमारी की हालत में आप दोनों ने माँ की सेवा के लिये अपना काम इस तरह बाँट लिया कि बारी-बारी से एक भाई रात को इबादत करता और दूसरा बीमार माँ की खिदमत। एक रात को आपके भाई की बारी माँ की खिदमत करने की थी मगर उसने आपसे कहा कि आज आप माँ की खिदमत करें और मैं इबादत करूँगा। आप राजी हो गए और माँ की खिदमत में लग गए और भाई इबादत खाने (पूजा गृह) में चला गया। इबादत शुरू करते ही आप के भाई को एक गैबी आवाज सुनाई दी 'हमने तेरे भाई को बख्शा (मोक्ष दिया) और उसके तुफैल में (उसके द्वारा) तुझे भी बख्शा।" भाई को बड़ा आश्चर्य हुआ। वह तो खिदमत से इबादत को अच्छा समझता था। तभी तो उसने काम की बदली की थी। बोला, 'या अल्लाह ! मैं तेरी इबादत में हूं, चाहिये तो यह था कि मेरा भाई मेरे तुफैल में बख्शा जाता। आवाज आई, "तू हमारी इबादत करता है, जिसकी

१–रकअत=नमाज में एक बार खडा होना, एक बार झुकना और दो बार जमीन पर माथा टेकना यह कुल मिलाकर एक रकअत कहलाता है।

हमें जरूरत नहीं। तेरा भाई माँ की खिदमत में है जिसको वह मोहताज (जरूरतमंद) है।

आपकी रियाजत (तपस्या, उपासना) के बारे में कहा जाता है कि आपने चालीस साल तक तकिये पर सर न रखा, अर्थात् सोये नहीं और इशा (रात) को वुजू से फज्र (सुबह) की नमाज अदा करते रहे (अर्थात रात भर इबादत करते रहे) इतनी मुद्दत के बाद एक दिन उन्होंने तकिया माँगा तो उनके मुरीदों को ताज्जुब हुआ। आपने फरमाया 'आज मुझे अल्लाह की बेनियाजी (निस्पृहता) और रहमत का दीदार (दर्शन) हुआ है। तीस साल से सिवा अल्लाह के कोई खतरा मेरे दिल में नहीं गुजरा (कोई भी ऐसा विचार जो हमें ईश्वर की याद से गाफिल करे 'खतरा' कहलाता है)। एक रात को आप नमाज पढ़ रहे थे कि एक गैबी आवाज सुनी, "ऐ अबुल हसन, क्या तू चाहता है कि जो कुछ हम तेरे बारे में जानते हैं दुनिया पर जाहिर कर दें ताकि तुझको संगसार करें (पत्थरों से मार डालें)। आपने जवाब दिया, 'ऐ अल्लाह, क्या तू चाहता है कि जो कुछ तेरी रहमत (दयालुता) के बारे में जानता हूं और तेरी कृपा से देखता हूं, दुनियाँ पर जाहिर कर दूँ ताकि वह तेरी परस्तिश (पूजा) तर्क कर दें (त्याग दें)। 'तब आवाज आई' ऐ अबुलहसन, न हम कहें न तू कह।'

आप प्रार्थना में कहा करते थे कि 'ऐ अल्लाह! मुझे अपनी इबादत और जुहद (इंद्रिय संयम) और इल्म और तसव्वुफ (अध्यात्मिकता) पर भरोसा नहीं है। इसलिये न मैं अपने को आबिद (इबादत करने वाला) समझता हूं, न जाहिद (इंद्रिय संयमी) और न आलिम (ज्ञानी) ख्याल करता हूं, न सूफी जानता हूं। ऐ अल्लाह, तू यकता (अद्वितीय) है और मैं तुझ जैसे यकता की मखलूक (ऋष्टि) में से एक नाचीज शै (महत्वहीन वस्तु) हूं।" आप फरमाते, 'जो अल्लाह के सामने पहाड़ की तरह बेहिस (चेतनाशून्य) खड़ा नहीं हो सकता वह मर्द नहीं, बालक

मर्द वह है जो अपने को नेस्त करके (मिटा कर) उसकी हस्ती (सत्ता) को याद करता है।

आपने फरमाया है कि जब तक मैं सिवा अल्लाह के दूसरों को भी देखता रहा, हर्गिज मैंने अपने अमल में इख्लास (ईश्वर के प्रति सच्चा और निष्कपट प्रेम) नहीं पाया। लेकिन जब मैंने खल्क को तर्क त्याग) करके सिर्फ अल्लाह की ओर देखना शुरू किया तो मेरे अमल में इख्लास बगैर मेरी कोशिश के पैदा हो गया। आपने फरमाया 'हर सुबह आलिम (ज्ञानी) इल्म की, जाहिद (इंद्रिय संयमी) जुहद (संयम) की ज्यादती अल्लाह से माँगता है लेकिन मैं हर सुबह ऐसी बात तलब करता हूं जिससे किसी मसलमान भाई (ईश्वर भक्त) को खुशी और मुसर्रत (सुख, चैन) हासिल हो। एक दिन आपने यह गैबी आवाज सुनी, 'ऐ अबुल हसन, मेरे हुक्म को मानेगा तो तुझे वह हयात (जीवन) दूंगा जिसको कभी मौत नहीं (अर्थात् तुझे शाश्वत जीवन प्रदान करूँगा)।

आपने फरमाया, "अल्लाह की तरफ जाने के रास्ते बहुत हैं। जितनी मखलूक (प्राणीमात्र) अल्लाह ने पैदा की है बस समझो उतने ही रास्ते हैं। हर मखलूक (प्राणी) अपनी कुव्वत (सामर्थ्य) और कुदरत (स्वभाव) की हद तक उसकी तरफ जाता है और मैं हर रास्ते से गया लेकिन किसी रास्ते को मैंने खाली न पाया बल्कि हर रास्ते में एक मखलूक (प्राणी) को चलते देखा। मैंने दुआ की कि मुझे वह रास्ता बता जिसमें सिवा तेरे और मेरे दूसरे की गुजर न हो। आवाज आई 'गम और अंदोह (कष्ट और शोक) का रास्ता ऐसा है जिसमें कोई जा नहीं पाता।' गम और अंदोह में शुक्र करने वाला अल्लाह का कुर्ब (समीपता) बनिस्बत (अपेक्षाकृत) औरों के जल्द हासिल कर सकता है। आपने फरमाया 'अल्लाह के नजदीक मर्द वह है जिसे खल्क नामर्द ख्याल करता है और जो शख्स खल्क के नजदीक मर्द है, अल्लाह के नजदीक नामर्द है। जन्नत और दोजख न हो तो पता चले कि अल्लाह के प्यारे कितने हैं?" आपने

फरमाया जिस कौम में खुदा किसी को सरफराज (प्रतिष्ठित) करता है उसके तुफैल में अल्लाह तमाम कौम को बख्श देता है (माफ प्रदान करता है)।

आपने फरमाया, बंदे (भक्त) से अल्लाह तक हजार मंजिलें हैं। इन मंजिलों में पहली मंजिल करामत (चमत्कार) है। जो बंदे कम हिम्मत होते हैं वह वहाँ रह जाते हैं, आगे बढ़ नहीं पाते और आगे के मुकामात से वंचित रह जाते हैं। फरमाया, आलमे गैब (अदृश्य लोक) से जर्रे के बराबर इश्क (प्रेम) आया और तमाम प्रेमियों के सीने को सूँघा, किसी शख्स को प्रेमी नहीं पाया और वापस चला गया।

एक बार यात्रियों का एक दल हज को जा रहा था। रास्ता खतरनाक था। सब ने आकर आपसे अर्ज किया कि कोई ऐसी दुआ बता दीजिए कि जिसकी वजह से हमारे ऊपर सफर में काई मुसीबत न आये। उन्होने इसके जवाब में इतना ही फरमाया कि 'जब कोई मुसीबत आये तो तुम मुझको याद करना।' उस जमाने में भी सभी लोग विश्वासी रहे हों ऐसी बात तो न थी। लोग आपकी यह बात सुनकर मन ही मन मुस्कराए और यात्रा पर चल पड़े। राह में डाकुओं ने घेर लिया। एक शख्स को जो अधिक धनवान था और जिसे लूटने के लिये डाकू भी विशेष आतुर थे, हजरत ख्वाजा अबुल हसन खिरकानी रहम० की वह बात स्मरण हो आई। उसने सच्चे दिल से उन्हें याद किया। तत्काल वह डाकुओं की नजर से ओझल हो गया। डाकू बड़े चकित थे। औरों को लूट कर जब डाकू चले गये, वह शख्स नजर आया, अपने माल असबाब के साथ सही सलामत जहाँ पर था वहीं खड़ा दिखलाई दिया लोगों ने आश्चर्य चकित होकर पूछा 'तुम कहाँ गायब हो गये थे ?' उसने जवाब दिया 'मैंने हजरत शेख अबुल हसन रहम० को याद किया और खुदा की कुदरत से मैं सबकी नजरों से गायब हो गया।' जब ये यात्री सफर से वापस हुये तो लौटते समय हजरत ख्वाजा अबुल हसन रहम० से पूछा, 'शैख यह क्या माजरा है

कि हम खुदा को याद करते रहे और लूटे गये और इस शख्स ने आपको याद किया और बच गया।' आपने फरमाया 'तुम लोग अल्लाह को जबान से याद करते हो और अबुल हसन दिल से। बस तुम अबुल हसन को यानी ईश्वर को सच्चे दिल से याद करने वाले उसके किसी भी बन्दे को याद करो ताकि वह तुम्हारे लिये खुदा को याद करे और तुम महफूज हो और सिर्फ जबान से हजार बार भी याद करोगे तो कुछ फायदा न होगा।

आपके एक शिष्य ने लेबनान पर्वत पर जाकर कुत्ब आलम (ऐसे मुसलमान ऋषि जिनके सुपुर्द कोई बड़ा इलाका होता है) की जियारत (दर्शन करने) की आपसे इजाजत चाही तो उसे मिल गई। जब वह वहाँ पहुँचा तो मालूम हुआ कि कुत्ब आलम नमाज के लिये आने वाले हैं। शिष्य ने देखा कि इस नमाज के इमाम कुत्बआलम और कोई नहीं खुद हजरत अबुल हसन रहम० हैं। उस पर कुछ ऐसी दहसत (आतंक) तारी हुई कि वह बेहोश हो गया। जब होश में आया तो लोगों ने पूछा सच कहो ये इमाम कौन हैं? लोगों ने बताया कि वह हजरत अबुल हसन रहम० ही हैं और पाँचों वक्त नमाज के लिये यहाँ आते हैं। वह शिष्य यह जानता ही था कि आप खिरकान में रहते हैं, लेकिन उसे यह सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ है कि आप पाँचों वक्त नमाज के लिये रोज लेबनान पर्वत आते हैं। इस बात की तस्दीक (पुष्टि) के लिये वह दूसरी नमाज तक वहाँ ठहरा रहा। आप आये, नमाज के इमाम बने और जब आप जाने लगे तो शिष्य ने आपका दामन पकड़ लिया। आप चुपचाप अपने शिष्य को एक ओर ले गये और उससे कहा कि किसी पर इस बात को जाहिर न करे।

एक बार आप के घर कुछ मेहमान आये मगर आपकी बीवी ने कहा कि सिवाय चन्द रोटियों के घर में कुछ नहीं है। बोले 'रोटियों पर एक कपड़ा डाल दो और फिर जितनी जरूरत हो उसमें से मेहमानों के सामने निकाल-निकाल कर रखती जाओ।' मेहमानों ने खूब तृप्त होकर भोजन किया। तब नौकर ने कपड़ा उठाकर देखा कुछ न था। आपने फरमाया 'गलती की, वरना कभी कमी न पड़ती।'

चालीस साल से बैगन खाने और एक घूँट ठंडा पानी की आपकी इच्छा थी। मगर आपने अपने नफ्स (मन) की यह मुराद (इच्छा) पूरी न की। एक बार अपनी माँ के जोर देने पर बैगन खा लिया और यह वही दिन था कि जिस रात को उनके लड़के का सिर काटकर कोई उनके दरवाजे पर रख गया था। जब आपने यह सुना तो बुलन्द आवाज से कहा "बेशक वह हाँडी कि हमने चढ़ाई उसमें इससे कमतर चीज न चढ़नी चाहिये।' (उनके इस कथन का यह आशय है कि खुदा की अवज्ञा करके जो हाँडी चढ़ाकर बैगन खाया, उसके बदले लड़के का सिर कटने से कम दंड क्या हो सकता था)। आपने माँ से कहा, 'देखा, मैंने पहले ही कहा था कि मेरा मामला खुदा के साथ ऐसा आसान नहीं, मगर तुमने जिद करके बैगन खिला ही दिया।' लगता है कि यह बैगन की नाफर्मानी (अवज्ञा) ही उनके लिये हिजाब (पर्दा) बन गई, क्योंकि आपकी बीबी ने जब कहा, 'दूर की बात तो जाने और घर का जिसे पता न हो उस शख्स को मैं वली (सन्त) नहीं मानती तो आपने उन्हें समझाया कि जंगल की घटना के वक्त अल्लाह ने तेरा हिजाब (पर्दा) उठा लिया था और बेटे की हत्या के वक्त मैं हिजाब में था। (उसी रात को आपने लोगों से कहा था कि उस अमुक जंगल में डाकू एक काफिले को लूट रहे हैं और बहुतों को जख्मी किया है और यह बात दरियाफ्त करने पर सच निकली, मगर हैरत यह कि उसी रात को एक शख्स आपके प्यारे बेटे का सर काटकर उनके दरवाजे पर रख गया, उसका आपको कुछ पता न चला। इसी जंगल वाली घटना की ओर संकेत करते हुये आपने अपनी बीबी को समझाया था कि जंगल वाली घटना के वक्त खुदा ने मेरा हिजाब उठा लिया था और बेटे की हत्या के वक्त मैं हिजाब में था)।

एक शख्स ने आकर आपसे कहा कि मैं हदीस पढ़ने ईराक जा रहा हूँ। आपने उससे फरमाया, 'क्या यहाँ हदीस पढ़ाने वाला कोई नहीं, जो ईराक जाते हो? वह बोला, 'यहाँ हदीस जानने वाला नहीं है और वहाँ कई मशहूर हदीस जानने वाले हैं।' आपने फरमाया, 'एक तो मैं ही हूँ,

यद्यपि मैं बेपढ़ा हूं, मगर अल्लाह ने सब इल्म मुझ पर जाहिर कर दिये हैं और हदीस तो मैंने खुद हजरत रसूल अल्लाह सल्ल० से पढ़ी है।' उस शख्स को आपकी बात का विश्वास न हुआ। रात को उसने स्वप्न में देखा कि हजरत रसूल अल्लाह सल्ल० उससे कह रहे हैं कि जवाँ मर्द सच्चो ही बात कहते हैं। सुबह को वह आपके पास आया और हदीस पढ़ना शुरू किया। पढ़ाते समय आप कभी-कभी बीच में यह कह बैठते थे कि यह हदीस हजरत रसूल अल्लाह सल्ल० ने नहीं फरमाई है। उस शख्स ने आपसे पूछा कि 'आपको यह कैसे मालूम हुआ?' आपने फरमाया जब कि तुम हदीस पढ़ते हो मैं हजरत रसूल अल्लाह सल्ल० को देखता हूँ। सही हदीस पर वह खुश होते हैं और जो हदीस सही नहीं होती उस पर उनके चेहरे पर शिकन (सिलवट) पड़ जाती है।

आपने अपने जीवन काल में अपने एक मित्र सन्त हजरत मुहम्मद बिन हुसैन रहम० से यह वादा किया था कि ईश्वर इच्छा से वे अपने उन मित्र सन्त के मौत के वक्त उनके पास आयेंगे। आपकी वफात के बाद जब हजरत मुहम्मद बिन हुसैन रहम० का प्राणान्त का समय निकट आया तो उसी मरणासन्न अवस्था में वह उठ खड़े हुये और अदब से कहा 'सलामालेकुम'। उनके लड़के ने उनसे पूछा, 'आप किसको देखते हैं?' हजरत मुहम्मद बिन हुसैन रहम० बोले, 'मैं हजरत, अबुल हसन रहम० को देखता हूं। उनके साथ बहुत से बुजुर्ग हैं और मुझसे फरमा रहे हैं, 'मौत से न डरो।' मौत के वक्त आने का जो वादा उन्होंने अपनी जिन्दगी में किया था, वह पूरा किया।'

आपने फरमाया, 'बाज लोग ऐसे हैं कि सत्तर साल में हकीकत से वाकिफ होते हैं और बाज ऐसे हैं जो उसके फज्ल से दम भर में तमाम इस्रार (भेद, रहस्य) से वाकिफ होकर दुनिया से बेखबर हो जाते हैं। कुछ लोग काबा शरीफ का तवाफ (परिक्रमा) करते हैं मगर जवाँ मर्द वह है कि जो अल्लाह की ईकानगी (पूरे विश्वास के साथ जानने) में तवाफ

करें। फरमाया, मुसलमान नमाज़ पढ़ते हैं और रोजे रखते हैं मगर मर्द वह है जो साठ साल तक इस तरह रहे कि फरिश्ते कुछ न लिखें और इस मर्तबे तक पहुंचने पर भी अल्लाह से शर्माए और उसके सामने आजिजी करे। फरमाया, ऐसे भी बन्दे हैं जो अंधेरी रात में लिहाफ ओढ़ कर लेटते हैं तो आसमान के चाँद और सितारे की रफ्तार उन्हें दिखाई देती है। दुनियाँ की नेकी और बदी, रोजी का उतरना और फरिश्तों का आना-जाना वगैरह सब उन्हें मालूम रहता है।" फरमाया थोड़ी ताजीम (शिष्टता) बहुत इल्म, बहुत इबादत, और बहुत जुहद से अफजल (श्रेष्ठ) है। राहे तलब में कदम रखने वाला बिना अल्लाह की मदद के कामयाब नहीं हो सकता। फरमाया 'मोमिन के लिये हर मखलूक (प्राणी) एक हिजाब और दाम (फन्दा) है। मालूम नहीं मोमिन किस हिजाब और दाम में रह जाये।' फरमाया 'अल्लाह को जानकर नफ्स को आफत और शैतान के फरेब से बेखबर न हो। और जब तक शैतान के फरेब में है, अल्लाह चुप है, और जब शैतान हार जाता है, अल्लाह करामत (चमत्कार) और उन्स (स्नेह) में डालता है, मगर जवाँ मर्द वह है जो किसी पर नहीं रीझता।'

किसी ने आपसे पूछा 'बन्दगी किसे कहते हैं?' अपनी उम्र को नामुरादी (कोई भी अपनी इच्छा न रहने) में बसर करने का नाम बन्दगी है। पूछा, 'बेदारी कैसे हासिल हो?' फरमाया, तमाम उम्र को एक साँस से ज्यादा तसव्वुर (ख्याल, कल्पना) न करे। पूछा, फुक्र (साधुता) का क्या निशान है?" बोले, दिल का ऐसा रँग जाना कि उस पर कोई रंग अपना असर न जमा सके और फरमाया तवक्कुल (ईश्वर इच्छा पर भरोसा) इसका नाम है कि शेर, साँप नदी और आग सब तेरे लिये एक से हो जायें क्योंकि आलिमे तौहीद (ईश्वर को एक मानना) में सब एक ही हैं।' और फरमाया कि मैं पूरे दिन अल्लाह से इशारा करता हूं और उसके सिवा और कोई ख्याल दिल में नहीं आने देता। किसी ने

आपकी वफात के बाद आपको स्वप्न में देखा तो उसने आपसे पूछा 'आप के साथ खुदा ने क्या सलूक (व्यवहार) किया ?' आपने जवाब दिया, अल्लाह ने मेरा ऐमालनामा (कर्मो का लेखा-जोखा) मेरे हाथ में दिया तो मैंने कहा कि तू मुझे इसमे मशगूल करना चाहता है, यद्यपि मुझसे जो काम हुये उससे पहले ही तू जानता था कि मुझसे क्या काम सरजद (घटित) होंगे । यह फरिश्तों को दे कि वह पढ़ा करें और मुझे छुट्टी दे कि हमेशा तुझसे ही बातें करूँ ।

कहा जाता है कि जब आपकी वफात नजदीक हुई आपने वसीयत की कि मेरी कब्र तीस गज गहरी खोदना कि हजरत बायजीद बस्तामी रहम० की कब्र से ऊँची न हो । अतः ऐसा ही हुआ और आपका शरीरान्त बमुकाम खिरकान चार सौ चौबोस हिजरी में हुआ ।

हजरत ख्वाजा अबुल हसन गुरगानी (रहम०)

आपको दो तरफ से रूहानी फैज हासिल हुआ है । एक हजरत जुन्नैद बगदादी रहम० के सिलसिले से, जिसका शिजरह तरीकत इस प्रकार है कि आप मुरीद हजरत शैख अबू उस्मान मखगजबी के और वह मुरीद हजरत जुन्नैद बगदादी रहम० के और दूसरा फैज आपको हजरत ख्वाजा अबुल हसन खिरकानी रहम० से हासिल हुआ । आप अपने समय के पूर्ण समर्थ सन्तों में से थे और इल्म बातिन व जाहिर दोनों में आपको कमाल हासिल था । एक बार हजरत दातागंज बख्श लाहौरी रहम० आपसे एक मसला पूछने के लिये गये तो आप पहले से ही एक सुतून (खम्भा) को मुखातिब करके उस मसला का जवाब दे रहे थे । हजरत दातागंज बख्श लाहौरी आपकी इस करामत (चमत्कार) पर हैरान रह गये । आपका जीवन बहुत ही सीधासादा था । साधारण रहन-सहन ही आपको पसन्द था । आप बहुत ही शान्त स्वभाव के थे । अधिक शिष्य बनाना और दुनियाँ का दिखावा आपको पसन्द नहीं था । सन् ४५० हिजरी में आपकी वफात हुई । कस्बा गुरगान में आपकी समाधि मौजूद है ।

हजरत शैख अबू अली फारमदी तूसी कुद्स सिर्रहू

आपको तसव्वुफ (अध्यात्म विद्या) में हजरत ख्वाजा अबुल हसन खिरकानी रहम० से निस्बत हासिल है। परन्तु इस निस्बत को पूर्णता हजरत शैख अबुल कासिम गिरगानी रहम० ने कराई तथा अपना खलीफा (ब्रह्म विद्या का उत्तराधिकारी) आपको घोषित किया।

आपने फरमाया है कि युवावस्था के आरम्भ में मैं नीशापुर इल्म जाहरी (सांसारिक विद्यायें) पढ़ने गया था। वहाँ मैंने सुना कि हजरत शैख अबू सईद अबुल खैर रहम० एक महीना से आये हुये हैं और बाज फरमाते हैं (उपदेश देते हैं)। मैं उनकी जियारत (दर्शनों) को गया और उनकी सूरत देखकर मुझको उनसे एक इश्क (प्रेम) सा हो गया। और इस सिलसिले की मुहब्बत मेरे दिल में समा गई। एक रोज घर में बैठा था कि एकाएक मेरे दिल में हजरत शैख अबूसईद रहम० के दर्शनों का शौक बड़ी बेचैनी के साथ पैदा हुआ। यद्यपि वह वक्त शैख रहम० के बाहर निकलने का न था। इरादा किया कि अभी न जाऊँ, मगर सब्र न हो सका। अतः बेबसी की हालत में उठकर बाहर गया। जब चौराहे पर पहुँचा, क्या देखता हूँ कि शैख रहम० अपने मुरीदों के साथ चले आ रहे हैं। मैं उनके पीछे हो लिया। जब वह एक जगह पर पहुँचे मैं भी उनके साथ चला गया और एक कोने में जाकर इस तरह बैठ गया कि शैख रहम० की नजर मुझ पर न पड़े। वहाँ समा शुरू हो गया और शैख रहम० को वज्द अज़ीम पैदा हुआ (रूहानी आनन्द की अधिकता से आत्म विस्मृति की स्थिति पैदा हो गई)। अतः उन्होंने कपड़े फाड़ डाले। जब समा से निवृत्त हो लिये, कपड़े उतारे और उनको टुकड़े-टुकड़े किया। एक आस्तीन (कुर्ते या अँगरखे की बाँह) अलग रखी और आवाज दी, 'अबूअली तूसी कहाँ है ?' मैंने अपने दिल में कहा 'वह तो मुझको जानते भी नहीं और देखते भी नहीं,

कोई अबू अली इनका मुरीद होगा, जिसको पुकारते हैं। यह सोचकर खामोश हो गया और कुछ जवाब न दिया। शैख ने फिर पुकारा मगर मैंने जवाब न दिया। तीसरी मर्तबा जब पुकारा, किसी ने कहा तुम्हीं को शैख पुकारते हैं।

जब मैं उठकर उनके पास गया, शैख रहम० ने वह फटा हुआ कपड़ा और आस्तीन मुझको दिया और फरमाया कि जाओ इसको अच्छी तरह से सुरक्षित रखना कि तू मुझको इस आस्तीन और फटे हुये कपड़े की तरह है, यानी जो ताल्लकु (संबन्ध) इस आस्तीन और कपड़े में है वहीं मुझमें और तुझमें है। मैं वह कपड़ा लेकर बड़े अदब के साथ उनसे विदा हुआ और उस कपड़े को बहुत ही हिफाजत से रखा और मुझको उनकी खिदमत में बहुत फायदा हुआ और उनकी दया-कृपा से अनेक आध्यात्मिक अनुभूतियाँ और स्थितियाँ पैदा हुईं।

जब शैख रहम० नेशापुर से चले गये मैं हजरत इमाम अबुल कासिम कुशेरी रहम० के पास गया और जो कुछ मेरे ऊपर आध्यात्मिक अनुभव व स्थितियाँ पैदा हुई थीं वह उनसे बयान कीं। उन्होंने फरमाया 'ऐ लड़के अभी इल्म (सांसारिक विद्या) पढ़ो। चुनाँचे मैं इल्म पढ़ता रहा, लेकिन प्रतिदिन रोशनाई (स्याही) बढ़ती जाती थी। तीन साल तक मैं तहसील इल्म (सांसारिक विद्या के अध्ययन) में लगा रहा। एक दिन कलम दावात से निकाला तो सफेद निकला। मैंने यह घटना हजरत इमाम अबूकासिम रहम० से बतलाई। उन्होंने फरमाया कि अब इल्म ने तुझसे मुँह फेर लिया, अब तू भी उससे मुँह फेर ले। अतः मैं मदरसे से खानकाह में गया और हजरत इमाम अबू कासिम के उस्ताद (सतगुरुदेव) की खिदमत में संलग्न हुआ। एक रोज उस्ताद अकेले गुसलखाने में गये। मैंने चन्द डाल पानी के गुशलखाने में डाल दिये। जब उस्ताद बाहर आये, नमाज पढ़ी फरमाया यह किसने गुसलखाने में पानी डाला। मैंने मारे खौफ के कुछ न कहा कि शायद उनकी मर्जी के खिलाफ हो। उन्होंने फिर दरियाफ्त किया, फिर भी मैंने जवाब न दिया। तीसरी मरतबा फिर दरियाफ्त किया,

तब मैंने अर्ज किया कि मैं था। उन्होंने फरमाया, 'ऐ अबू अली, जो कुछ कि अबू कासिम को सत्तर साल में मिला तुझको एक डोल पानी में मिल गया।' इसके बाद मुद्तों तक उनकी खिदमत में मुजाहिदा (तपस्या) किया।

एक रोज़ मैं बैठा था कि कुछ ऐसी हालत पैदा हुई कि मैं उसमें गुम हो गया। यह हाल मैंने अपने उस्ताद से बयान किया। उन्होंने फरमाया कि 'ऐ अबू अली इससे ज्यादा मेरा सुलूक नहीं है। (साधना के मार्ग में इससे अधिक मेरी पैठ नहीं है)। मैंने दिल में ख्याल किया कि मुझको अभी और किसी दूसरे पीर (सतगुरु) की जरूरत है, जो मुझको इस स्थिति से निकालकर आगे ले जाये। मैंने हजरत शैख अबुल कासिम गुरगानी का नाम सुना था। जब मैं उनकी खिदमत में पहुँचा, वह उस वक्त अपने मुरीदों में बैठे हुये थे। मैंने दो रकअत तहियतुल मस्जिद (एक प्रकार की नमाज) गुजारी और उनके सामने आया। वह मराकबा में बैठे थे। सर उठाया और फरमाया 'आओ क्या बात है?' मैंने सलाम किया और बैठ गया और तमाम वाकया बयान किया। शैख रहम० ने फरमाया 'हाल इब्तदा (प्रारम्भिक स्थिति तुम्हारी अच्छी है। अगर तुम्हारी तर्बियत (शिक्षा-दीक्षा) हो तो मरतबा बुलन्द (ऊँची स्थिति) पर पहुँच जाओ। मैंने अपने दिल में जान लिया कि मेरे पीर यही हैं और वहीं कयाम किया (रुक गया)। उन्होंने बहुत दिनों तक मुझसे तरह-तरह के मुजाहिदा (तपस्या) और रियाजतें (अभ्यास) कराईं। इसके बाद अपनी लड़की का विवाह मुझसे कर दिया। अभी शैख रहम० ने मुझसे वाज फरमाने (धार्मिक उपदेश देने) को नहीं कहा था। फिर एक रोज मैं शैख अबू सईद रहम० के पास गया। उन्होंने फरमाया 'ऐ अबू अली बहुत जल्द तुझसे अहले तूस (तूस के लोगों) से बात करायेंगे।

हजरत अबू फारमदी रहम० का कहना है कि इस बात को बहुत दिन नहीं गुजरे थे कि शैख अबुल कासिम रहम० ने मुझसे वाज करने को फरमाया। आपकी वफात मुकाम तूस में सन् ४७७ हिजरी में हुई।

हालात हजरत ख्वाजा यूसुफ हम्दानी कु० सि०

हजरत ख्वाजा यूसुफ हम्दानी रहम० का जन्म सन् ४४० हिजरी में हुआ। आपको हजरत ख्वाजा अबू अली फारमदी तूसी रहम० से निस्बत (आत्मिक संबन्ध) हासिल है, लेकिन एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ 'शरा व साया ख्वाजा अब्दुल खालिक गुड़दवानी रहम०' में लिखा है कि हजरत ख्वाजा यूसुफ हम्दानी रहम० बेवास्ता हजरत शैख अबुल हसन खिरकानी रहम० के मुरीद हैं (अर्थात् हजरत अबुल हसन खिरकानी रहम० की वफात के बाद उनसे रूहानी निस्बत हासिल की ओर उनके मुरीद हुये और इस तरह को परोक्ष रूहानी निस्बत हासिल करने वाले शख्स को ही तसव्वुफ में 'उवैसी, कहते हैं)। और आपने खिरकः हजरत शैख अब्दुल्ला चोपनी कु० सि० से पहिना है (अर्थात् उनसे गुरु पदवी की इजाजत हासिल की है)। सूफियों में पीर अपने मुरीद को गुरुपदवी की इजाजत देते समय पहिनने का कोई वस्त्र अपने मुरीद को पहिनाता है। महत्वपूर्ण ग्रन्थ 'रशहानुल हयात' में लिखा है कि आपने हजरतशैख जोऐनी के दस्त मुबारक (सौभाग्यशाली हाथों) से भी खिरकः पहिना (उनसे भी गुरु पदवी की इजाजत मिली)। आप हजरत शैख अब्दुल्ला जोऐनी और हजरत शैख हसन समनानी की सुहबत (सतसंग) में भी हाजिर रहे। आपकी कुन्नियत (उपाधि, लकब) 'अबू याकूब' है।

आपकी उम्र अट्ठारह साल की थी कि बगदाद, इस्फहान, ईराक, खुरासान समरकन्द, बुखारा वगैरह में आपने इल्म (सांसारिक विद्याओं का ज्ञान) हासिल किया। हदीस शरीफ का गहन अध्ययन किया और वाज कहा (धार्मिक उपदेश दिये)। बहुत से लोगों को इनसे नफा पहुँचा (लाभान्वित हुये)। इमाम याफई कु० सि० की तारीख (इतिहास की

किताब) में यह लिखा है कि हज़रत ख्वाजा यूसुफ हम्दानी रहम० साहबे अहवाल और साहबे करामात थे (पूर्ण सिद्ध सन्त तथा ऋद्धियों, सिद्धियों के भण्डार थे)। आपके खानकाह (आश्रम) में हमेशा विद्वानों और फकीरों की भीड़ लगी रहती थी। आपने आजुरबेजान, ईशाक और खुरासान के लोगों की तर्बियत फरमायी (अध्यात्म को शिक्षा दी)।

हजरत ख्वाजा यूसुफ हम्दानी रहम० उन मशायख (मतगुरुओं) में से हैं जिनकी सुहबत में हजरत मुहीउद्दीन शैख अबुल कादिर जीलानी रहम० हाजिर रहे हैं। एक रोज आपने हजरत ख्वाजा शैख अबुल कादिर जीलानी रहम० से जो अभी जवान थे, फरमाया 'तुम वाज कहो (धार्मिक उपदेश दो)'। उन्होंने फरमाया कि मैं अजमी हूं (अरब का निवासी नहीं हूं), बगदाद के विद्वानों के सामने किस तरह बात करूँ। हजरत ख्वाजा यूसुफ हम्दानी रहम० ने फरमाया कि तुझको फिकह (इस्लामी धर्मशास्त्र) और उसके उसूल (सिद्धान्त) इख्तिलाफ मजाहिब (विभिन्न धर्मों के मतभेद) व लुगत (शब्दकोश) व तफ्सीर कुरआन (कुरआन की व्याख्या) याद है। तुम सब तरह से वाज कहने (धार्मिक उपदेश देने) की सलाहीयत (क्षमता, योग्यता) रखते हो, तुम मेज (मंच) पर आओ और वाज कहो कि मैं तुममें वह चीज पाता हूं कि जिसकी जड़ें व शाखाएँ जमीन व आसमान में पहुंची हुई हैं।

हजरत ख्वाजा यूसुफ हम्दानी रहम० का मजहब (धर्म) हनफी था। (आप हजरत इमाम अबू हनीफा के धर्म के अनुयायी थे)। आप साठ साल से अधिक मसनदे इर्शाद (गुरुपदवी) पर कायम रहे और बहुत बड़ी संख्या में लोग आपके मुरीद होकर आपसे आध्यात्मिक शिक्षा प्राप्त की। आप एक लम्बे अर्से तक मरू में मुकोम रहे (निवास किया)। सालहा और कोहआजर में भी मुकीम रहे और आदत थी कि सिवाये जुमा (शुक्रवार) के बाहर तशरीफ न लाते।

एक रोज एक दर्वेश (साधु) हजरत ख्वाजा युसूफ हम्दानी रहम० के पास आया और कहा कि अभी मैं हजरत शैख अहमद गज्जाली के पास

था। वह दर्वेशों के साथ खाना खाते थे कि उसी समय उनको गैबत (आत्म विस्मृति) हुई। इसके बाद उन्होंने फरमाया कि मैंने रसूल उल्लाह सल्ल० को देखा कि तशरीफ लाये हैं और मेरे मुँह में लुक्मा (भोजन का कौर) रखा है। यह सुनकर हजरत ख्वाजा यूसुफ हम्दानी रहम० ने फरमाया, ये ख्याल हैं कि जिनसे तरीकत (अध्यात्म) के अत्फाल (बच्चे) परवरिश किये जाते हैं।

कहा जाता है कि एक बार एक औरत रोती-पीटती आपके पास आई और अर्ज किया कि फिरंगी मेरे लड़के को पकड़कर ले गये हैं। दुआ फरमाइये कि वह आ जाय। आपने फरमाया कि तू सब्र कर (धैर्य रख) और मकान को जा। लड़का तुझको घर पर मिलेगा। वह औरत घर वापस आई तो देखा कि सचमुच वह लड़का मौजूद था। उससे हाल दरियाफ्त किया। उसने कहा अभी मैं कुस्तुन्तुनियाँ में कैद था। मेरी देख-रेख करने वाले मेरे चारों ओर थे। एकाएक एक शख्स आया जिसको मैंने कभी नहीं देखा था, और वह एक क्षण में इस जगह मुझको ले आया। वह औरत हजरत ख्वाजा यूसुफ हम्दानी रहम० के पास गयी और लड़के का किस्सा बयान किया। आपने फरमाया कि तुझको हुक्म खुदा से ताज्जुब आता है ?

कहा जाता है कि एक बार हजरत ख्वाजा यूसुफ हम्दानी रहम० वाज फरमा रहे थे। दो फकीह (मुस्लिम धर्मशास्त्र के विद्वान) मौजूद थे। उन्होंने आपसे कहा कि चुप रहो तुम बिदअती हो (इस्लाम धर्म में नयी बात पैदा करने वाले हो)। हजरत ख्वाजा रहम० ने फरमाया कि तुम खामोश रहो, तुमको मौत आयी, चुनाँचे उसी जगह उसी वक्त दोनों फकीह मर गये।

एक बार मदरसा निजामियाँ बगदाद में आप वाज फरमा रहे थे कि इब्न सिक्का नाम के एक फकीर ने आपसे कोई मसला पूछा। आपने फरमाया, तू बैठ जा कि तेरे कलाम (बात) से बूए कुफ्र आती है और

तेरी मौत इस्लाम धर्म पर न होगी। इस घटना के काफी दिनों बाद एक ईसाई खलीफा रोम से आया। इब्न सिक्का उसके पास गया और उसके पास उठना-बैठना शुरू किया और आखिरकार उसने ईसाई खलीफा से कहा कि मैं दीन इस्लाम तर्क करना (त्यागना) चाहता हूँ, और तुम्हारा धर्म स्वीकार करूँगा। चुनाँचे वह खलीफा उसको अपने साथ ले गया और रोम के बादशाह से उसकी मुलाकात कराई और वह ईसाई हो गया और इसी धर्म में रहते हुये उसकी मौत हुई।

एक बार आप मरू से हेरात गये और कुछ दिनों वहाँ रहे और मरू वापस आये। फिर फुरसत के बाद दूसरी बार हेरात गये। थोड़े दिनों वहाँ रहे। उसके बाद मरू के सफर का इरादा किया। जब हेरात से बाहर आये रास्ते में आपका शरीरान्त हो गया। जिस गाँव में आपका शरीरान्त हुआ वहाँ आपको दफन किया गया। कहते हैं कि कुछ दिनों बाद उनका एक मुरीद इब्नुल नज्जार आपकी लाश को मरू में ले गया और कब्र मुबारक आपकी वहीं है, जिसकी जियारत होती है और उससे बरकत ली जाती है। जब आपके शरीरान्त का समय निकट आया, अपने मुरीदों में से चार को दावते खल्क और इर्शाद के मर्तबा में पाया (चार को गुरु पदवी के योग्य पाया) और उन चारों को अपनी खिलाफत व नियाबत पर मुकर्रर किया। पहिले खलीफा हजरत अबदुल्ला बर्की रहम०, दूसरे हजरत ख्वाजा हसन अन्दाकी रहम०, तीसरे हजरत ख्वाजा अहमद यसवी रहम० और चौथे खलीफा हजरत ख्वाजा अब्दुल खालिक गुज्दवानी रहम० थे।

हजरत ख्वाजा अब्दुल खालिक गुज्दवानी कु०सि०

हजरत ख्वाजा अब्दुल खालिक गुज्दवानी रहम० हजरत ख्वाजा यूसुफ हम्दानी रहम० के चौथे खलीफा और तबका ख्वाजगान की सबसे बुजुर्ग हस्तियों में थे और आप ही से सिलसिला अजीजान नक्शबन्द शुरू हुआ (अल्लाह तआला इस सिलसिले की रूहों की और उनके दोस्तों की रूहों को पवित्रतम बनाये)। गाँव गुज्दवान, जो शहर बुखारा से १८ मील पर है, आपका जन्म स्थान और मदफन है (जहाँ आप दफन हुए)। आपके पूज्य पिताजी हजरत जमील इमाम रहम० जो हजरत इमाम मालिक रहम० की औलाद से हैं, सांसारिक और आध्यात्मिक विद्याओं में पूर्ण पारंगत थे। आपकी पूज्य माताजी रोम के बादशाहों में से एक बादशाह की औलाद से थीं।

आप के पूज्य पिताजी हजरत खिज्र अलैहिस्सलाम के सुहबतदार थे और हजरत खिज्र अलैहिस्सलाम ने उनको बुशारत (शुभ सूचना) दी थी कि तेरे घर में लड़का पैदा होगा। उसका नाम अब्दुल खालिक रखना। उसको हम अपनी फर्जन्दी में लेंगे (आध्यात्मिक पुत्र के रूप में अपनी शरण में लेंगे) और अपनी रूहानी निस्बत से बहरामन्द करेंगे (सौभाग्यशाली बनायेंगे)। इसके बाद कुछ ऐसा संयोग हुआ कि समय के फेर से हजरत अब्दुल जमील रहम० को परिवार सहित रोम से मावराउल नहर आना पड़ा और एक कस्बा गुज्दवान में, जो शहर बुखारा के नजदीक है, बस गये और वहीं हजरत ख्वाजा अब्दुल खालिक गुज्दवानी रहम० का शुभ जन्म हुआ और वहीं आपका पालन-पोषण हुआ और बड़े हुये। आप पहले शहर बुखारा में सांसारिक विद्याओं के अध्ययन में लगे रहे। एक रोज अपने उस्ताद हजरत इमाम सदरुद्दीन से जो उस समय के उच्चकोटि के विद्वानों में से थे, कुरआन शरीफ की तफसीर (व्याख्या) पढ़ते थे। जब इस आयत पर पहुँचे

"अदऊ रब्बकुम तजर्रअन व खीफतन इन्नहू ला यहब्बुल मोतदीन" (अपने अल्लाह से दुआ करो गिड़गिड़ाते हुए और खुफिया तौर से, बेशक वह हद से आगे बढ़ने वालों से मुहब्बत नहीं करता) अपने उस्ताद से दरियाफ्त किया कि "यह खुफिया तरीक (गुप्त रूप से जप करना अथवा दुआ करने का ढंग) क्या है ? अगर जाकिर (आराधक) आवाज से जिक्र करे और जिक्र के वक्त आजा से जुम्बिश करे (शरीर के किसी अंग को हिलाये) तो दूसरा उसको जान लेता है और वह खुफिया नहीं रहता और अगर दिल में कहे तो शैतान इस हदीश के मुताबिक 'अश्शैतानो यजरी फी उरुकै इब्न आदम मजरद्द में (शैतान आदमी की रगों में खून को तरह दौड़ता है) वाकिफ हो जाता है।" उस्ताद ने फरमाया कि यह इल्मे लदुन्नी (ईश्वरदत्त ज्ञान) है। अगर अल्लाह तआला को मंजूर है तो तुझे कोई अहले अल्लाह (सन्त) मिलेगा और तुझको तालीम करेगा। चुनाँचे हजरत ख्वाजा रहम० ऐसे सन्त की प्रतीक्षा में रहते। संयोग से एक जुमा (शुक्रवार) के रोज अपने बाग के दरवाजा पर बैठे थे कि एक बूढ़े बुजुर्ग आपके पास आये। आपने उनका बड़ा आदर सत्कार किया। इन बुजुर्ग ने आप से फरमाया 'जवान, मैं तुझमें आसार बुजुर्गी देखता हूँ। कहीं तू बैअत (दीक्षित) हुआ या नहीं ?' आप ने कहा बहुत दिन हुए 'इसी बात की तलाश में हूँ।' उन बुजुर्ग ने फरमाया 'ऐ जवान, मैं खिज्र (अलैहिस्सलाम) हूँ, तुझको मैंने अपनी फरजन्दी में कुबूल किया। एक सबक तुझको बताता हूँ। इसका जरूर अभ्यास करना। तुझे इसमें कामयाबी हासिल होगी। फिर फरमाया कि हौज में गोता मार और दिल से 'लाइलाह इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह' कह।' हजरत ख्वाजा ने इसी तरह किया और यह सबक लेकर इसके अभ्यास में मशगूल हुये और कुशाइश (सफलता और बढ़ोत्तरी) पायी। आप अव्वल जमाना से आखिर तक तमाम खल्क (दुनिया) के मकबूल और महबूब रहे

हैं (सर्वप्रिय रहे हैं और सबने आपको पूर्ण समर्थ सन्त के रूप में स्वीकार किया है)।

इसके बाद जब हजरत ख्वाजा यूसुफ हम्दानी रहम० बुखारा में आये, हजरत ख्वाजा अब्दुल खालिक गुज्दवानी रहम० उनकी सुहबत में हाजिर होते रहे। यद्यपि हजरत ख्वाजा यूसुफ हम्दानी रहम० का तरीका जिक्र जहर (वाणी द्वारा आवाज करते हुए जप) करने का था लेकिन हजरत ख्वाजा अब्दुल खालिक गुज्दवानी रहम० को हजरत खिज्र अलैहिस्सलाम ने जिक्र खुफिया (मौन जप) की तालीम फरमाया था। हजरत ख्वाजा युसूफ हम्दानी रहम० ने इनको जिक्र जहर का हुक्म न दिया और फरमाया कि जिस तरह हजरत खिज्र अलैहिस्सलाम ने हुक्म दिया है उसी तरह किये जाओ। हजरत ख्वाजा अब्दुल खालिक रहम० के पीर सबक हजरत खिज्र अलैहिस्सलाम थे और पीर सुहबत व खिरका हजरत ख्वाजा यूसुफ हम्दानी रहम० थे। जब हजरत ख्वाजा अब्दुल खालिक गुज्दवानी रहम० हजरत ख्वाजा यूसुफ हम्दानी रहम० की खिदमत से अलग हुए बहुत दिनों तक ईश आराधना, साधना और अभ्यास में गुप्त रूप से मशगूल रहे और किसी को इसकी इत्तला न थी कि आप क्या किया करते हैं।

एक रोज आप इबादतखाना में रो रहे थे, तो मुरीदों ने अर्ज किया कि आपके ऐसे श्रेष्ठ आचरण हैं और आपकी इतनी इज्जत है फिर खौफ और रोने की क्या वजह है। फरमाया कि जिस वक्त अल्लाह तआला की बेनियाजी (निस्पृहता) को ख्याल करता हूँ, नजदीक हो जाता हूँ जान कल्ब से बाहर हो जाये और इससे खौफ आता है कि शायद बिना इरादा और बिना जाने मुझसे ऐसा काम सरजद हो गया हो कि अल्लाह तआला को नापसन्द हो। जिस जगह आप बैठते

ब वजह खौफ खुदा ऐसा मालूम होता था जैसे आपको कत्ल करने के वास्ते बिठलाया गया है।

आपने फरमाया कि मेरी बाइस साल की उम्र थी कि हजरत खिज्र अलैहिस्सलाम ने मेरी तरबियत (रुहानियत की शिक्षा-दीक्षा) के वास्ते हजरत ख्वाजा यूसुफ० हम्दानी रहम० को वसीयत फरमायी। एक दर्वश ने हजरत ख्वाजा अब्दुल खालिक रहम० से दरियाफ्त किया कि तस्लीम किसको कहते हैं ? फरमाया कि तस्लीम यह है कि राजे अलस्त (सृष्टि रचना के दिन) जो नफ्स जान व माल बेचकर बहिश्त (स्वर्ग) खरीदा है, आप भी तस्लीश करें क्योंकि अल्लाह तआला फरमाता है कि 'इन्नल्लाहस्तरा मिनल मोमनीना अनफुसहुम व अम वालहुम वेअन्ना लहमुल जन्नह' (खुदा ने मोमनीन (भक्तों) के नफ्सों और मालों को स्वर्ग के बदले में खरीद लिया है)। तस्लीम नफ्स व माल इस तरह होता है कि अपने नफ्स को मम्लूक (दास) अल्लाह तआला समझे और अपने तईं उसका वकील खर्च जाने (अर्थात् यह समझे कि यह तन, मन, धन सब मेरा नहीं उसी ईश्वर का है और उसी के हुक्म से मैं उसी को यह धरोहर खर्च कर रहा हूँ) और जहाँ तक हो सके अपने नफ्स (जान) व माल से बन्दगाने खुदा तआला के साथ बेमिन्नत (उसका एहसान लिये बिना) नेकी करें। और माल दुनियाँ को अपने बातिन में जगह न दे और अपने तईं हुक्म व कजा (इन्साफ, न्याय) हक तआला तस्लीम करे (स्वीकार करे)।

एक रोज एक खादिम (सेवक) ने अर्ज किया कि 'फरागत (निवृत्ति) किसको कहते हैं ? आपने फरमाया फरागत दिल यह है कि मुहब्बत दुनियाँ दिल में राह न पाये और यह नहीं कि दुनियाँ के काम काज से आजाद हो। अल्लाह तआला ने पैगम्बर सल्ल० से फरमाया 'फैजा फरगत फन सब' (यानी जिस वक्त तमाम मौजूदात

से दिल फारिग हो जाये उस वक्त मेरी खिदमत में मशगूल हो) जो लोग खरीद फरोख्त और खल्क से मामलादारी (व्यवहार) में अल्लाह तआला से गाफिल नहीं होते उनकी तारोफ में अल्लाह तआला कुरआन शरीफ में फरमाता है 'रिजालुन ला तलहीहिम तिजारतुल बला बए अन जिक्रिल्लाह' (वह लोग ऐसे हैं कि उनको खुदा की याद से न तिजारित रोकती है और न बेचना) अगर इनमें हो जाओ सुबहान अल्लाह, वरना इन लोगों की जान व माल से खिदमत करने में कमी न करना ताकि इनकी रूहानी दौलत में तुम्हारा ताल्लुक रहे और उस लुक्मा (तुम्हारे दिये भोजन) की कुव्वत से जो ताअत और इबादत (उपासना और आराधना) इन लोगों से हो उसका सवाब (पुण्य) इस शख्स को भी मिले और उनके दरजात व मुकामात उसके नामा आमाल (कर्मों के लेखाजोखा) में दर्ज हों और कयामत के रोज उनकी खिदमत और मुहब्बत में महशूर हो (उठाया जाये) । फरमाया गया है कि 'अलम रओ मअमन अहब्बा' यानी आदमी जिसको दोस्त रखता है उसी के साथ महशूर हो (कियामत के दिन उठाया जायेगा) और यह हजरात खास 'लीम अल्लाहे वक्तुन' रखते हैं (यानी जिनका अल्लाह के साथ नियाज करने का एक वक्त मखसूस (खास) है) । जिस वक्त काबिले तसर्रुफ जज्बात अलूहियत होते हैं (जिस समय इन पूर्ण समर्थ सन्तों के हृदय में ईश्वर के प्रेम का भावावेश उमड़ता है) अहले जमीन व आसमान के (लोक परलोक के लोगों के) उक्दे (ग्रन्थियाँ) खुल जाते हैं कि 'जज्बतुन मिन जज्बातिल्लाहे तुआरी अमलस्सकलेन' (यानी अल्लाह से मुहब्बत रखने की एक ख्वाहिश तमाम जिन्नों और इंसानों के अमल पर छा जाती है) और उस वक्त जानी और माली खिदमत करने वाले को जो कुछ नसीब होता है कि अहले (लोग) मशरिक (पूर्व) व मगरिब (पश्चिम) इसका हिसाब नहीं कर सकते, पहुँच जाता है । चुनाँचे यह इसी बात की तरफ इशारा

है जहाँ फरमाया 'वब तवऐ हातकल्ला हो अद्दारुल आखिर लातनसा नसीब का मिनद्दुनिया' (अल्लाह ने तुम्हें जो आखिरत (परलोक) में दिया है उसे तलब करो और दुनिया का अपना हिस्सा भी न भूलो यानी जो कुछ तुम्हारा हिस्सा दुनिया का है उसको अल्लाह की रजा में सर्फ (खर्च) करो।)

हजरत ख्वाजा अब्दुल खालिक गुज्दवानी रहम० के कलमात कुद्सिया (पवित्र उपदेशों) से कुछ कलमे नीचे दिये जा रहे हैं, जो नक्शबन्दिया सिलसिले की बुनियाद समझे जाते हैं।

१. होश दर दम—यह है कि जो दम (साँस) अन्दर से निकले, चाहिये कि हुजूर व आगाही से पुर हो (हर साँस में ईश्वर की ओर हमारा ध्यान एकाग्र रहे और हम इस बात से सावधान रहें कि हर साँस ईश्वर की याद में निकले) और गफलत उसमें राह न पावे। हजरत ख्वाजा बहाउद्दीन कु० सि० ने फरमाया है कि बिनाए कार (काम का आधार) इस राह में नफ्स (साँस) पर करना चाहिये, अर्थात् ईश्वर नाम का जप अपने बुजुर्गो (सत्गुरुओं) का जिक्र, सतसंग 'मुस्तक्विल (भविष्य) की फिक्र में भी हर नफ्स में हुजूरी होनी चाहिए। (हर साँस में ध्यान ईश्वर की ओर लगा रहना चाहिए) और नफ्स (साँस) को जाया (नष्ट) न होने देना चाहिए (अर्थात् किसी साँस में ईश्वर की याद से गाफिल न हो) और आमद रफ्त-नफ्स में इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि कोई साँस गफलत से न उतरे और न निकले। हजरत मौलाना जामी कु० सि० ने जो महान् सूफी सन्त होने के साथ ही साथ फारसी साहित्य के महान कवि थे, अपनी पुस्तक 'शरा रुबाईयात' के आखिर में लिखा है कि हजरत शैख अबुल खबाब नजमुद्दीन किब्री कु० सि० अपने रिसाला (पत्रिका) फवातहुल जमाल' में फरमाते हैं कि जो जिक्र हैवानात (पशुओं) की नफ्स (साँस)

पर जारी है, उनके अन्फास (साँसें) जरूरी हैं इस वास्ते कि साँस के ले जाने और उसके निकालने में हर्फ 'ह' जो इशारा बगैब हूयत यानी हक सुबहाना (ईश्वर) है कहा जाता है और यही हर्फ 'ह' इस्म (नाम) इबारत 'अल्लाह' में है और हर्फ 'अलिफ', 'लाम' तारीफ के लिए है और तश्दीद 'लाम' (आधा 'लाम') उस तारीफ में मुबालगा (अतिशयोक्ति) के लिये है। पस चाहिये कि तालब (जिज्ञासु, साधक) होशियार निस्बत आगाही बहक सुबहाना में इस तौर पर रहे कि हर्फ शरीफ के बोलने के वक्त जात हकसुबहाना (ईश्वर) की हूयत (ईश्वरत्व) उसके मलहूज और पेशे नजर रहे (उसके ध्यान और दृष्टि में बना रहे) साँस के अन्दर जाने और बाहर निकलने में वाकिफ हो कि हुजूर मय अल्लाह की निस्बत में कोई फुतूर (दोष) वाकै न हो। यहाँ तक कि वह साधक उस दर्जा तक पहुँचे कि बेतकल्लुफ (बिना अपने इरादा के) निगाहदाश्त (देख-रेख) इस निस्बत की हमेशा उसके दिल में हाजिर रहे और तकल्लुफ के साथ (अपने इरादा से यदि चाहे भी तो) इस निस्बत को दिल से दूर न कर सके।

२. नजर बर कदम—चलने-फिरने में अपनी नजर नीची करके पैरों पर निगाह रखे। इधर उधर न देखे, क्योंकि आस पास जो चीजें दिखलाई देती हैं उनकी तरफ ध्यान जाने से ईश्वर के ध्यान में खलल पड़ता है और विचार विचलित होते हैं। इसका एक अर्थ यह भी होता है कि अपनी बुराई और नेकी के कदम को देखे कि किसमें कदम आगे है। अगर बुराई में कदम आगे है तो उसको पीछे हटाए और नेकी के कदम को आगे बढ़ाये। कुछ सूफी यह भी अर्थ लगाते हैं कि सालिक (साधक) को अपने मुर्शिद (सतगुरु) द्वारा निर्देशित साधना पथ पर चलते हुए यह भी देखते रहना चाहिये कि वह किस मञ्जिल

व मुकाम पर पहुँचा है और उससे आगे बढ़ने की कोशिश करनी चाहिए। नक्शबन्दिया सिलसिले के महत्वपूर्ण ग्रन्थ 'रशहानुल हयात' में इस रशहा (उपदेश) के मानी में यह लिखा है कि "नजर वर कदम से इशारा सालिक की सुर्अत (शीघ्रता) के साथ सैर की तरफ है और वह सैर मसाफात हस्ती की (वह दूरियाँ और रुकावटें जो हमारी हस्ती को अल्लाह तआला की कुर्बत और फनाइयत नहीं हासिल करने देती उनकी) कित्अ (पृथक करना) और खुदपरस्ती (आत्म-प्रशंसा, अपने को सबसे अच्छा और बड़ा समझने का भाव) की दुशवार (कठिन, दुरूह) घाटियाँ तै करने में हो यानी जहाँ उसकी नजर मुन्तही हो (जिस स्थिति और मुकाम तक उसके पीर ने उसको पहुँचाया हो) फिलहाल उस पर कदम रखे। और हजरत अबू मुहम्मद रूयम कु० सि० ने जो फरमाया है कि मुसाफिर (साधक) का अदब यह है कि कदम से ताजाउज न करे (न बढ़ जाये) इसी मानी में है और जो हजरत मखदूमी (हजरत जामी) कु० सि० ने अपनी किताब 'तोहफ्तुल अहरार' में हजरत बहाउद्दीन कु० सि० की तारीफ में इस विषय को इस तरह नज्म किया है (कविता के रूप में लिखा है) यह नज्म फारसी में लिखी गई है जिसका उर्दू तर्जुमा उसके नीचे दिया गया है :—

मरनवी— कम जदह बेहम दमे होश दम,
बर न गुजश्ता नजरश अज कदम।
बस कि ज खुद करदः ब सर्अत सफर,
वाज न मादह कदमश अज नजर।

तर्जुमा— दम न लिया उसने मगर होश से,
आँख कदम से न उठी जोश से।
बस कि सफर जल्द किया आपसे,
बिछुड़ा नजर से न कदम नाप से।

३. **सफर दर वतन**—मानवीय दुर्गुणों से हटते हुए दैवी गुणों की ओर बढ़ना सालिक (साधक) का सफर दरवतन है। प्रसिद्ध ग्रन्थ 'रशहानुल हयात' में इस उपदेश की व्याख्या इस प्रकार की गयी है'—मशायख तरीकत रहम० (सूफी सन्तों) का हाल सफर और इकामत (किसी स्थान पर ठहरने) के विषय में मुख्तलिफ है। (अलग-अलग है) इनमें से कुछ लोग सफर इब्तदा (आरम्भ) में करते हैं और इन्तिहा (अन्त में) में मुकीम होते हैं (ठहरते हैं) और बाजे इब्तदा में मुकीम और इन्तिहा में मुसाफिर होते हैं और बाजे न इब्तदा में सफर करते हैं न इन्तिहा में और बाजे इब्तदा और इन्तिहा दोनों में सफर करते हैं और मुकीम नहीं होते और हर एक फिरका (दल, मंडली) की इन चार फिरकों से सफर और इकामत में नियत सादिक (सच्ची) और गरज (उद्देश्य) सही है और ख्वाजगान कुद्स अल्लाह अरवाहहुम (नक्शबन्दिया सिलसिले के सूफी सन्तों) का तरीका सफर और इकामत में यह है कि हिदायत हाल (रूहानियत की शिक्षा-दीक्षा लेने की स्थिति) में इस कदर सफर करें कि आपको किसी अजीज (सतगुरु) की खिदमत में पहुँचा दें और उसकी खिदमत में मुकीम हों (ठहर जायें) और अगर अपने मुल्क ही में किसी को इस गिरोह से पायें, सफर छोड़कर उसकी मुलाजमत (सेवा) में शताबी (शीघ्रता) करते हैं और सतगुरु के बतलाये हुए जप तप और साधना के अभ्यास में बहुत कोशिश करते हैं और जब इन सबके अभ्यास में महारत (निपुणता) हासिल हो जाती है तो फिर ऐसे सालिक (साधक) के लिए सफर और इकामत बराबर है। हजरत ख्वाजा उबैदुल्लाह अहरार रहम० इस विषय में फरमाया करते थे कि मुक्तकी (अनुयायी) को सफर में परेशानी के सिवा कुछ हासिल नहीं। जब तालिब (जिज्ञासु) किसी अजीज की सुहबत में पहुँचे उसको उनकी सेवा में बैठना चाहिये और सिफत तम्कीन (स्थिरता, पायदारी) हासिल

करना चाहिये और मल्क: (निपुणता) निस्वत ख्वाजगान कुद्स अल्लाह अखाहहुम का हाथ में लाना चाहिये। इसके बाद जहाँ जाये कोई रुकावट नहीं। इस उपदेश की उक्त व्याख्या में एक रुबाई (फारसी में) दी गई है :-

रुबाई— या रब के खुशस्त बे दहाँ खन्दीदन,
बेवास्तए चश्म जहाँ रा दीदन।
वनशी व सफर कुन कि बगायत खूबस्त,
बेमिन्नते पा गिर्दे जहाँ गर्दी दन।

तर्जुमा— क्या खूब है वेदहन (बिना मुँह) के हँसना यारब,
और चश्म (आँख) बगैर देख लेना यारब।
बैठकर सफर करना बहुत ही अच्छा है,
और बिना पैर के (बिना चले) दुनिया भर घूम लेना
कितना अच्छा है।

हजरत मखदूमी कु० सि० ने अपनी पुस्तक 'अशअतुल लमआत' में इसकी व्याख्या में यह बैत लिखी है :—

बैत— आइना सूरत अज सफर दूरस्त,
काँ पजीराई सूरत अज नूरस्त।

यानी आइना सूरत (सूरत देखने को दर्पण) सूरत दिखलाने के लिए मुहताज (इच्छुक) इसका नहीं है कि सूरत की तरफ सफर करे, इस वास्ते कि वह (दर्पण) सूरत का कुबूल करने वाला अपनी मुँह की सफाई और नूरानियत की वजह से हुआ है। जो कुछ उसके सामने होता है उसमें दिखलाई देता है और सूरत उसकी (देखने वाले की) मुनअक्कस (प्रतिबिम्बित) उसमें होती है। इसी तरह जब आइना मानवी दिल का सूरी मौजूदात (सांसारिक माया मोह) खुरखुरेपन

से खलास (मुक्त) हुआ और नूर (प्रकाश) व सफाई उसमें करार पा चुके (प्रवेश कर गये), तबई (कुदरती) ख्वाहिशों की तारीकी (अन्धकार) उससे दूर हुई तब तजल्लियाते जात (ईश्वर का तेज वी प्रताप) व सिफाते इलाही (ईश्वर के गुण) उसमें प्रवेश कर जाते हैं, जिनकी वजह से वह सैर और सफर का मुहजात नहीं रहता क्योंकि सैर व सफर का उद्देश्य कल्ब के तस्फिया (सफाई) से है। जब सालिक दिल की सफाई को पहुँचा सैर व सफर से मुश्तगनी हो गया (सैख सफर की इच्छा न रह गयी)।

४. **खिलवत दर अन्जुमन** :—हजरत ख्वाजा बहाउद्दीन कु० सि० से पूछा गया कि तुमारे तरीकत की बिना (बुनियाद) किस चीज पर है। फरमाया 'खिलवत दर अन्जुमन' जाहिर में खल्क के साथ और बातिन में अल्लाह तआला के साथ।

बैत:— अज दरूँ शै आशनाँ, अज बरुँ बेगाना वश।
ईं चुनी जेबा रबिश, कम मी बुअद।

तर्जुमा— (आशनाँ (अर्थात् ईश्वर का भक्त) अन्दर से और बेगाना (अनजान, जो ईश्वर की ओर से गाफिल अथवा अपरचित मालूम पड़े) बाहर से रहे। इस तरह की चाल प्यारी कम जहाँ (संसार) में होती है।) हक सुब्हाना जो फरमाता है 'रिजालुला-तलही हो हुम तिजारत व लाबै अन जिक्र अल्लाह' (जो खुदा के बन्दे हैं उनकी तिजारत और खरीद फरोख्त उनको खुदा के जिक्र से गाफिल नहीं करती) ऐसे मुकाम का इशारा है और फरमाया कि निस्वत बातिनो इस तरीका में ऐसी वाकै हुई है कि जमईयते दिल (हृदय को एकाग्रता) जिलवत (भीड़, जमाव) में उससे ज्यादा होती है जो कि खिलवत (एकान्त) में है और फरमाया कि हमारा तरीका सुहबतहै,

और खिलवत में शुहरत (यश, नामवरी) ह और शुहरत में आफत / खैरियत जमईयत (एकाग्रता) में है और जमईयत सुहबत में है, वशर्ते कि एक दूसरे में नफी हों (एक दूसरे से प्रभावित न हों, एक दूसरे में कोई रुकावट न पैदा करें)। हजरत ख्वाजा औलिया कबीर कु० सि० ने फरमाया है कि खिलवत दर अन्जुमन वह है कि इस्तेला (बुलन्दी) और इश्तगराक (तन्मयता) जिक्र में उस दर्जा (स्थिति) को पहुँचे कि अगर बाजार में आवे कोई बात और आवाज न सुने इस वजह से कि जिक्र का गल्वा इस्तिलाए हकीकत दिल पर है और हजरत ख्वाजा उबैदुल्लाह अहरार रहम० ने फरमाया है कि पाँच छः रोज में बवजह इश्तिगाल (तन्मयता) जिक्र और एहतिमाम बलीग (अत्यधिक निगरानी) के इस मर्तबा को पहुँचाता है कि लोगों की आवाज और हिकायत (बातचीत) जिक्र मालूम होते हैं और ओ जो बात खुद कहे जिक्र सुने और यह बात वगैर सई (प्रयत्न) और एहतिमाम (निगरानी) के होती है।

(५) **याद कर्द** :—इसका अर्थ जिक्र जवानी या दिली है। हर क्षण शैख (सतगुरु द्वारा बतलाये हुये ईश्वर नाम के रूप में हृदय को लगाये रखना "यादकर्द" कहलाता है। हजरत ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शबन्द रहम० फरमाते हैं कि मकसूद (उद्देश्य) जिक्र (जप) से यह है कि दिल हमेशा हजरते हक (ईश्वर) के साथ हाजिर रहे बवस्फ मुहब्बत व ताजीम (अर्थात् हृदय हमेशा प्रेम व आदर सहित ईश्वर के सनिध्य में रहे) मुसलमान सूफी सन्तों में जिक्र (ईश्वर नाम के जप) के कई तरीके प्रचिलित है। हजरत मौलाना सादुद्दीन काशगरी कु० सि० ने फरमाया है कि "तरीक (ढंग) तालीम जिक्र का यह है कि अव्वल शैख दिल में कहे 'लाइलाह इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह'। मुरीद अपने दिल को हाजिर करें और शैख के दिल को मुकाबिल (सामने)

रखे और आँख बन्द और मुँह इस्तबा (सीधा) और जबान तालू में चस्पा और दाँत तले ऊपर रखे और साँस रोके। शैख के मुआफिक (अनुकूल) और दिल से कहे और न जुबान से और साँस रोकने में ठहरे। एक दम (साँस) में तीन बार (ऊपर लिखा हुआ कलमा शरीफ) कहे इस प्रकार कि दिल को हलावत (मिठास) जिक्र का असर पहुँचे और उन्होंने अपने वाज कलमात कुद्सिया (अपने कुछ पवित्र उपदेशों) में लिखा है कि जिक्र से मकसूद यह है कि दिल हमेशा आगाह रहे हक सुबहाना से मुहब्बत और ताजीम के साथ। अगर अहले जमईयत (अपने सिलसिले के सन्तों महात्माओं) की सुहवत (सत्संग) में यह आगाही मिले तो खुलसा जिक्र (जप का सारतत्व) हासिल है। जिक्र का मग्ज (सार) और रूह यह है कि दिल हक सुबहाना से आगाह रहे और अगर सुहबत में यह आगाही हासिल न हो, इसका तरीका (ढंग) यह है कि जिक्र किया करे और तरीक जिसकी निगाहदाश्त (निगरानी) आसान हो यह है कि दम (साँस) को नाफ (नाभि) के नीचे रोके और ओठ को ओठ पर और जबान को तालू पर इस तरह चस्पा आसानी से करे (चिपकाए) कि साँस अन्दर तंग न हो और हकीकते दिल को जिससे गरज (आशय) मुद्रिक: व दर्क (विवेक व बुद्धि) है जो हर तरफ जाती है और दुनिया के मसालेह (समस्यायें) दूसरे के वगैर सोचती है और तर्फबुलऐन में (पलक मारने अथवा क्षणभर में) उसे आसमान जाना और तमाम आलम (संसार) की सैर करनी मुअस्सिर है (उसकी विशेषता है) उसको सब अंदेशों (एकाग्रता में विघ्न उत्पन्न करने वाले विचारों) से वेजार (विमुख) करे और उसको पार: लह्म (मांस का वह भाग जो दिल कहलाता है) की तरफ जो बशक्ल सनोवर है (चोड़ के लम्बे पेड़ की तरह है) मुतवज्जो करे (की ओर एकाग्र करे) और उसे जिक्र में मशमूल करे इस ढंग से कि कलमा 'ला' को ऊपर खीचे और कलमा 'इलाह' को दाहिने

तरफ हरकत देकर कलमा 'इल्लल्लाह' को शख्त (जोर से) दिल सनोवरी पर मारे ऐसा कि हरारत (गर्मी) उसकी तमाम अजा (शरीर के सभी अंगों को पहुँचे और नफी वजूद की जो जानिब तमाम मोह-द्दिसात के है इसको बनजर फ़ना देखे, (ईश्वर के अलावा तमाम ऋद्धियाँ, सिद्धियाँ तथा नये-नये अनुभवों और हालतों को क्षण भंगुर और नाश-वान समझे और यह ख्याल करे कि हम इनको नहीं चाहते) और जब इस्वात (केवल ईश्वर के अस्तित्व को मानने) का इकरार (प्रतिज्ञा, संकल्प) किया जाये यानी 'इल्लल्लाह' कहा जाये तो हक सुबहाना के वुजूद (हस्ती) को बनजर बका व मकसूद मुतालआ करना (परमात्मा अजर अमर है और वही हमारा लक्ष्य है इस बात को ध्यान में रखना) और हर समय जिक्र में लगे रहना चाहिये और किसी शग्ल (काम) के साथ इससे बाज़ (वंचित) न रहे यहाँ तक कि तकरीर कलमा (कलमा को बार-बार दुहराने) की वजह से सूरत तौहीद (अब्दैतवाद) दिल में ठहरे और जिक्र दिल की लाजिमी सिफत (गुण) हो जाये।

(६) **बाज गश्त :**—इसका शाब्दिक अर्थ होता है 'लौटना या वापसी'। भावार्थ इसका यह है कि साधक जब अपने गुरु के द्वारा बतलाई हुई साधना में लगा रहता है तो उसे बीच-बीच में ऐसे आध्या-त्मिक अनुभव होते हैं और ऐसी हालतें पैदा होती हैं कि जिनके कारण साधक के हृदय में अहंकार उत्पन्न होने का भय रहता है और उस अहकार के आते ही उसको अपने साधना पथ से विचलित होने तथा उसका अधोपतन होने में देर नहीं लगती। अत: इस सिलसिले के महा-पुरुषों का यह फरमाना है कि किसी भी प्रकार की साधना (जप, ध्यान या किसी अभ्यास) में लगे हुये साधक को साधना करते हुये बीच-बीच में रुककर ईश्वर से दीनता पूर्वक गिड़गिड़ाते हुये यह प्रार्थना करते

रहना चाहिये कि 'हे ईश्वर तू ही मेरा लक्ष्य है, तेरी रिज़ा (प्रसन्नता) में ही मैं राजी रहना चाहता हूँ'। यह प्रार्थना इस वास्ते करते रहना चाहिये क्योंकि कलमा बाज़गश्त नफी करने वाला हर खतरा नेक व बद का है (हर अच्छे बुरे विचार को जो हमें ईश्वर के ध्यान से विचलित करे) दूर करने वाला है। ऐसी प्रार्थना करने से जिक्र खालिस (निश्छल) होता है और ध्यान इसका मासिवाअल्लाह से (ईश्वर के अलावा सभी चीजों से) खाली हो जाता है और अगर मुब्तदी (नये अभ्यासी) से शुरू में कलमा वाजगश्त का जिक्र सही तौर पर न आवे तो चाहिये कि उसे छोड़े नहीं, इस वास्ते कि धीरे-धीरे अ.सार सिद्क जूहूर पाते हैं (इस प्रार्थना की सच्चाई के चिह्न धीरे-धीरे प्रकट होते हैं।)

(७) **निगाहदाश्त** :—इसका आशय यह है कि साधक को हमेशा अपने मन की निगरानी और चौकसी रखनी चाहिये कि उसमें सिवा ईश्वर की याद के और कोई भी खतरा (कोई भी ऐसा विचार जो हमें ईश्वर की याद से गाफिल करे) वे न उत्पन्न होने पावे। हजरत ख्वाजा नक्श बन्द रहम० फरमाते हैं कि सालिक को मन में कोई भी खतरा उत्पन्न होते ही उसे रोक देना चाहिये, क्योंकि जब वह मन में ठहर कर उस पर असर कर जायेगा तो उसका दूर करना बहुत मुश्किल होगा। इस सिलसिले के महापुरुषों का फरमाना है कि 'निगाहदाश्त' का अभ्यास धीरे-धीरे बढ़ाना चाहिये। पहले कुछ मिनट, फिर कुछ घण्टे यह निगरानी रखनी चाहिये कि हमारे मन में सिवा ईश्वर के और कोई सांसारिक विचार उत्पन्न ही न होने पावे। यद्यपि यह उत्यंत कठिन कार्य है कि कभी मन में सिवा ईश्वर के कोई अन्य सांसारिक विचार उत्पन्न ही न हो, अतः इस सिलसिले के मशायत (सन्तों) ने यह फरमाया है कि मन में सिवा ईश्वर के कोई भी दुनिया का विचार आते ही

उसके लिये ईश्वर से दिली तौबा करते हुये उसको दूर करने की पूरी कोशिश करनी चाहिये। अगर इत खतरात को जरा भी मन में ठहरने का मौका मिल गया तो वह मकड़ी के जाले की तरह मन को घेर लेते हैं और फिर उनसे नजात (मुक्ति) पाना बहुत ही कठिन हो जाता है। अतः मन में कोई भी खतरा उत्पन्न होते ही उसके लिए दिली तौबा करना सालिक के लिए निसयत जरूरी अम्र (कार्य) है।

(८) **याददाश्त**—जब साधक ईश्वर के नाम-जप में इस प्रकार से अभ्यस्त हो जाये कि बिना प्रयत्न व इरादा के अपने आप हृदय में ईश्वर का नाम जप होता रहे और बगैर अलफाज (शब्दों) व ख्याल के बराबर ध्यान ईश्वर की ओर लगा रहे तो ऐसी हालत को 'याद दाश्त' कहते हैं। हजरत ख्वाजा उबैदुल्लाह अहरार रहम० ने चार कलमा (याद कर्द, बाजगश्त, निगाहदाश्त और याददश्त) की व्याख्या इस प्रकार की है :—याद कर्द का अर्थ यह है कि जिक्र अल्लाह में मुबालगा किया ज ये (अत्यधिक अभ्यास किया जाये) और 'बाजगश्त' का आशय रुजूअ बहक सुबहाना से (मन को ईश्वर की ओर आकृष्ट करने से) इस तौर पर कि हर बार कलमा तईयबः कहे ('लाइलाह इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसलुल्लाह' कलमा तईयब कहा जाता है) और उसके पीछे दिन में सोचे कि 'अल्लाह मकसूद मेरा तू है' और निगाहदाश्त' इस रुजूअ (मन को इस प्रकार ईश्वर की ओर आकृष्ट करने की प्रवृत्ति) की मुहाफजत (निगरानी) से बेगुफतन जबान है (बगैर जबान हिलाये हुये है) और याददाश्त' का मतलब 'निगाहदाश्त' के रुसूख (महारत, पूर्ण निपुणता से है)'।

(९) **वकूफ जमानी** :—हजरत ख्वाजा बहाउद्दीन कु० से० ने फरमाया है कि सालिक की 'वकूफे जमानी' यह है कि बन्दा अपने हाल का वाकिफ कार (जानने वाला) हर वक्त हो कि उसकी सिफत और हाल

क्या है, मोजिबे शुक्र है या मोजिबे उज्र (ईश्वर को धन्यवाद देने योग्य है या तौबा करने के लायक है)। और हजरत मौलाना याकूब चर्खी कु० सि० ने फरमाया है कि हजरत ख्वाजा बहाउद्दीन कु० सि० ने मुझे कब्ज में (कभी-कभी साधना पथ में जब मन आराधना,जप व सतगुरु द्वारा बतलाये हुये किसी साधना में एकाग्र नहीं हो पता और एक अजीब उलझन गफलत सुस्ती और तबियत उचाट सी रहती है इस रूहानी हालत को कब्ज कहते हैं और ऐसी दशा में) हुक्म इस्तगफार (तौबा) और बस्त में (ऐसी रूहानी हालत में जब मन में ईश्वर और गुरु के प्रति प्रेम भक्ति का भावावेश उमड़ता रहता है और जप, साधना आदि के अभ्यास में खूब मन लगता है। हक्म शुक्र फरमाया कि रिआयत (ख्याल, ध्यान) उस हाल को बकूफे जमानी है। (वकूफे जमाना से ही अर्थात् हर वक्त अपनी आन्तरिक स्थिति की निगरानी करते रहने से ही कब्ज बस्त की हालतें पैदा होने पर साधक फौरन उन हालतों के मुताबिक कब्ज में तौबा और बस्त में अल्लाह का शुक्र करता है)। और हजरत ने यह भी फरमाया है कि सालिक की बिनाए कार (काम की बुनियाद) को बकूफे जमानी में साअत (वक्त) पर रखी है ताकि नफ्स (साँस) का दरियाफ्त करने वाला हो कि नफ्स हुजूर (ईश्वर के प्रति ध्यान या आगाही) से गुजरता है या कि गफलत से, इस वास्ते कि अगर नफ्स पर बिना एकार न होगा तो इन सिफ्त का मुद्रिक न होगा (अच्छी बुरी हालतों का पहिचान करने वाला नहीं बन सकेगा) और 'वकूफ जमानी' सूफी सन्तों के नजदीक इबारत 'मुहासिबा' (आत्म निरीक्षण) से है और हजरत ख्वाजा वहाउद्दीन नक्शबन्द रहम० ने फरमाया है कि मुहासिबा यह है कि हर साअत (समय) में जो हमारे ऊपर गुजरता है (जो हालत पैदा होती है) मुहासिबा करे कि गफलत क्या है और हुजूर (ईश्वर को ओर ध्यान लगना) क्या है। (और हजरत अपने विषय में फरमाते हैं कि इस मुहासिबा में) देखता हूं कि

सब नुकसान है (यह मेरी साधना और जप त्रुटिपूर्ण है) और बाजगश्त करता हूँ और अस्सरे नौ अमल (अभ्यास) शुरू करता हूं।

(१०) **वकूफे अददी** :— इसका मतलब यह है कि साधक जप करते समय इस बात का ध्यान रखे कि जब ईश्वर का जप करे तो ताक संख्या में करे (अर्थात् वह संख्या जो दो से पूरी न कटे जैसे तीन, पाँच, सात, नौ, इक्कीस आदि) इस सिलसिले के सन्तों का फरमाना है कि ऐसा करने में ईश्वर के साथ मुनासबत (लगाव) है, क्योंकि हजरत पैगम्बर (सल्ल०) ने फरमाया है—'खुदा एक है और इकाई को पसन्द करता है।' हजरत ख्वाजा बहाउद्दीन कु० सि० ने फरमाया है कि रिआयत अदद (संख्या का ध्यान रखना) जिक्र दिल में खतरात मुतफर्रका के (विभिन्न प्रकार के वे सांसारिक विचार जो साधक को ईश्वर की याद से विचलित करते हैं उनके) दूर करने के लिये है। हजरत ख्वाजा अलाउद्दीन अत्तार कु० सि० ने फरमाया है कि जिक्र में बहुत दफा (कई बार) कहना शर्त नहीं है, चाहिये कि जो कुछ कहे वकूफ और हुजूर से हो (ईश्वर की ओर ध्यान लगा रहे और अपनी आन्तरिक हालत से वाकिफ अर्थात् अवगत रहे।)

(११) **वकूफ कल्बी** :—इसके दो अर्थ होते हैं। एक यह है कि जाकिर का (जप करने वाले का) दिल हक सुबहाना से आगाह रहे और यह कलमा 'याददाश्त' की तरह है। हजरत ख्वाज उबैदुल्लाह अहरार रहम० ने अपने कुछ उपदेशों में लिखा है कि वकूफ कल्बी इबारत है आगाही और दिल की हाजिरी बजनाब हक सुबहाना से इस तरह कि दिल को कोई चाहत (इच्छा) हक सुबहाना के सिवा न हो और इसी मानी (अर्थ) में दूसरी जगह फरमाया है कि जिक्र करते वक्त इतिबात (सानिध्य) और आगाही मजकूर (अल्लाह) के साथ शर्त है और इस आगाही को शुहूद (साक्षात्कार) वसूल (मिलन), वुजूद (उपस्थिति)

और वकूफ कल्बो कहते हैं। इस कलमा के दूसरे अर्थ यह होते हैं जाकिर दिल से वाकिफ हो यानी जिक्र (जप) के समय शरीर के उस स्थूल अंग को जिसे हृदय कहते हैं उसे जिक्र के साथ मशगूल (तल्लीन) और गे या करे (हृदय को ईश्वर-नाम के जप में तल्लीन करते हुये उसी से जाप कराये) और उसे मोहलत न दे कि जिक्र और उसके मानी से गाफिल हो। हजरत ख्वाजा बहाउद्दीन कु० सि० जिक्र में साँस की बन्दिश और अदद (संखया) की रिआयत नहीं करते (महत्व नहीं देते) लेकिन 'वकूख कल्बी' को दोनों अर्थों में जो ऊपर बयान हुये जिक्र के समय जरूरी शुमार किया है इस वास्ते कि खुलासा (निचोड़, सारतत्व) जो मुत्तफक जिक्र से हैं (जो जिक्र में मिला हुआ है) बकूफ बल्बी में है (ईश्वर नाम के जप के लिये हृदय की निगरानी करते हुए उसी से नाम जप कराना तथा नाम जप के समय उसे ईश्वर की ओर एकाग्रता के साथ उन्मुख किये रहने से ही जप का सारतत्व अनुभव में आता है।)

बैत (फारसी में) :—मानिन्द मुर्गे बाशहाँ वर बेज़ए दिल पासवाँ,
कज बैज़ए दिल ज़ायदत मस्ती वस्ल व कहकहा।

तर्जुमा (उर्दू में)—मानिन्द मुर्ग बैज़ए दिल पर हो पासवाँ,
ता मस्ती और कहकहे वस्ल हो अयाँ।

(तू पक्षी की तरह दिल रूपी अण्डे की निगरानी कर, जिसमें कि मुझे उस दिल रूपी अण्डे से ईश्वर मिलन की मस्ती और आनन्द प्राप्त हो)।

कहा जाता है कि एक रोज़ हजरत ख्वाजा अब्दुल खालिक गुज्दवानी रहम० ने अपने फरजन्द (पुत्र) ख्वाजा औलिया कबीर कु० सि० का हाथ अपने हाथ में लेकर यह वसीयत फर्मायी :—

"ऐ फरजन्द ! तुझको वसीयत करता हूँ कि तक्वा (इन्द्रिय निग्रह) अपना शिआर (आदत, स्वभाव) बनाना और वजाइफ (मन्त्र जाप इत्यादि) और इबादत (आराधना) की मुलाजमत रखना (इनमें लगे

रहना)। अपने अहवाल (हालतों) का मराकबा (निरीक्षण) करते रहना। अल्लाह तआला से डरते रहना। अल्लाह तआला और रसूल सल्ल० का हक अदा करना। बालदैन (माता-पिता) के हक का (उनके प्रति तुम्हारे जो कर्तव्य हैं उनका) भी ध्यान रखना कि इन खसलतों (गुणों) से अल्लाह तआला तक मुशर्रफ (सम्मानित) होगा। अल्लाह तआला की फरमावरदारी (आज्ञापालत) करना कि वह तेरा महाफिमुज (रक्षक) रहे। कुरआन शरीफ चाहे याद हो या न याद हो, देख कर पढ़ना लाजिम रखना (आवश्यक समझना) कुरआन शरीफ को वतफक्कुर व तदब्बुर व हुज़न व गिर्यः (चिन्ता, दूरदर्शिता, शोक और रुदन के साथ) पढ़ना। तालिबे इल्म (ब्रह्म ज्ञान के जिज्ञासु) से एक कदम न हटना। इल्म फिक्ह (इस्लामी धर्मशास्त्र) और हदीस पढ़ना। जाहिल (अज्ञानी) सूफियों से परहेज करना, अवामुन्नास (जनसाधारण) से दूर रहना कि यह राह दीन (धर्म के मार्ग) के दुज्द (चोर) हैं और मुसलमानों के राहजन (लुटेरे) हैं। मुलाजमत सुन्नत व जमाअत करना (वह काम जो हजरत मुहम्सद सल्ल० ने किया हो, उसका तथा अपने सिलसिले के सत-गुरुजनों का अनुकरण करना)। अईयमा सलफ (अपने पुराने इमान अर्थात अपने सिलसिले के पुराने सन्तों) के मजहब पर रहना कि जो कुछ मुहदस है (नई बातें हैं) गुमराही हैं (पथभ्रष्ट करने वाली हैं)। जवानों और औरतों और अमीरों और अहलै विदहत (धर्म में नई बातें पैदा करने वालों) में सुहबत न करना कि तेरा दीन (धर्म) बर्बाद करेंगे। दो गिर्दः रोटी पर राजी रहना (एक प्रकार की गोल रोटी को गिर्दः कहते हैं)। अगर किसी से सुहबत (मेल-जोल) रखे तो फकीरों से रहना। खिल्वत(एकान्तवास) इख्तियार रखना। हलाल (ईमानदारी से अर्जित भोजन) खाना कि हलाल मिफताहे खैर है(कल्याण की कुंजी है हराम से बचना कि हक तआला से दूर हो जायेगा। इस पर रहना (इस प्रकार का जीवन व्यतीत करना)

कि कल्ह कयामत को दोजख (नर्क) में न जले । हलाल पहिनना कि जिससे हलावते इबादत (आराधना की मिठास) में हलावत (आनन्द रस) पाये। नमाज रात-दिन में बहुत गुजारना। जमाअत तर्क न करना (अपने सिलसिले के लोगों का सतसंग न त्यागना)। इमाम व मुअज्जिन (मस्जिद में अजान देने वाला) न होना। दस्तावेजों पर अपना नाम न लिखाना। काजियों की कचहरी में हाजिर न होना। लोगों की वसीयत के दर्मियान (बीच) न गुजरना आदमियों से इस तरह भागना जिस तरह शेर से भागते हैं। कोशिश करना कि गुमनाम रहे ताकि दीन खराब न हो। सफर करना कि नफ्स (मन) को जिल्लत (तिरस्कार) हो। खानकाह (आश्रम) में न बैठना और न खानकाह बनाना। किसी के बुराई करने से गमगीन (दुःखी) न होना और किसी के मदह (प्रशंसा करने से मगरूर न होना (मन में अभिमान न लाना)। लोगों से हुस्न सुलूक (अदब और शिष्टता) के साथ मुआमलह करना (व्यवहार) करना। तमाम खलायक पर (सभी लोगों पर) मरहमत (दया) करना। कहकहा मार कर न हँपना कि कहकहा गफलत (असावधानी) से होता है और दिल को मुर्दा करता है। जनाब रसूल अल्लाह सल्ल० ने फरमाया है कि जो कुछ मुझे मालूम है अगर तुमको मालूम हो जाय तो तुम थोड़ा हँसो और बहुत रोओ। अल्लाहतआला के अजाब (पापों के दण्ड से) बेडर (निर्भय) न होना। अल्लाहतआल की रहमत से मायूस (निराश) न होना। दरमियान (मध्य) खौफ व रिजा (प्रसन्नता) के जिन्दगानी बसर करना कि सालिकों (साधकों) का यही मुकाम होता है, कभी खौफ और कभी रिजा। ऐ फरजन्द ! अगर हो सके निकाह (विवाह) न करना कि दुनिया का तालिब हो जायेगा और दुनिया के तलब से बरबाद हो जायेगा और अगर नफ्स (मन) का मुश्ताक (अभिलाषी) हो तो मुजाहिदा (तपस्या, इन्द्रिय निग्रह) करना। हमेशा आखिरत (परलोक) का गम रखना। मौत को बहुत याद रखना। रियासत (सम्पत्ति) का

ख्वाहाँ (इच्छुक) न होना। जो तालिबे रियासत हो उसे सालिके तरीकत (अध्यात्म पथ का पथिक अथवा साधक) नहीं कहना चाहिए कि हमेशा रोजा रखे कि नफ्स की सरकोबी करता है (दमन करता है)। फक्र (साधुता) में पाकीजा (पवित्र) रहना। सबुकबार (निवृत्त) बादयानत (सत्य निष्ठा) बावरा (संयम के साथ), वापरहेज (संयम-नियम के साथ) रहना और अल्लाहतआला की राह में हलीम (सहनशील) और साबित कदम (दृढ़ निश्चय वाला) होना। मशायख (सतगुरुजनों की माल व तन व जान से खिदमत करना और उनके दिल का ख्याल रखना। किसी मशायख का इन्कार न करना (किसी सतगुरु की बात का उल्लंघन न करना), अलबत्ता जो अम्र (हुक्म) खिलाफ शराए (धर्मशास्त्र के विरुद्ध) हों। अगर मशायख का इन्कार करेगा, नजात नहीं होगी (मुक्ति नहीं मिलेगी)। लोगों से कुछ मत माँग। अपने वास्ते कुछ जमा न कर। हकतआला की जमानत पर एतमात (भरोसा) करना (इस बात पर पूर्ण विश्वास रखना कि ईश्वर ही हमारी सभी जरूरतों को पूरा करने वाला है)। अल्लाहतआला फरमाता है, 'ऐ बनीआदम (इन्सान)! मैं हर रोज तेरे वास्ते रोजी पहुँचाता हूँ तू अपने तईं तकलीफ मत दे।' तवक्कुल पर कदम रख (सारे साधनों का भरोसा त्याग कर सभी काम ईश्वर की मर्जी पर छोड़ दे)। अल्लाहतआला फरमाता है 'मईयतवक्कल अल्लाहे फहुव हस्बो' (यानी जिसने खुदातआला पर तवक्कुल किया हकतआला उसको काफी है)। यकीन कर कि रिज्क (रोजी, जीविका) किस्मत का है। जवान मर्द हो, जो कुछ अल्लाहतआला ने तुझको दिया है तू खल्क को दे। बुख्ल (कंजूसी) और हसद (ईर्ष्या) से बचते रहना क्योंकि बखील (कंजूस) और हासिद (ईर्ष्यालु) कयामत को दोजख में जायेंगे। अपना जाहिर (ऊपरी वेशभूषा तथा रहन-सहन आदि) आरास्ता मत कर (सुसज्जित न कर) कि आराइश (सजावट) जाहिरी बातिन की खराबी का सबब (कारण) होती है। अल्लाहतआला पर एतमाद

(भरोसा) करना सब खल्क से नाउम्मोद होना है। किसी से उम्मीद न न रखना। सच्ची बात कहना और (ऐसा करने में) खौफ न करना चाहिये। नफ्स के दर पै होना (नफ्स के पीछे पड़ना) कि उसे दुरुस्ती पर लाये। अपने नफ्स को अजीज (दोस्त) न रखना गैर जरूरी बातों से खामोश रहना। हमेशा खल्क को नसीहत करना। खाना-पीना कम करना। तातक्ते कि एहतियाज तआम न हो (भोजन की आवश्यकता न हो) कुछ न खाना। सिवाए जरूरत कलाम न करना (बात न करना) जब तक कि नींद का गल्बा न हो न सोना और फिर जल्द उठ बैठना। समा (संगीत) में बहुत न बैठना कि समा में निफाक (बिगाड़) पैदा होता है। बहुत समा दिल को मुर्दा करता है। समा (संगीत) का इन्कार न करना कि अनहाबे समा (संगीत प्रेमी) बहुत हैं। समा उस शख्स को रवा (उचित) है कि उसका दिल जिन्दा हो और नफ्स मुर्दा और जिसमें यह बात न हो उसको नमाज रोजा में मशगूल होना ऊला (श्रेयस्कर) है।

चाहिये कि तेरा दिल हमेशा फिक्रमन्द हो। तन नमाज में हो, अमल खालिस (निश्छल) हो, दुआ तेरी मुजाहिदा (इन्द्रिय-निग्रह), तेरे कपड़े पुराने, तेरे साथी दर्वेश (साधु), तेरा घर मस्जिद, तेरे माल-मसले की किताबें (आध्यात्मिक विषयों से सबंधित ग्रन्थ), तेरी आराइश (सजावट) तक दुनिया, दोस्त तेरा खुदा तआला। जब तक किसी शख्स में ये पाँच बातें न हों उससे बिरादरी (संबध) न करना। अव्वल फकीरी को अमीरी पर तरजीह दे, दूसरे इल्म को दुनियाँ के कामों पर तरजीह दे, तीसरे जिल्लत को इज्जत से बेहतर जाने। चौथे इल्म जाहिर व बातिन का बीना (देखने वाला) हो। पाँचवें मौत के वास्ते मुस्तैद हो।

ऐ फरजन्द ! दुनियाँ पर मगरूर (अहंकारी) न होना, सुबह या शाम कूच हो जायेगा (चला जायेगा)। चाहिये कि खिल्बत (एकान्तवास) में तनहा (अकेले) हो और खौफेखुदा से दिल शिकस्ता (टूटा हुआ) होकर अल्लाह तआला की बख्शिश में गर्क (लीन) हो जाये। दुनिया में

जिन्दगी इस तरह बसर करना गोया मुसाफिर है। दुनिया से इस तरह मुजर्रद (अकेला) हो जाना कि कयामत के दिन यह मालूम न हो कि तू किस गिरोह से था। ऐ फरजन्द ! जिस तरह मैंने अपने पीर से यह वसीयत सुनकर याद किया था और अमल किया था इस तरह तू भी याद करना और इस पर अमल करना। अल्लाह तआला तेरा दीन व दुनिया में हाफिज (रक्षक) होगा और जिस शख्स में ये बातें पाई जायें उसको पीर होना मुसल्लम (सर्वमान्य) है और जो शख्स उसकी इक्तिदा (अनुकरण) करेगा इन्शा अल्लाह तआला (ईश्वर इच्छा से) मंजिले मकसूद पर पहुँचेगा।"

किसी दर्वेश ने हजरत ख्वाजा अब्दुल खालिक गुज्दवानी रहम० से दरियाफ्त किया कि आलिम (ज्ञानी) की अकूवत (यातना) क्या है ? फरमाया, 'जिस वक्त मर्द आलिम (ज्ञानी पुरुष) तलब आखिरत (परलोक की इच्छा) से रहकर (उसको छोड़कर) दुनिया में मशगूल (तल्लीन) होता है, अल्लाह तआला उसको दुनिया में यह अकूवत (यातना) देता है कि हलावत (मिठास) व लज्जत व इताअत (खुदा का हुक्म मानना) इससे ले लेता है और वह परेशान होकर नेकियों से महरूम (वंचित) रह जाता है, उस वक्त उसको अकूवत आखिरत में मुब्तला करता है।

किसी ने आपसे दरियाफ्त किया कि 'नमाज में खुशूअ (विनम्रता) किसको कहते हैं ?' फरमाया कि नमाजी को इस कदर खौफ व खशोयतुल्लाह (अल्लाह से खौफ) हो कि अगर उसको तीर भी मारे तो उसको खबर न हो। फरमाया तीन काम हैं जो इनमें से एक भी दोस्त रखेगा दोजख (नर्क) उसके रगे गर्दन से भी नजदीक हो जायेगा। अव्वल उम्दा खाना, दोयम अमीरों की सुहबत में बैठना, तीसरे उम्दा पोशाक पहिनना क्योंकि गालिब यह है कि ये तीनों काम हवाऐ नफ्स (मन की इच्छा) से होते

हैं और जो शख्स ताबे (अधीन) हवाए नफ्स हुआ, उसकी जगह दोजख हैं।

आपने फरमाया कि एक रोज मैं अपने कोठे पर मश्गूल इबादत (ईश आराधना में तल्लीन) था। मेरे पड़ोस में एक औरत रहा करती थी। वह अपने खाविन्द (पति) से झगड़ रही थी और कह रही थी कि 'इस कदर मुद्दत गुजरी कि मैं तेरे घर में आई। भूख और प्यास में सब्र किया। गर्मी-सर्दी की तकलीफ बरदाश्त की। जो तूने दिया उस पर कनाअत की (संतोष) किया, ज्यादा का नाम न लिया, तेरी इज्जत आबरू की हिफाजत की। ये सब बातें सिर्फ इस वास्ते सहीं कि तू मेरा रहे और मैं तेरी रहूं। लेकिन अगर तेरा दूसरी तरफ ख्याल होगा तो मेरा हाथ और हजरत ख्वाजा अब्दुल खालिक रहम० का दामन (अंचल) होगा। जब तक मैं अपना इन्साफ न करा लूँगी, उनका दामन न छोड़ूँगी।'

हजरत ख्वाजा अब्दुल खालिक गुज्दवानी रहम० फरमाते हैं कि मेरे दिल पर उस औरत की बात का बहुत असर हुआ और ख्याल आया कि औरत मख्लूक (दुनिया) की मुहब्बत में इस कदर साबित कदम है, उस के वास्ते तमाम तकलीफें बरदाश्त कीं, यह बात सालिके राह (अध्यात्म पथ के साधक) को एक सबक होना चाहिये। चुनाँचे मैंने ख्याल किया तो कुरआन शरीफ में भी इसकी शहादत (प्रमाण) मिली :—'इन्नल्लाहा लायगफेरो अईयुश्रेका बेही व यग फेरो मादूना जालिक' (यानी अल्लाह तआला फरमाता है कि तमाम गुनाह तू लादे और शिर्क (अल्लाह के सिवा दूसरे की आराधना) न हो तो सब बख्श दूँगा और अगर सिर्फ मासिवा (अल्लाह के अलावा किसी) को बातिन में राह देगा तो हमारी रहमत से महरूम (वंचित) होगा।

एक रोज हजरत ख्वाजा अब्दुल खालिक की मौजूदगी में किसी दर्वेश के मुंह से निकला कि अगर मुझको बहिश्त व दोजख में मुख्तियर करें (दान के रूप में प्रदान किये जायें), तो मैं दोजख इख्तियार करूँ क्योंकि

मैंने कभी नफ्स की मुराद पूरी नहीं की है और बहिश्त मुराद (आशय) नफ्स से है और दोजख मुराद महबूब है, पस मुराद महबूब इख्तियार करूँ। यह बात सुनकर आपने फरमाया कि बन्दा (भक्त) को इख्तियार से क्या मतलब, जिस जगह भेजे वहाँ जाये, जिस जगह रखे वहाँ रहे। बन्दगी का तरीका तो यही है।

कहा जाता है कि एक रोज आप मय मजमए कसीर (बहुत से लोगों के साथ) बैठ हुये थे कि अचानक एक जवान जाहिदाना लिबास (तपस्वी के वस्त्र) पहिने हुये, जानमाज (नमाज पढ़ने की छोटी दरी) कन्धे पर डाले हुये आया और एक गोशे (कोने) में बैठ गया। आपने उसे देखा और पहिचाना। थोड़ी देर बाद वह जवान उठा और कहा 'हदीस शरीफ' आया है–'इत्तकि फिरासतल मोमिन फ इन्नहूयन जुरे व नूरिल्लाह 'मोमिन' (ईश्वरभक्त की फिरासत (चतुराई, प्रवीणता) से डरो इसलिये कि वह अल्लाह के नूर से देखता है) इसका क्या मतलब है। आपने फरमाया कि इसका यह मतलब है कि अपना जुन्नार (जनेऊ) तोड़ डाल और ईमान कुबूल कर (इस्लाम धर्म स्वीकार कर)। जवान ने कहा 'खुदा न करे, मेरे क्यों जुन्नार होता है ?' आपने खादिम को इशारा किया। खादिम ने उसके कपड़े उतार कर देखा तो जुन्नार मौजूद था। जवान ने तत्काल तौबा की और ईमान कुबूल किया।

कहा जाता है कि एक औरत मज्जूवा (फकीर स्त्री जो दुनिया वालों की निगाह में बावली हो, परन्तु ब्रह्मलीन हो) बरहना (नंगी) तमाम गली कूचे में फिरा करती थी। लोगों ने इससे कहा 'तू कपड़े क्यों नहीं पहती ?' उसने जबाव दिया 'शहर में मर्द कौन है जिससे पर्दा करूँ। एक रोज सुबह नानबाई की दूकान पर गयी। तन्दूर गर्म था। उसमें बैठी और कहा कि इसका मुँह बन्द करो कि अभी एक मर्द इस शहर में आया है इससे अपने तईं छिपाती हूँ। थोड़ी देर में तन्दूर का मुँह खोल दिया। दरियाफ्त किया कि क्या हाल है ? उसने कहा कपड़े लाओ कि

पहनूँ ।' चुनाँचे कपड़े लाये गये। वह तन्दूर से निकली। तन्दूर की आग से उसके एक बाल में भी नुकसान नहीं आया था। सब हैरान रह गये। तब लोगों को मालूम हुआ कि वह बलियः (स्त्री महात्मा है) उसने कपड़े पहिने। सब ने कसम देकर पूछा 'सच बता वह मर्द कौन है जिससे तू पर्दा करती है ?' कहा 'मेरे साथ आओ, मैं उनकी जियारत (दर्शनों) को जाती हूँ और हजरत ख्वाजा अब्दुल खालिक रहम० के पास गयी। वह उसी वक्त गुज्दवान से दाखिल बुखारा हुये थे। हजरत ख्वाजा रहम० उसे देखकर उसकी ताजीम (आदर) को उठे और आपस में कुछ बातें हुई कि वहो समझी या हजरत ख्वाजा रहम० समझे।

एक मरतबा हजरत ख्वाजा अब्दुल खालिक गुज्दवानी रहम० मय मुरीदों के हज बैतुल्लाह (काबा शरीफ) को जा रहे थे। रास्ते में सबको जोर की प्यास लगी। यकायक एक कुएँ पर पहुँचे, मगर वहाँ रस्सी व डोल न थी। निहायत मायूसी हुई। हजरत ख्वाजा रहम० ने फरमाया कि. मैं तो नमाज पढ़ता हूँ, तुम पानी पिओ और वुजू करो। मुरीदों ने जो यह सुना, समझ गये कि इसमें कुछ भेद है और कुछ पानी की उम्मीद पड़ी फिर कुएँ पर गये, देखा तो हजरत ख्वाजा रहम० की बरकत से कुआँ मुँह तक भर गया था। सबने पानी पिया और वुजू किया। एक शख्स ने एक बरतन पानी से भर लिया, फौरन पानो कुएँ की तह पर पहुँच गया। यह बात किसी ने हजरत ख्वाजा रहम० से अर्ज की। आपने फरमाया कि यारों ने अल्लाह तआला पर भरोसा न किया, वरना कयामत तक पानी तह पर न पहुँचता।

कहा जाता है कि जब हजरत ख्वाजा रहम० का अन्त समय निकट हुआ, मुरीद व फरजन्द वहाँ मौजूद थे। हजरत ने आँखें खोलकर फरमाया कि 'ऐ अजीजो ! खुशखबरी है कि अल्लाह तआला मुझसे राजी है और बुशारत (शुभ सूचना) रिजा (प्रसन्नता को) दी है, तमाम असहाब रोने लगे और अर्ज किया कि हमारे वास्ते भी दुआ फरमायें। आपने

फरमाया कि तुमको भी कुशारत हो कि अल्लाह तआला ने इल्हाम फरमाया है (ईश्वर की ओर से यह प्रेरणा हुई है) कि जो शख्स इस तर्रीके पर (नक्शबन्दिया सिलसिले को तालीम पर) इस्तिकामत रखेगा (अटल रहेगा) मैं उस पर रहमत करूँगा और उसको बख्शूँगा। कोशिश करो कि इस तरीके से अलहदा न हो और कायम रहो। थोड़ी देर के बाद एक आवाज आई 'ऐ इतमिनान रखने वाले नफ्स अपने खुदा की तरफ पलट जा वह तुझसे राजी है और तेरे लिये सवाब पसन्द किया है।'

असहाब ने जो ख्याल किया तो हजरत ख्वाजा रहम० का शरीरान्त हो गया। 'इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहे राजऊ म' (हम अल्लाह के लिये हैं और उसी की तरफ लौट जायेंगे)।

आपकी वफात बारह रबीउल अव्वल पाँच सौ पचहत्तर हिजरी में हुई। बाद वफात आपको किसी ने ख्वाब में देखा कि आप जेरअर्श (सब आसमानों के ऊपर के स्थान में) एक तख्त नूरानी पर बैठे हैं और मलाइकः (फरिश्ते, देवतागण) आपके गिर्द जमा हैं और अल्लाह तआला का सलाम पहुँचाते हैं।

हजरत ख्वाजा मुहम्मद आरिफ रेवगरी (रहम०)

हजरत ख्वाजा मुहम्मद आरिफ रेवगरी कु० सि० आजम (महान्) खुल्फा हजरत ख्वाजा अब्दुल खालिक गुज्दवानी से थे। आप हजरत ख्वाजा रहम० के जीवन काल में बराबर उनकी खिदमत में हाजिर रहे और फायदा बातिनी हासिल किया और हजरत की वफात के बाद मसनदे इर्शाद (सतगुरु की पदवी) पर बैठकर हिदायत खल्क (लोगों को अध्यात्म की शिक्षा देने) में लगे रहे। इल्म (सांसारिक विद्या) व इल्म जुहद व तक्वा (इन्द्रिय निग्रह, व आत्मसंयम की शिक्षा) व मताबअत (अनुकरण) सुन्नत में शान आली रखते थे। आपकी वफात गुर्रः सव्वाल छै सौ सोलह हिजरी में हुई। आपका मदफन रे गर है, जो शहर बुखारा से अट्ठारह मील दूर है।

हालात हजरत ख्वाजा महमूद अन्जीर फगनवी कु० सि०

हजरत ख्वाजा महमूद अन्जीर फगनवी (रहम०) हजरत ख्वाजा मुहम्मद आरिफ रेवगरी रहम० के अफजल (श्रेष्ठ) व अकमल (पूर्ण समर्थ) खलीफाओं में से थे। जब हजरत ख्वाजा आरिफ रहम० का आखिर वक्त आया तो आपने इनको अपना खलीफा बनाया और दावते खल्क (लोगों को रूहानियत की तालीम देने) की इजाजत दी। आपकी जन्मभूमि एक मौजा अन्जीर फगनी है जो बुखारा के नजदीक स्थित है। आप दाहकन्द में मुकीम रहे (निवास किया) और वहाँ तरबियत व हिदायत खल्क फरमाया करते थे। आपने एक मस्लहत (भेद, राज़) की वजह से तालिबान (जिज्ञासुओं) को जिक्र जहर तालीम किया। अव्वल शख्स कि जिन्होंने जिक्र जहर (जिक्र जहर-ईश्वर के उस नाम जप को कहते हैं जो वाणी द्वारा आवाज के साथ किया जाता है), शुरू किया हजरत ख्वाजा महमूद अन्जीर फगवी रहम० थे, वरना ख्वाजा अब्दुल खालिक गुज्दवानी रहम० व ख्वाजा रेवगरी रहम० जिक्र जहर नहीं करते थे। हजरत ख्वाजा कबीर कु० सि० ने जो हजरत ख्वाजा अब्दुल खालिक गुज्दवानी रहम० के फरजन्द व खलीफा थे हजरत ख्वाजा महमूद रहम० पर एतराज किया (आपत्ति की) कि अपने सिलसिले के पीराने कबार (पुराने सतगुरुजनों) के तरीका के खिलाफ जिक्र जहर क्यों इख्तियार किया। उन्होंने जवाब दिया कि मुझको हजरत पीर ने आखिर नफ्स में अन्तिम साँस (अथवा शरीरान्त के समय) फरमाया था कि जिक्र जहर करो। इस विषय पर नक्शबन्दिया सिलसिले के महत्वपूर्ण ग्रन्थ 'हालात हजरत मशायख नक्शबन्दिया मुजद्दिदिया' के लेखक महोदय ने इस ग्रन्थ में अपने विचार प्रकट करते हुये यह फरमाया कि 'मेरे ख्याल में यह बात आती है कि आखिर नफ्स में हज़रत ख्वाजा आरिफ रहम० का जिक्र जहर फरमाना ऐसा था जैसा दम-आखिर पर मरीज के पास बुलन्द आवाज के साथ जिक्र कलमा याद दिलाने के वास्ते कहा करते हैं। इससे

हजरत ख्वाजा महमूद रहम० इजाजत जिक्र जहर समझे। (पर इस मसले की अस्ल हकीकत क्या है, इसे अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।)

१क बार मौलाना हाफिजुद्दीन ने जो उस समय के बड़े विद्वानों में से थे और हजरत मुहम्मद पारसो रहम० के जद्दे आला (पितामह) से थे, इमामों और विद्वानों की बड़ी जमात (सभा) के बीच उस्तादुलउल्मा शमसुल अइम्मः हलवाई रहम० के इशारा (सकेत) पर हजरत ख्वाजा महमूद अन्जीर फगनवी कु० सि० से सवाल किया कि आप जिक्र जहर किस सबब (कारण) से कहते हैं। हजरत ख्वाजा ने फरमाया कि सोता हुआ जागे और गफलत से होशियार हो और रास्ते की तरफ (अध्यात्म मार्ग की ओर) रूख करे और शरीअत (धर्मशास्त्र) और तरीकत (अध्यात्म) के इस्तिकामत (दृढ़ता) पर आवे और हकीकत तौबा और इनाबत (बुरे कर्मों को त्यागकर ईश्वर की ओर उन्मुख होने) की तरफ रबत (इच्छा) करे जो अस्ल (सार तत्व) तमाम खैरात (कुशलताओं) और सआदत (कल्याण) की है। मौलाना हाफिजुद्दीन ने कहा कि नियत आपकी सही है और आपको यह शगल (जप का अभ्यास) हलाल (उचित) है। फिर मौलाना ने हजरत ख्वाजा महमूद रहम० से निवेदन किया कि जिक्र जहर की कुछ हद (सीमा) फरमाइये, जिससे हकीकत (सत्य) व मजाज (असत्य) में तथा आशनाँ (ईश्वर भक्त व बेगाना (दुनियादार जो ईश्वर से गाफिल हो) में पहिचान की जा सके। हजरत ख्वाजा रहम० ने फरमाया कि जिक्र जहर उस शख्स को मुसल्लम (सर्वमान्य) है जिसकी जबान दरोग (झूठ) व गीबत (चुगली) से पाक हो, हलक (कंठ) लुक्कमए शुबहा व हराम (अनुचित कमाई से प्राप्त भोजन) से साफ हो। उसका दिल रिया से (पाखण्ड) से मुजक्का (पवित्र) हो और उसका सर तवज्जेह मासिवा (ईश्वर के अलावा सभी के ध्यान) से खाली हो। हजरत ख्वाजा अली रामतैनी रहम० जो हजरत ख्वाजा महमूद अंजीर फगनवी कु० सि० के खलीफा थे, ने फरमाया है कि हजरत ख्वाजा महमूद रहम० के जमाने में एक दर्वेश

ने एक बार हजरत खिज्र अलैहिस्लाम को देखा। उनसे पूछा कि इस जमाने में मशायख (पीरों) में से कौन है, जिनकी इक्तिदा की जाये (पैरवी अथवा अनुकरण किया जाये)। उन्होंने फरमाया कि 'ख्वाजा महमूद अन्जीर फगनवी रहम०।' हजरत ख्वाजा अली रामतैनी रहम० के कुछ असहाब ने फरमाया है कि जिस दर्वेश ने हजरत खिज्र अलैहिस्सलाम को देखा वह खुद हजरत ख्वाजा अली रामतैनी रहम० थे, मगर जाहिर नहीं करते थे कि मैंने हजरत खिज्र अलैहिस्सलाम को देखा है।

कहते हैं एक रोज हजरत ख्वाजा अली रामतैनी रहम० हजरत ख्वाजा अन्जीर फगनवी रहम० के असहाब के साथ जिक्र (जप) में मशगूल थे। यकायक एक सफेद रंग का मुर्ग हवा में उड़ता हुआ उनके ऊपर से गुजरा और बेजबान फसीह (बहुत मंजी हुई सरल और सुन्दर भाषा में) कहा 'ऐ अली ! मरदाना हो और अपने काम में मशगूल रह' असहाब को इस मुर्ग को देखने और उस बात को सुनने से ऐसी कैफियत पैदा हुई कि सभी बेहोश हो गये। जब होश आया पूँछा कि यह क्या था जो हमने देखा और सुना। हजरत ख्वाजा रहम० ने फरमाया कि यह मुर्ग रूह (आत्मा) हजरत ख्वाजा महमूद अन्जीर फगनवी रहम० की है। अल्लाहतआला ने इनको कूवत दी है कि जिस मखलूक (प्राणी मात्र) में चाहे मुतशक्किल हो जावें (उसकी शक्ल इख्तियार कर लें)। इस वक्त हजरत ख्वाजा दहकान कल्वी रहम० का, जो हजरत ख्वाजा औलिया कबीर के अव्वल खलीफा हैं, वक्त आखिर था (अन्त समय निकट था)। उन्होंने दुआ की थी कि या अल्लाह मेरे आखिर वक्त में मेरी मदद को कोई अपना दोस्त भेजना कि उसकी बरकत से ईमान सलामत ले जाऊँ। चुनाँचे बइशारा रब्बानी (ईश्वर की ओर से संकेत मिलने पर) हजरत ख्वाजा महमूद अन्जीर फगनवी रहम० की रूह मुबारक हजरत दहकान कल्वी रहम० के वक्त आखिर पर पहुँची थी। चूँकि इनका खातिमा बखैर हो गया, अब वापस जा रहे हैं। चूँकि मेरे हाल पर उनकी बड़ी मुहब्बत व इनायत थी, इस राह से गुजरते हुये तसरीफ ले गये।

हजरत ख्वाजा अन्जीर फगनवी रहम० का इन्तकाल सात सौ पन्द्रह हिजरी में हुआ। आपका मदफन मौजा अन्जीर फगनी में है।

हालात हजरत ख्वाजा अली रामतैनी रहमतुल्लाहु अलैहि

हजरत ख्वाजा अली रामतैनी रहमतुल्लाहु हजरत ख्वाजा अन्जीर फगनवी रहमतुल्लाहु के खलीफा हैं। जिस वक्त हजरत ख्वाजा अन्जीर फगनवी रहमतुल्लाहु का वक्त आखिर नजदीक पहुँचा आपने हजरत ख्वाजा अली रामतैनी को अपनी खिलाफत सुपुर्द की (उत्तराधिकारी बनाया) और अपने सभी असहाव को उनकी पैरवी के लिए हुक्म फरमाया। आप खिज्र अलैहिस्सलाम के सुहबतदार थे और उन्हीं के इशारे से हजरत ख्वाजा महमूद अन्जीर फगनवी रहमतुल्लाहु के मुरीद हुए थे। आपका मस्कन (रहने का स्थान) कस्बा रामतीन में था लेकिन कुछ समय के फेर से शहर बावरू में आ गये और वहाँ मुद्दत तक इर्शाद खल्क (लोगों को अध्यात्म की शिक्षा देने) में मशगूल रहे। मगर वहाँ भी चैन न मिला, अतः शहर ख्वारजम आगये और वहाँ भी रियाजत व मुजाहिदा (साधना के अभ्यास व तपस्या) में मशगूल रहे। इस जगह भी आपके बहुत से मुरीद व मुहिब्ब (प्रेमी) जमा हो गये। अहले तरीकत (अध्यात्म पथ के पथिक) आपको हजरत 'अजीजाँ' कहते थे क्योंकि आप अपने लिए फरमाया करते 'अजीजाँ' इस तरह कहते हैं।

हजरत उल्माउद्दौला समनानी रहमतुल्लाहु आपके हम अस्र (समकालीन) थे। उन्होंने किसी दर्वेश की जबानी हजरत अजीजाँ रहमतुल्लाहु को कहलाकर भेजा कि 'आप और मैं दोनों मेहमानों की खिदमत करते हैं। आप खाने में तकल्लुफ नहीं करते (तकलीफ नहीं उठाते) और मैं तकल्लुफ करता हूँ (यानी अच्छा-अच्छा भोजन मेहमानों को खिलाता हूँ)। मगर आपको सब तारीफ करते हैं और मेरी शियाकत करते हैं, इसका क्या सबब है ? हजरत अजीजाँ रहमतुल्लाहु ने जवाब दिया कि खिदमत करने वाले और (खिदमत करके) एहसान जताने

वाले बहुत हैं और खिदमत करनेवाले व (खिदमत करने का सुअवसर मिलने के लिए) एहसानमन्द होने वाले बहुत कम हैं। पस कोशिश करो कि खिदमती एहसान मानने वाले बनो ताकि तुमसे कोई गिला न करे (उलाहना न दे)। दूसरा मसला यह है कि 'मैंने सुना है कि आपकी तरबियत हजरत खिज्र अलैहिस्सलाम ने की है। यह क्या बात है ? आपने जवाब दिया कि जो अल्लाह तआला के आशिक होते हैं खिज्र अलैहिस्सलाम उनके आशिक होते हैं। तीसरी बात यह है कि हमने सुना है कि आप जिक्र जहर करते हैं इसकी क्या वजह है ? आपने जवाब दिया कि मैंने सुना है कि 'आप जिक्र खुफिया करते हैं, आपका भी जिक्र जहर हो गया।

हजरत अजीजाँ रहमतुल्लाहु नस्साजी (कपड़े बुनने का काम) किया करते थे। आपसे किसी ने दरियाफ्त किया 'ईमान किसे कहते हैं ?' आपने अपने पेशे के मुनासिब फरमाया 'कुन्दन व पैवस्तन' यानी तोड़ना और जोड़ना यानी खल्क (दुनिया) से तोड़ना और खालिक (अल्लाह तआला) से जोड़ना। आपने फरमाया अगर कोई हजरत अब्दुल खालिक गुज्दवानी रहमतुल्लाहु० के फरजिन्दों में से एक भी होता, मन्सूर हरगिज सूली पर न चढ़ाया जाता यानी अगर हजरत ख्वाजा अब्दुल खालिक गुज्दवानी रहमतुल्लाहु० के फरजिन्दा ने मानवी (शिष्यों) में से एक भी जिन्दा होता मन्सूर को तरबियत (आध्यात्मिक तालीम) के साथ उस मुकाम से जबकि उसने कहा था, 'अनल हक' (अह्म ब्रह्मास्मि) आगे बढ़ा देता।

फरमाया कि जो एक जगह बैठे और खल्क को खुदा की तरफ बुलाये, चाहिये कि वह जानवर पालने वाले की तरह हो कि हर एक जानवर का पोटा और हर जानवर की खुराक उसके मुआफिक दे। मुर्शिद (सतगुरु) भी चाहिये कि तालिबान व सादिकान की तरबियत उनके इस्तेदाद (क्षमता) के मुआफिक करे। फरमाया ऐसी जबान से दुआ करो जिसने गुनाह न किया हो (गुनाह न हुआ हो) यानी अल्लाह

तआला के दोस्तों के सामने आजजी करो, ताकि वह तुम्हारे वास्ते दुआ करे। फरमाया कि अमल (अभ्यास) करना चाहिए और नाकर्दः उसे जानना (न किया हुआ उसे जानना) और अपने आपको तक्सीर (त्रुटि, भूल) करने वाला देखना और फिर अमल शुरू करना। फरमाया दो वक्त अपने को खूब निगाह रखो। एक बात करते वक्त और दूसरे कोई चीज खाने के वक्त।

फरमाया कि अगर किसी आदमी के पास बैठे और अल्लाह तआला को भूले उसको शैतान समझ, यद्यपि आदमी की सूरत हो, बल्कि इबलीस आदमी बदतर है इबलीस जिन्न से कि वह पोशीदा वसवसा (बुरा ख्याल) डालता है और इबलीस आदमी जाहिर तौर से। इसी सिलसिले में फरमाया है—

बाहर कि न शिस्तो व नशुद जमा दिलत,
वज तू न रमीद जहमते आबा गिलत,
अज सुहबत वै अगर तबर्रा न कुनी,
हरगिज न कुनद रूह अजीजाँ बहलत।

तर्जुमा—जिसके साथ बैठकर हुआ जमा न दिल,
और तुझसे गई न जहमत आबो गिल,
सुहबत से तू उसके गर तबर्रा न करे,
बख्शे न तुझे रूह अजीजाँ यक तिल।

आपने फरमाया यार नेक (अच्छा दोस्त) कार नेक (अच्छा काम) से बेहतर है क्योंकि मुमकिन है कि कार नेक से तुझको उजुब व पिन्दार हो (तुझमें अहंकार व अभिमान पैदा हो), लेकिन यार नेक राह नेक की सलाह देगा। फरमाया कि मुझसे बाज दूर वाले नजदीक और नजदीक वाले दूर हैं। दूर वाले नजदीक वह हैं जो बसूरत जाहिर दूर हैं और दिलोजान से हाजिर हैं और नजदीक वाले वह दूर हैं जो बसूरत जाहिर मेरे पास हैं लेकिन दिलोजान से मेरे साथ नहीं है यानी दिलोजान

से कारोबार दुनिया, हवा व हबस (लिप्सा, लोभ व तृष्णा) में मशगूल है। फरमाया मुझको दूर इन नजदीक से बेहतर है। नजदीकान दूर से जानो दिल की नजदीकी का एतबार (विश्वास) है, न आबोगिल की निकटता का विश्वास नहीं है।

अगर दर यमनी कि बामनी पेशे मनी,
दर पेशमनी कि बेमनी दर यमनी।

(अगर तुम यमन देश में भी हो, लेकिन तुम मेरे साथ हो तो गोया तुम मेरे पास बैठे हो और अगर मेर पास बैठे हो लेकिन दिल तुम्हारा मेर पास नहीं है तो ऐसा है जैसे यमन में बैठे हो।)

किसी दर्वेश ने हजरत अजीजाँ रहमतुल्लाहु से दरियाफ्त किया कि 'बालिग शरीअत' किसको कहते हैं और 'बालिग तरीकत' कौन है? आपने फरमाया कि 'बालिग शरीअत' वह है कि जिससे मनी (अहंकार) निकले और 'बालिग तरीकत' वह है जो मनो से बाहर आये यानी उसकी खुदी जाती रहे। उस दर्वेश ने यह सुनकर सर जमीन पर रख दिया। हजरत अजीजाँ रहमतुल्लाहु ने फरमाया 'सर के जमीन पर रखने की हाजत (इच्छा) नहीं बल्कि जो कुछ सर में है यानी नखवत, गुरूर व पिन्दार (अहंकार व घमंड) वह जमीन पर रखो।' फरमाया कि अगर बन्दा को खिताब पहुँचे (यदि ईश्वर की ओर से यह वरदान दिया जाये) कि 'ऐ बन्दा! हमसे कोई हाजत चाह (अपनी कोई अभिलाषा पूर्ण होने के लिए इच्छा कर) शर्त बन्दगी यह है कि बन्दा खुदा के सिवाय खुदा से कुछ न चाहे। फरमाया अगर किसी के पास कुछ न हो मगर उसके दिल में ख्वाहिश हो उसको तज्रीद मानवी (आन्तरिक निस्पृहता) नहीं है और किसा शख्स के पास सब कुछ हो मगर उसके दिल में उस सबसे मुहब्बत न हो उसको तज्रीद मानवी हासिल है। हजरत सुलेमान अलैहिस्सलाम का कैसा वसीय (वृहद) मुल्क था, मगर आपने थैलियाँ सी-सीकर बसर औकात की (जीविका चलाई)। हजरत शैख अबू सईद

अबुल खैर रहमतुल्लाहु बहुत ही बड़े मालदार थे और बड़ी शान शौकत जाहिरी से रहते थे। इसी प्रकार बहुत से अम्बिया और औलिया गुजरे हैं, जिनके पास धन-दौलत बहुत थी, मगर उनके दिल में उस धन-दौलत से तनिक भी लगाव व लिप्सा न थी, अतः उन्हें तज्रीद मानवी (आन्तरिक निस्पृहता) हासिल थी।

कहा जाता है कि किसी शख्स ने अजरुए इन्कार कहा (मान्यता न देते हुए आलोचना की) कि हजरत अजीजाँ रहमतुल्लाहु बाजारी हैं, (यानी सूत की खरीद फरोख्त के वास्ते आप बाजार जाया करते थे।) हजरत अजीजाँ रहमतुल्लाहु ने सुनकर फरमाया कि यार अजीजाँ रहमतुल्लाहु जारी (विलाप) चाहता है तो क्यों न बाजारी हूँ, यानी अल्लाह तआला की दरगाह में जारी व तजर्रो (गिड़गिड़ाहट, मिन्नता) व सोज (जलन) व नियाज (प्रार्थना) व मस्कनत (नम्रता) चाहिए। फरमाया कि सालिकों (साधकों) को बड़ी रियाजत और मुजाहिदा करना चाहिए ताकि मरतबा और मुकाम को पहुँचे और वह यह है कि सालिक इसमें साई हो (प्रयत्नशील हो) कि अपने खुल्क (अच्छे आचरण) और खिदमत से किसी साहिबे दिल (मुर्शिद, सतगुरु) के दिल में जगह करे। हरगाह (हर समय) कि इस गिरोह का दिल नजरे हक (ईश्वर की कृपा दृष्टि) का नजूलगाह (उतरने की जगह) है उसको भी उस नजर से हिस्सा पहुँचेगा।

कहा जाता है कि एक बार एक मेहमान हजरत अजीजाँ रहमतुल्लाहु के घर आया उस वक्त आपके घर में कोई चीज मौजूद न थी। एकाएक एक गुलाम जो आपका खास मुरीद था और रोटियाँ बेचा करता था, एक टोकरी रोटियों की भरी लाया और आपके सामने पेश की। उस वक्त आप बहुत खुश हुये और उससे कहा कि तूने इस वक्त बहुत पसन्दीदा (मनोवांछित) खिदमत की, जो तेरी मुराद (इच्छा) हो माँग। उसने कहा कि मैं चाहता हूँ कि मैं आप-सा हो जाऊँ। आपने फरमाया कि यह निहायत सख्त बात है और तू उसका मुतहम्मिल नहीं हो सकता (उसको

बर्दाश्त नहीं कर सकता)। उसने कहा कि मेरा तो यही मकसूद (लक्ष्य) है, इसके सिवा कुछ नहीं। आपने फरमाया 'इसी तरफ सही' और उसका हाथ पकड़ कर एक गोशा (घर के कोने या एकान्त स्थान) में ले गये और उसको तवज्जोह दी। जब आप बाहर तशरीफ लाये तो वह बावर्ची जाहिर व बातिन में बिल्कुल आपके मुसाबेह (सदृश्य) था। मगर उसके बाद चालीस रोज जिंदा रहा। उस बांझ को ज्यादा न उठा सका और मर गया।

कहा जाता है कि एक बार बइशारा गैबी (ईश्वरीय प्रेरणा से) हजरत अजीजाँ रहमतुल्लाहु बुखारा से ख्वारजम आये और शहर के दरवाजे के बाहर रुक करके अपने एक दरवेश को वहाँ के बादशाह के पास भेजा कि फकीर तुम्हारे शहर के दरवाजे पर आया है। अगर तुम्हारी मसलहत (भलाई) के खिलाफ न हो तो शहर में आ जावे, वरना इस जगह से वापस हो जाये और दरवेश से कह दिया कि अगर बादशाह इजाजत दे दे तो इजाजतनामा मुहरी-दस्तखती बादशाह लेते आना। जब वह दरवेश बादशाह के पास गया और हजरत का मंशा (उद्देश्य) बयान किया, तो बादशाहमय दरबारियों के हँसने लगा और कहने लगा कि यह भी कैसे नादान और सादा तबियत के आदमी होते हैं और मजाक के तौर पर एक इजाजतनामा मुहरी व दस्तखती बादशाह ने उस दरवेश को दे दिया। वह दरवेश उसे लेकर हजरत के पास आया और तब हजरत अजीजाँ रहम० शहर के अन्दर दाखिल हुये और एकान्त जगह में बैठकर बतरीका हजरत ख्वाजगान (नक्शबन्दिया सिलसिले के सत्गुरुजनों के तरीका तालीम के अनुसार) लोगों को रूहानी तालीम देने में मशगूल हुये। आप सुबह के वक्त मजदूरखाना (वह जगह जहाँ मजदूर इकट्ठा होते हैं) जाते और एक दो मजदूर ले आते और उनसे फरमाते कि वुजू करो और नमाज पढ़ो और अस्र के वक्त तक (सूर्यास्त से पहले के समय तक) हमारे पास बैठो और जिक्र (जप) करो। इसके बाद उनको मजदूरी देकर बिदा करते। वह लोग बहुत खुशी से यह काम

करते और चूँकि एक दिन इस तरह इनकी सुहबत रहती, अगले दिन इस सुहबत के असर से और हजरत के तसर्रुफ से आये बगैर चैन न पड़ती। आखिरकार धीरे-धीरे इस कदर लोगों की भीड़ वहाँ बढ़ी कि इस शहर के बादशाह को खबर हुई कि कोई शख्स इस शहर में आया हुआ है, तमाम लोग उसके मुरीद होते जा रहे हैं। अंदेशा होता है कि कहीं यह लोग बढ़ न जायें और मुल्क में कुछ अशान्ति व झगड़ा न पैदा हो जाये। अतः बादशाह को इस बात का संदेह हो गया और उसने आपको शहर से निकलने का हुक्म दे दिया। हजरत अजीजाँ रहमतुल्लाहु ने अपने उस दरवेश को बादशाह के पास भेजा और कहलाया कि हम तो तुम्हारी इजाजत से ठहरे हुए हैं। अगर वादा खिलाफी हो तो हम चले जायें। बादशाह यह सुनकर बहुत शर्मिंदा हुआ और आपकी दूरबीनी (दूर-दर्शिता) का बहुत मोतकिद (श्रद्धा और विश्वास रखने वाला) हुआ और मय अपने साथियों के आकर आपका मुरीद हुआ।

कहा जाता है कि हजरत सैय्यद अता रहमतुल्लाहु जो इसी नक्श-बन्दिया सिलसिले के एक बुजुर्ग हुये हैं और जो हजरत अजीजाँ रहम-तुल्लाहु के हमअस्र थे (समकालीन थे) कभी-कभी हजरत अजीजाँ रहमतुल्लाहु के सत्संग में जाया करते थे। उन्हें इब्तदा (आरम्भ) में हजरत अजीजाँ रहमतुल्लाहु से कुछ द्वेष व मतभेद रहता था। एकबार उनसे हजरत अजीजाँ रहम० को निस्बत एक बेअदबी (अशिष्टता) ऐसी हुई कि एकाएक उसी समय चाक के जंगल से तुर्कों का एक गिरोह चढ़ आया और हजरत सैय्यद अता के एक बेटे को कैद कर ले गया। हजरत सैय्यद अता बहुत ही परेशान हुये और यह समझ गये कि यह हादसा (दुघटना) उस बेअदबी की वजह से पेश आया। बहुत ही मजबूर हुये और दावत का खाना तैयार किया और हजरत अजीजाँ रहम० से उस दावत में सम्मिलित होने के लिये बड़ी इंकसारी और आजजी के साथ निवेदन किया। हजरत अजीजाँ रहमतुल्लाहु ने उनके निवेदन को स्वीकार किया और उनके घर तशरीफ ले गये। दावत में बहुत अकाबिर

हालात हजरत ख्वाजा मुहम्मद बाबा समासी (रहम०)

हजरत ख्वाजा मुहम्मद बाबा समासी हजरत अजीजाँ रहमतुल्लाहु के अकमल (पूर्ण समर्थ एवं पारंगत) खलीफाओं में थे। कहा जाता है कि जब हजरत अजीजाँ रहमतुल्लाहु का अंत समय निकट आया, आपने अपने मुरीदों में से हजरत बाबा समासी रहमतुल्लाहु को अपना खलीफा मुकर्रर किया और अपने सभी मुरीदों को इनकी मुलाजमत (सेवा) और मुताबअत (आज्ञा पालन) का हुक्म दिया। इस्तिग्राक (तन्मयता) और बेखुदी (आत्म विस्मृति) इनमें बहुत अधिक थी। समासी गाँव में आपका एक बगीचा था। कभी-कभी वहाँ अंगूर के पेड़ों की डालियाँ आरी से काटा करते थे। डाल काटते-काटते आपको बेखुदी (आत्म विस्मृति) हो जाती और आरी हाथ से छूट जाती।

कहा जाता है कि जब आप सफर में कौशक हिन्दुवान से गुजरते, फरमाते कि इस खाक (मिट्टी) से एक मर्द (महापुरुष) की बू (सुगंध) आती है और वह वक्त नजदीक है जब कौशक हिन्दुवान कस् आरिफान हो (सन्तों के रहने का स्थान हो), यहाँ तक कि एक मरतबा जब इसी जगह आप फिर तशरीफ ले गये, फरमाया मालूम होता है कि वह मर्द पैदा हो गया। उस वक्त हजरत ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शबन्द (रहम०) को पैदा हुए तीन दिन गुजरे थे, अतः हजरत ख्वाजा के जद्दे अम्जद (पूज्य पितामह) आपको लेकर हजरत बाबा समासी (रहम०) की सेवा में उपस्थित हुए। हजरत बाबा समासी रहम० ने देखकर फरमाया कि यह हमारा फरजंद (आध्यात्मिक पुत्र) है और इसको मैंने अपनी फरजंदी में कुबूल किया। अपने मुरीदों की तरफ मुखातिब होकर फरमाया, यह वही मर्द है जिसकी खुशबू मुझे आया करती थी।' आपने अपने खलीफा हजरत सैय्यद अमीर कुलाल (रहमतुल्लाहु) से, जो उस समय वहाँ

(प्रतिष्ठित लोग) और मुशाहिद वक्त (उस समय के बड़े अनुभवी लोग) मौजूद थे और हजरत अजीजाँ उस समय बड़े ही प्रसन्नचित्त व भावावेश में थे। खादिम नमक लाया और दस्तरख्वान बिछाया। आपने अपने लिये फरमाया कि अली (हजरत अजीजाँ रहमतुल्लाहु) नमक को नहीं छुएगा और न हाथ खाने की तरफ बढ़ायेगा जब तक कि सैय्यदअता का लड़का इस दस्तरख्वान पर मौजूद न होगा। यह फरमाकर आप थोड़ी देर खामोश रहे। वहाँ उपस्थित सभी लोग आपको इस बात की सत्यता प्रकट होने की प्रतीक्षा करने लगे। एकाएक इसी बीच सैय्यदअता का लड़का घर के दरवाजे से अन्दर आया। एक शोरगुल मजलिस में उठा। लोग हैरान और अचम्भित हो गये। फिर उस लड़के से पूरी कैफियत उसके आने की पूछी। उसने कहा कि मैं इससे ज्यादा कुछ नहीं जानता कि इस वक्त तुर्कों की कैद में था और मुझे कैदी बनाकर अपने मुल्क लिये जा रहे थे। अब मैं देखता हूँ कि आप लोगों के सामने हाजिर हूँ। उस मजलिस में उपस्थित सभी लोगों को यकीन हुआ कि यह तसरुफ हजरत अजीजाँ रहमतुल्लाहु का है। सबने आपके कदमों पर सर रखा और बैअत की (उनसे दीक्षा ली)।

आपके दो फरजंद (पुत्र) थे। एक ख्वाजा मुहम्मद, दूसरे ख्वाजा इब्राहीम। जब हजरत की वफात (शरीरांत) करीब हुई तो छोटे फरजंद ख्वाजा इब्राहीम को अपना जाँनशीन (उत्तराधिकारी) मुकर्रर किया। लोगों के दिलों में ख्याल आया कि बड़े फरजंद के होते हुये छोटे को आपने जानशीन क्यों बनाया ? आपने फरमाया कि बड़े की उम्र मेरे बाद जल्द खत्म हो जायेगी। चुनांचे आपके शारीरांत के उन्नीस रोज बाद ही आपके बड़े फरजंद का शरीरांत हो गया।

हजरत अजीजाँ रहमतुल्लाहु का इंतकाल रोज दो शम्बह अट्ठाइस (२८) जीकाद ७२१ हिजरी को एक सौ तेईस बरस की उम्र में हुआ। आपकी मजार शरीफ ख्वारिज्म में है।

मौजूद थे, फरमाया कि मेरे इस फरजंद की तरबियत (आध्यात्मिक शिक्षा) में दिरेग (संकोच, ढिलाई) न करना, वरना मैं तुझे क्षमा नहीं करूँगा। हजरत अमीर कुलाल रहमतुल्लाहु ने फरमाया कि अगर मैं इसमें ढिलाई करूँ तो मर्द नहीं हूँ।

हजरत ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शबन्द (रहमतुल्लाहु) ने एक जगह अपने हालात में लिखा है कि 'एक बार हजरत बाबा समासी रहमतुल्लाहु ने खाना खाकर एक कुर्सनान (रोटी) मुझको दी और फरमाया कि इसको अपने पास रख ले। मैं उसे लेकर आपके साथ सफर के लिए रवाना हुआ। रास्ते में अगर कुछ फुतूर व खतूर (आत्मिक विकार व बुरे ख्याल) दिल में आते, फरमाते बातिन को निगाह रखो। धीरे-धीरे चलकर आप एक अपने खास मुरीद के मकान पर रुके। वह मुरीद आपके पधारने पर बहुत ही खुश हुआ, लेकिन कुछ परेशान नजर आया। कभी घर में आता और कभी बाहर जाता। हजरत बाबा समासी (रहमतुल्लाहु) ने दरियाफ्त किया कि 'सच बता, तुझको क्या परेशानी है ?' उसने अर्ज किया कि दूध मौजूद है, मगर रोटी नहीं है। बहुत कोशिश की लेकिन रोटी नहीं मिल सकी। हजरत बाबा समासी (रहमतुल्लाहु) ने मुझसे मुतवज्जह होकर फरमाया कि वह रोटी लाओ कि उसका दिल तस्कीन (संतोष) पाये और मुझसे फरमाया कि 'फरजंद ! देखा, आखिर वह रोटी काम आई।'

हजरत ख्वाजा मुहम्मद बाबा समासी का शरीरान्त ७५५ हिजरी में हुआ।

हालात हजरत सैय्यद अमीर कुलाल (रहम०)

हजरत सैय्यद अमीर कुलाल रहमतुल्लाहु अजल (श्रेष्ठतम) खुलफा हजरत मुहम्मद बाबा समासो (रहमतुल्लाहु) से हैं। आप सैय्यद सहीहुल नस्ब थे (आप बिलकुल सही तौर पर सैय्यद खानदान के थे)। पेशा कुलाली (मिट्टी के बरतन बनाने का काम) किया करते थे। आपकी पूज्य माता जी फरमाया करती थीं कि जिस वक्त अमीर कुलाल (रहमतुल्लाहु) मेरे पेट में थे उस वक्त अगर मैं शुबहा का लुक्मा (ऐसा भोजन जो हलाल की कमाई का न हो और खुदा की याद में बनाया गया हो) खा लेती थी तो मुझको पेट का दर्द शुरू हो जाता, और जब तक कि मैं कै न करती थी, आराम नहीं मिलता था। जब चन्द मरतबे ऐसी घटना घटित हुई, मैं समझ गई कि इसकी वजह यह बच्चा है जो मेरे पेट में है। इसके बाद फिर मैंने खाने में एहतियात (सावधानी) रखी।

जवानी की उम्र में हजरत अमीर कुलाल (रहमतुल्लाहु) को कुश्ती लड़ने का बहुत शौक था। और अखाड़े में आप के गिर्द पहलवानों और कुश्ती देखने वालों की भीड़ जमा रहती थी। एक दिन उस अखाड़े में एक शख्स की खातिर (दिल) में गुजरा कि यह क्या बात है, सैय्यदजादा शरीफ (सैय्यद खानदान की श्रेष्ठ औलाद) कुश्ती लड़ें और जोर आजमाई और बदअती (बुरे) लोगों का तरीका इख्तियार करें। इसी दरमियान में उसे नींद आ गई और ख्वाब में देखा कि कयामत कायम है (प्रलय आ गई है) और वह शख्स एक जगह सीना तलक मिट्टी और धूल में उतर गया है और उसका कुछ बस नहीं चलता। अचानक देखा कि हजरत अमीर कुलाल (रहमतुल्लाहु) जाहिर हुए और दोनों उसकी बाँहें पकड़ीं और आसानी के साथ उसे बाहर खींच लिया। जब उस शख्स की नींद खुली, हजरत अमीर कुलाल रहमतुल्लाहु ने उसे अखाड़े में उस

शख्स की तरफ रुख करके कहा कि हम जोर आजमाई ऐसे रोज के लिए करते हैं।

एक बार हजरत ख्वाजा मुहम्मद बाबा समासी (रहमतुल्लाहु) उस अखाड़े के किनारे से गुजरे। थोड़ी देर वहाँ कुश्ती देखने के लिए खड़े हो गये। आपके साथ जो मुरीद वहाँ मौजूद थे उनमें से कुछ लोगों के दिल में यह ख्याल आया कि क्या वजह है कि हजरत बाबा समासी (रहमतुल्लाहु) इन बदअती (बुरे) लोगों की तरफ मुतवज्जह हुए।' हजरत बाबा समासी (रहमतुल्लाहु) ने इस खतरा (बुरे विचार) से वाकिफ होकर फरमाया कि 'इस अखाड़े में एक मर्द। उसकी सुहबत में लोग दर्जा कमाल को पहुँचेंगे। उस पर हमारी नजर है। हम चाहते हैं कि उसको शिकार करें (उसको अपने प्रभाव में लें)। इस मौके पर हजरत अमीर कुलाल (रहमतुल्लाहु) की नजर आप पर पड़ी और आप की कशिश (आकर्षण) ने उनको बेकरार (बेचैन) कर दिया। जब हजरत बाबा समासी (रहमतुल्लाहु) वहाँ से आगे बढ़े हजरत अमीर कुलाल (रहमतुल्लाहु) फौरन अखाड़े को छोड़कर आपके पीछे हो लिए। जब हजरत बाबा समासी रहमतुल्लाहु अपने घर पहुँचे आप हजरत अमीर कुलाल (रहमतुल्लाहु) को घर लाये और तरीका बतलाया। अपनी फरजंदी में कुबूल किया (अपना शिष्य बनाया)। इसके बाद फिर किसी ने हजरत अमीर कुलाल (रहमतुल्लाहु) को अखाड़े और बाजार में नहीं देखा। बीस बरस आप अनिवार्य रूप से हजरत बाबा समासी (रहमतुल्लाहु) की खिदमत में जाते रहे और हफ्ता में दो बार दोशम्बः (सोमवार) और जुमेरात (वृहस्पतिवार) को सोखारी से (जो आपकी जन्मभूमि और निवास स्थान था) समासी को हजरत बाबा समासी (रहमतुल्लाहु) की खिदमत में हाजिर होते और उनकी सुहबत के बाद फिर चले आते। उस मुद्दत में बतरीक ख्वाजगान इश्तगाल करते रहे (तरीकए ख्वाज ख्वाजगान के अभ्यास में लगे रहे। हजरत ख्वाजा नक्शबंद (रहमतुल्लाहु) के पहले यह नक्शबंदिया सिलसिला 'सिलसिला ख्वाजगान' कहलाता था।

आपके अभ्यास में इतनी पोशीदगी थी कि आप के हाल से किसी को इत्तला न होती कि आप कोई शग्ल या तरीका इख्तियार किये हैं। हजरत बाबा समासी की तरबियत में आप तकमील और इर्शाद को पहुँचे (पूर्ण समर्थ सतगुरु को पदवी प्राप्त की)। आपके चार फरजंद (लड़के) और चार खलीफा थे। यह प्रसिद्ध है कि आपके मुरीदों की संख्या ११४ थी, जिनमें कुछ के नाम एक प्रसिद्ध ग्रन्थ 'मुकामाते अमीर' में दिये हुए हैं।

आपका शरीरांत सुबह की नमाज के वक्त बरोज पंजशम्बा (वृहस्पति वार) बतारीख आठवीं जमादिउलअव्वल ७१२ हिजरी में हुआ। आपका मजार शरीफ कस्बा सोखार में है।

हालात हजरत ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शबंद कुद्स सिर्रहू :-

हजरत ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शबंद (कु० सि०) को बहस्ब जाहिर (प्रकट रूप में) हजरत अमीर कुलाल (रहमतुल्लाहु) से निस्बत हासिल है और वास्तव में आप हजरत ख्वाजा अब्दुल खालिक गुज्दवानी (रहमतुल्लाहु) के उवैसी हैं और उनकी महान पवित्र आत्मा से तर्बियत पाई (रुहानियत की तालिम हासिल की)। आपका शुभ जन्म माह मुहर्रम सात सौ आठ हिजरी को हुआ। बचपन से ही आपकी पेशानी मुबारक (ललाट) से अनवारे करामात (चमत्कारों के प्रकाश पुंज) जाहिर थे। आपकी पूज्य माता जो से यह सुना गया है कि एक बार उन्होंने फरमाया कि 'मेरा बेटा चार साल का था तब कहा कि यह मेरी लम्बे सींग वालो गाय फराख पेशानी का (चौड़े ललाट का) बछड़ा देगी। कुछ महीने बाद वैसा ही बछड़ा दिया। हजरत ख्वाजा मुहम्मद बाबा समासी रहमतुल्लाहु) ने आपके जन्म से पहले ही आपकी उलूशान (उच्चतम श्रेष्ठता एवं महानता) की बुशारत दी थी (शुभ सूचना दी थी) और आप जब कस्बहिन्दुवान से गुजरते, फरमाया करते कि वह वक्त नजदीक

है जब कस्र हिन्दुवान कस्र आरिफान (संतों का निवास स्थान) हो। इस जगह से एक मर्द (महापुरुष) की बू (सुगंध) आती है। चुनाँचे आपके जन्म के तीन दिन बाद आपके पूज्य दादा जी (पितामह) आपको हजरत ख्वाजा मुहम्मद बाबा समासी (कु० सि०) के पास ले गये। आपने इनको अपनी फरजंदी में कुबूल फरमाया (अध्यात्मिक पुत्र के रूप में स्वीकार किया) और हजरत अमीर कुलाल (रहमतुल्लाहु) को जो आपके खलीफा थे, सुपुर्द करके फरमाया कि मैं तुमको मुआफ नहीं करूँगा अगर तुमने इस फरजंद की तरबियत में दरेग (ढिलाई) किया। चुनाँचे इसका जिक्र हजरत ख्वाजा मुहम्मद बाबा समासी (रहमतुल्लाहु) के हालात में भी आ चुका है।

कहा जाता है कि इस रूहानियत के रास्ते में आपके रुजू (आकर्षित) होने का यह सबब (कारण) हुआ कि शुरू में आपको किसी से रगबत (आकर्षण, मुहब्बत) थी। एक दिन एकांत में बैठे हुये आप उससे बड़ी तल्लीनता के साथ उसकी ओर एकाग्रचित्त होकर बातें कर रहे थे। यकायक आपके कान में आवाज आई कि ऐ बहाउद्दीन ! क्या अभी वह वक्त नहीं आया कि तू सबकी तरफ से मुँह फेर कर हमारी दरगाह (दरबार) में नुतवज्जह हो।' यह सुनकर हजरत ख्वाजा (रहमतुल्लाहु) मुतगय्यिर और बेकरार हो गये (एकदम हालत बदल गई और बेचैन हो गये) और वहाँ से निकल आये। उसी वक्त अँधेरी रात में एक नहर पर गये, कपड़े धोये, गुस्ल इनाबत किया (अपने पापों के लिये प्रायश्चित करने हेतु स्नान किया) और बकमाल शिकस्तगी (अत्यन्त व्यथित हृदय से) दो रकअत नमाज पढ़ी। आप फरमाया करते थे कि मुद्दत गुजर गई इस आर्जू (हार्दिक उत्कंठा) में हूँ कि फिर वही नमाज पढ़ूँ मगर मुयस्सर (सुलभ) नहीं होती। फरमाया कि इब्तदाए जज्बा में (आत्मिक भावावेश के आरम्भकाल में) इल्हाम हुआ (दैवी प्रेरणा के रूप में आपसे ईश्वर की ओर से यह प्रश्न हुआ) कि तूने जो इस रास्ते में कदम रखा है किस तरह रखा है ? मैंने कहा कि जो कुछ मैं चाहूँ वह हो। खताब

आया (परोक्ष से उत्तर मिला) कि 'नहीं जो कुछ हम कहें वह करना चाहिये। मैंने कहा कि 'मुझमें इतनी ताकत नहीं है। जो कुछ मैं कहूँ अगर वह हो तो इस रास्ते में कदम रखता हूँ, वरना नहीं।' दो मरतबा इसी तरह सवाल जवाब हुये। इसके बाद मुझसे (अल्लाहतआला ने) लापरवाही की (यानी मुझे मेरे हाल पर छोड़ दिया कि जैसा मैं चाहूँ वैसा रहूँ)। पन्द्रह रोज तक मेरा हाल निहायत खराब रहा और मैं खुश्क रहा और जब नाउम्मीदी हो गई, खताब पहुँचा (ईश्वर की ओर से संदेश पहुँचा) 'अच्छा जिस तरह तुम चाहते हो रहो।'

फरमाया कि एक मरतबा मुझको सख्त कब्ज हुआ (रूहानी कब्ज यानी पूजा व आराधना में मन न लगना और दिल उचाट सा रहना) और छः महीने तक रहा। मुझको यकीन हो गया कि दौलत बातिनी (आध्यात्मिक सम्पदा) मेरी किस्मत में नहीं है। लाचार होकर उठ खड़ा हुआ कि दुनिया का कोई काम इख्तियार करूँ। रास्ते में एक मस्जिद के दरवाजे पर यह शेर लिखा हुआ नजर पड़ा :—

ऐ दोस्त बेया कि मा सुराएम,
बेगाना मशौ कि आशनाएम।

तर्जुमा—ऐ दोस्त मेरे पास आजा कि हम तेरे दोस्त हैं,
हमसे गैरियत न बरतो कि हम तुम्हारे आशनाँ हैं।

इस शेर को पढ़ते ही मेरी तमाम पुरानी हालत वापस आ गई और मैं मस्जिद के एक कोने में आकर बैठ गया। फरमाया कि जिस जमाने में मुझे जज्बात, गलबात व बेकरारी बहुत ज्यादा रहती थी, रातों को बुखारा के शहर के गिर्द मजारों पर घूमा करता था। एक रात को कुछ मजारों के पास पहुँचा। जिस मजार पर जाता वहाँ देखता कि चिराग तेल से भरा हुआ है और टिमटिमा रहा है। अगरबत्ती को जरा भी हिला दिया जाये तो खूब रोशन हो जाय। पहली रात को हजरत ख्वाजा मुहम्मद बासे (रहमतुल्लाहु) के मजार पर पहुँचा। वहाँ से इशारा हुआ

कि ख्वाजा मुहम्मद अज़फरनुई (कु० सि०) की मजार पर जाना चाहिए। जब वहाँ पहुँचा, दो तलवारें मेरे कमर में बाँधीं और मुझको घोड़े पर सवार कर दिया और घोड़े की बाग ख्वाजा मज्द आखन (रहमतुल्लाहु) के मजार की तरफ फेर दी। रात के आखिर में उनके मजार पर पहुँचा। वहाँ भी चिराग व बत्ती को उसी अंदाज में पाया। मैंने बत्ती को सरका दिया और मुतबज्जह किब्ला (काबाशरीफ) हो बैठा। मुझको गैबत (बेहोशी) हो गई। इस गैबत में क्या देखता हूँ कि किबला की जानिब (दिशा) में दीवाल शक हो गई (फट गई)। एक तख्त पर एक बुजुर्ग आदमी को बैठा देखा। उनके आगे सब्ज (हरा) परदा पड़ा हुआ था। इस तख्त के चारों ओर एक जमाअत (मंडली) हाजिर हुई, जिसमें से मैं हजरत ख्वाजा मुहम्मद बाबा समासी (रहम०) को पहचानता था। मुझको मालूम हुआ कि यह गुजरे हुये लोगों में से हैं। दिन में ख्याल आया कि यह मालूम करना चाहिये कि यह बुजुर्ग कौन हैं और यह जमाअत किनकी है? इसी समय में एक शख्त उनमें से उठा और बतलाया कि यह बुजुर्ग ख्वाजा अब्दुल खालिक गुज्दवानी (रहमतुल्लाहु) हैं और यह जमाअत (मंडली) उनके खलीफाओं की है और सबके नाम बताये और इशारे से कहा कि यह अहमद सिद्दीक (रहमतुल्लाहु) हैं और यह ख्वाजा औलिया कबीर (रहमतुल्लाहु) और यह ख्वाजा रेवगरी (रहमतुल्लाहु) और यह ख्वाजा अंजीर फगनबी (रहमतुल्लाहु) और यह ख्वाजा रामतैनी (कु० सि०) और हजरत ख्वाजा बाबा समासी (कु० सि०) को बताया तो यह भी कहा कि इन बुजुर्ग को तुमने जिंदगी की हालत में भी देखा है और यह तुम्हारे पीर हैं और तुमको कुलाह (टोपी) अता फरमायी है। 'मैंने कहा—"हाँ, उनको तो मैं पहचानता हूँ लेकिन कुलाह का किस्सा बहुत दिनों का है, वह मुझको याद नहीं कि किस जगह रक्खी है।" फरमाया 'कुलाह तुम्हारे घर में है और तुमको करामत (चमत्कारिक शक्ति) दी है कि जो बला (मुसीबत) हो वह तुम्हारी बरकत से दफा हो (दूर हो)। फिर इस

जमाअत ने कहा कि हजरत ख्वाजा अब्दुल खालिक गुज्दवानी (रहम०) तुमसे कुछ फरमायेंगे कि तरीके सुलूक के लिये ये बातें बहुत जरूरी हैं। ध्यान करके सुनना।' मैंने कहा कि मैं चाहता हूँ कि हजरत ख्वाजा अब्दुल खालिक गुज्दवानी रहम० को सलाम करूँ। चुनाँचे वह सब्ज परदा उठाया और मैंने हजरत ख्वाजा (रहम०) को सलाम किया। आपने चंद कलमा फरमाये (कुछ उपदेश दिये), जो सुलूक (साधना के पथ) के आरम्भ, बीच और अंत में बहुत ही कारामद (लाभदायक) हैं।

उन उपदेशों में से एक यह फरमाया कि 'तूने चिराग तेल से भरे हुए देखे थे, वह बुशारत (शुभ सूचना) तुम्हारी इस्तेदाद और काबलियत (पात्रता औ योग्यता) की थी, लेकिन फतीला (बत्ती) इस्तेदाद को हरकत देना चाहिए कि असरार पोशीदा जाहिर हो (साधना से उत्पन्न गुप्त प्रभाव प्रकट हो) और अपनी पात्रता और सामर्थ्य के अनुसार अमल (अभ्यास करना चाहिए, कि मकसूद हासिल हो (लक्ष्य प्राप्त हो) फिर अपने इस हुक्म की पैरवी के लिए अत्यधिक जोर देते हुए फरमाया कि इस अमल को बअजोमत (पूरे संकल्प के साथ) और बसुन्नत करना चाहिये (अपने सतगुरु द्वारा बतलाये हुए तरीका के मुताबिक अभ्यास करना चाहिए)। रुख्सत (विश्राम, आराम) व बिदअत (धर्म में कोई नई बात पैदा करने) से परहेज करना चाहिए व हजरत मुहम्मद (सल्ल०) की हदीसों की तलाश व उनपर अमल करना चाहिए तथा अपने सिलसिले के बुजुर्गों की अलामतें (लक्षण) अपनी जिन्दगी में उतारना चाहिए।

उपदेश समाप्त होने पर हजरत ख्वाजा अब्दुल खालिक गुज्दवानी (रहम०) के खलीफाओं ने फरमाया कि इस वाकै (घटना) की सच्चाई व हकीकत का शाहिद (गवाह) यह है कि तुम मौलाना शमशुद्दीन इकनवी (रहम०) के पास जाओ और उनसे कहो कि फलाँ तुर्क ने जो सक्का (भिश्ती) पर दावा किया है वह सच है और तुम भिश्ती की तरफदारी करते हो (जो उचित नहीं है)। इस भिश्ती ने एक औरत से

जिना किया है (सम्भोग किया है) और उसके हमल रह गया है। बच्चा को साकित किया (गर्भपात किया) और वह बच्चा फलाँ जगह दफन कर दिया है। बाद इसके तीन अदद मवीज (मुनक्के) लेकर नसफ को जाना। जब जंगल में एक बड़े आदमी से मुलाकात हो, तुझको गरम रोटी देगा, वह ले लेना और उससे कुछ बात न करना, आगे चलना एक कारवाँ (यात्री दल) मिलेगा। फिर इस जंगल में एक सवार मिलेगा। उसको नसीहत करना, वह तेरे हाथ पर तौबा करेगा और कुलाह अजीजाँ (रहम०) जो तुम्हारे पास है उसको हजरत अमीर कुलाल (रहम०) के पास ले जाना और फिर इस जमाअत ने मुझको होशियार कर दिया। सुबह को मैं जल्दी से अपने घर को गया और वहाँ अपने घरवालों से कुलाह (टोपी) का किस्सा दरियाफ्त किया। उन लोगों ने कहा कि वह तो बहुत दिनों से फलाँ जगह रक्खी है। उसको देखकर मेरी और ही कैफियत हो गई और मैं बहुत रोया।

सुबह की नमाज मौलाना शमशुद्दीन इकनवी (रहम०) की मस्जिद में पढ़ी। उनसे तमाम किस्सा बयान किया और भिश्ती की एक औरत से जिना की घटना बतलाई। इस पर वह भिश्ती बहुत नादिम (लज्जित) हुआ। मौलाना ने मेरे हाल पर बहुत इल्ताफ फरमाया (बड़ी कृपा की) और कहा कि 'तुमको दर्द तलब है। अगर इस जगह कयाम करो, मैं तुम्हारी तरबियत करूँ (आध्यात्मिक शिक्षा दूँ)। मैंने अर्ज किया कि मैं औरों का फरजंद हूँ (शिष्य) हूँ, ऐसा न हो कि आप मेरे मुँह में पिस्तान (स्तन) दें और मैं उसको न चूसूँ (आप मुझे रुहानियत की तालीम दें और मैं उसे ग्रहण न करूँ)। मौलाना थोड़ी देर चुप रहे और मुझको जाने की इजाजत दी। पहले ही रोज दो आदमियों से कमर मजबूत बँधवाकर रवाना हुआ। जंगल में जब पहुँचा तो एक बूढ़े आदमी से मुलाकात हुई। उसने मुझको एक रोटी दी। वह रोटी मैंने ले ली और उससे कोई बात न की। जब आगे बढ़ा एक कारवाँ मिला। उन्होंने मुझसे पूछा कि 'तुम कहाँ से आते हो?' मैंने कहा कि 'इकना से।'

उन्होंने दरियाफ्त किया कि किस वक्त चले थे ? मैंने कहा कि तुलूअ आफताब के वक्त (सूर्योदय के समय) और वह वक्त चाश्त का था (सूर्योदय से एक पहर का समय)। उनको सख्त ताज्जुब हुआ कि हम अव्वल शब (रात) वहाँ से चले थे। जब आगे बढ़ा तो एक सवार मिला। उसने कहा 'तुम कौन हो ? तुम्हारी सूरत देखकर डर मालूम होता है।' मैंने कहा कि मैं वह हूँ कि जिसके हाथ पर तू तौबा करेगा।' चुनाँचे वह सवार तत्काल घोड़े से उतर पड़ा और तौबा की ओर अपने साथ बहुत शराब लिये था, उसको फेंक दिया। उस जगह से मैं हजरत अमीर कुलाल (रहम०) की खिदमत में हाजिर हुआ और कुलाह अजीजाँ (रहम०) पेश की। हजरत अमीर कुलाल (रहम०) ने तवज्जोह के बाद फरमाया कि 'इस मामले में ऐसा इशारा है कि इसको दो परदों में रखो।' मैंने कुबूल किया। इसके बाद हजरत अमीर कुलाल (रहम०) ने मुझको बतरीक 'नफीइस्बात खुफिया[1]' मशगूल किया और मुद्दत तक मैंने वर्जिश की (अभ्यास किया) लेकिन बमूजिब इशारा हजरत ख्वाजा अब्दुल खालिक गुज्दवानी (रहम०) जिक्र जहर न किया। बल्कि जिस वक्त हजरत अमीर कुलाल (रहम०) के असहाब जिक्र जहर शुरू करते मैं हल्के से उठ आता और यह बात मेरे पीर भाइयों को बुरी मालूम होती। उन्होंने चन्द मरतबा शिकायत की कि 'हजरत ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शबन्द (रहम०) आपकी इताअत (आज्ञा पालन) और इंकियाद (अधीनता स्वीकार) नहीं करते। इस पर भी हजरत अमीर कुलाल (रहम०) की तवज्जोह व इल्तफात (दया कृपा) मेरे हाल पर दिन प्रति दिन अत्यधिक होती जाती थी और मैं भी हर प्रकार से उनके अदब का बहुत ही ध्यान रखता था और सरे तस्लीम (पूर्ण समर्पित भावनाओं

१—कलमा 'लाइलाह इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह' को दिल से मौन रूप में कहना 'नफी इस्बात खुफिया' कहलाता है। इस कलमा का अर्थ होता है—'कोई नहीं है खुदा सिवा उस एक खुदा के और हजरत मुहम्मद (सल्ल०) उसके पैगम्बर हैं।'

से) उनकी आज्ञा और निर्देश के अनुसार चलता था। यहाँ तक कि एक दफा हजरत अमीर कुलाल (रहम०) के सब छोटे और बड़े असहाब जो लगभग पाँच सौ की संख्या में थे मुकाम सोखारी में मस्जिद की इमारत और कुछ दीगर मकानात बनाने के लिए जमा हुये थे और हर शख्स एक काम में लगा हुआ था। जब मिट्टी का काम खत्म हुआ, सब असहाब हजरत अमीर कुलाल (रहम०) के सामने हाजिर हुए। उस मजमे में हजरत अमीर कुलाल (रहम०) ने चुगुलखोरों की तरफ रुख किया और फरमाया कि "तुम मेरे फरजन्द बहाउद्दीन की शिकायत करते हो और गलती पर हो कि उसके कुछ अहवाल को गैर मुनासिब (अनुचित) समझते हो तुम लोगों ने उसे पहचाना नहीं। हमेशा नजरें खास हक सुबहाना (ईश्वर की विशेष कृपा दृष्टि) उस पर है और बन्दगाने सुबहाना (ईश्वर भक्तों) की नजर हक सुबहाना की नजर के ताबे (अधीन) है। उसकी तरफ मजीद इल्तफात (विशेष दया, कृपा) करने का मुझे इख्तियार (अधिकार) है। उसी समय हजरत ख्वाजा को जो ईंटे उठाने में मशगूल थे, बुलाया और उस मजलिस में उनकी तरफ मुतवज्जह होकर फरमाया, 'फरजन्द बहाउद्दीन ! तुम्हारे हक में हजरत ख्वाजा मुहम्मद बाबा समासी रहम० ने मुझे जो हुक्म दिया था उसे बजा लाया (उस आज्ञा का पालन किया) उन्होंने कहा था कि, जिस तरह तेरे हक में हम तरबियत बजा लाये (रुहानियत की तालीम दी) उसी तरह तू फरजन्द बहाउद्दीन के हक में बजा लाना और कोताही न करना।' ऐसा ही मैंने किया और अपने सीने की तरफ इशारा करते हुए फरमाया कि तुम्हारे लिए पिस्तान (छाती) खुश्क की और तुम्हारे रुहानियत का परिन्द (पक्षी) बशरीयत (इन्सानियत) के अण्डे से बाहर निकल आया, मगर मुर्ग हिम्मत (साहसी पक्षी) तुम्हारा बुलन्द परवाज वाकै हुआ (ऊँचा उड़ने वाला हुआ है)। अब इजाजत है जहाँ बू (सुगन्ध अर्थात रुहानियत की सुगन्ध) तुम्हारे दिमाग में पहुँचे तुर्क या ताजीक (तुर्किस्तान या अरब के अलावा किसी दूसरे मुल्क के सन्तों) से तलब करो (रुहा-

नियत की तालीम हासिल करो)।' हजरत ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शबन्द (रहम०) ने फरमाया है कि हजरत अमीर कुलाल (रहम०) की जुबान से यह कलमा निकला (बात निकली) वही हमारे रूहानियत की राह में मुब्तला (तल्लीन) होने का सबब हुआ, इस वास्ते कि अगर हम उसी तरह हजरत ख्वाजा अमीर कुलाल (रहम०) की मुताबअत में लगे रहते बला से दूर और सलामत से करीब होते (सुरक्षित रहते)।

इसी समय मैंने एक रोज ख्वाब में देखा कि हजरत हकीम अनाँ (कु०सि०) ने जो बड़े प्रतिष्ठित मशायख तुर्क से थे मेरी किसी दर्वेश से सिफारिश की है। सुबह को जब मैं जगा तो उस दर्वेश की शक्ल मुझे खूब याद थी। यह ख्वाब मैंने अपनी पूज्य दादी जी से जो बहुत बड़ी साधक थीं बयान किया। उन्होंने फरमाया कि तुमको मशायख (तुर्क , (तुर्किस्तान के सन्तों) से हिस्सा पहुँचेगा (रूहानियत की तालीम हासिल होगी)। मैं हमेशा उस दर्वेश की तलाश में रहा करता था। एक रोज बुखारा के बाजार में मुलाकात हुई। मैंने उसको पहिचान लिया। उसका नाम खलील था, लेकिन उस वक्त उससे सुहबत न हुई (सतसंग न हुआ)। जब मैं अपने मुकाम पर वापस आया तो एक कासिद (सन्देश-वाहक) ने मुझसे कहा कि 'खलील' दर्वेश तुझको बुलाते हैं। यह सुनकर मैं फौरन कुछ हदिया (भेंट) लेकर बशौक तमाम उनकी खिदमत में हाजिर हुआ और चाहता था कि अपना ख्वाब उनसे बयान करूँ। उन्होंने फरमाया कि 'जो कुछ तुम्हारे दिल में है, वह मुझ पर अयाँ (प्रकट) है। कुछ कहने की जरूरत नहीं।' इससे मेरे दिल में एक और मेल मुहब्बत पैदा हो गयी ओर उनकी सुहबत में अजीब-अजीब अहवाल मुशाहिदा हुए (विचित्र आध्यात्मिक अनुभूतियाँ हुईं।)

संयोग से थोड़े दिनों के बाद वह दर्वेश चले गये और बहुत दिनों के बाद मुझको खबर हुई कि वह मावराउलनहर के बादशाह हो गये हैं। कुछ दिनों के बाद मुझे एक मुकदमे के सिलसिले में उनकी मदद की जरूरत

हुई। वह मुकदमा खत्म होने के बाद उन्होंने मुझको मुलाजमत (नौकरी) और खिदमद के वास्ते फरमाया। मैं सहर्ष उनकी सेवा में रहने लगा। उन दर्वेश की बादशाह की हालत में भी मैंने बड़े-बड़े रूहानी हालात देखे। मेरे ऊपर निहायत मेहरबानी फरमाते थे। आदाबे खिदमत (सेवा के शिष्टाचार) की तालीम देते, चुनाँचे वह तालीम मुझको इस रास्ते में बहुत काम आई। मैं छः साल उनकी खिदमत में रहा। मजलिसे आम (सामान्य लोगों की मजलिस) में इनके आदाबे सल्तनत (राजकीय कार्यों से सम्बन्धित बादशाही हुक्म) बजा लाता और तनहाई में महरम खास (खास दोस्त) था और अपने दरबार के खास लोगों के सामने अक्सर फरमाते थे कि जो शख्स महज (केवल) रजाए अल्लाह (ईश्वर की खुशी) के वास्ते खिदमत करता है वह खल्क (दुनिया) में बुजुर्ग (श्रेष्ठ) होता है। मुझको मालूम होता था कि इस फरमाने से क्या मतलब है और किसको कहते हैं। इसके बाद मैं सात साल तक हजरत ख्वाजा मुहम्मद आरिफ (रहम०) की खिदमत में रहा, जो हजरत सैय्यद अमीर बुलाल (रहम०) के खलीफा थे और मुझसे कई साल पहले उनसे तरबियत पा चुके थे और साहबे तसर्रुफ व करामत थे (ऋद्धियों-सिद्धियों से युक्त पूर्ण समर्थ सन्त थे।)

आपने फरमाया कि 'जब मैं हज से वापस तूस पहुँचा तो शाह मुअजुद्दीन हुसैनी बादशाह हेरात का कासिद (पत्रवाहक) खत लेकर मेरे पास आया जिसमें बादशाह ने लिखा था कि मैं चाहता हूँ कि आपके दर्शन करूँ लेकिन हाजिर होना निहायत मुश्किल है। इस पर मैं इस कथन के अनुसार 'व अमस्साइला फ्लातनहर व इजारएताली तालबन फकुन लहू खादमाँ' (लेकिन फकीर को न झिड़को व जब किसी को मेरा तालिब देखो तो उसके खादिम बन जाओ) हेरात की तरफ रवाना हुआ। जब बादशाह के पास पहुँचा और फकीरों का सतसंग शुरू हुआ, बादशाह ने मुझसे दरियाफ्त किया कि 'क्या आपको मशीखत (गुरु पदवी) आबा और अजदाद (बाप-दादा) से बतरीक अरस (विरासत में , पहुँचा है ?

मैंने कहा कि 'नहीं, जज्बए इनायत इलाही मुझ पर पहुँचा (ईश्वर कृपा मुझ पर हुई) और बिला किसी रियाजत (साधना व अभ्यास के कुबूल फरमाया (स्वीकार किया) और बाइशारा हक्कानी (ईश्वरीय संकेत से) हजरत ख्वाजा अब्दुल खालिक गुज्दवानी (रहम०) की रूहानी (पवित्र आत्मा) से तरबियत पायी। उनके यहाँ इन चीजों में से कुछ न था (साधना और ईश्वर आराधना का ऐसा तरीका नहीं था जैसा आपके यहाँ है।)" बादशाह ने दरियाफ्त किया कि 'उनके यहाँ क्या है ' मैंने कहा कि 'जाहिर बाखल्क व बातिन बाहक'। बादशाह ने कहा कि 'क्या ऐसा हो जाता है ?' मैंने कहा कि 'हाँ हो जाता है। अल्लाह फरमाता है' 'ऐसे लोग जिनको तिजारत सौदागरी और बेचना अल्लाह की याद से गाफिल नहीं करता।' मैंने कहा कि हमारे ख्वाजगान का वसूल है (सिद्धान्त है) 'खिलवत दर अन्जुमन, व सफर दरवतन, व होश दरदम व नजरबरकदम। इसके अलावा जो हुजूर जौक जिक्र जहर व समाअ (संगीत) में होता है उसको कयाम नहीं (उसमें स्थिरता नहीं) और अगर वकूफेकल्बी पर मुदावमत हो (हमेशा इसका अभ्यास किया जाये) तो जज्बा पैदा होता है और जज्बा से काम तमाम हो जाता है (लक्ष्य पूरा हो जाता है)। हकीकत जिक्र खुफिया 'वकूफ कल्बी' से हासिल होती है और फिर ऐसा होता है कि दिल को खबर नहीं होती कि जिक्र में मशगूल है क्योंकि बुजुर्गों का फरमाना है कि 'इन्न अलेमल कल्बो इन्नहू जाकुरन फालम इन्नहू गाफिल' (यानी अगर मालूम हो कल्ब को कि वह जाकिर है, पस जान कि तहकीक कि वह गाफिल है) व इस आयत के बारे में कि 'दिल में अपने खुदा की याद गिड़गिड़ा के और डर के करो' हसन रहमतुल्लाहु अलैहि ने कहा है कि अपनी याद इलाही को अपने नफ्स पर जाहिर न करो कि तुम बदले के खास्तगार बनो। बाज बुजुर्गों का कौलहे (कथन है) कि 'जबान से यादे खुदा करना बेहूदा गोई है और दिल से अल्लाह की याद करना वस्वसा (भ्रम) है। आपने यह बैत पढ़ी :—

दिल रा गुफ्तम बयादे ऊशाद कुनम गुफ्त,
चूँमन हमा ऊ शुदम केरा याद कुनम।

(मैंने दिल से कहा कि अल्लाह की याद से दिल को खुश करूँ। दिल ने जवाब दिया कि जब मैं खुद खुदा हो गया तब किसको याद करूँ।)

कहा जाता है जब हजरत ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शबन्द (रहम०) बादशाह की इस्तदुआ (निवेदन) से हेरात में बादशाही मकान में दाखिल हुए, खादिमों, अमीर व वजीर जिस पर नजर डालते सब बेताब (व्याकुल) हो जाते। दूसरी मरतबा जब हजरत हज जाने लगे तो सिर्फ मौलाना जैनुद्दीन (कु०सि०) से मुलाकात के लिये हेरात गये और तीन रोज तक उनसे सतसंग हुआ। एक रोज बाद नमाज सुबह मौलाना ने हजरत ख्वाजा (रहम०) से कहा 'ऐ ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शबन्द (रहम०)! कृपा कर तवज्जोह फरमायें।' हजरत ख्वाजा रहम० ने विनम्रतापूर्वक बड़ी आजीजी व इन्कसारी के साथ फरमाया 'आमदेम तानक्श बरेम' शायद उसी रोज से हजरत ख्वाजा का लकब (उपाधि) नक्शबन्द हुआ। इस हज से वापस आकर बाकी उम्र आप बुखारा में ही रहे और कहीं नहीं गये।

आपने फरमाया कि 'एक रोज मैं हजरत अमीर कुलाल (रहम०) की खिदमत में जा रहा था। रास्ते में हजरत खिज्र अलैहिस्सलाम एक सबार के जामे में (वेशभूषा में) नजर आये। हाथ में एक बड़ी लकड़ी भेंड़ चराने वालों की तरह लिये हुए और कुलाह (टोपी) पहिने हुए मेरे पास आये और तुर्की जबान में कहा 'तुमने घोड़े को देखा है?' और उस लकड़ी से मुझको मारा। मैंने उनसे कुछ न कहा और उन्होंने चन्द मरतबा मेरा रास्ता घेर कर मुझको मुशब्बश (परेशान) किया। मैंने कहा कि मैं तुमको जानता हूँ कि तुम खिज्र अलैहिस्सलाम हो।' अव्वल

मुसाफिर खाना तक वह मेरे पीछे आये और कहा "ठहर जाओ, कुछ देर पास-पास बैठें।" मैंने कुछ ध्यान न दिया। जब हजरत सैय्यद अमीर कुलाल (रहम०) के पास पहुँचा, देखते ही फरमाया कि 'राह में हजरत खिज्र अलैहिस्सलाम से मुलाकात हुई, तुमने कुछ ध्यान न दिया।' मैंने कहा कि 'जी हाँ, चूँकि आपकी तरफ मुतबज्जेह था, उनकी तरफ इल्तफात न किया (ध्यान न दिया)।' आपने फरमाया कि हमारे ख्वाजगान की निस्बत चार वजह से है, एक हजरत ख्वाजा खिज्र अलेहिस्सलाम, दूसरे जुन्नैद बगदादी (रहम०), तीसरे हजरत बायजीद बस्तामी (रहम०) से कि जो इनको हजरत अली (रजि०) के जरिये से पहुँची है और चौथे जो उनको हजरत अबूबक्र सिद्दीक (रजि०) से मिली है। और इसी वजह से इनकी निस्बत को नमक (लावण्य, रौनक) मशायख कहते हैं। फरमाया हमारा रोजा नफी मासिवा अल्लाह से (ईश्वर के अलावा और किसी को न मानना) और नमाज 'कअन्नका तराअहू' (जैसे कि तुम अल्लाह को देख रहे हो) है। यह शेर भी आपकी ही है :—

ता खेतो दीदअम ऐ शमाँ तराज
ने कार कुनम न रोजा दारम न नमाज
चूँ बा तू बुअम मजाजे मन जुम्ला नमाज
चूँ बे तू बुअम नमाजे मन जुम्ला नमाज

(ऐ महबूब हकीकी (खुदा) जब से मैंने तेरे चेहरे को देखा है, न मैं कोई काम करता हूँ, न रोजा रखता हूँ, न नमाज पढ़ता हूँ। जब मैं तेरे साथ होता हूँ तो मेरी नमाज यही है और जब तेरे साथ नहीं होता हूँ, तब भी मेरी वही नमाज है।)

फरमाया कि 'वकूफकल्बी और वकूफ अद्दी' में बइख्तियार (जानबूझकर) आँखें बन्द न करना चाहिये कि यह सब इत्तला खल्क है। हजरत उमर (रजि०) ने एक शख्स को गरदन झुकाये बैठे देखा, फर-

माया "ऐ गरदन वाले, अपनी गरदन ऊँची करो।" जिक्र इस तरह करना चाहिये कि मजलिस में किसी को मालूम न हो कि तुम क्या कर रहे हो, क्योंकि हकीकत इख्लास (निश्छल प्रेम) वादफनाँ हासिल होती है। जब तक बशरीयत गालिब है मुयस्सर नहीं।

साकी कदमे कि नीम मस्तेम, मखमूर सबाहे अलस्तेम।
मारा तू बमा ममाँ कि तामा, बाखवीश्तनेम बुत परस्तेम।

(ऐ साकी एक प्याला हमको दे कि हम आधे मस्त (नशे में) हैं। अलस्त के दिन (श्रष्टि की उत्पत्ति का दिन) की शराब के नशे में चूर हूँ। तू हमारी तरह अपने को न दिखा कि जब तक हम अपने साथ हैं (अपने होश में हैं), गोया बुतपरस्ती कर रहे हैं (मूर्ति पूजा कर रहे हैं)।

फरमाया जिक्र 'रफा गफलत' (उसकी याद की असावधानी दूर करने) का नाम है। जिस वक्त गफलत रफा हो गयी तो जाकिर है और यद्यपि साकित (मौन) हो हो कि रिआयत (ध्यान) 'वकूफ कल्ब हर हाल में चाहिये यानी खाने में, बात करने में, सुनने में, चलने में, खरीदने में, बेचने में, इबादत में, नमाज में, कुरआन शरीफ पढ़ने में, लिखने में, पढ़ने में, वाज फरमाने में एक लमहा (क्षण) गाफिल न हो, जिससे मकसूद (लक्ष्य) हासिल हो।

यक चश्म जदन गाफिल अजाँ माह न बाशी,
शायद कि निगाहे कुनी आगाह न बाशी।

(एक पलक झपकने के बराबर भी उस चाँद (महबूब) से गाफिल न हो। हो सकता है कि तुम किसी और तरफ निगाह करो और उसकी तरफ आगाह न हो।)

बुजुर्गों का फरमाना है कि बकदर पलक झपकने के अल्लाह तआला से गाफिल होगा तो बाकी सारी उम्र इस नुकसान का तदारुक (सुधार) न कर सकेगा। बातिन का निगाह रखना निहायत मुश्किल है, लेकिन

बइनायत हक सुबहानहू तआला (ईश्वर कृपा से) व तरबियत खासाने हक (पूर्ण समर्थ सतगुरु की रूहानियत की तालीम से) जल्द मुयस्सर हो जाता है।

बेइनायत हक व खासाने हक, गर पलक बाशद स्याह हस्तश वरक (खुदा की मेहरबानी के बगैर अगर आसमान की तरफ नजर करोगे तो एक काला वरक दिखायी देगा)।

और यह आगाही की हालत दोस्ताने खुदा (ईश्वर भक्तों) की सुहबत में, जो हम सबक (पीर भाई) हों और एक दूसरे के मुन्किर (आलोचक) न हों और शराए सुहबत बजा लायें (सतसंग के शिष्टाचार का अनुकरण करते हों), जल्द हासिल हो जाती है और कामिल और मुकम्मिल (पूर्ण समर्थ सतगुरु) के एक इल्तफात (कृपा दृष्टि) से इस कदर तस्किया बातिन होता है (आत्मिक पवित्रता आती है) कि रियाजत कसीरा (अत्यधिक अभ्यास) से भी नहीं हो सकता।

फरमाया अरबाब इर्शाद (सतगुरु) तीन किस्म के होते हैं। कामिल, कामिले मुकम्मल, व मुकल्लिद। कामिले मुकम्मल नूरानी (स्वयं प्रकाशवान) व नूर बख्श (दूसरों को प्रकाश देनेवाला) है। कामिल नूरानी है मगर नूरबख्श नहीं। मुकल्लिद (अनुयायी) वह जो बहुवम शैख काम करे। फरमाया मुर्शिद (सतगुरु) कुतुब होना चाहिए या कुतुब का खलीफा होना चाहिए (कुतुब ऐसे संत को कहते हैं जो ईश्वर के हुक्म और प्रेरणा से किसी निश्चित स्थान अथवा क्षेत्र में लोगों को रूहानियत का तालीम देते हों)। हर हाल में अपने को जिक्र में मशरूफ रखे। साकिनान तरीकत (अध्यात्म के मार्ग पर दृढ़तापूर्वक चलने वाले) दो किस्म के होते हैं। एक वह जो रियाजत, मेहनत व मुजाहिदा करते हैं और इनके समरात (फल) पाते हैं और मकसूद (लक्ष्य) को पहुँचते हैं और एक फज्ली (कृपाकांक्षी) हैं कि सिवा फज्ल खुदा कुछ नहीं जानते। तौफीक (सामर्थ्य), ताअत (आराधना) व रियाजत

भी उसके फज्ल से जानते हैं। यह तायफा (इस श्रेणी के लोग) जल्द मकसूद को पहुँचता है। ' अल हकीकत: तर्क मुलाहजतुल अमल ला तर्कुल अमल ' (हकीकत अमल छोड़ देने का नाम नहीं है, बल्कि अमल पर इतराने का तर्क करना हकीकत है अर्थात् वह परम सत्य (ईश्वर) कर्म त्याग से नहीं प्राप्त होता, वरन कर्म करने में कर्त्तापन के अहंकार का त्याग करने से ही उसको प्राप्ति सम्भव है।) फरमाया कि जो शैख सुबह व शाम जिक्र में मशगूल रहे वह गाफिल से नहीं है बल्कि जाकिरों से होता है बहुक्म आयत शरीफ " **अपने खुदा को याद गिड़गिड़ा कर और पोशीदा तौर से अपने दिलों में करो और आवाज तुम्हारी बुलन्द न हो। सुबह शाम दोनों वक्त याद करो और अल्लाह की याद से गाफिल होने वालों में न बनो**" । कुछ मुफस्सिरों (भाष्यकारों) का कहना है कि 'सुबह' व 'शाम' से मुराद मदावमत (नित्यता) जिक्र है। दूसरी आयत अपने परवरदिगार को बमस्कनत (विनम्रता के साथ) आहिस्तगी से याद करो कि अल्लाह तआला बुलन्द आवाज करने वालों को दोस्त नहीं रखता)।

अबू मूसा अशअरी (रजि०) से सुना गया है कि एक मरतबा सहाबा रसूल अल्लाह (सल्ल०) के हमराह थे। जब ऊँचाई पर चढ़ने लगे अवाज तक्बीर व तहलील बुलन्द की ('अल्लाहो अकबर' अर्थात् ईश्वर महान है कहना तक्बीर कहलाता है और 'लाइलाह इल्लल्लाह' अर्थात् एक ईश्वर के सिवाय कोई ईश्वर नहीं है कहना तहलील कहलाता है)। रसूल अल्लाह (सल्ल०) ने फरमाया। 'ऐ लोगो ! अपने नफ्सों पर नर्मी करो कि तहकीक तुम गायब व बहरे को नहीं पुकारते हो बल्कि तुम समीअ (सुनने वाले को) और करीब को पुकारते हो'। और इत्तफाक उल्मा व मशायख (विद्वानों और सन्तों में इस बात पर सहमति है) कि जिक्र खुफिया अफजल व ऊला है (श्रेष्ठ है)।

फरमाया यद्यपि नमाज, रोजा, रियाजत व मुजाहिदा से आदमी दाखिल हो जाता है लेकिन नफीव तक इख्तियार (कर्तापन का त्याग) व दीद कसूर अमाल (अपने कर्म व व्यवहार को त्रुटियों को देखना) अकरब तरीक है (रूहानियत की राह में दाखिल होने का नजदीकी तरीका है) फरमाया कि फकीरों की दो किस्म हैं। एक इख्तियारी (अपनी अध्यात्मिक क्षमता पर अधिकार व भरोसा रखने वाला) और दूसरा

इज्तरारी (बेइख्तियारी अर्थात् अपनी आध्यात्मिक क्षमता पर कोई अधिकार अथवा भरोसा न रखने वाला)। फरमाया जहूर खारिक व करामत का कुछ इख्तियार नहीं (चमत्कारों तथा ऋद्धियों सिद्धियों पर भरोसा नहीं रखना चाहिये।) असल चीज इस्तिकामत (दृढ़ता) है। बुजुर्गों ने फरमाया है कि तालिब (इच्छुक) इस्तिकामत हो, न कि तालिब करामात कि अल्लाहतआला इस्तिकामत तलब करता है और तेरा नफ्स करामात चाहता है। पुराने बुजुर्गों का कहना है कि अगर वली (महात्मा, ऋषि) किसी बाग में जाये और दरख्त के हर पत्ते से आवाज 'या वली अल्लाह' आये, इस पर इल्तफात नहीं करना चाहिये (ध्यान नहीं देना चाहिये) बल्कि हर लहजा (क्षण) बन्दगी व तजर्रो व नियाजमन्दी में (सेवा, दीनता व आज्ञाकारिता में) कोशिश करना चाहिये। फरमाया 'मेरा तरीका उर्वतुल वुश्का' (प्रमाणित दस्तावेज) है यानी इत्तवाए सुन्नत पैगम्बर सल्ल० व इक्तदाए आसार सहाबा (रजि०) हैं। अर्थात् हजरत मुहम्मद सल्ल० के आचरण व व्यवहार का अनुकरण करना तथा उनके साथियों के पद चिन्हों पर चलना ही मेरा प्रमाणित तरीका है।) फरमाया कि मुझको बारहे फज्ल (दया, कृपा के मार्ग) से लाये हैं और आखिर तक मैंने फज्ल ही देखा है। अपने आपसे (अपने पुरुषार्थ से) कुछ नहीं देखा। फरमाया मेरे तरीके में थोड़ा अमल ज्यादा है, लेकिन रिआयत मुताबअत (सतगुरु द्वारा बतलाये हुये मार्ग का अनुकरण करना) शर्त है। फरमाया हमारा तरीका सुहबत (सतसंग व मेल मिलाप है) और खिलबत (एकान्तवास) मे शुहरत (ख्याति) है। और शुहरत में आफत और जमईयत (हृदय की एकाग्रता) सुहबत में है और सुहबत एक दूसरे में नफी होने को कहते हैं (हृदय परमात्मा के नाम जप में एकाग्रता के साथ लगा रहे और साथ ही साथ लोगों से सतसंग व मिलना-जुलना भी होता रहे और यह दोनों इस प्रकार हों कि एक दूसरे के कार्य में रुकावट न पैदा करें)।

फरमाया कि मुर्शिद (सतगुरु) को चाहिये कि तालिब (अध्यात्म विद्या का जिज्ञासु) के हाल, माजी, इस्तिक्बाल (वर्तमान, भूतकाल

तथा भविष्य की हालतों) से आगाह हो कि उसकी तरबियत कर सके और शरायत तलब (अध्यात्म विद्या सीखने की जिज्ञासा) की शर्त यह है कि जिस वक्त किसी खुदा के दोस्त (संत) की सुहबत में दाखिल हो अपने हाल को मालूम करे कैसा है और कुछ समय बाद इसका अपनी पिछली हालतों से मुआना करे (तुलना करे)। अगर अपने में कुछ तरक्की देखे तो उसकी सुहबत को फर्ज समझे। फरमाया कि मराकबा (ध्यान) का मतलब दुनियाँ की फिक्र (चिन्ताओं को त्यागकर ईश्वर की तरफ हमेशगी अर्थात् नित्यता के साथ निगाह रखना है। फरमाया कि दवाम (नित्यता) मराकबा नादिर (श्रेष्ठ, अजीबोगरीब) है और हमने इसके हासिल करने का तरीक (ढंग) मुखालिफे नफ्स (मन का विरोध करने से) पाया है। फरमाया मुशाहिदा (साक्षात्कार, दर्शन) सालिक के दिल पर वारिदे गैबी (परोक्ष से आने वाला किसी हालत) के नजूल (उतरने, अवतरण) के मुलाहिजा (निरीक्षण) को कहते हैं। अगर वह जल्द गुजरती है तो इद्राक में नहीं आता (समझ में नहीं आता)। मुहासिबा (अपनी आन्तरिक हालतों का मूल्यांकन करते रहना) यह है कि सालिक हर सायत (घड़ी) हिसाब करता रहे कि मुझ पर क्या गुजरता है और किस तरह गुजरता है। अगर नुकसान पाया जाये, इसका तदारूक करे (सुधार करे), अगर तरक्की पायी जाये उसका शुक्रिया अदा करे।

हजरत ख्वाजा अलाउद्दीन अत्तार (रहम०) फरमाया करते थे कि हजरत ख्वाजा बहाउद्दीन नक्श (रहम०) की बरकत से तालिब अव्वल कदम पर सआदत मराकबा से मुशर्रफ होता है (पहली तवज्जोह में ही 'मराकबा' की हालत पैदा हो जाती है) और जिस वक्त ज्यादा तवज्जोह फरमाते अदम पर पहुँच जाता (अपने होश में नहीं रहता) और अगर ज्यादा तवज्जोह फरमाते मुकाम 'फना' पर पहुँच जाता। उस वक्त हजरत ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शबन्द (रहम०) फरमाते कि मैं सिर्फ वास्ता (जरिया) था। अब मुझसे मुन्कता करके (अलग होकर) मकसूद हकीकी से पैबस्त होना चाहिये। यानी फनाफिश्शैख के (अपने पीर में लीन होने के) मुकाम से बढ़कर फनाफिल्लाह (ब्रह्मलीन होने) के

मुकाम पर पहुँचना चाहिये) फरमाया इबादत तलब वुजूद है (जब तक हमें यह ख्याल बना है कि हम ईश्वर की आराधना कर रहे हैं तब तक हम अपनी ही हस्ती (अस्तित्व) की तलब (ख्वाहिश) में हैं व अबूदीयत (ईश्वर का सच्चा सेवक होना) तलफ वुजूद है (अपनी हस्ती को अर्थात् खुदी को मिटा देना है)। फरमाया अगर तू मुकाम इब्दाल (अपनी मौजूदा हालत से बदली हुई हालत में) पहुँचना चाहता है तो मुखालिफ नफ्स कर (अपने मन अर्थात निम्न वासनाओं से विद्रोह कर) फरमाया कि अइले हक (महात्मा, संत) बारे खल्क (दुनियाँ का बोझ अर्थात् दुनियाँ वालों को ईश्वर भक्ति की ओर आकर्षित करने का दायित्व) इस सबब से खींचते हैं कि तहजीब इख्लाक हो (लोग शिष्टाचार व सदाचरण ग्रहण करें) या किसी वली (संत) से मुलाकात हो क्योंकि कोई ऐसा वली नहीं है जिस पर अल्लाह तआला की नजर (कृपा दृष्टि) न हो। जब उस वली से मुलाकात होती है इस नजरे इलाही (ईश्वर की कृपा दृष्टि) से फैजयाब होता है।

फरमाया कि इस राह में साहिबे पिन्दार (अहंकारी) का काम बहुत मुश्किल है —

गरचे हिजाबे तू वरूँ अज हदस्त,
हेच हिजाबत चूँ पिन्दार नेस्त।

यद्यपि तेरे पर्दे शुमार से बाहर है, लेकिन कोई तेरा पर्दा अहंकार करने से बढ़कर नहीं है)। फरमाया कि दर्वेश को चाहिये कि जो कुछ कहे हाल से कहे। जो शख्स बिला हाल कहता है वह उस हाल को नहीं पहुँचता। फरमाया यह जरूरी नहीं कि जो दौड़े उसको गेंद मिल जाये, मगर मिलती उसको है जो दौड़ता है। इससे इशारा दवाम (नित्यता) कोशिश व सई (प्रयत्न) का है। (अर्थात् मनुष्य को हमेशा अपने सतगुरु द्वारा बतलाये हुये साधना के अभ्यास में प्रयत्न के साथ लगे रहना चाहिये फरमाया कि औलिया (परम सन्तों) को इस्रार पर इत्तला देते हैं (ईश्वर की ओर से गुप्त बातें प्रकट होती हैं), मगर बिला इजाजत इजहार (प्रकट) नहीं करते। फरमाया, 'जो रखता है वह छिपाता है और जो नहीं रखता वह चिल्लाता है'। फरमाया कि मुझसे जो कुछ इजहार खातिर

व आमाल व अहवाल खल्क सादिर होता है (मेरे द्वारा जो विचार, कर्म व रूहानी हालतें प्रकट होती हैं), मेरा इसमें कुछ दरमियान (दखल, मध्यस्थता) नहीं। इलहाम से झको मुइत्तला कर देते हैं (ईश्वरीय प्रेरणा से मुझे मालूम हो जाता है)। फरमाया तस्हीह नियत (भावना को शुद्ध रखना) हर अम्र (कर्म) में निहायत जरूरी है क्योंकि नियत (भावना) वही चीज़ है (जिस भावना से कर्म किया जाता है वहीं यथार्थ कर्म है)। कस्ब उद्यम, पुरुषार्थ) का उस अम्र से ताल्लुक नहीं (कर्म का मूल्यांकन उसकी भावना से होता है, न कि उस कम के लिये किये गये पुरुषार्थ या उद्यम से)।

फरमाया गाह-गाह (कभी-कभी) की जियारत (किसी बुजुर्ग की मजार के दर्शन) मय हुजूर कल्ब इससे बेहतर है कि दवाम हो (नित्यता) हो और बिला हुजूर हो। फरमाया कि एक मर्तबा जनाब रसूल अल्लाह (सल्ल०) ने मय असहाब तन्दूर में रोटी लगायी। सब की रोटियाँ पक गईं मगर रसूल अल्लाह (सल्ल०) की न पकी। फरमाया कि एक मरतबा मैंने भी अपने साथियों के साथ तन्दूर में रोटी लगायीं। सबकी पक गयीं, लेकिन मेरी नहीं पकी। वजह इसकी यह है कि जनाब रसूल अल्लाह (सल्ल०) रहमतुल्लिलआलमीन (दुनियाँ के लिये रहमत थे) और आपका दस्त मुबारक (हाथ) जो रोटी को लग गया था इस वजह से उस पर आग का असर न हुआ और चूँकि हजरत ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शबन्द (रहम०) कमाल इत्तबा (पैरवी, अनुकरण) रसूलअल्लाह (सल्ल०) का किया करते थे, उस (इत्तबा) की बरकत से आपका हाथ जिस रोटी पर लगा उस पर आँच ने असर न किया।

कहा जाता है कि एक मरतबा किसी ने आपसे करामत (चमत्कार) तलब की। आपने फरमाया कि करामत जाहिर है कि बावजूद इस कदर गुनाहों के जमीन पर चलता हूँ और धँस नहीं जाता। कहा जाता है कि एक मरतबा हजरत ख्वाजा बहाउद्दीन (रहम०) कस्र आरफा में थे कि हजरत अमीर बुरहानुद्दीन पिसर (पुत्र) अमीर सैय्यद कुलाल (रहम०) रोटियाँ लाये और तन्दूर में पकाने लगे। यकायक बादल छा गये और पानी बरसने लगा। सब हैरान रह गये। इसी समय में हजरत ख्वाजा

बहाउद्दीन नक्शबन्द (रहम०) ने अमीर बुरहानुद्दीन (रहम०) से फरमाया कि बारिश से कहो कि जब तक हम इस जगह हैं यहाँ न आये। अमीर बुरहानुद्दीन (रहम०) ने उज्र किया कि मेरी क्या मजाल कि मैं इस किस्म की बात कहूं। हजरत ख्वाजा बहाउद्दीन (कु०सि०) ने फरमाया कि हम तो कहते हैं कि कह दो।अमीर बुरहानुद्दीन (रहम०) के इम्तसाल अम्र (आज्ञापालन) में इसी तरह कह दिया। अल्लाह तआला की कुदरत से उस जगह पानी एक बूँद न बरसा और सब जगह बरसता रहा।

फरमाया करते थे कि जब मेरा वक्त आखिर आयेगा तो सबको मरना सिखाऊँगा। चुनाँचे जब आपका वक्त आखिर आया, नफ्स आखिर में (अन्तिम साँस में) दोनों हाथ दुआ के वास्ते उठाये और देर तक दुआँ मागते रहे। जब बाद दुआ दोनों हाथ मंह पर फेरे, जान बचाना तस्लीम को (पार्थिव शरीर त्याग दिया)। आपको उम्र ७३ बरस की थी। बतारीख तीन रबीउलअव्वल बरोज दोशम्बा ७९१ हिजरी को इन्तकाल फरमाया।

'इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहे राजऊन, (हम अल्लाह के लिये हैं और उसी की तरफ पलट जायेंगे।')

आपने वसीयत फरमायी थी कि मेरे जनाजे के आगे कल्म ए शहादत[1] व कुरआन शरीफ न पढ़ें कि बेअदबी है बल्कि यह रूबाई पढ़े :

मुफ़लिसानेम आमदा दर कुए तो,
शयन लिल्लाह अज जमाले रुए तो,
दस्त बकुशा जानिबे जम्बील मा,
आखिरो बर दस्तो बर बाजुए तो।

(तर्जुमा—हम मुफ्लिस लोग (निर्धन, कंगाल) तेरी गली में आये हैं। अपने चेहरे के जमाल से कुछ हमको भी अता कर। हमारे जम्बील (थैला, झोला जो भिखारी लिये रहते हैं) की तरफ हाथ बढ़ा। तेरे बाजू (भुजायें) और तेरे हाथ को धन्यवाद।

१—कल्म ए शहादत :—'अश्हदो अल्ला इलाहा इल्लल्लाह व अश्हदो अन्ना मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह' (मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवाये कोई पूज्य नहीं है और गवाही देता हूँ कि हजरत मुहम्मद (सल्ल०) उसके रसूल है)।

संकेताक्षरों का विवरण

१—इस पुस्तक में हजरत मुहम्मद साहब, उनके सहाबी (साथी) दूसरे पैगम्बरों, फरिश्तों एवं महान सूफी सन्तों के नाम के आगे कुछ संकेताक्षरों का प्रयोग किया गया है। उनके अर्थ तथा संक्षिप्त विवरण नीचे दिए जा रहे हैं :—

सल्ल०— 'सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम' अर्थात् उन पर अल्लाह की रहमत (दयालुता) और सलामती हो। हजरत मुहम्मद साहब का नाम लेते या सुनते हैं तो आदर और प्रेम के लिए दुआ के ये शब्द बढ़ा देते हैं।)

रजि०— 'रजि अल्लाह अनहु' अर्थात् उनसे अल्लाह राजी रहे (हजरत मुहम्मद साहब सल्ल० के किसी सहाबी या परिवार के सदस्य का नाम आता है तो आदर और प्रेम के लिए दुआ के ये शब्द बढ़ा देते हैं।)

रहम०— ' रहमतुल्लाहु अलैहि ' अर्थात् उन पर ईश्वर की कृपा हो। (महान् सूफी सन्तों के नाम के साथ दुआ के ये शब्द बढ़ा लेते हैं।)

कु० सि०— ' कुदस सिर्रहू ' अर्थात् उनकी आदतें और स्वभाव पवित्र हों। सूफी सन्तों के नाम के साथ दुआ के ये शब्द बढ़ा लेते हैं।

अलैहि०— ' अलैहिस्सलाम ' अर्थात् उन पर ईश्वर की सलामती हो। हजरत मुहम्मद सल्ल० के अतिरिक्त अन्य पैगम्बरों तथा फरिश्तों के लिए दुआ के ये शब्द बढ़ा लेते हैं।

२—**इ० फ०**— ' इर्शाद फरमाया ' (अर्थात् उपदेश के रूप में कहा)।

परिशिष्ट

सन्दर्भ ग्रन्थों की तालिका

१. **कुरआन मजीद (हिन्दी में)**-मूल अरबी, हिन्दी व अंग्रेजी अनुवाद सहित। प्रकाशक-मकतबा अल-हस्नात, रामपुर (उ० प्र०)।

२. **हालात मशायख नक्शबन्दिया मुजद्दिदिया**-(उर्दू में), लेखक-हजरत मौलाना मुहम्मद हसन साहब, प्रकाशक-अल्लाह वाले की कौमी दूकान, बाजार कश्मीरी, लाहौर।

३. **मशायख नक्शबन्दिया** (उर्दू में)-लेखक-हजरत अल्लामा अब्दुल मुस्तफा साहब अजमी, मिलने का पता—(१) मकतबा लतीफिया, बराँव शरीफ, जिला बस्ती (उ० प्र०), (२) दारुल उलूम मस्कीनिया, धुरावा, जिला राजकोट, गुजरात।

४. **'पैगम्बरे इस्लाम हजरत मुहम्मद सल्ल० ·····जिसका इन्तिजार था'**-लेखक-जनाब माहिरुल कादरी, अनुवादक जनाब कैसर यजदानी प्रकाशक-कान्ति सप्ताहिक, ९२५, किशन गंज, तेलीवाड़ा, दिल्ली-६

५. **कश्फुल महजूब**-(फारसी ग्रन्थ का उर्दू तर्जुमा), लेखक-हजरत शैख अली हुजवीरी रहम० (दातागंज बख्श रहम०), अनुवादक-जनाब मियाँ तुफैल मुहम्मद, बी० ए० (आनर्स), एल० एल० बी०, प्रकाशक-मरकजी मकतबा इस्लामी, दिल्ली-६

६. **रशहात** (फारसी में); लेखक-हजरत फखरुद्दीन अली इब्नुल हुसैनुल वायजुल काशफी (रहम०), प्रकाशक-नवल किशोर प्रेस, हजरत गंज, लखनऊ (यह पुस्तक अब प्रकाशक के यहाँ उपलब्ध नहीं हैं।)

७. **'सूफी सन्त चरित' तथा 'मुस्लिम संत चरित'**-दोनों ग्रन्थ सुप्रसिद्ध फारसी ग्रन्थ तर्जिकरातुल औलिया' के आधार पर हिन्दी में लिखे गये हैं। लेखक-महात्मा भगवात, प्रकाशक सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली।